श्रीगणेशायनमः
लक्ष्मणजी
श्रीरामजी
वसिष्ठजी।
कौसलयंत्रालयकेविषैंपंडितअनंतरामजीकेअधिकारसेमुद्रितहुआ।

अथ सूची पत्रीका वसिष्ठ सार ग्रंथ की, पत्रा पृष्ठ पंक्ती विषय सुद्धां ॥

पत्रा	पंक्ती	पृष्ठ	विषय
पत्रा २	पंक्ती २	पृष्ठ २	विषय॰ प्रथम भारद्वाज का प्रश्न बालमीकी तांई।
प॰ ५	पं॰ २	पृ॰ ५	विषय विश्वामित्रजी का प्राप्त होना राजा दशरथके घरविषे।
प॰ ५	पं॰ ५	पृ॰ ५	विषय॰ राजादशरथजी को रामजीका वैराग्य निरूपण करना सेवकोंनें।
प॰ १३	पं॰ २	पृ॰ १३	विषय॰ रामजीको राजादशरथनें सभामों बुला लाना विश्वामित्रने प्रश्न करना।
प॰ १३	पं॰ ५-६	पृ॰ १३	विषय॰ रामचंद्रजी विश्वामित्रकों वैराग्य निरूपण करण लगे।
प॰ १६	पं॰ ४	पृ॰ १६	विषय॰ युवा अवस्थाकी निंदा तथा स्तुतिः।
प॰ २४	पं॰ ९	पृ॰ २४	विषय॰ इस्त्रियोंकी निंदा इनके परित्यागमें सुख।
प॰ २७	पं॰ ६	पृ॰ २७	विषय॰ अवस्थानिरूपण इत्यादिः।
प॰ २८	पं॰ ८	पृ॰ २८	विषय॰ काल भगवाननेजगतका संहार किया।
प॰ ३१	पं॰ ७	पृ॰ ३१	विषय॰ देह रूपी बेड़ी मन रूपी मृग।

ा·सा· स्कं· २

पत्रा४४	पं·९	पृ·४४	विषय। वाल्मीकीजी भरद्वाज प्रति कहते श्रीरामचंद्रजी ऐसे हैं।
पत्रा४५	पं·१७	पृ·४५	विषय· सिद्ध श्रीरामचंद्रजीके वचनोंको सुनकर प्रसन्न होये।
प·४६	पं·८	पृ·४६	सिद्ध मुनि देवता आकाशते उतरकर रामचंद्रजीकी स्लाघा करते रहे।
प·४८	पं·५	पृ·४८	विषय· इति वैराग्यप्रकरणम्। अथ मुमुक्षुप्रकरणम्।
प·४९	पं·२।३	पृ·४९	व्यासजीकी आज्ञा लेकर शुकदेवजी राजाजनकके समीप गये मुक्तिमार्ग पूछनेके लिये जनक निरूपण करने भये।
प·५१	पं·१०	पृ·५१	विश्वामित्रजी वसिष्ठजीको कहते हैं ज्ञान प्रकार।
प·५२	पं·७	पृ·५२	वसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजीको ज्ञानका उपदेश करते हैं।
प·५६	पं·४	पृ·५६	उद्यमकी प्रशंसा श्रीरामचंद्रजीके साथ।
प·६२	पं·८	पृ·६२	पुरुषार्थ के तीन रूप हैं एक बुद्धि मनसावधान इंद्रिय सावधान·
प·६३	पं·३	पृ·६३	संतोष प्रशंसा।
प·७३	पं·४	पृ·७३	जगत प्रशंसा।
प·८८	पं·९	पृ·८८	वेदांतशास्त्र प्रसंग।

।•सा•
स्व•
३

पत्रा ९३	पंक्ती ५	पृष्ठ ९३	मुमुक्षु प्रकरण समाप्त भया॰ अथ उत्पत्ति प्रकरणम्।
प॰ ९३	पं॰ ६	पृ॰ ९३	जगतकी उत्पत्ति श्रीवसिष्ठजी श्रीरामजीको कहते हैं।
प॰ ९७	पं॰ ४	पृ॰ ९७	मनका निरूपण।
प॰ १०२	पं॰ ४	पृ॰ १०२	आकाशज विप्रका प्रसंग श्रीरामजी वसिष्ठजीसे पूछते हैं
प॰ ११०	पं॰ ३	पृ॰ ११०	विदेह मुक्तका लक्षण और जीवन मुक्तका लक्षण।
प॰ ११८	पं॰ ३	पृ॰ ११८	कल्पका प्रमाण।
प॰ ११९	पं॰ ९	पृ॰ ११९	ब्रह्माजीकी आयुषाका प्रमाण मनुका प्रमाण।
प॰ १२०	पं॰ ४	पृ॰ १२०	विष्णुजीकी आयुषाका प्रमाण।
प॰ १३६	पं॰ ९	पृ॰ १३६	श्रीरामजीको वसिष्ठजी जीवित महारोगकी चिकित्सा कहते हैं।
प॰ १३९	पं॰ ८	पृ॰ १३९	हे भगवन् योगकी सिद्धि करणेहारी सप्तभूमिका कैसी है।
प॰ १४०	पं॰ १	पृ॰ १४०	श्रीवसिष्ठजीकी ज्ञानकी तथा अज्ञानकी सप्तभूमिका कहते हैं।
प॰ १४२	पं॰ ८	पृ॰ १४२	सात प्रकार का स्वप्न सुषुप्त है।

पत्रा१४६	पंक्ती १०	पृष्ठ १४६	इतिअज्ञान भूमिका वर्णन।
प० १५६	पं० १०	पृ० १५६	चैतन्य सत्तामनकी कल्पनाते परेहै संकल्प विकल्पोसें अन्यहैं
प० १५३	पं० १	पृ० १५३	इति ज्ञान भूमिका उपदेशाः।
प० १५७	पं० ८।९	पृ० १५७	इतिउत्पत्ति प्रकरणम्।
प० १५९	पं० ७	पृ० १५९	लवणराजा चँडालका स्मरण करणे चँडालता भईहै यह जगत मनमें स्थितहै।
प० १६२	पं० २	पृ० १६२	भृगु पुत्रेनऐशापोद्यते भृगो भृगु यम संवादः।
प० १७५	पं० ८	पृ० १७५	इतिस्थिति प्रकरणम्।
प० १७५	पं० ८	पृ० १७५	अथ उपशम प्रकरणस्य व्याख्या सूचीपत्रं राजादशरथ वसिष्ठजीकी स्तुति करतेहैं
प० १८४	पं० ३	पृ० १८४	इति सिद्धगीता समाप्तम्।
प० १९५	पं० ९।१०	पृ० १९५	श्रीरामजी प्रति वसिष्ठजी बलीका संवाद कथन करते दशरथकोटिवर्ष बली राज्य (करताहूआ विरोच बली संवाद
प० २०३	पं० ६	पृ० २०३	शुक बली का संवाद।
प० २०९	पं० ६	पृ० २०९	प्रह्लादिजी प्रति श्रीविष्णुभगवानजी कहते हैं।

ग्रा·सा·
सू·
५

प·२२·	पंक्ति१	पृष्ठ२२·	गाधिब्राह्मणकों श्रीभगवान अपनी माया दिषाते भये।
प·२२५	पं· ६	पृ·२२५	उद्दालकतपस्वी का प्रसंग।
प·२३७	पं· ५	पृ·२३६	एक सुरघु राजा मांडवऋषि की कृपातें ज्ञानकों प्राप्त होना भया।
प·२४८	पं· २	पृ·२४९	प्राणायाम की विधि:।
प·२५·	पं· ९	पृ·२५·	संवर्तगीता विषे संवर्तनें कहाहै मन प्रति मन तूं पिशाच है।
प·२५१	पं· १	पृ·२५·	वीतहव्य मुनिकों विचार सहित तीन शतवर्ष निर्विकल्प समाधी होनीभूई
प·२६२	पं· ३	पृ·२६३	इति वीतहव्यमुनिउपाख्यानम्।
प·२७४	पं· ६	पृ·२७४	उपशमप्रकरणंसमाप्तम्। अतःपरंनिरवाण प्रकरणम्।
प·२७५	पं· १	पृ·२७५	वसिष्ठजी श्रीरामजी प्रति निर्वाण प्रकरण कहतेहैं यसति निर्वाण इंद्रियांप्र
प·२९१	पं· ३	पृ·२९१	अष्टयोगिनी संवाद उपरंत काकभुसुंडीजी कहने भये (कालत्रदूषणदेनेहरण)
प·३··	पं· ४	पृ·३··	श्रीवसिष्ठजीका प्रश्न यक्ष्वाकुराजा प्रति।
प·३·५	पं· ७	पृ·३·४	षट् चक्र विधि:।

ना·सा·
स्नू·
६

प·३१६	पं· ३	पृ·३१६	देहरूपी घरका विचार वसिष्ठ रामजी प्रति कहते हैं। (है
प·३२५	पं· ४	पृ·३२५	हे रामजी एकसमें गंगाके तटमें तप करताहुआ शिवकापूजन यह शिवगीता
प·३३३	पं· ३	पृ·३३३	इस चित्सत्ताको संसार दशामें चढ़ाउनेको भी वहू पीरथ है जीवको अहंकाररथ है म
प·३३९	पं· ७	पृ·३३९	सदा शिवजी और वसिष्ठजीका संवाद करणा।
प·३८२	पं· ७	पृ·३८२	अर्जुन श्रीकृष्णदेव का संवाद ज्ञान रूप गीता कही।
प·४०५	पं· ६	पृ·४०५	इतिश्रीभगवद्गीता संपूर्णं समाप्तम्।
प·	पं·	पृ·	रुद्रजी अपने रुद्रोंको कहते हैं अपने स्थानोमें चलेजाओ।
प·	पं·	पृ·	विंध्याचलकी झाड़ीमें एक बेताल था तहां एकराजा अपनी नगरीकी रक्षाकरने
प·	पं·	पृ·	रात्रिमें तहां गया परस्पर बेताल और राजाका प्रश्नोत्तर।
प·४१२	पं· ५	पृ·४१२	भागीरथ राजा का प्रसंग कहे है।
प·४१३	पं· ७	पृ·४१२	त्रितल गुरु का और राजाभागीरथका संवाद।
प·४२७	पं· २	पृ·४२७	राजाशिखिध्वज और राणी चूड़ालातें ज्ञानको प्राप्त होतभया।

वा॰ सा॰
सू॰
७

प॰४८६	पं॰ २	पृ॰४८६	जैसे राजा शिखिध्वज ज्ञानको प्राप्त होया इसीप्रकार बृहस्पतिका पुत्र कचभी प्राप्त होताभया हे राजा तूभी ज्ञान को प्राप्त कचका प्रसंग।
प॰४९०	पं॰ ३	पृ॰४९०	राजा इक्ष्वाकु पिता मनुको कहता है कि हे पिता यह जगत क्याहै तो मनुजी जगतकी भ्रांति राजा इक्ष्वाकुकी दूर करतेहैं।
प॰४९१	पं॰ ७	पृ॰४९१	राहु का दृष्टांत।
प॰४९४	पं॰ ८	पृ॰४९२	भूमिकावर्णनकिया कच प्रति शुक्राचार्य में
प॰४९३	पं॰ १	पृ॰४९३	व्याध और मनुराजा का प्रसंग।
प॰४९३	पं॰३।५	पृ॰४९३	मनके तीन रूपहैं जाग्रतमों घोररूप स्वप्नमों शांतरूप सुषुप्तामों मूढ रूप।
प॰४९८	पं॰ ४	पृ॰४९८	इतिनिर्वाणप्रकरणस्यपूर्वोध्यायः।
प॰४९९	पं॰ ६	पृ॰४९९	झूठेज्ञानी पकी प्रशंसा।
प॰५००	पं॰५।६	पृ॰५००	विद्याधरका प्रस्ताव काकभुशुंडीका कहने वसिष्ठजी प्रति।
प॰५०२	पं॰ ८	पृ॰५०२	उष्टइंद्रियरूपी इस्त्रियां उनकी सेना।

पृ·५०५	पं· १०	ह·५०५	एक कल्पांतरमों इंद्र त्रैलोक्यकाराजा होता भया सो इंद्रगुरुके उपदेश करके अपने अभ्यासते अज्ञानहू पीआवरण ते रहित भया
प·५११	पं· ९	ह·५११	मंकी ब्राह्मण और वसिष्ठजीका संवाद।
प·५४९	पं· १	ह·५४९	विद्याधरी प्रसंग वासना रूपी विद्याधरी।
प·५४९	पं· ५	ह·५४९	ओंकारकी व्याख्यान।
प·५७१	पं· ३	ह·५७१	कलियुगका धर्म वर्णाश्रम विभागकारके।
प·५६०	पं· ७	ह·५६०	प्रथम भूमिकाका सुभ इच्छाहोनी· दूसरी विचारणा २ तीसरी तनुमनसा
·	·	·	४ चौथी सत्वापत्तिः। ५ पांचमी असंसक्त मानसा ६ छठी पदार्था भावनी है।
·	·	·	सातमी तुरिया है ७। शुद्ध स्वरूप सिद्धको वसिष्ठजी देखते भये।
·	·	·	ब्राह्मणोंकों भोजन देणा।
·	·	·	इति उत्तरार्थ सारी।
			इति वासिष्ठसारस्य सूचीपत्रं समाप्तम्।

श्रीरघुनाथोजयति

अथवसिष्टसारलिख्यते॥

ॐश्रीरामजी॥दोहा॰गणपतिगुरुगिरिजासधवगिरिधरगिरामनाइ।वरणोंचरितवसिष्ट
कोप्रश्नोत्तरहरषाइ१ बालमीकभरद्वाजसोंरघुनंदनहिवसिष्ट॰वर्णितहैअध्यात्मपदब्र
ह्मज्ञानकोइष्ट।२।आदिकाव्यबाल्मीकमुनिविरचितलक्षसलोक॰अधिकहिहैंनानेस।
बहिहोवतनाहिश्लोक३ सोरठा॰यांकोमथसंक्षेपसारबनैसबमनुजहित॰मिटहिभ
बाविक्षेपसुगमअर्थआनंदप्रद४ नगरबिसोलीमेभयेपंडितजनीसराम॰तिनकेशिष्यगुजा
निपवियासकृत्तणधाम ५ सवैया॰नामगुपालसरामकहैंपरमंडलधामरहैंनिहकामा॰ग्रं
थवसिष्टविचारकरैंनितसंग्रहसारवसिष्टसुनामा॰ज्ञननहीरचबोयहुवैसबलोकहुंकोसिमरे

त्वा·सा·हियथामा·समसहस्त्रसलोककियसबअर्थलहैं नरशरणकामा ६ दोहा·जंबुसतीसरनिवना।
२ सुखदेशनकोअधिईशा·श्रवणकियोसंग्रहसकल(श्री१०८)रणवीरनरेश ९ ज्यौं विश्वंभरविश्वगतपा
लकसबजगजोइ।त्यौंभूपतिरणबीरहरिपालहिंनिजजनसोइ ७ सुणवसिष्टसंग्रहसुगमब्रह्मज्ञा
नसुखपाइ शिवशंकरजीपैकहीवार्तिकरचोबनाइ ८ सोरठा·श्रीहरियशअभिधानब्रह्मनिष्टपं
डितविमल·तिनकोशासनमानवार्तिककियोवसिष्टमुनिवरवचननिगूढअर्थनसमजोजात
हैं।तनृपिकरोंअरूढशिवशंकरपरसादते १० दोहा·सबलोकहिंउपकारहितभाषासुगमबनाय।
वसिष्टसारवार्तिकरच्योसबहीकेमनभाइ ११ अडिल·संवतनवविकअंकइंदुमितवैक्रमी·पौषशि
शुक्लतपमाहिंआरंभ्योअनुक्रमी·हुवोसहरणमुदितजनहितकारही·जोहिपढैंअरुश्रवणकरतभवतारही १२
टीका·बाल्मीकजीने भरद्वाजके तांई जौनसा वसिष्ट रामजीका संवाद सुनायाहै तिसका सार लेकर के
शुभ करने हारा संग्रह करीदाहे १ तिसमें भरद्वाजका प्रश्नहै हेगुरुजी मुक्तका क्या लक्षणहै अरु

वा॰ रा॰ स्वरूप क्याहै मुक्ति किस प्रकार कर होतीहै सो मेरे प्रति कहो ऐसा प्रश्न किया जो बाल्मीकी मु
२ नि भरद्वाज प्रति कहते भये २ पहिले मंगला चरण करतेहैं जोनसा प्रभु मेरेकों स्वर्ग विषें पृथि
वी विषें आकाश विषें बाहिर अरु अंदर सर्वत्र प्रकाशमान होताहै अरु स्वयं प्रकाश रूपहै तिससर्व
स्वरूप परमात्माकों में नमस्कार करताहूं २ हे भरद्वाज यह जगत का भ्रम आकाशके नीलेरंग की
न्यांई मिथ्याही फुराहै इसका जो फेर नही फुरणा ऐसा जो विसरणा है तिसकों में बहुत श्रेष्ठमा
नता हूं ४ हे शिष्य यह नेत्रों करके प्रत्यक्ष देखीदा जो जगत है सो सत्य नहीं है ऐसा ज्ञान
करके मन से दृश्य पदार्थ का दृढ परि त्याग सिद्ध होवे तो परम निरवाण के आनं
द की प्राप्ति उत्पन्न होती है ५ जो मन से दृश्य पदार्थ का दृढ परि त्याग नहीं
होवे तो अनेक शास्त्र रूपेश्य ऊहा विषे भ्रमण करने हारे जो तुम हो अपने स्वरूप के
ज्ञान विना आपही अज्ञानी हो तुम को अनेक कल्पों करके भी आनंद की प्राप्ति नहीं

सा होवे गी ६ हे शिष्य सर्व प्रकार करके अंतः करण में वासना का इछ परि त्याग जो
है सोही मोक्ष कहीदा है वही आनंद प्राप्ति का निर्मल मार्ग है ७ सो वासना दो प्रकारकी
होहै एक शुद्ध वासना है अरु एक मलीन वासना है तिनमें मलीन वासना जन्म मरण का
कारण है अरु शुद्ध वासना जन्म मरण का नाश करती है ८ अज्ञानही इछ स्वरूप है जिस
का इछ अहंकार को प्रगट करती है फिर जन्म को करने हारी है पण्डित लोगों ने वह
मलीन वासना कहीदी है ९ जौनसी दूसरे जन्म के अंकुर को त्याग कर दग्ध भये हुवे बी
जकी न्यांई स्थित भई है देह के निरवाह के लिये धारण करीदी है जानिया है परमात्मा
का स्वरूप जिस करके सो शुद्ध वासना कहीदीहै १० हे शिष्य जौन से शुद्ध वासना वाले पु
रुष फिर जन्म के क्लेश कों नहीं भोगते हैं परमात्मा के स्वरूप कों जानने हारे हैं जीवन
मुक्त कहे हैं अरु उदार बुद्धि हैं ११॥ भरद्वाजउवाच ॥ हे गुरुजी वसिष्ठजी ने श्रीरामचंद्र

वन के वृक्षों को विकार नहीं करतिआं हैं २४ हेराजन् रामचंद्रजी एकांतस्थान विषें
दृष्ट देशों विषें नदी तीरों विषें बनों बिषें शून्यस्थानों बिषें प्रीत धारता है जीवों बिषें
विकाय गया है मानों ऐसी दया करता है २५ हेराजन् रामचंद्रजी वस्त्र विषें जल पानादि
क बिषें दान बिषें विरक्त होय करके सर्व त्याग करने वाले ब्रह्म निष्ठ तपस्वी के
पीछे अपने चित्त की शांति वास्ते सेवा करने जाता है २६ हेराजन् रामचंद्र जी अ
केला एकांत निर्जनस्थान विषें स्थित होता है एकाग्र बुद्धि करके हसता भी नहीं
है गायन भी नहीं करता है रोदन भी नहीं करता है एकाग्र वृत्ति धारण करता हैं २७
हेराजन् रामचंद्रजी पद्मा सन बांध करके स्थित होते हैं वैराग्य करके भोग पदार्थों
के भोग सें जड़ होय करके अंतः करण शून्य हैं और कैसे हैं वामें हाथ विषें मुष
कों स्थापन करके चिंता करके केवल मौन धार करके स्थित होतेहैं २८ हेराजन्

वा॰ सा॰ प्रकार करके निंदित करते हैं यह इस्त्रीयां क्या हैं अत्यंत क्लेशकों देने हारियांहै
इन्ह की शोभा कैसी है कछुभी नहीं है यह नरक का स्थानहै २॰ हेराजन् श्रीरामचंद्र
जी जो हैं सो उत्तम भोजन कों उत्तम शय्या कों उत्तम हाथी घोड़ा रथकी सवारियां को उत्तम
विलास स्थानकी सामग्रीकों उत्तम बिछोनोंकों विदग्ध पुरुषकी न्याईं पसंद नहीं करतेहैं २१ मेरे
को संपदा करके सुखक्याहै विपदा करके दुःखक्या है गृह करके अनेक प्रकार के उत्तम चे
ष्टा करके क्या प्रयोजन है यह सभही असत्य है ऐसे कहि करके चुप्प होय रहेहैं २२
हेराजन् रामचंद्रजी हास बिलासों बिषें प्रसन्न नहीं होतेहैं अरु भोग पदार्थों बिषें मग्न
नहीं होते हैं कार्य्य करने बिषें उद्यम नहीं करते हैं केवल मौनकोंही धारण करते हैं
हेराजन् सुंदर चंचल हेलनाकी न्याईं अलकां जिन्हकियां अरु अनेक भावों करके चंचल
हैं अरु नेत्र जिन्हके ऐसीयां स्त्रीयां रामचंद्रजी को आनंद नहीं करतियां हैं जैसे हरणियां

वा॰सा॰ मंदिरों मेहलों विषे इस्त्रियां हैं सो रामचंद्रजी को बुलाओ ने वास्ते फूलना करतियां
६ हैं तिन्ह के साथ भी क्रीड़ा नही करते हैं जैसे वर्षा की धारा साथ बबीहा खेलनाहै तैसे
भोग पदार्थोंमों प्रीती नंही करतेहै ऐसा विरक्ताहै ८ हेराजन् मनिगणों करके खचित मुकट
कंकणादिक भूषणों की सामग्री रामचंद्रजी को प्रीति नंही करती है जैसे नदन नाराग
ण स्वर्ग तें अपने गिरने कों नही प्रीत करते ९ पृथिवी के भोगों कों तुछ मानतेहैं हेराजन्
क्रीडा करतियां इस्त्रीओं के देखनेसों बहते हुवे पुष्पोंकी सुगंधी वाले पवनों विषें शोभायमान
कुंजभवनों विषें रामचंद्रजी अत्यंत खेदकों प्राप्त होते हैं १० जौनसा राजा लोगों के भोगने
योग्य पदार्थ हैं अत्यंत स्वाद वालाहै अत्यंत सुंदर है मन को हरने हारा है तिसको देखक
र मानों अंसूजल करके नेत्र भरे गयेहै ऐसे रामचंद्रजी उसी पदार्थ करके खेदको प्राप्त हो
तेहैं ११ हेराजन् श्रीरामचंद्र जी नृत्य विलासों विषें नगर किआं वेश्याओंको देख करके इस

के प्रति जिस प्रकार का उपदेश किया है तिस उपदेश को तुम मेरे प्रति कहो तुम द याह्रूपी अमृतके समुद्र हो १२ श्रीबालमीकीजी कहते हैं हेशिष्य जिस समय विश्वामित्र जी अपने यज्ञकी रक्षा के लिये श्रीरामचंद्रजी को ले जाने को राजादशरथ के पास आये हैं तिस समय में श्रीराजा रामचंद्रजी के सेवकों को पूछना भया रामचंद्र जी कहां हैं अरु क्या करते हैं तब श्रीरामचंद्र जी के सेवक राजा रामचंद्र जी का वैराग्य कहते भये १३ हे राजन् श्रीरामचंद्र जी अपने दिन के भोजनादि व्यवहार को हमारे यत्न करके बहु त बेनती करके सायंकाल विषे प्रसन्न वदन होय करके किसी समयमें करतेहैं अथ वा किसी समयमें नहीं भी करते हैं ऐसे विरक्त जैसे जानीदेहैं १४ स्नान विषे देवताकी पूजा विषे अरु दान विषे भोजनादिकों विषे दुःखी मन जैसे जानीदे हैं हमारी बिनती करकेभी तृ प्ति पर्यंत भोजन नहीं करतेहैं खान पान सें भी विरक्त जानीदे हैं १५ हे राजन् चंचल जो

वा·प्र·रामचंद्र देह के अभिमान को नहीं करता है राजा होने की भी वांछा नहीं करता है सुख दुःखादि वृत्तिओं विषें हर्ष शोक नहीं करता है २९ हेराजन् रामचंद्र जी दिन दिन प्रति पीले वर्ण को प्राप्त होता है अरु दिन २ प्रति वैराग्यकों प्राप्त होताहै जैसे शरद्ऋतु के अंतमें वृक्षपत्र पुष्प फलों करके रहित होता है तैसें विषय भोग की वृत्तितें रहित भयाहै अरु निर्वासन भया है ३० हेराजन् रामचंद्र अपने पास बैठे प्रीति वाले सुहृत जन को ऐसे शिक्षा करता है हे भाई तूं भोगों विषें मन को मत कर यह भोग देखने मात्रही सुंदरहै अंतकालमों शोक दुःख को देने हारे है ३१ हेराजन् रामचंद्र जी अनेक प्रकार के ऐश्वर्य भूषण कर शोभायमान भई कथा प्रसंग करो सभामों प्राप्त भई स्त्रियों विषें आत्म नाश को नहीं प्राप्तभये को देखताहै स्त्री प्रसंग करके आत्माका विस्मरण होताहै ३२ हेराजन् रामचंद्र संसारके कार्यमों आसक्त भये

९

लोकनकों ऐसे कहता है यह लोकोंने परमानंदकी प्राप्तिके साधन विना काम भोग की अनेक चेष्टा करके हृथा आयुषा गवाई है ३३ हेराजन् रामचंद्र राज्य प्राप्ति से विरक्त मन हैं तुम चक्रवर्ती राजावनों ऐसे कहते अपने सेवक कों वकवाद करते विक्षिप्त पुरुष को जैसे लोक हसता है ऐसे हसता है अरु आदर नहीं करता है ३४ हेराजन् श्रीरामचंद्र जी किसी के कहे हुवे वचन को नहीं श्रवण करता है आगे आप प्राप्त भये को देखता भी नहीं है जोन से संसार में उत्तम पदार्थ है तिन्ह मों सर्वत्र अनादर करता है जैसे सोवते पुरुष को पदार्थ का ज्ञान नहीं होताहै ऐसे रामचंद्र जी को वैराग्य करके कछुभी नहीं भासताहै ३५ जो श्रीरामचंद्रजी आकाश विषें कमल को देखे अथवा आकाश में हृक्षों के महा वन को देखे तो भी यह माया का विलास ऐसाही है ऐसे मन मों विचार करके आश्चर्य कों नहीं मान

वा·सा· ताहै ३८ हे राजन् श्रीरामचंद्रजी सुंदर स्त्रीयोंके बीच स्थित होता है तो भी कामदे॰
११ वके बान श्रीरामचंद्र जी के मन को वेध नहीं करते हैं जैसे पक्की शिलाको वर्षा ज॰
ल कियां धारां नहीं प्रवेश करतियां हैं ३९ हेराजन् रामचंद्र ऐसा विचार करके आपना॰
सर्वस्व अर्थि जनों कों देने चाहता है यह धन आपदा का मुख्य निवास है हे मन॰
तूं धन की वांछा क्यों करता है यह बाकी कछु नहीं रहेगा धनका त्यागना चंगा है ३९
हे राजन् श्रीरामचंद्र इस प्रकार के श्लोकों को गायन करते हैं यह आपदाहै यह सं
पदा है यह मनकी कल्पना से मोह उदय भयाहै सच्चा नहीं है ३९ हेराजन् रामचंद्र वैरा
ग्य करके ऐसा कहता है यह लोक दुःखकों पाइ कर ऐसा कर लावता है मैं मराहूं मैं अ
नाथहूं तदभी वैराग्य कों प्राप्त नहीं होताहै यह आश्चर्य है ४· हेराजन् रामचंद्र अपने कोउ
पदेश करने को आएकों राजाकों अथवा ब्राह्मणकों आगे देखकर मूर्खकी न्याई आदर नहीं

कर्मोहै भली तरां जानता भी नहीं है ऐसी एकाग्रताकों प्राप्त भयाहै ४१ हेराजन् श्री रामचंद्र यह निश्चय करके स्थिर चित्त भया है जौंनसा यह जगत नाम करके इंद्र आ ल विस्तारको प्राप्त भया है सो सत्य नहीं है कूठाही उदय भयाहै ४२ हेराजन् रामचंद्रकों शत्रु विषे आपने आप विषे राज्य विषे माता विषे संपदा करके विपदा करके बाहिर के पदार्थों विषे आदर अनादर कोई नहीहै ४३ हेराजन् रामचंद्रजी अंतः करण विषे य ह निश्चय करता है मेरे को यन करके अरु माता करके राज्य करके जगत की चेष्टा करके क्या अर्थ है अरु प्राण त्याग करने कों भी तत्पर भया है ४४ हेराजन् श्रीरामचं द्रजी भोगों विषे अरु जीवने की आयुषा विषे राज्य विषे मित्र विषे अरु पिता विषे अरु माता विषे उदासीनता को धारता है जैसे पराये घर विषे उदासीनता होती है श्रीरामचंद्र जीने ऐसी उदासीनता करी है ४५ हेराजन् रामचंद्रजी का ऐसा

स्वभाव भया है अब श्रीरामचंद्रजी को संपूर्ण ऐश्वर्य सहित जितना संसार के पदार्थों का जाल है सो नागफांसी सिरीषा भासता है ॥४६॥ इसते उपरांत राजा दशरथ ने रामजी को सभा में बुलाया तो सभामोंआये श्रीरामचंद्रजी को विश्वामित्रजीने प्रश्न किया हे रामचंद्रजी तुमने खेद की अवस्था क्यों धारण करी है तो श्रीरामचंद्रजी अपने विचार को विश्वामित्र प्रति कहते भये ॥४७॥ श्रीरामचंद्रउवाच हे मुने यह संसार में सुख क्या है संसार की उत्पत्ति का विस्तार क्या है इसका नाम क्या है लोग मरण के लिये जन्म लेना है अरु जन्म के लिये मरना है ॥४८॥ हे मुने यह जगत के भाव केवल अपनी मन की कल्पना करके आपसमों मिलते हैं कैसे हैं लोहा की सिलाका सिरीषे आपसमों भिन्न भिन्न हैं ॥४९॥ हे मुने झूठी मन की कल्पना करके हम लोग खेंचे गये हैं कैसे जैसे रेतीमों सूर्यकी

किरणों की चमक करके जल की भ्रांति होती है तो मृग जल की तृस्ना करके दौड़ जाइ प्राप्त होते हैं ॥ ५० ॥ हे मुने मेरे को राज्य करके क्या सुख है अरु भोगों करके हर्ष क्या है मैं कौन हूं मेरे को यह कौन वस्तु प्राप्त भयी है जो मिथ्या पदार्थ है सो मिथ्याही होवे इन्ह पदार्थों में किसको कौन नाम करके कौन फल प्राप्त भया है ॥ ५१ ॥ हे मुने ऐसे विचार करते मेरे को जगत के सब भावों में विरक्ती आई है जैसे मुसाफर को निर्जल देशमों विरक्ति होती है ॥ ५२ ॥ हे मुने यह लोक जड़ जैसे हैं प्राणरूपी पवनों करके वृथा श्वास शब्द करते हैं जैसे बन विषे पवन करके पोले बांस शब्द करते हैं ॥ ५३ ॥ हे मुने यह संसार दुःख कैसे शांत होये ऐसी चिंता करके मैं तपिआ हूं जैसे पुराणा वृक्ष अपने कोटर मों प्राप्त भई उग्र अग्नि करके दग्ध होता है ॥ ५४ ॥ हे मुने यह संसार के दुःख रूपी पथरों करके मेरा हृदय

भया है में अपने लोकों की लज्जा के भयते अस्तु प्रकट करके रोदन नहीं करता हूं ॥ ॥५५॥ हे मुने यह धन जो है सो चिंता समूह के चक्र फिरते हैं गृह जो है सो आपदा रूप इस्त्रीयों के उत्पत्तिस्थान हैं मेरे को आनंद नहीं करते हैं ॥ ५६ ॥ हे मुने यह लोक अपने पराये में तब लग कोमल वृत्ति करके वर्तमान हैं जब लग लक्ष्मी के मद करके कठोर नहीं भया है जैसे पवन के वेग करके ओस उड़ जाती है ऐसे लक्ष्मी मद करके शील उड़ जाता है ॥ ५७॥ हे मुने लोक मा में पंडित होइ अरु बीर होवे या उपकारीहोवे अथवा शीलवंत होवे तो भी लक्ष्मी का मद सभ को मलीन कर देता है जैसे गरद की मुठी करके मणी मलीन होती है ॥ ५८ ॥ हे मुने पुरुष संपदा वाला होय जिस में अन्याय अरु गर्व अरु बल अरु व्यसन अरु पाप नहीं होवे और लोक जिसकी निंदा नहीं करे और जो पुरुष शूरबीर होवे आपनी स्तुति नहीं करे और जो राजा होवे

·सा· ९

हैं ॥ ५९ ॥ हे मुने यह ल-
न्याय करने को समदर्शी होवे यह तीन पुरुष संसार में दुर्लभ हैं ॥ ५९ ॥ हे मुने यह ल-
क्ष्मी देखने में सुंदर है चित्त हत्ति को खेंच लेती है अरु आपनें के आधीन रहती है दाम
माल में नष्ट होती है सर्पिणी की न्याई चित्त हत्ति को चेर लेती है जैसे फल पुष्पों करके
युक्त लतापास के हृदय को चेर लेती है ॥ ६० ॥ हे मुने आयुषा नये दल के अग्र भाग में
स्थित भई जलबिंदु के न्याई चंचल है जैसे कोई विदेश पुरुष अकस्मात् घर को त्याग
कर चला जाता है तैसे आयुषा शरीर को अकस्मात त्याग कर जाती है ॥ ६१ ॥ हे मुने
विषय रूपी सर्पों का प्रसंग करके जिन्ह पुरुषों के चित्त शिथल होगये हैं तिन्ह पुरुषों
कों आत्मा का विवेक दृढ नहीं भया है तिन्हका जीवना दुःखों का कारण है ॥ ६२ ॥
हे मुने हमने देह का स्वरूप जान लिया है निश्चय मान लिया है अब संसार रूपी घटा
में बिजुली की न्याई चंचल ऐसी आयुषा में आनंद नहीं मानते हैं ॥ ६३ ॥ हे मुने जो पुरुष

पवन के रोकने को योग्य मानें आकाश के वेडने के योग्य मानें तरंगों को पकड़ने को योग्य मानें सो पुरुष आयुषा की स्थिरता को योग्य मानें ॥ ६४ ॥ हे मुने जिस जीवने करके परमात्मा वस्तु की प्राप्ति होवे जिस करके फेर शोक नहीं करना वने जौंनसा जीवना परमआनंद की प्राप्तिका स्थान है सो उत्तम जीवना कह्या है ॥ ६५ ॥ हे मुने वृक्षभी जीवते हैं मृग पंछी भी जीवते हैं जिस का मन अपने संकल्प विकल्प रूपी मन न व्यापारतें रहित होय करके स्थिर होय गया है सोही जीवता है ॥ ६६ ॥ हे मुने जगत विषें सो ही जीव जन्मे हैं तिह्न का जीवना सफल है जौंन से यहां फिर जन्म नहीं लेते हैं और सभ ही आवा गमन के गये हैं ॥ ६७ ॥ हे मुने निर्विवेकी पुरुष को शास्त्र पठना भार है राग द्वेष वाले को तत्त्व ज्ञान भार करता है जिसको शांति नहीं है तिसको मन की कल्पना भार करती है जिसको आत्मज्ञान नहीं है तिसको देह अपना भारा है उसको मोक्ष सुख

प्राप्त नहीं होता है ॥६८॥ हे मुने सुंदर रूप अरु आयुषा अरु मन अरु बुद्धि अरु अहंकार और इच्छा कीये हुये मनोरथ जो हैं यह सभही दुर्बुद्धि पुरुष को दुःख देने वारे हैं जैसे भार उठावने वाले को आपही उठाया हुआ भार दुःख देता है ॥६९॥ हे मुने जौंनसा दीर्घ दुःख है अरु अत्यंतउग्र दुःख है अरु भारी दुःख है सो सभही अहंकार से प्रकट भये हैं जैसें खदिर वृक्ष से अंगारे प्रकट होते हैं ॥७०॥ हे मुने अहंकार के वशातें जो जो मैंने भोगिआ है अरु जोजो होम किया है अरु जोजो कर्म किया है सोसो सभही मिथ्या है अहंकार से रहित हो नाही सत्य पदार्थ को प्राप्त करता है ॥७१॥ हे मुने सो अहंकार चिरकाल का उग्र वैरी है तिसको धार कर में भोजन नहीं करता हूं अरु जलपान नहीं करता हूं भोगों को कैसे भोग करों ॥७२॥ हे मुने पुत्र अरु मित्र अरु इस्त्रियाद जगत का विस्तार आत्म ज्ञान बिना अहंकार नाम वैरिने पसारिया है ॥७३॥ हे मुने अहंकार करके यत्न करके

जो जो किया है सो सो सर्व आपदा का स्थान है अरु असत्य है अंतःकरण मों उपाधिभूत है उत्तम गुणों से रहित है तो हे मुने अहंकार को त्यागकर जो मैने करना है सो उपदेश तुम मेरेको करो॥७४॥ हे मुने यह चित्त कियां शुभ वृत्तियां अनेक कल्पना रूप शय्या विषें लीन भईयां हैं अरु अब लग सावधान नहीं होतियां हैं तिस कारण कर में संताप को प्राप्त भया हूं॥७५॥ हे मुने समुद्र के पान करने तें अरु सुमेरुपर्वत के उठावने तें अरु अग्नि के भक्षण करने तें भी चित्त का रोक बड़ा कठिन है तिसतें चित्त यत्न करके रोकने योग्य है ॥७६॥ हे मुने चित्त जगत के पदार्थों का कारण है अरु चित्त के होनेते त्रैलोक्य बना है अरु चित्त के क्षीण भयेते त्रैलोक्य क्षीण होना है चित्त यत्न करके जीतने योग्य है॥७७॥ हे मुने अनेक जगत के सुख चित्त सें प्रकट होते हैं अरु विवेक बलते चित्त शांत भयेते सुखदुःख सभ शांत होते हैं॥७८॥ हे मुने तृष्णा नाम वाली विषज्वाला करके मैं दग्ध भया

हूं जैसे तृष्णा रूपी ज्वाला का संताप शांत होवे सो मेरे को अमृत के सिंचन करके भी नहीं बन
ता है ॥७९॥ हे मुने अपनी आत्मा पदवी प्राप्त होने को हमारी बुद्धि समर्थ नहीं है हम
लोक चिंता के जालमें मोहित भये हैं जैसे जाला विषें पंछी फसजाता है ॥८०॥ हे मुने
यह लोक चिंता त्याग करके दुःख कों त्याग करना है तृष्णा रूपी विसूचिका को दूर करने
को चिंता त्याग करना ही महामंत्र कहेया है ॥८१॥ हे मुने यह तृष्णा रोग पीडा की दूती
है सो गंभीर मन वाले पुरुष कों भी अपने वश करलेती है जैसे सूर्य कीयां किरणं कम-
लकों अपने सन्मुख करलेती हैं ॥८२॥ हे मुने तरवार की धारा अरु वज्र की ज्वाला अरु
तपे हुवे लोहे कीयां चिनगां तैसी तीक्षण नहीं हैं जैसे हृदय विषे स्थित भई तृष्णा तीक्षण
है ॥८३॥ हे मुने यह तृष्णा एकही है त्रैलोक्य को निशानों की न्याई वेध करती है देह वि-
षे स्थित है तो भी लखी नहीं जाती है संसार समुद्र सें ऐसे प्रकट भई है जैसे क्षीर समुद्रसें

मदिरा प्रकट भई है ॥८४॥ हे मुने यह कलेवर ही अहंकार रूपी पुरुष का घर है सो भा
में नष्ट होवे भामें रहे मेरेको इस करके कोई अर्थ नहीं है ॥८५॥ हे मुने यह देह रूपी घर
कैसा है मल करके युक्त ऐसे विष समूह के भांडेओं के संग्रह वाला है अरु अस्नान रूपी
खारे द्रव्य करके भरा है सो मेरे को प्रिय नहीं है॥८६॥ जिह्वा रूपी वा नदी ने रोकआ मुख
रूपी द्वार करके भयान के दंतादिक हडीआं प्रत्यक्ष ही देखी परती हैं ऐसा देह रूपी घर मेरे
को प्रिय नहीं है॥८७॥ नखरूपी खुपरी नामे कीडों काय रहे कुत्तेके भौंकने न्याई स्वास शा-
ब्दवाला है ऐसा देह रूपी घर मेरे को प्रिय नहीं है॥८८॥ समस्त रोगों का स्थान है त्रिवली
आं अरु चिटे केशोंका नगर है समस्त दुःखरूपी शत्रुन का घेरने का घर है ऐसा देह रू-
पी घर मेरेको प्रिय नहीं है॥८९॥ हे मुने मरण के समय मों जौनसे देह गेह इंद्रिय
धनादिक जीव के साथ नहीं होते हैं सो सभ ही कृतघ्न हैं तिन्ह विषे बुद्धिवान पुरुषों

कों क्या विश्वास है॥८०॥हे मुने यह देह वृद्धावस्था मों वृद्ध होता है अरु मरण समय मों मृत होता है अरु भोगवान को अरु दरिद्र कों देह एक समान है॥८१॥ हे मुने जौंन से देह मो दृढ विश्वास करते हैं अरु जौंनसेजगत की स्थितिमों नित्यता मानते हैं सो पुरुष मोह-रूपी मदिरा करके मतवाले हैं तिह्नको वार वार धिककार है॥८२॥ हे मुने देह का मैं नहीं मेरा देह नहीं ना यह मेरा है ना मैं इसका हों ऐसे निश्चय वाले जो हैं सो उत्तमपुरुष हैं हे मुने जिसने बिजुली बिषे शरद ऋतुके बदल मों गंधर्व नगर मों जिसने स्थिरता मानी है सो देह को भी नित्य माने॥८३॥ हे मुने चंचल है स्वरूप जिस का अनेक कार्य भार तिसके तरंग हैं ऐसे संसार समुद्र मों जन्म पाय करके बालक अवस्था के बल दुःख देने वाली है॥८५॥ हे मुने जौंनसीयां चिंता बालक अवस्था में हृदय को पीडा करातियां हैं सो चिंता म-रण मोभी नहींहैं न वृद्धावस्थामो हैं ना रोगपीड़ामों हैं ना आपदामो हैं ना योवन मो हैं ८६

हे मुने जौनसे बालक अवस्थाकों सुंदर मानते हैं सो मूढ है अरु व्यर्थ बुद्धि है तिन्ह का चित्त नष्ट भया है उन्हको धिक्कार है ॥९७॥ हे मुने मन स्वभावतें चंचल है बालपना उसतेंभी चंचल है सो दोनों जब मिले तो चंचलतातें कौन बचावने वाला है ॥९८॥ हे मुने स्त्रीयों के नेत्रोंने अरु बिजुलीके पुंजोने अरु अग्निकी ज्वाला पुंजोंने अरु तरंगोंने बालपनातें चंचलता लीनी है ॥९९॥ हे मुने बालपना में गुरुतें भय होता है अरु माता पितातें भय होता है लोकोंतें भय होता है अरु बड़े बालकतें भय होता है अरु बालपना भय का घर है ॥१००॥ हे मुने महानरकों का बीज है सदैव भय देने हारा है ऐसे यौवन करके जौंनसे नहीं नष्ट भये हैं सो और किसी करके नहीं नष्ट होते हैं ॥१०१॥ हे मुने हृदय विषे अंधेरा करने हारी है ऐसी यौवन रूपी जो अज्ञानकी रात्रि है तिसतें भयानक रूप वाला शिव पीडरता है ॥१०२॥ हे मुने बुद्धि निर्मलभी है विशालभी है जितनी है तितनी यौवन करके

मलीन होतीहै जैसे वर्षा ऋतुमें नदी मलीन जल होती है ॥१०३॥ हे मुने सो इस्त्री सुंदर रहैं सो कुचभारे हैं सो उत्तम बिलास हैं सो सुंदर मुखहै ऐसी चिंता करके यौवनमें मन जीर्ण होताहै॥१०४॥ हे मुने यौवन जैसे जैसे चढता जाताहै तैसे तैसे कामवासना अल्पविचार के नाश वास्ते विस्तार को प्राप्त होतियां हैं॥१०५॥ हे मुने तब लग रागद्वेष रूपी पिशाच वर्त्तमान होतेहैं जब लग यौवन रूपी रात्रि संपूर्ण अस्त नहीं होती है ॥१०६॥ हे मुने जौनसा विनय करके शोभायमान है अरु उत्तम लोकोंका आश्रय है दया करके उज्वल भया है अरु गुणों करके युक्त है ऐसा यौवन दुर्लभ है जैसे आकाश विषे बन दुर्लभहै॥१०७॥ हे मुने इस्त्रीमांस की पुतली है अंगोंका पिंजर बनाहै नाडी अरु अस्थीयां इन्ह करके रचना करीहै ऐसी इस्त्री के शरीर में सुंदर वस्तुक्या है॥१०८॥ हे मुने कामी पुरुषको प्रश्नहै हे भाई त्वचा मांस कफ रक्त जल अरु नेत्र इन्हको भिन्न भिन्न

करके देखले इस्त्री में क्या सुंदरता है तूं क्यों वृथा मोहित भया है ॥९॥ हे मुने यह पुरु-
ष रूपी हाथी है सो इस्त्री रूपी मान सरोवर में लीन भये हैं तीक्ष्ण ग्राम रूपी अंकुशों करके
भी सावधान नहीं होते हैं॥१०॥ हे मुने यह इस्त्रीयां केशारूपी शिखा धारण करनियां हैं
स्पर्श करने को महा कठिन हैं देखने में ही प्रिय हैं पापरूपी अग्नि कियां ज्वाला हैं पुरुष-
को तृणकी न्यांई दग्ध करतियां हैं॥११॥ हे मुने यह इस्त्रीयां कैसी हैं दूरमोरही प्रज्वलि-
त भई हैं ऐसे नरक रूपी अग्नि प्रचंड करने कियां जोर समिधां हैं ॥१२॥ हे मुने यह संसार
में जन्म रूपी सरोवर हैं तिन में पुरुष रूपी मछ हैं सो चित्त रूपी कीच्चड़ में फस करके भ-
मते हैं तिनके पकडने वास्ते काम वासना रूपी डोरी बनी है अरु इस्त्रीयां लोहे के कुंडे के
आगे आटे कियां पिंडी बनीयां हैं॥१३॥ हे मुने यह इस्त्रीयां संपूर्ण दोष रूपी रत्नोंकी पि-
टारीयां हैं अरु दुःखोंकी संगली है इस करके मेरेको क्या प्रयोजन है॥१४॥ हे मुने

जिसके इस्त्री है तिसको भोगोंकी इच्छा होती है इस्त्री रहित पुरुषको भोगोंका कहां ठिका नाहै इस्त्रीको त्याग करके जगत का त्याग होताहै फिर जगतको त्याग करके सुखी होता है ॥१५॥ हे मुने यह भोग देखने मात्र सुंदर हैं अरु तरे नहीजाते हैं अरु चंचल हैं मरण रोग वृद्धावस्था इनके भयतें मैं भोगोंका यत्न नहीं करता हूं अरु प्रीतिभी नहीं करता हूं अरु शांतिको पाय करके परमपदवी कों प्राप्त होऊंगा॥१६॥ हे मुने बालकपना को शिताबी जवानी ग्रसती है अरु युवा को जरा ग्रसती है इन्ह की आपसमें बड़ी कठोरताकों तुम देखो॥१७॥ हे मुने वृद्ध पुरुषको अपने चाकर अरु पुत्र अरु इस्त्रीयां अरु बांधव अरु सुहृत विक्षिप्तपुरुषकी न्यांई सभही हसते हैं अनादर करते हैं ॥१८॥ हे मुने वृद्ध पुरुषको एक तृष्णा बढ़ती है सो तृष्णा कैसी है अदीनता दोषकरके भरीहै अरु अपार है अरु हृदय को संताप के देने हारी है संपूर्ण आपदाको अकेली आप सहाय करने हारी है ॥१९॥ हे मुने

अब मैंने क्या करना है परलोकमों मेरेको बहुत कष्ट प्राप्त होवेगा वृद्धावस्थामें ऐसा भय आय कर प्राप्त होता है कैसा है जिसको दूर करने का कोई उपाय नहीं है ॥२०॥ हे मुने मैं कौन हूं मेरेको कोई नहीं मानता है मैं अब कुछ नहीं कर सकता हूं चुपकैसे बैठा है ऐसी दीनता हुइ पुरुष को प्रकट होती है ॥२१॥ हे मुने अब मेरे को स्वाद वाला भोजन अपने घरते किस समयमों कैसे प्राप्त होवेगा ऐसे प्रकार करके वृद्धावस्था दिन रात्रिमें चित्तको दाह करती रहती है ॥२२॥ हे मुने वृद्धावस्था मरण रूपी राजाकी सेना चलीआती है वह कैसीहै धौले केशादी चामर है जिसका अनेक चिंता अरु रोग करके जिसके निशान हैं ॥२३॥ हे मुने वृद्धावस्था रूपी ओस करके शीतल भया है ऐसे देह रूपी मंदिर में इंद्रियो रूपी बालक चलने को समर्थ नहीं होते हैं ॥२४॥ हे मुने वृद्धावस्था रूपी चूना का लेप करके चिट्टे भये देह रूपी महिल के अंदर शिथिलता अरु पीड़ा अरु आपदा

यह तीव्र नायका सुख करके निवास करती हैं॥२५॥ हे मुने वृद्धावस्था करके जो जीवना है सो दुष्ट जीवना है ऐसे जीवन करके क्या जीवना है वृद्धावस्था जगत में किसी पुरुषने नहीं जीती है कैसी है संपूर्ण परलोक की वासनाको दूर कर जड़ करती है॥२६॥ हे मुने यह जरा तृणको अरु रेणुको अरु इंद्रको अरु सुमेरुको अरु पत्रकों समुद्रको यह जरा सबकों जीर्ण करके निगल लेती है अरु अपने उदरको सब पदार्थों करके भर लेती है॥ २७ हे मुने इस जगत में ऐसा पदार्थ कोई नहीं है जिसको सर्व भक्षी जो काल है सो ग्रास नहीं करता है जैसे वडवानल जो अग्नि है सो समुद्र के जलको नाश करती है अरु भस्म करदेती है॥२८॥ हे मुने यह काल भगवान महात्मा ब्रह्मादिकों को भी क्षणमात्र भी नहीं देखता है अरु यह काल अनेक प्रकारकी विश्वको ग्रस लेता है अरु कालही विश्व रूपताको प्राप्त भया है॥२९॥ हे मुने यह जो काल है सो भूतरूपी जो मच्छर है तिन्ह का

मा
२८

उडंबर फल बना है अरु वह कैसे है भूत रूपी मछर क्षणमात्र में नाश होने वाले हैं
तिन्ह करके भरे हुवे जो अनेक ब्रह्मांड हैं तिन्ह का उंबल फल बना है ॥२०॥ हे मुने
जिन्ह गुणों करके लोक रूपी रत्नमाला स्थित होती है अरु काल तिसी को अपने अंग की
शोभा वास्ते सर्वभूतों का बारं बार संहार करता है ॥२१॥ हे मुने दिशाभी शून्य होती हैं
अरु देशभी उलट पलट होते हैं अरु पर्वत भी चूर्ण होते हैं यह सभ काल की गत है
हमारे शरीरों की कौन गिणती है ॥२२॥ हे मुने काल करके स्वर्गभी नष्ट होता है अरु
आकाश भी लीन होता है अरु पृथवी भी क्षीण होती है इस लोकों में कौन सी स्थिरता
है ॥२३॥ हे मुने काल करके समुद्रभी शुष्क होजाते हैं अरु तारामंडलभी गिर जाता है
जोगसिद्ध अरु तपसिद्ध भी नाशको प्राप्त होते हैं अरु हमारी क्या गिनती है ॥२४॥
हे मुने दैत्य दानवभी चूर्ण होते हैं अरु काल करके ध्रुव अपनी ध्रुवपदवी से गिरता है

अरु अमर हुवेभी मरजाते हैं अरु हमारी क्या गनी है॥३५॥ हे मुने कालने इंद्रभी मुखों
करके ग्रहण करीदा है यमभी फांसीओं करके बांधीदा है अरु पवन भी चलनेतें रहित
होताहै अरु कालमें हम क्या वस्तु हैं॥३६॥ हे मुने काल चंद्रमाभी आकाशने लीन होता
है अरु सूर्यभी खंडित होताहै अरु अग्निभी मग्न होती है तिसतें हमारी क्या गिनती नहीं है ३७
हे मुने कालतें ब्रह्माभी संहारको प्राप्त होताहै अरु विष्णुभी प्रलयको प्राप्त होताहै अरु
शिवभी अभाव को प्राप्त होताहै हमारी क्या संख्याहै॥३८॥ हे मुने यह जगत का स्वरूप
सुंदरभी है तोभी इसमें एक ओर दुःख है अरु ऐसा कोई आनन्द को करने वाला अर्थ-
उपदार्थ नहीं जिस करके चित्त विश्रामको प्राप्त होवे॥३९॥ हे मुने बालका पन खेलने
मो ही जाता है अरु यौवन विषे मनरूपी हरणा इस्त्री रूपी कंदरामों जायकर जर्जर
होता है अरु वृद्धावस्था करके शरीर जीर्ण होताहै लोक वृथा दुःख भोगताहै॥४०॥

हे मुने वृद्धावस्था रूपी तुषार करके सुक गई है अरु ऐसी देह रूपी कमलनी को छो
ड करके जीव रूपी भ्रमर क्षणमात्र में चलागिया है तो यह संसार रूपी लोक का
सरोवर शुष्क होगिया है॥४१॥ हे मुने यवयव यह पुराणा होता है तब तब मृत्यु शरीर में
अति प्रीति करता है अरु वृद्धावस्था रूपी बेल नये पत्रों करके बढती है अरु देहरूपी बे
ल मनुष्यों की शुष्क होजाती है॥४२॥ हे मुने तृस्ना नदी उग्रवेग वाली है अनेक पदार्थों
कों बहाय कर लेजाती है तट बिषें संतोष रूपी वृक्षों कों छाड्कर बहती है॥४३॥ हे मुने
यह देह रूपी बेड़ी है अरु वह त्वचा चर्म करके मडी है संसार समुद्र में डोलती है अ
रु पंच प्राण पवनों करके थरथराती है अरु इंद्रियां रूपी मकरों ने डुबाय दी है॥४४॥ हे
मुने यह मन रूपी मृग है सो तृस्ना रूपी लताओं के बन में फिरता है अनेक कामनारूपी
शाखाके सैंकड़े गह्व रोमे भ्रमते हैं अरु कालक्षेपना करते हैं सो किस फलको प्राप्तहोते हैं ४५

हे मुने ऐसे जो महात्मा पुरुष संसार में सो दुर्लभ हैं वह कैसे हैं अत्यंत कष्ट में अरु खेद करके अरु मोह करके रहित हैं अरु सुखकी प्राप्ति विषे हर्षको अरु गर्वको नहीं धारण करते अरु वह कैसे हैं स्त्रीयों करके जिनका अंतःकरण नहीं जीतिया गया है॥४६॥ हे मुने जौन से पुरुष रणरूपी समुद्रको तर जाते हैं कैसा है हाथीयों की घटारूी भारी तरंग हैं जिसके उन्ह-कोमें शूरवीर नहीं अरु मानता हौं जौनसे मन है तरंग जिसका ऐसे देह अरु इंद्रियोंके समुद्रको तरे तिसको मैं शूरवीर मानता हूं॥४७॥ हे मुने ऐसी किसीकी भी कोई क्रिया नहीं देखी है वह कैसी है जिसमें आद से लेकर फलपर्यंत क्लेश नहीं है अरु जिसमें कुछ आशा करके चित्तकी हानि नहीं भारी है अरु जिसको प्राप्त होयकर लोक विश्राम को प्राप्त होते हैं॥४८ हे मुने ऐसे पुरुष जगत में दुर्लभ हैं जौनसे कीर्ति करके पुरुष जगत को पूर्ण करते हैं-अरु प्रतापों करके चारो दिशाओं को पूर्ण करते हैं अरु संपदा करके घरको पूर्ण करते हैं-

अपने पराक्रम करके लक्ष्मी उपार्जन करते हैं अरु अखंड है धैर्य जिनका॥४९॥ हे मुने भावें यह पुरुष पर्वतों के किलियों में रहे अरु भावें वज्र के बने घर के अंदर रहे तोभी संपूर्ण आपदा अरु संपदा जौनसी प्राप्त होनी है सो जहां रहे तहांही आपही वेग करके बहुत शिताबी आय प्राप्त होतीहै॥५०॥ हे मुने वृद्धावस्था करके युक्त जो पुरुष हैं सो बडे विषाद करके युक्त होता है अरु बड़े दुःख की अवस्था कों प्राप्तभया है अरु देह की अंत कालकी अवस्थामों अरु अपने पीछे धर्म करके रहित जो भाव किये हे तिन्हको सिमरण कर्ताहै अंतःकरण मों दग्ध होताहै॥५१॥ हे मुने धर्मअर्थ काम इन्हकी प्राप्तिने किया है अरु मोक्षमार्ग का विघ्न जिन्होंने ऐसी क्रिया करने करके पहिले वृथा दिनों कों व्यतीत करके यह जो पुरुषों का चित्त है सो कैसा है चंचल मयूर के परों सरीखा चंचल हैं अरु अब किस उपाय करके विश्राम कों प्राप्त होवे॥५२॥ हे मुने यह लोक अपने कर्मों

के फलों करके आपही वंचना को प्राप्त होना है अरु कैसेहैं क्रिया फल आगे आय कर प्राप्त भये हैं अरु तौभी प्राप्त नहीं भये जैसे हैं नदी के भारी तरंगों की न्याई चंचल हैं अरु देव वशाते प्राप्त भये हैं अरु उलटे हैं लोक सुखको चाहते तौभी कर्म फल दुःख देते हैं॥५३॥ हे मुने यह कार्य किये हैं अरु यह करते हैं यह हमारी भावना मों हैं यह हमारे कार्य हमको निरंतर भले हैं इस प्रकार इस्त्रीयों के साथ वार्ता करते लोकके चित्त को वृद्धावस्था पर्यंत अनेक कार्य जीर्ण करते हैं॥५४॥ हे मुने जैसे वृक्षों के पत्र पुराणे समय करके गिरते हैं अरु फ़िर इकट्ठे होय कर नये पत्र प्रकट होते हैं अरु फ़िर गिर पड़ते हैं ऐसे विवेक रहित जो लोक हैं सो अनेक दिनों कर उत्पन्न होयकर आपसमों मिलकर कितने दिनों कर नाश को प्राप्त होते हैं॥ ५५ ॥ हे मुने दिन मों इधर उधर चारो तरफ़ फ़िरके रात्रमों घर को प्रवेश करके विवेकी लोकों का समागम बिना अरु शुभ कर्मों बिना—

कौंनसे सुख करके लोक निद्रा को प्राप्त होते हैं॥५६॥ हे मुने अपने बल करके सभ शत्रुनसाइ दिये हैं अरु चारो तरफते संपदा प्राप्ति भई है जब लग यह लोक के सुखों कों पुरुष भोगता है इतने मो मृत्यु अकस्मात् सिरके ऊपर आयकर के प्राप्त होती है॥५७॥ हे मुने यह जितना जीवों का समूह निरंतर संसार मों चला आता है अरु निरंतर ही चलाभी जाता है अत्यंत चंचल है जैसे समुद्र में अनेक प्रकार के तरंगोंकियां माला उदय होती हैं और क्षणमों लीन होती हैं॥५८॥ हे मुने यह इस्त्रीयां जगत में सुंदरता करके मनको हर लेती हैं अरु प्राणों के हरने को तत्पर भई हैं नखदलोंकी न्याई रक्तही वस्त्र जिन्हके हैं अरु चंचल भ्रमरों की न्याई श्याम अरु चंचलही हैं अरु नेत्र जिन्ह के सो इस्त्रीयां अरु पुरुषों को मोहित करने लिये विष हृतोंकीयां लता उत्पन्न भई हैं॥५९॥ हे मुने यह जगत में पुरुषों को इस्त्री पुत्रादि व्यवहारकी

जो माया है सो तीर्थों के मेलियों के समागम जैसी है अरु कैसे लोक अपने आप हथा उ-
रे परेते आय मिलते हैं अरु एकस्थान विषे इकट्ठे होने का संबन्ध है जिन्हका फेर अप-
ने अपने सभही चले जाते हैं अरु तैसेही कर्म योग करके संसार में समागम होता है
अरु अपने अपने कर्म योग करके वियोग भी होता है॥६०॥ हे मुने ऐसी कौन लोक वि
षे दृष्टि हैं जिन्हमों माया नहीं देखीदी है अरु ऐसा कौन भोग हैं जिन्हमों दुःख अरु अ-
ग्निका दाह नहीं है ऐसी कौन प्रजा है अरु जौनसी क्षण भंगुर नहीं हैं अरु ऐसी कौन
क्रिया है जिन्हमों माया नहीं है॥६१॥ हे मुने कल्प पर्यंत है अरु आयुषा जिन्हकी ऐसे
जो ब्रह्मा दिक हैं सोभी अपने कल्पादिक काल की संख्या पूरी भई संते अरु काल के
वस होते हैं अरु तिसतें हे मुने काल के जालमें बड़े छोटे सभ एक सरीखे नाश को प्राप्त
होते हैं॥६२॥ हे मुने पर्वत सर्वत्र पथरों के बने हैं पृथ्वी सर्वत्र मृतिका की बनी है इत

सर्वत्र काष्ट के हैं अरु देह सर्वत्र मांस की है अरु इस जगत में अपूर्व पदार्थ कोई नहीं है अरु विकार ते रहित भी कोई नहीं है सभ पदार्थ विकार वाले हैं ॥६२॥ हे मुने जौनसा यह कुछ स्थावर अरु जंगम जगत में देखीदा है सो सम्पूर्ण स्थिर नहीं है वह सुप्न के समागम सरीखा है ॥६३॥ हे मुने संसार में जौनसा स्थान खवे समुद्र जैसा महा डूंघा देखीदा है सो अस्थान दूसरे दिन बदलों की घटा करके युक्त उच्चा पर्वत जैसा बन जाता है ॥६४॥ जौनसा पर्वत बनों करके युक्त है सो आकाश पर्यंत ऊंचा देखीदा है अरु वह पर्वत दिनों करके पृथिवी के समान होता है अथवा कूहा बन-ताहै ॥६५॥ जौनसा अंग आज सुंदर वस्त्रों करके छादन करीदा है अरु अनेक माला भूष-णों करके शोभाय मान होताहै सो शरीर दूसरे दिनमों नष्ट होय करके दूर देशोंमो लगा न होवेगा ॥६६॥ अरु जौनसा पुरुष आज बड़ा तेज वाला है अरु पृथिवी मंडलमों राज्य-

व॰ सा॰
३८

करना है अरु सोई पुरुष दिनों करके भस्मकी ढेरी होताहै ॥६७॥ अरु जौनसे अस्थान में आज नगर देखीदा है अनेक लोकन के संचार करके शोभाय मान है फिर उसी स्थानमों दिनों करके निर्जन बन सिरीखा उजार होता है ॥६८॥ अरु जौनसे स्थानमों आकाश पर्यंत ऊंची भयानक झाड़ी देखी है तहां पताका करके छादित भई महा नगरी देखीदी है ॥६९॥ अरु जौनसी लता पत्र अरु पुष्पों करके शोभाय मान जलकी नदेयों करके युक्त सुंदर बनी देखी दीहै सो दिनों करके मारवाड़ की पृथिवी के तुल्य होती है ॥७०॥ हे जलाशय का स्थान सूका मैदान होता है अरु सूका मैदान स्थान जलमय होताहै हे मुने काष्ट जल अरु तृण करके सहित संपूर्ण जगत दिनों करके उलटा पलटा होताहै ॥७१॥ हे मुने वह पिछले संपदा वाले बडे दिन सो पिछेकियां उत्तम संपदा अरु वह पिछे कियां उत्तम किया यह सभही अब जैसे हमारे को कथामात्र स्मरण होती है

तैसे ही हमभी कथामात्र स्मरणमों होवेंगे॥७२॥ पुरुष पशुभाव को प्राप्त होते हैं अरु
पशु पंछी मनुष्य भावको प्राप्त होते हैं अरु देवता जो हैं सो मनुष्य अरु पशु पंछी होते
हैं हे मुने इहां जगतमों स्थिरता को कौन प्राप्त भया है॥७३॥ हे मुने ब्रह्मा अरु विस्नु अरु
रुद्र और सभही भूतजाती जो है सो नाशको ही प्राप्त होती है जैसे समुद्रके जल नाश
होनेको वडवा नामी अग्निको जाइ प्राप्त होती है॥७४॥ हे मुने स्वर्ग अरु पृथिवी अरु पवन
अरु आकाश अरु पर्वत अरु नदियां अरु दिशां यह सभही नाश रूपी वडबा अग्निको प-
ज्वलित करने को सुकी लकड़ी हैं॥७५॥ हे मुने यह संसार में आपदा क्षणमात्र मों प्राप्त
होती है अरु संपदा प्राप्त होती है अरु क्षणमात्र मों मृत्युभी प्राप्त होता है अरु क्षणमात्र
मों जन्मभी प्राप्त होता है हे मुने वह कौनसा पदार्थ है जो क्षणमों नाश अरु क्षणमों उत्प
न्न नहीं होता है॥७६॥ हे मुने यह संपूर्ण पदार्थ तब लग चेष्टा करते हैं जब लग नाश-

रूपी राक्षस स्मरण को नहीं प्राप्त भया है॥७७॥ हे मुने यह जगत में घड़े का वस्त्र होना दे- खिया है अरु वस्त्रका घड़ा होना देखिया है सो जगतमें नहीं देखिया है जो उलटा पलटा नहीं होता है॥७८॥ हे मुने यह मन क्षणमें आनंद को प्राप्त होता है अरु क्षणमात्र में व्या- कुलता को प्राप्त होता है अरु क्षणमात्रमें सौम्यता को प्राप्त होता है अरु क्षणमें उग्रताको प्राप्त होताहै नटवियोंसिरीखा अनेक स्वरूप वालाहै॥७९॥ हे मुने यह संसार रूपी महावृक्षों ते अनेक प्राणिरूपी फल दिन दिन प्रतिगिरते हैं अरु वह कैसे हैं अपने अपने कर्म फलतें इकट्ठे भी पकते हैं अरु भिन्न भिन्न भी पकते हैं अरु काल रूपी पवन के वेगतें अपने अप ने स्थानते गिराये हैं॥८०॥ हे मुने इसप्रकार के दोष रूपी वनकी प्राप्त करके मेरा चित्त दग्ध भयाहै अरु तिसमें भोगोंकी आशा नहीं फुरती है जैसे निर्जल देशमें जलपानकी आशा न हीं फुरती है॥८१॥ हे मुने जनोंके चित्तमें दुर्जनता बढती है अरु सज्जनता क्षीणताको प्राप्त

होती है और अत्यंत कठोर है दिन दिन प्रति कठोरता को धारता है ॥८२॥ हेमुने मेरे को
सुंदर बाग बागीचे आनंद को नहीं करते हैं अरु इस्त्रीयां सुख को नही देतीआं हैं अरु
द्रव्य की आशा मेरे को हर्ष नहीं करती है और मैं अपने मन करके आपही शांति को धा-
रता हूं ॥८३॥ हेमुने मैं वैराग्य करके मरण की इच्छा नही करता हूं अरु जीवने को
चाहता नहीं हूं जैसे मैं स्थित होयेसे ही स्थित होता हूं अरु मैं चिंताज्वर करके रहि-
त भया हूं ॥८४॥ हेमुने मेरेको राज्य करके क्या प्रयोजन है अरु भोगों करके क्या
प्रयोजन है अरु द्रव्यों करके क्या है और उद्यमों करके क्या है यह सभ अहंकार वश
ते हैं सो अहंकार मेरा अब नष्ट भया है ॥८५॥ हेमुने जो अब निर्मल बुद्धि करके चि
त्तकी चिकित्सा नहीं करूं तो फिर चित्त की चिकित्सा का समय कहां मिलना है ॥८६
हेमुने विष को हम विष नहीं मानते हैं अरु इंद्रियों के विषयों को विष मान ते हैं

अरु विषय रूपी विष जन्म जन्म को मारते हैं विष इस एक देह को ही मारता है॥८७॥
हे मुने ज्ञानी पुरुषों को सुख बंधन नहीं करते हैं अरु दुःखभी बंधन नहीं करते हैं अरु मि-
त्रभी बंधन नहीं करते हैं बांधव भी बंधन नहीं करते हैं॥८८॥ हे मुने देह को छेदन कर
ने वास्ते कर पत्र शास्त्र करके छेदन की पीडा को सहिने को मैं समर्थ हूं परंतु संसार के व्य-
वहार सें उत्पन्न भये हैं ऐसे विषरूपी शास्त्रों करके नाशको सहिने को समर्थ नहीं होताहूं
हे मुने अब मेरा मन भ्रमता जैसा है अरु मेरे को भय प्राप्त भया है अरु अंग मेरे सभ कंपा
य मान होते हैं जैसे पुराणे पत्र वृक्ष से गिरते हैं॥९०॥ हे मुने मेरे को यह आश्चर्य है
क्या आश्चर्य है वह तुच्छ है अकस्मात् उपाधि बिना ही मनते ही भ्रम उदय भया है अरु
हे मुने ऐसा कौन स्थित होनेका स्थान है यहां शोक भय नहीं प्राप्त होते हैं॥९१॥ हे मुने
जनक राजा से लेकर भले लोक भये हैं सोभी संसार के व्यवहारों में रहेहैं अरु वह

उत्तम जनों की गिनती मो कैसे भये हैं॥९२॥ हे मुने तुमभी कौनसी उत्तम दृष्टि को आश्रय करके संसार मल से रहित भये हो अरु महात्मा होय कर जीवन मुक्त भये हो अरु अपनी इच्छा करके विचरते हो॥९३॥ हे मुने ऐसा पदार्थ तुच्छ भी पृथिवी मों नहीं अरु स्वर्ग विषे भी नहीं है अरु देवत्यों के विषे भी नहीं है जिसको तुम सरीखे उत्तम बुद्धि वाले संतजन अपनी संगती करके उत्तमता को नहीं प्राप्त करते हैं॥९४ हे मुने तुम धैर्य वाले पुरुषों मों श्रेष्ट हो संसार रूपी अग्नि मों विचरण करते हो तो भी संसार के संताप को किस युक्ति करके नहीं पावते हो जैसे पारा अग्नि मों दग्ध नहीं होता है तिस युक्ति को तुम मेरे प्रति कहो॥९५॥ हे मुने साधु पुरुष निश्चय करके जिस उपाय करके दुःख से रहित भये हैं तिसको तुम जानते हो तो मेरा मोह निवृत्त करने के वास्ते मेरे प्रति कहो॥९६॥ अथवा हे मु ने ऐसी युक्ती कोई नहीं है

अथवा मेरेको प्रकट करके सुनावना भी कोई नहीं है अरु मैं आपभी उत्तम विश्राम को प्राप्त नहीं होता हूं तो मैं सभ भावना को त्याग करता हूं अरु अहंकार से रहित भया हूं हे मुने नातो मैं भोजन करौं अरु नातो मैं जलपान करूं अरु नातो मैं वस्त्र धारण करूं अरु स्नान दान भोजनादि व्यवहार को नहीं करता हूं॥ ९८॥ हे मुने केवल अकेला ही रहूंगा अरु निःशंक होय कर ममता को त्याग करके ममता से रहित होय कर मौनको धारण करता हूं जैसे चित्र विषे लिखी होई पुतली होती है तैसेही स्थित होता हूं॥ ९९ हे मुने नातो मैं इस देहका हूं अरु ना मेरा और कोई है जैसे तेल बिना दीपक शांत होताहै तैसे सभ कुछ त्याग करके इस देह को त्याग करता हूं अरु शांति सुख को प्राप्त होता हूं॥ २००॥ श्रीवाल्मीकिरुवाच॥ हे भरद्वाज श्रीरामचंद्र इतना बचन कहि कर चुप कर जाते भये वह श्रीरामचंद्रजी कैसेहैं निर्मल पूर्णमासी के चंद्रमा की न्याई है स्वरूप

व॰सा॰ जिह्वका अ्रक बड़े उत्तम विचार के प्रकाश करके शोभाय मान है चित्त जिसका ओैसे
४५ विश्वामित्र जीके आगे मोन धार करके बैठ जाते भये जैसे चने बदलोंकी घटाओं को दे-
खकर बहुत बोलने का श्रमते खेद को प्राप्त भया ओैसा जो मोर है सो चुप होइ जाता है
आकाश में बदलों की घटा में स्थित भये जो सिद्ध हैं सो श्रीरामचंद्रजी के मुखारबिंद
से प्रकट भया हुआ बचन रूपी अमृत को पान करके अनेक प्रकारों के पुष्पों की वर्षा
करके राजा दशरथ की सभा को पूर्ण करके बचन कहते भये ॥ सिद्धाऊचुः ॥ हम
ने ब्रह्माजी के दिन के आदि से चारों तर्फ भ्रमते रहे हैं परंतु आज श्रीरामचंद्रजीके
मुखार बिंद से प्रकट भया करणों बिषे अमृत का आनंद करने हारा अपूर्व बचन
सुना है ॥ २ ॥ रघु कुल के चंद्रमा ओैसे जो श्रीरामचंद्रजी ने जो उत्तम बचन वैराग्य क-
रके कहिआ है सो ओैसा बचन बृहस्पती जी से भी नहीं कहिआ जाता है ॥ ३ ॥ अहो-

आज हमारे बड़े पुण्य उदय हुवे हैं यह जो श्रीरामचंद्र जी के मुखारबिंद से प्रकट भ-
या उत्तम वचन हमने सुनिया है यह वचन बुद्धि को बहुत आनंद के करने हारा है ४
फिर यह वचन कैसा है जो शांति प्राप्ति के करने को अमृत सेभी उत्तम है अरु अति सुं-
दरहै जो श्रीरामचंद्रजी ने कहा है इस वचन के सुनने करके हम परम बोध के आनंदको
प्राप्त भये हैं॥५॥ और आकाश मो जो विचरणे वाले देवता सो राजा दशरथ की सभा में
बैठे हुवे जो मुनि है सो श्रीरामचंद्रजी को वचन कहते भये अहो आज हमारे बड़े भाग्य
उदय हुवे हैं सो उत्तम गुणों करके जो बिराज मान ऐसे जो श्रीरामचंद्रजी ने परम उदा-
र बानी कही है वह बानी कैसी है वैराग्य रस करके भरी हुई है॥६॥ तदनंतर आकाश
तें उतर कर सभा में आइ कर देवता अरु सिद्ध अरु मुनि निश्चय करके कहने योग्य बो-
धवाला प्रकट श्रीरामचंद्रजी को प्रीति करके वचन कहते भये॥७॥ यह जो श्रीरामचंद्र

जीके बचन किसको विस्मय नहीं करता है प्रकट है अरु अर्थ जिसका स्पष्ट है पद अरु
अक्षर जिसके सभ को इष्ट है अरु तुष्टि के करने हारा है॥८॥अरु उदार है अरु सभ को
प्रिय है उत्तम लोगों के योग्य है अरु व्याकुल नहीं है अरु प्रकटभी है जोभी सैंकड़े पुरु-
षों में किसी उत्तम बुद्धिवाले पुरुष को सर्व प्रकार के चमत्कार करने हारा है ॥ ९॥
हे रामचंद्रजी तेरे बिना ऐसी उत्तम बानी किसी को भी नहीं प्रकट होती है वह कैसी है
इष्ट अर्थ को समर्पण करने मों एकांत करके चतुर है अरु विवेक रूपी फलको देने-
हारी है॥१०॥ हे रामचंद्रजी जौनसे यश के निधि जो पुरुष हैं उन्हकी बुद्धि रूपी ल-
ता तुम्हारे बचन को श्रवण करके प्रकाशमान होती है अरु यत्न करके सार की प्राप्ति
भी होती है॥११॥सभा मों स्थित भये सभके प्रति यह बचन कहते हैं श्रीरामचंद्रजी
के समान कोई पुरुष नहीं है फिर कैसे हैं श्रीरामचंद्रजी उदार बुद्धि वाले हैं अरु

विवेक वाले हैं अरु यही हमारी बुद्धि हैं अरु श्रीरामचंद्रजी के समान तीन लोक में कोई भया नहीं है अरु न आगे को ऐसा होवेगा ॥१२॥ जो श्रीरामचंद्रजी के मन का मनोरथ सिद्ध नहीं होवे तो सभही हम लोग अरु मुनि लोग नष्ट बुद्धि हैं अरु वह कैसे हैं श्रीरामचंद्रजी सभ लोभ को चमत्कार करने हारे हैं अरु मुनि लोगभी सभको चमत्कार करने हारे हैं ॥१३॥ इति श्रीवासिष्टसारे मोक्षोपाये वैराग्यप्रकरणं प्रथमं ॥ १ ॥

अथ मुमुक्षुव्यवहारप्रकरणं ॥ प्रथम विश्वामित्रजी के बचन ॥ श्रीरामचंद्रजी प्रति। हे रामचंद्रजी शुकदेव ने अपने पिता व्यासदेवजी को प्रश्न किया है हे पिताजी मेरे को मोक्षमार्ग का उपदेश करो जिस करके में संसार के दुःखों से रहित होजाओं श्रीव्यासदेवजी शुकदेव को कहते भये॰ हे शुकदेव यह संसार अपने मन के विकल्प से प्रकट भया है यह इसका निश्चय है क्याहै यह संसार सार से रहित है अरु स्वभाव

करके दग्ध है सो अपने मन के विकल्प का क्षय भये संते जिस प्रकार के क्षीण होता है तिस प्रकार कों तुम कों राजा जनक कहेगा ॥ १ ॥ तदनंतर श्रीशुकदेव जी पिता की आज्ञा ले करके राजा जनक के पास जाते भये राजा जनक शुकदेवजी को नमस्कार करके पूजा करता भया और शुकदेवजी को आगमन कारण पूछता भया तो शुकदेवजी मोक्षमार्ग के उपाय का प्रश्न राजा जनक को करते भये तो राजा जनक शुकदेवजी को वचन कहता भया हे शुकदेव चेतन्य स्वरूप एक आत्मा पुरुष है अरु वह कैसा है निर्लेप है और असंग है अरु तिसते भिन्न और कछु नहीं है वह पुरुष अपने संकल्प वशाते बंध को प्राप्त भया है अरु संकल्प से रहित होवे तो मुक्त होता है ॥ २ ॥ हे बाल तूं संसार तरने को महावीर है अरु जिस कारण तें तेरी बुद्धि भोग रूपी दीर्घ रोगों से विरक्त भई है वैराग्य करके संसार से मुक्ति हो

तीहै और क्या श्रवण करने को चाहता हैं ॥३॥ हेशुकदेव जैसी ज्ञान करके पूर्णताते-
रेको भई है ऐसी पूर्णता तुम्हारे पिता व्यासदेव जी को नही भई है वह कैसे हैं व्यासदेव
जी सर्व प्रकार के ज्ञान के निधी हैं अरु चिरकाल से तप करने मों स्थित हैं अरु अनेक
प्रकार के ज्ञान करके मुक्त नही होती है अरु मुक्त के लिये चित्त की एकाग्रता करने यो
ग्यहैं ॥४॥ हेरामजी राजा जनकने इस प्रकार का उपदेश किया तो शुकदेव परमा-
त्मा वस्तु विषें एकाग्रता को धारण करते भये ॥५॥ अरु वह कैसे हैं शोक भय अरु खे-
द करके रहित भये हैं निस्पृह होते भये संसय रहित होय कर समाधि करने वास्तें
सुमेरु पर्वत को चले जाते भये ॥६॥ तहां जाय कर निर्विकल्प समाधि करके दश-
हज़ार वर्ष स्थित होइ करके चित्त की शांति होता है ॥७॥ हेरामचंद्र जी सो शुकदेव
मन की कल्पना रूपी कलंक से रहित होते भये शुद्ध अंत करण वाले होते भये निर्मल

अरु पवित्र ऐसे परमात्मा की पदवी में एकता को प्राप्त होते भये कैसे जैसे जलका एक किणका समुद्र के जल में एक रूप होता है ॥ ८ ॥ विश्वामित्र श्रीरामचंद्र जी को कहते हैं जाना है परमात्मा का तत्व जिस करके ऐसे मन का निश्चय करके यही लक्षण है वह क्या है संपूर्ण भोगों के समूहों को फेर चित्त नहीं चले ॥ ९ ॥ भोग वासना करके संसार का बंधन दृढ होता है भोग वासना शांत होने करके जगत में बंधन शांत होता है ॥ १० ॥ हे रामचंद्रजी वासना की जो शांति है सो ही ज्ञानी पंडितों ने मोक्ष कहेया है अरु पदार्थों की वासना की दृढता ही बंधन कहेया है ॥ ११ ॥ भोगों की इच्छा त्याग कर कितने लोक यश वास्ते भोगों का त्याग करते हैं सो दंभी हैं तिसतें हे रामचंद्रजी यश की इच्छा बिना भी जिस कों भोगों विषे रुचि नहीं होती है सो जीवन्मुक्त कहेया है ॥ १२ ॥ विश्वामित्रजी वसिष्टजी को कहते हैं हे वसिष्टजी सो ही ज्ञान

है सोही शास्त्रों का अर्थ है अरु वही ज्ञान का अखंड निश्चे है जौंनसा वैराग्य करके युक्त भले शिष्य को उपदेश करीदा है॥१३॥ हे मुने वैराग्य से रहित दुष्ट शिष्य को जो कुछ उपदेश करीदा है सो अपवित्र होता है जैसे कापिला गोका दुग्ध कुत्ते के चमड़े मों अपवित्र होता है॥१४॥ हे मुने जौंन से राग अरु भय अरु क्रोध सें रहित भये हैं अरु अभिमान रहित हैं पाप रहित हैं ऐसे तुम्हारे सरीषे उत्तम पुरुष जो उपदेश करते हैं अरु तिसमों श्रवण करने हारे की बुद्धि विश्राम कों प्राप्त होती है अरु सभही संशय दूर होते हैं॥१५॥श्रीवसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजी को कहते हैं हेरामजी परमात्मा रूप सूर्य के प्रकाश मों जौंन से त्रैलोक्य रूपी रेणु के किणके अरु पूर्व काल मों उत्पन्न होइ होइ कर लीन भये हैं सो अब संख्या मों नहीं आवते हैं॥१६॥जौंनसी अब की त्रैलोक्य गणोंकी कोटी वर्त्तमान है सो भी किसीने भी गिणी नहीजानी है॥१७॥जौंनसी आगे

परमात्मा रूपी समुद में जगत के सृष्टि रूप तरंग उत्पत होवेंगे अरु तिन्हकी संख्याकी कोई वार्त्ता भी नहीं है ॥१८॥ हे रामचंद्रजी जैसे संकल्प की रचना मिथ्या है अरु मनोरथ के बिलास मिथ्या हैं अरु जैसे इंद्रजाल की माया मिथ्या है अरु जैसे एर्बली कथा के अर्थ नाम मात्र हैं अरु उष्ट्र पवन बेग करके अरु पृथिवी का चलना मिथ्या है जैसे बालक को पिशाच का त्रास लगण मात्र होता है अरु आकाश में मुक्ता मणी की माला मिथ्या भासती है जैसे बेड़ी के चलने में किनारे के वृक्षों का चलना मिथ्या ही भासता है अरु जैसे स्वप्न के ज्ञान में नगरादि भान मिथ्या होता है अरु जैसे आकाशपुष्पों का फुरणा मिथ्या होता है तैसेही इस पुरुष कों जगत का उत्पत होने का फुरणा मिथ्या है अरु मृत होना भी मिथ्याही है ॥२१॥ हे रामजी जब यह पुरुष मृत होता है जगतमें जन्म के अनुभव को प्राप्त होता है फिर अपने स्वरूप का स्मरण भूल जाता है तो जगत का फुरणे

इष्ट होता है फेर जीव रूपी आकाश में यह लोक है ऐसा अनुभव इष्ट होता है फेर जन्म की इच्छा इष्ट होती है फेर मरणे का अनुभव होना है तो पर लोक की कल्पना करता है अरु परलोक में अनेक पुरुषों की कल्पना होती है तिन्ह पुरुषों में भी और पुरुषों की कल्पना होती है ॥२३॥ हे रामजी पुरुष के फुरणे में यह अनेक संसार भासते हैं जैसे केले की स्तंभ के अंदर अनेक त्वचा के आवरण होते हैं ॥२४॥ हे रामजी जौनसे मृत होते हैं तिन्हको पृथिवी आदि महा भूतों की गिनती नहीं है अरु जगत के क्रमभी नही है तद भी इन्हको जगत का भ्रम इष्ट रहते हैं ॥२५॥ हे रामजी यह अविद्या अनंत है अरु अनेक प्रकार के विस्तार वाली है अरु जड़ बुद्धि वाले पुरुषों को महादुस्तर नदी है अरु वह कैसी है अनेक प्रकार के जगत की सृष्टि रूपी तरंगों करके युक्त है ॥२६॥ हे रामजी परमार्थ रूपी विशाल समुद्र में जगत की सृष्टि के तरंग वारं वार प्रवृत्त होते हैं कितने

पहिले सिरीषे हैं अरु कितने और जैसे हैं ॥२७॥ कितने उत्पती करके मन करके अरु क्रम करके गुणों करके समान हैं अरु कितने आधे गुण वाले हैं कितने और प्रकार के हैं ॥२८॥ हे रामजी काल रूपी समुद्र में सृष्टि रूप तरंग तिसी प्रकार करके अथवा होर प्रकार करके वारं वार प्रसन्न होते हैं ॥२९॥ हे रामजी जौनसा ज्ञान विचार वाला पुरुष हैं सो अंतः करण करके स्थिर होता है उसके मन के विकल्प शांत होते हैं अरु स्वरूपके सार को जानने हारा है शांति रूप अमृत करके तृप्त होता है सो अविद्या के बंधनसें मुक्त होता है ॥३०॥ हे रामचंद्रजी जो पुरुष संदेह रूपी देह सें मुक्त भये हैं ऐसे बोध रूपी पुरुषों को आत्मा परमात्मा मो संदेह नही होता है अरु भेद भी नही होता है जैसे समुद्र के जल का अरु तरंग का भेद नही होता है ॥३१॥ हे रामचंद्रजी यह संसार मों भले प्रकार करके किये अपने पौरष करके सर्व जीवों करके सर्वपदार्थ

प्राप्त होते हैं २२ हे रामचंद्र जी भले संत पुरुषों ने उपदेश किया जो मार्ग है तिस करके जौन सा देह को अरु मन कों वरतावता है वही पौरुष है तिस बिना मन का इंद्रियों का वरताउना है अरु सोही विक्षिप्त पुरुष की चेष्टा है २३ हे राम जी जो पुरुष जिस अर्थ को चाहता है सो पुरुष तिस अर्थ के लिये उद्यम करता है तो उस अर्थ को पुरुष अवश्य मेव प्राप्त होता है अरु जो उद्यम नहीं करे तो नहीं प्राप्त होता है २४ हे रामचंद्रजी यह जगत में कोई एक जीव अपने उद्यम के यत्न करके त्रैलोक्य के ऐश्वर्य करके उत्तम इंद्र की पदवी को प्राप्त होता भया हे रामचंद्र जी कोई एक चैतन्य का प्रति बिंब अपने पौरुष के यत्न करके कमलके आसन उपर बैठ करके ब्रह्मा की पदवी को प्राप्त होता भया २५ हे रामचंद्रजी कोई एक पुरुष अपने उत्तम पुरुषार्थ करके अरु गरुड के ऊपर चढ करके पुरुषों

वृ॰ सा॰ ५८

में उत्तम ऐसा विस्व रूप भया है ३७ हे रामचंद्रजी एक कोई पुरुष यह संसार में पौरुष करके यत्न करके एक शरीर में आधा इस्त्री रूप और आधा पुरुष रूप होता है या वह कैसा है अर्ध चंद्र है मस्तक का भूषण जिसका ऐसे अर्ध नारीश्वर रूप भया है ३८ हे रामजी तिस पौरुष के दो प्रकार तुम जानों अरु एक पूर्व जन्म का किया अरु एक इस जन्म का है तिह में पूर्व जन्म का पौरुष इस जन्म के पुरुषार्थ करके जीतेया जाता है ३९ हे रामजी यत्न वाले दृढ अभ्यासों करके बुद्धि करके अरु उद्यम करके युक्त ऐसे पौरुषों करके पर्वत भी गिराये जाते हैं अरु पूर्व जन्म के पौरुष के गिराओने में क्या आश्चर्य है ४० हे रामजी इस जन्म का पौरुष भी दो प्रकार का है अरु एक शास्त्र से रहित हैं अरु एक शास्त्र की विधि करके सहित है अरु तिह में शास्त्र की विधि रहित जो पुरुषार्थ है सो अनर्थ को प्राप्त

करता है अरु शास्त्र की विधि सहित जो पुरुषार्थ है सो परमार्थ को प्राप्त करता है ४१ हे रामजी इह जन्म का पुरुषार्थ अरु पूर्व जन्म का पुरुषार्थ यह दोनों आपस में युद्ध करते हैं जैसे दोनो भैंसे आपस में युद्ध करते हैं अरु वह कैसे है एक बल करके पूर्ण है अरु एक निर्बल है तिन्ह में बलवान करके दुर्बल शांत होता है ४२ तिस तें परम पौरुष कों धार कर दंतों कर अरु दंतों को दबाइ कर हे रामचंद्र जी यह जन्म का शुभ पुरुषार्थ करके अरु अशुभ रूप करके उदय भये हुये पूर्व जन्म के पुरुषार्थ कों यत्न करके जीतने योग्य हैं ४३ हे रामचंद्रजी पूर्व जन्म का पुरुषार्थ मेरे को प्रेरणा करता है ऐसी बुद्धि यह जन्म के पुरुषार्थ करके दूर करने योग्य है जिस कारणतें सो बुद्धि यह जन्म के प्रत्यक्ष पुरुषार्थ से दुर्बल है ४४ हे रामचंद्रजी उद्यम को त्याग करके अरु उद्यम से रहित है सो मनुष्य रूप करके गधावने हैं ऐसे प्रारब्ध मानने हारेओं के बरो-

बर नहीं होने योग्य है अरु शास्त्र करके किया जो उद्यम है सो यह जन्ममें और अगले लोकमें दोनों में सिद्धि कर देता है ४५ हे रामजी उद्यम रूपी यतन को धारण करके यह संसार रूपी गर्भ से बल करके आपही निकलने योग्य है जैसे सिंह अपने बल करके अपने शत्रुन के बंधन सें निकस जाता है ४६ हे रामचंद्रजी प्रारब्ध को मान करके थोड़े अन्न पान को पाइ करके अरु आयुषा वृथा भस्म नहीं करने योग्य है अरु उद्यम करके रहित जो पुरुष हैं सो नरक के कीड़े होते हैं ४७ हे रामजी शुभ पौरुष करके शुभ फल प्राप्त होता है अरु अशुभ पौरुष करके अशुभ फल प्राप्त होता है प्रारब्ध कछु नहीं करता है ४८ हे रामजी जौंन से पुरुष कहते हैं कि प्रारब्धमय मेरे को प्रेरणा करता है ऐसे कहने वाले का मुख देख करके लक्ष्मी फिर जाती है जौंन से उद्यम नहीं करते हैं तिन्ह के मुख दग्ध होय गये हैं अरु उन्हकी दृष्टि श्रेष्ठ नहीं देखीदी है ४९ हे रामजी बालक

अवस्था तें भले प्रकार अभ्यास किये जो शास्त्र सत्संगादिक उत्तम गुण हैं तिह्न करके यतन करने करके अपना चाहेआ उत्तम अर्थ प्राप्त होता है पराल्भय व्यर्थ है ५० हे रामचंद्रजी यह जगत में महा अनर्थ कों करने हारा आलस्य नही होवे तो बहुत धन वाला बहुत शास्त्र पढने वाला कौन पुरुष नही होवे अरु आलस्य करके समुद्र पर्यंत संपूर्ण पृथिवी पराल्भय को मानते हारे अरु निर्धन है ऐसे जो मनुष्य रूपी पशु हैं अरु उद्यम से रहित हैं तिह्न करके भरी है ५१ हे रामचंद्रजी पहिले दिनों मोटा कर्म अप राध किया है सो आज के शुभ कर्म करके शुभ होजाता है अरु तैसेही पूर्व जन्म का अशुभ पराल्भय कर्म यह जन्म का शुभ कर्म करके शुभ होता है जैसे रोग पहिले होता है सो दुःख देता है अरु औषधी पीछे करते हैं अरु औषध करके रोग अरु दुःख दूर होते हैं ५२ हे रामजी जौनसे पुरुष शुभ कर्म करके अशुभ पराल्भय को नही दूर करता है

जो पुरुष अज्ञानी है वह सुख दुःखों के अधीन है अरु पुरुषार्थ वाला पुरुष स्वतंत्र होता है ५३ हे रामजी जौनसा पुरुष ईश्वर की प्रेरणा करके स्वर्ग को अथवा नरक को जावेगा तो वह सदैव पराधीन रहेगा अरु पशु रूपही रहेगा ५४ हे रामजी जौनसा पुरुष उद्यम करके उदार आचार वाला है सो पुरुष जगत के मोह सें मुक्त होता है अरु जैसे सिंह अपने बल करके पिंजरे से निकस जाता है ५५ जौनसा पुरुष कहता है कि मेरे को कोई प्रेरणा करता है तो मैं कार्य करता हूं ऐसे अनर्थ की दुष्ट कल्पना मों स्थित भया है अरु उद्यम को त्याग करता है सो नीच पुरुष है तिसका दूर से त्याग करना योग्य है ५६ हे रामजी संसार के हजारों कार्यों के व्यवहार आवते जाते हैं तिन्हमो सुखदुःखों गुरु शास्त्र की आज्ञा सें हर्ष शोक कों त्याग करके व्यवहार करने योग्य है ५७ हे रामजी यह जीव जन्म मरण रूपी रोग

को जान करके तिस की शांति के वास्ते ब्रह्म निष्ठ सद्गुरु सेवा करके अपना पौरुष रूपी उत्तम औषध करके मोक्ष को प्राप्त होवे ५८ हे रामजी यह पुरुष रोगादि कों से रहित मनुष्य देह को पाइ करके तैसे समाधान करे उद्यम करे जैसे फेर जन्म को नहीं प्राप्त होवे ५९ हे रामजी जौनसा पुरुष पुरुषार्थ करके प्रारब्ध को जीतने चाहता है सो पुरुष यह लोक में पर लोक में संपूर्ण वांछाकी सिद्धि को पावता है ६० हेरामजी जौनसा अपने पुरुषार्थ को त्याग करके प्रारब्ध के अधीन होइ रहता है सो अपने धर्म को अर्थ को काम को नाश करता है अरु आत्महत्या के दोष को प्राप्त होता है ६१ हेरामजी पुरुषार्थ के तीन रूप हैं सो कौन रूप है एक बुद्धि की सावधानता अरु मन की सावधानता तीसरी इंद्रियों की सावधानता इन तीनों की सावधानता तें कर्म फल का उदय होता है ६२ हेरामजीपुरुषार्थ की सिद्धि तीन प्रकार करके

होती है एक शास्त्र के वचन करके अरु सद्गुरोंके उपदेशाते अरु आपने निश्चय करके ६२ हे रामचंद्रजी अशुभ कर्मों विषे प्रवृत्त भये अपने चित्त को शुभ कर्मों विषे प्रवृत्त करे अरु शुभ कर्मों को यत्न करके करे सर्व शास्त्रों का यही निश्चय है ६४ हे रामजी शुभबुद्धि करके शुभ शास्त्र का अभ्यास आदि गुण प्राप्त होते हैं अरु शुभ शास्त्र अभ्यास आदि गुणों करके शुभ बुद्धि उदय होती है यह दोनों आपसमों बढ़ते हैं वह कैसे जैसे वर्षा काल विषे कमल अरु जल आपस मों बढते हैं ६५ हे रामजी जौंनसा दृढ अहंकार करके पूर्व जन्म मों जो कर्म किये हैं सोही दैव नाम करके कहे हैं ६४ हे रामजी जो पूर्व जन्म के कर्म हैं सोही दैव कहे हैं अरु दैव किस को कहते हैं कर्म कोही दैव कहते हैं अरु कर्म किस को कहते हैं जो मन की चेष्टा है तिसको कर्म कहते हैं सो मन पुरुष का स्वरूप है अरु प्राक्तन इन्ह

से भिन्न नहीं है यह हमारा निश्चय है ६५ श्रीरामचंद्र जी का प्रश्न॰ हे गुरु जी
जो पूर्व जन्म की वासना का समूह है सो मेरे को माया करके जैसे प्रेरणा करता है
तैसेही में प्रवृत्त होता हूं में पराधीन हूं अरु जो तुम मेरे को उपदेश करो तिसको में
करूं ६६ श्रीवासिष्ठजी कहते हैं॰ हे रामचंद्रजी में तेरे को इस कारण ते कह
ता हूं तू वासना को त्याग कर आलस्य को दूर कर अपने पौरुष करके यत्न करके
अखंड आनंद को प्राप्त होवेगा ६७ हे रामजी यह वासना रूपी नदी दो मार्ग करके व
हती है अरु शुभ मार्ग करके अरु अशुभ मार्ग करके तिसने अपने पौरुष के यत्न
करके शुभ मार्ग में युक्त करने योग्य है ६८ हे रामजी इसका यही उपाय है अशुभ
कर्मों विषे प्रवृत्त भये अपने मन को पौरुष रूपी यत्न के बल करके शुभ मार्गों विषे
प्रवृत्त कर तेरे को वैराग्य का विचार का बल प्राप्त भया है ६९ हे रामजी जब लग-

तेरे को दृढ तत्व ज्ञान नहीं भया है जब लग तैने परमात्मा का स्वरूप जानेआ- नहीं है तब लग तूं गुरों के बचन करके अरु शास्त्रों के प्रमाण करके जो निर्ण- य किया है तिसको आचरण कर ७० हे रामजी शुभ कर्म करने करके तेरे अंतः करन की मलीनता शुद्ध होवेगी निश्चय करके आत्मतत्व को जब तूं जानेगा तद तैने शुभ कर्मों की वासना भी त्यागदेनी ७१ हे रामजी यह शुभ कर्म करने वा- ला मार्ग उत्तम पुरुषों ने सेविआ है उत्तम बुद्धि करके इसको तू सेवन कर जब तेरा अंतः करण शुभ कर्मों करके वासना रहित होगा तो तूं शुभकर्मों को त्याग करके शोक सें रहित आत्म स्वरूप को प्राप्त होवेगा ७२ हे रामजी सृ- ष्टि के आदमों ब्रह्मा की इच्छा से मैं प्रकट होता भया तद मैं संसार के दुःखकी शांति वास्ते पिता को प्रश्न करता भया पिता मेरे को ज्ञान उपदेश करके बचन

·सा·
९६

कहता भया ७३ हे पुत्र अब तूं पृथ्वि लोकमें जंबू द्वीप है तिस मों भारत खंड के लोकों के अनुग्रह के कारण करके चला आता ७४ तहां जाय करके तुमने उत्तम बुद्धि करके कर्म काण्ड करने वाले पुरुषन को कर्म कांड उपदेश करना अरु आप भी कर्म कांडमों प्रवृत्ति करनी ७५ हे पुत्र जौन से विरक्त चित्त वाले पुरुष हैं महा बुद्धि वाले विचार करके उपदेश करके विरक्त पुरुषों कों तुमने ज्ञान के आनंद कों प्राप्त करने ७६ हे रामजी कमल सें प्रकट भये ऐसे पिता ब्रह्माजी के इतना उपदेश करके में पृथिवी लोक में प्राप्त भया हूं जब लग यह भूतों की सृष्टि रहेगी तबलग पृथिवी लोक में हमारी स्थिति है ७७ हे रामजी पृथिवी लोक में मेरे को कार्य करना कोई नही है पिता की आज्ञा करके लोकोंके उपकार लिये मेने यहां रहणा है इस कारण करके में स्थित भया हूं निरंतर शांत वृत्ति करके अहंकार रहित

बुद्धि करके व्यवहार के कार्य करता भी हूं तदभी अंतः करण करके नहीं कर-
ताहूं ७८ हेरामजी जनकादिक राजा भये हैं सो भी संपूर्ण विद्यामें राजाकी न्यांई
उत्तम है और अत्यंत गोप्य उपदेशों में राजाकी न्यांई गुप्त है ऐसा आत्मज्ञान कों
जान करके परम दुःख की शांति कों प्राप्त होते भये ७९ हे रामजी यह तुमको उ-
त्तम वैराग्य प्रकट भया है कैसा है सत पुरुषों कों चमत्कार करने हाराहै अरु
दुःखादि निमित्त विना भया है अरु अपने विवेक सें उत्पन्न है इस कारण ते यह
सात्विक वैराग्य है ८० हे रामजी दुःख कों प्राप्त होइ करके अरु मलीनता देखक-
रके सभ कों वैराग्य होता है सत्पुरुषों को विवेक करके उत्तम वैराग्य होता है ८१
हेरामजी विवेक करके संसार की रचना को अनित्य विचार करके जौंन से वैराग्यकों
प्राप्त होते हैं सो उत्तम पुरुष हैं ८२ हेरामजी परमात्मा परमेश्वर के प्रसादते तुम्हारे

सिरीषे पुरुष की विरले की सुभ बुद्धि विवेक को प्राप्त होती है ८३ हे रामजी ऐसी उत्तम बुद्धि जीवों को होनी कठिन है अरु बहुत उत्तम कर्म करके बड़े तप करके बड़े नियम करके महा दान करके अरु चिरकाल तीर्थ यात्रा तें अरु विवेकते दुष्ट कर्मका क्षय होत संते परमार्थ के विचार करनेमों जीवों कों अकस्मात् बुद्धि उत्पन्न होती है ८२ हेरामजी शीत वात आदिक संसार के दुःख जो हैं सो संतजनों विषे ज्ञान की युक्ति बिना कैसे सहिमों आवते हैं ८४ हेरामजी दुःख कीओं चिंता तृणों में आय करके अपने अपने समयमों मूढ नर को दाह करती हैं जैसें अग्नि की ज्वाला तृणों को दाह कर्ती है ८४ हे रामजी उत्तम है बुद्धि जिसकी अरु जानिया है आत्म तत्व जिसने भले प्रकार करके ज्ञान दृष्टि वाले पुरुष को संसार की चिंता दाह नहीं करती है जैसे वर्षा जिसके ऊपर अखंड होती है ऐसे बन को अग्नि की ज्वाला दाह नहीं करती है ८६ हे रामजी

इस कारण तें बुद्धि वान पुरुष ने तत्व जानने कों प्रमाण करके कहने वाला संशय-
रहित है अरु बुद्धि जिसकी असा जो तत्व ज्ञानी सत पुरुष प्रीति करके पूछने योग्य-
है ८७ हे रामजी प्रमाण करके युक्त उत्तम है अरु दया करके युक्त है चित्त जिसका-
असे सत्य पुरुष को जोंनसा अर्थ पूछेआ है तिसके उपदेश का वचन करके ग्रहण-
करने योग्य है जैसे वस्त्र करके केसर का रंग ग्रहण किया जाता है ८८ हे रामजी-
जोंनसा प्रमाण करके कहने वाले के कहने मों जो पुरुष नहीं स्थित होता है तिसते
दूसरा नीच पुरुष कोई नहीं है ८९ हे रामजी पूर्व वाक्य का पिछले वाक्य का संबंध
करने मों समर्थ बुद्धि वाले प्रति प्रश्न का उत्तर तत्व ज्ञानी पुरुष ने कहने योग्य है प-
शु समान जड बुद्धि नीच पुरुष को नहीं कहने योग्य है ९० हे रामजी जो जो मैं तेरे
प्रति कहता हूं सो सो तेरे ग्रहण करने योग्य है अरु यत्न करके अपने हृदय में धारतो

योग्य है अरु जो तेरे को धारना करने की इच्छा नहीं होवे तो तैने मेरे को पूछा नहीं सु-
नना ९१ हे रामजी मन बहुत चंचल है संसार रूपी बन का वानर है इस मन कों यत्न क-
रके सावधान करके परमार्थ की बानी श्रवण करने योग्य है ९२ हे रामचंद्र जी निरंतर
सत्पुरुषों की संगति करके विवेक प्रकट होता है अरु विवेक कल्प वृक्ष है भोग अरु
मोक्ष यह दोनों विवेक वृक्ष के फल हैं ९३ हे राम जी मोक्ष रूपी मंदिर के चार द्वार पा-
ल हैं वह कौन हैं शम अरु विचार अरु संतोष अरु सत संग ९४ हे रामजी यह चा-
रो यत्न करके सेवने अथवा तीन सेवने अथवा दो सेवने अथवा एक सेवना यह
द्वार मोक्ष रूपी राज मंदिर के द्वार को उघाड़ देते हैं ९५ हे रामजी अथवा सर्व प्रका-
र यत्न करके प्राण त्यागको निश्चय करके एक द्वार पाल को सेवना एक के वश भये
संते चारोही अपने वश होतेहै ९६ हे रामजी जौन से संसार मों दुःख हैं जौन सी

तृष्णा है अरु जौनसीयां असाध्य व्याधि है अरु चिंता है शांत भये चित्तों में नाशको प्राप्त होती है जैसे सूर्यों के मध्य मों अंधकार नष्ट होता है ८७ हे रामजी जैसे उग्र प्राणी अरु सौम्य प्राणी अपनी माता के दर्शन मों शीतल स्वभाव होते हैं अरु माता विश्वास करते हैं तैसें सर्व भूत शांत वृत्ति पुरुषों मों विश्वास कों प्राप्त होते हैं ८८ हे रामजी ऐसा सुख अमृत पान करके नहीं होता है अरु लक्ष्मी का आलिंगन करके भी ऐसा आनंद नहीं होता है जैसा आनंद अंतः करण मों शांति करके होताहै ८९ हे रामचंद्र जी शांति वृत्ति पुरुष कों पिशाच भी नहीं द्वेष करता है अरु राक्षस अरु दैत्य अरु शत्रु अरु व्याघ्र अरु सर्प शांति वाले पुरुष का द्वेष नहीं करते हैं ९० हे रामचंद्र जी जौनसा पुरुष शुभ अशुभ शब्द को श्रवण करके अरु कोमल कठोर कों स्पर्श करके स्वादवाला स्वाद रहित भोजन करके सुंदर और नहीं सुंदर

रूप को देख करके हर्ष को अरु खेद को नहीं प्राप्त होता है सो शांत हृति कहिया है १॥
हे राम जी जिसका मन मरण समय में युद्ध समय में उत्सव समय में चंद्र बिंब की न्याईं शीतल है अरु व्याकुल नहीं है सो पुरुष शांत हृति कहिया है २ हे रामचंद्रजी जिसकी दृष्टि अमृत के प्रवाह के न्याईं सर्व लोक के प्रति प्रीति युक्त प्रवृत्त होती है सो पुरुष शांत हृति कहिया है ३ हे रामजी तपस्वी गणों विषें बहुत ज्ञान वाले विषें यज्ञ करने वाले विषे राजों विषे अरु बलवानों विषें गुण वालें विषे शांत हृति पुरुष महिमा करके बिराज मान होता है ४ हे राम जी शम रूपी अमृत ऐसा है गुप्तभी नहीं रहिता है यह बड़ा भारी बल है इसकों धारण करके सतपुरुष लोक परम पदवी को प्राप्त होते भये तिस कारण ते तुम भी शांति क्रम को पालन कर तेरे को मोक्ष की प्राप्त होवेगी ५ हे रामजी विचार तें बुद्धि तीक्ष्ण होती है परम

वा॰सा॰ पद को देखती है संसार रूपी दीर्घ रोग की शांति वास्ते विचार उत्तम औषध है ९६ हे रा
७३ मजी अज्ञानी पुरुषों को अपने मन के मोह करके संसार रूपी वेताल है सो प्राणों को हर
लेता है जैसे रात्र मों आकाशमों देखिआ वेताल प्राण हर लेताहै यह संसार रूपी वेता
ल विचार करके लीन होता है ९७ हे रामजी जगत के सभ ही भाव अविचार करके सुंदर है
अरु असत्य है सो विचार करके नष्ट होता है ५ हे रामचंद्रजी पुरुष के अपने मन के मोह क
रके कल्पित किया है संसार रूपी चिर कालका वेतालहै बहुत दुःखकों देने हारा है सोविचा
र करके लीन होता है ८ हे रामजी मनमों ऐसा ज्ञान जो होवे मैं कौन हों यह संसार दोष
कैसे प्राप्त भया है ऐसे ज्ञानको विचार कहते हैं १० हे रामचंद्रजी ऐसा विचार करने यो-
ग्य है मैं कौन हूं यह संसार किसको है बुद्धिवान पुरुष आपदा मों भी यत्न करके आप-
ही उपाय सहित चिंता न करने योग्य है ११ हे रामचंद्रजी विचार रूपीनेत्र बहुत अंधकार

में नष्ट नहीं होता है बहुत तेजों विषे बढता नहीं है अंतराल भये संते भी देषता है यह विचार उत्तम नेत्र है १२ हे रामचंद्रजी कीचड़ में मीडक होना चंगा है मलमें कीड़ा होना चंगा है अंधेरी गुफामें सर्प होना चंगा है विचार रहित होना चंगा नहीं है १३ हे रामचंद्रजी यह विचार दृष्टि शांत वृत्ति वाले तुमको भी शोभित करके सी है पृथिवीमें कर्मोंकी सफलता कों करती है उत्तमता कों निश्चय करके प्रकट करती है अखंड स्वरूप परमात्मा का दर्शन करने हारी है १४ हे रामचंद्रजी संतोष परम कल्याण करता है अरु संतोष परम सुख है संतोष वाला पुरुष परम विश्राम कों प्राप्त होता है १५ हे रामचंद्रजी मौन से संतोष रूपी अमृत पान करके तृप्त भये हैं अरु शांति वृत्ति भये हैं तिन्हको यह भोगों की संपदा विष रूपी भासती है १६ जौंनसा नहीं प्राप्त भयेमें वांछा-से रहित है प्राप्त भयेमें प्रसन्न रहित है खेद भये ते जिसको खेद नहीं देखिआ है

वा॰सा॰ सो यह लोक में संतुष्ट कहिया है १७ हे रामचंद्रजी आशा की विवशाता करके चित्त।
७५ जिसका व्याकुल भया है संतोष सें रहित है ऐसे चित्तमों ज्ञानका प्रतिबिंब नहीं होता।
है जैसे मलीन शीशेमों मुख का प्रति बिंब नहीं होता है १८ हेरामजी संतोष करके ति-
न्ह पुरुषों के मन पुष्ट भये हैं तिन्हकों संपूर्ण संपदा आपही प्राप्त होती है जैसे चाकरगा-
नाकों आपही सेवा करते हैं १९ हेरामजी सुख दुःखमों संतोष करके सम दृष्टि करके
शोभाय मान है सो पुरुषो में राजा है तिसको आकाश मों चलने वाले देवता अरु मुनि
प्रणाम करते हैं २० हेरामजी हे महा बुद्धे मत संग जो है सो संसार के तरने मों पुरुषों
कों विशेष करके सर्वत्र उपकार करता है २१ हेरामजी सत्संग होनेतें शून्यता गुणों-
करके पूर्णता होती है अरु मृत्यु महा उत्सव रूप होता है अरु आपदा संपदा रूप हो
तीहै २२ हेरामजी जोंनसा पुरुष सत्संग रूपी गंगा करके स्नान करता है कैसी है गंगा

जी शीतल है और आनंद के करने हारी है अरु निर्मल है अरु पवित्र करने हारी है तिस पुरुष कों दान करके अरु तीर्थों करके तप करने करके अरु यज्ञ करने करके क्या अर्थ है २३ हे रामजी यह जगतमों सभतें साधु जन का समागम भले प्रकार करके उत्तम है और कैसा है आपदा रूप कमलनी शुकावने को बर्फ़ रूप है मोह रूपी धूर को उडावने को पवन रूपी है तिसते सत्संग साधु जनों का सभते अधिक ही उत्तम है २४ हे रामचंद्रजी साधुजन कैसे होते हैं जिन्ह की संशय रूपी ग्रंथि सभ छिन्न भई है वह आत्मा के स्वरूप को जानने हारे हैं अरु सर्व जनों करके मान्य है अरु प्रकार करके सेवने योग्य हैं संसार समुद्र के तरणेको उपाय भूत हैं २५ हे रामचंद्रजी सो पुरुष नरक रूपी अग्नी की सूकी समिधावने हैं जिन्ह पुरुषों ने नरक रूपी अग्नी कों शांत करने को बादल रूपी संत जनका आदर कर सेवा नहीं करी है २६ हे रामजी संतोष अरु

वा॰सा॰ सज्जनों का समागम अरु विचा अरु शम यह चार संसार समुद्र तरणे के लिये उपा-
७७ य हैं २७ हे रामजी संतोष परम लाभ है अरु सत्संग परम गती है अरु विचार परम ज्ञा-
न है अरु शम परम सुख है २८ हे रामजी यह चार संसार के भेदने के लिये उपाय हैं
जिन्ह पुरुषों ने यह चारों सेवे हैं सो पुरुष मोह जाल के संसार समुद्र से तरंग हैं २९
हे रामजी यह चारो में निर्मल उदय वाले एकका अभ्यास किये संते चारोंही बुद्धि
वान पुरुष को समही अभ्यास होजाते हैं ३० हे रामजी तुम यह चार उपाय की अखंड
संपदा युक्त हो तिस कारणतें मनके मोह कों हरने हारा मेरे कहे हुवे इस बचन का
श्रवण करो ३१ हे रामजी जिसका पुण्य रूपी कल्प वृक्ष फल देने को तियार भया हो-
य तो तिस जीवको मुक्ति लिये ऐसा वचन श्रवण करने को उद्यम होता है ३२ हे राम
जी पवित्र बचनों का पात्र उत्तम पुरुष होता है कैसे हैं वचन उदार हैं श्रवण करने हारे

को ज्ञान देने हारे हैं अरु नीच पुरुष उत्तम वचन श्रवण करने का पात्र नहीं होताहै ३३
हे रामजी यह मोक्षोपाय नाम संहिता सार रूपी ग्रंथ की मैने रचना करी है अरु बत्तीस ३२...
हजार श्लोक इसका परिमाण है जानने हारे को निर्वाण सुख कों देती हैं ३४ हे रामजी जैसे
जिस पुरुष की निद्रा दूर भई है तिस पुरुष को प्रकाश की इच्छा नहीं है तो भी दीपक प्रज्वलि-
त भये संते स्वभाव करके प्रकाश होता है तैसेही इस संहिता के अभ्यास करने हारा पुरुष
निर्वाण सुख की इच्छा नहीं भी करे तो भी इस संहिता करके निर्वाण सुख स्वभावतें होता
है ३५ हे रामजी इस संहिता मों युक्ति करके युक्त दृष्टांतो करके सार अर्थ करके युक्त वा-
क्य भिन्न भिन्न रचना किये हैं अरु इसमों प्रकरण ६ छः किये हैं ३६ हे रामजी इसमों
प्रथम वैराग्य प्रकरण है जिस करके वैराग्य बढ़ता है कैसे जैसे जलका सिंचन करके
निर्जल देश के वृक्षकों भी पत्रादिक होते हैं ३७ हे रामजी वैराग्य प्रकरण का एकहजार १५००

पंचशत श्लोक परिमाण है जिसके विचार करने करके हृदयमों ज्ञान प्रकाश मान होताहै जैसे शाणमों घसी भई मणी प्रकाश मान होती है ३८ हेरामजी दूसरा मुमुक्ष व्यवहार प्रकरण है जिसका एक सहस्र श्लोक परिमाण है युक्ति वाले ग्रंथ करके सुंदर है जिसमों मोक्ष चाहने वाले मनुष्यों का स्वभाव वर्णन किया है ३९ हेरामजी इसतें उपरांत उत्पत्ति प्रकरण तीसरा कियाहै जिसका प्रमाण सात हजार श्लोक किया है विज्ञान को करने हारा है जिसमों जगत मों देखने हारा पुरुष देखणे योग्य है पदार्थों की संपदा वर्णन करी है जिसमों हम अरु तुम होर इतर पुरुष यह नाम रूप का भेद बनाहै ४० हेरामजी यह जगत की संपदा कैसी है अरु उत्पत नहीं भई जैसी उदयको प्राप्त भई कहीदी है ४१ हेरामजी उत्पत्ति प्रकरण कों श्रवण किये संते श्रवण करने हारा है संपूर्ण जगत कों अपने हृदय मों जान लेता है ४२ हेरामजी जगत कैसा है हम तुम ऐसे भेद करके सहित

वा॰ सा॰ ही विस्तार कों प्राप्त भया है अनेक लोक आकाश पर्वतों करके युक्त है सामग्री का संमूह
८॰ के पिंड से रहित है जैसे घड़ा मृत्तिका के पिंडका प्रत्यक्ष बनता है तैसें नहीं उत्पत भया है
जैसे पृथिवी आदिमों पर्वतादि मर्यादा होता है तैसे इसमों पर्वतादि मर्यादा नहीं है यह नि-
र्मयाद है ४३ पृथिवी आदि भूतों की रचना सें रहित है अरु पृथिवी आदिकोंका नाश भये भी
नष्ट नहीं होता है जैसे मनके संकल्पमों नगर मिथ्या फुरण होता है ४४ हेरामजी फेरकेसा
है जगत स्वप्नमों देखे पदार्थोंकी न्यांई भासता है मनोरथों की न्यांई विस्तार कों प्राप्त होता
है ४५ हेरामजी फेर केसा है सत्य पदार्थों की शून्यता देखने तें गंधर्व नगर की न्यांई भा-
सताहै एक चंद्रमामों दो चंद्रमां की भ्रांति की न्यांई भासता है रेतीमों सूर्यकी किरणोंकी
चमकतें भई जल की भ्रांति जेसा है ४६ हेरामजी फेर केसा है बेड़ी के चलने तें पर्वत
के चलने की भ्रांति जेसा है सत्य लाभतें रहित है चित्तकी भ्रांतितें पिशाच दर्शनकी भ्रांति

जैसी है अरु बीज सें रहित है तो भी भासता है ४७ हे रामजी फेर कैसा है जगत् कथा के अ-
र्थ के आभास की न्याईं है अरु आकाश मों मुक्ता मणि के आभास सिरीषा है जैसे सुवर्ण मों
भूषण की कल्पना होती है तिसके तुल्य है अरु जलमों तरंगों की कल्पना जैसा है ४८ हे रामजी
जैसे आकाशमों नीलरंग की कल्पना असत्य होती है तैसे कल्पना मात्र है जैसे स्वप्ने मों अथवा
आकाश मों चित्त की कल्पना का फुरणा है अरु कैसा है चित्र आश्रय रहित है फुरणे मात्र
सुंदर है फेर कैसा है कर्त्ता से रहित है अरु चिरकाल तक भासता है ४९ फेर वह कैसा है
जगत चित्र मों लिखे आलेख्या जो अग्नि है सो दाह से अरु प्रकाशते रहित है तो भी अग्नि-
का नाम रूपकों धारता है तैसे यह असत्य रूप है तोभी जगत के नाम शब्द को रूप कों अरु
अर्थ को धारता है ५० हे रामजी फेर कैसा है जगत तरंगों मो नील कमलोंकी आभा जैसा दे
खिया है जैसे नृत्य शालामों नृत्य विलास दृश्यमान होताहै अरु तिसके समान तनमात्र-

पुराण रूप है ५१ हे रामजी शांत भया है अज्ञान रूपी अंधकार जिसतें ऐसा विज्ञान रूपी शा-
रद का आकाश है फेर कैसा है स्तंभमों पुतली सिरीखी चित्रित किया है चित्त रूपी दिवा-
लमों उदय भया है मानों कीचड़तें रचना किया है अरु चैतन्यता युक्तभी है अरु अचेत
नभी है ऐसा जगत उत्पत्ति प्रकरण मों वर्णित किया है ५२ हे रामजी तिसते उपरां-
त चौथा स्थिति प्रकरण कल्पित किया है अरु उस ग्रंथ के श्लोकों का तीनें हजार परि-
माण है अरु उसमें अनेक दृष्टांत कथा संयुक्त है ५३ हे रामचंद्रजी यह जगत इस प्र-
कार करके अहं भाव की स्थिती कों प्राप्त भयाहै अरु देखने हारा पुरुष अरु देखने-
योग्य पदार्थों का क्रम करके दृढ भया है यह इसमों वर्णित किया है ५४ अरु यह
जगत रूपी महा वृत्त दशदिशा का मंडल मों प्रकाश मान है इस प्रकार करके वृद्धिकों
प्राप्त भया है अरु यह स्थिति प्रकरण मो वर्णित करीदा है ५५ हे रामजी तिसते उपरांत

पंचम उप शांति प्रकरण कहिआ है उसके श्लोकों का परिमाण पांच हजार है अरु युक्ति विस्तार करके सुंदर है यह जगत है अरु यह हमहैं यह तुम हो सो पुरुष है ऐसी जो जगतकी भ्रांति उदय भई है सो इस प्रकार करके शांत होती है अरु उपशांति प्रकरण में श्लोकों का संग्रह हो करके कहीदी है ५६ हेरामजी जीवन्मुक्ति क्रम करके भ्रांति क्षीण भई है तोभी सत्ता के लेश करके शेष रहती है जैसे चित्रमें लिखने मात्र स्वरूप करके शेष रहती है ५७ हेरामजी सो भ्रांति विरोध वाले अंश करके शांत होती है परंतु तोभी विरोध रहित शांत अंश करके शेष रहती है तिसमें तुम्हारे को नव दृष्टांत कहते हैं ५८ हेरामजी उपशम होने संते ज्ञानी पुरुष को अज्ञान की सप्त भूमिका का जय करते जैसे जैसे भूमिका का क्रम करके जय होता जाता है तैसे तैसे भ्रांति शांत होती है अंशकरके शेष रहती है सो भी शांति होती जाती

है पहिलें संस्कार मात्र लक्षित होती है फेर अलक्षित रूप संस्कार मात्र शेष रहती है सप्तमी भूमिका मों निःशेष नष्ट होती है तो जीवन्मुक्ति अरु निर्वाण की प्राप्त होती है इसमों दृष्टांत है ५९ हेरामजी किसी पुरुष कों संकल्पमो नगरी फुरी है अरु तिसके पास दूसरे पुरुषको स्वप्नमों नगरी दृश्य मान भई है फेर नगरीमों युद्ध का कोलाहल शब्द भया फेर धन संपदा प्राप्त भई तिस नगरीकी शोभा स्वप्न देखने वाले को प्रत्यक्ष दृश्य है संकल्प वालेको किंचिन्मात्र दृश्य है अरु संकल्प शांत भये संते स्वप्न नष्टभये संते जैसे सो नगरीकी शोभा शांत होती है तैसेही जगतकी भ्रांति शांत होतीहै ६० हेरामजी जैसे संकल्प करके मत वाले हाथीकी न्यांई भारी बादल कल्पना किया है उसका गर्जनाभी कल्पना करी है अरु संकल्प शांत भये संते बादल भी गर्जना शब्दभी शांत होताहै तैसे उपशांति करके भ्रांति शांत होतीहै जैसे स्वप्न करके नगर

कालपन किया है संकल्प शांत भये संते नगर की कल्पना शांत होती है तैसे भ्रांति शां-
त होती है ८१ हे रामजी आगे होना जो नगर तिसमें जो बगीचा अरु तिसमें प्रकट भई
वंध्या इस्त्री तिसके अंगसे उत्पत भई कंन्या तिसकी जिह्वा करके कहिया आगे होने वा-
ली कथा का अर्थ तिसके अनु भव के तुल्य ऐसी जो जगतकी भ्रांति सो शांत होती है ८२
हे रामजी नहीं लिखिया ऐसा जो चित्र तिसका चित्र करने का विस्तार दिवाल बिना
स्थान होइ यह सभ असंभावित है अरु तैसे भ्रांति शांत होतीहै जिसकी रचना विस्तृ-
त होय गई है ऐसा जो नगर जैसे संभावना मों नहीं होय तैसे भ्रांति शांत होती है ८३
हे रामजी सर्व ऋतु करके सर्व काल मों होने हारे पुष्प फलों वाले वृक्षों करके संयु-
क्त और जिसकी उत्पत नहींहै अरु ऐसाजो बनहै तिसका स्वरूप जैसे देखणे मों संभा-
वना मों नहीं आवे तैसे भ्रांति शांत होतीहै अरु आगे होना जो पुष्प वाले वृक्षों का बन

तिसका स्वरूप करके बनी जो बसंत ऋतु की रचना सो जैसे मिथ्या होती है तैसे भ्रांति-
शांत होती है ६४ हे रामजी अंदर में लीन होय गयाहै अरु तरंगोंका समूह जिसका ऐ-
सी शांत भई जो नदी तिसके समान जगतकी भ्रांति शांत होतीहै सो उपशम प्रकरण
में कहीहै ६५ हे रामजी तिसते उपरंत निर्वाण प्रकरण छठा कहिया है अरु शेष-
ग्रंथ चौदह १४५०० हजार पंचशत प्रमाण श्लोकहैं अरु जिसके ज्ञानका महा अर्थ जो मा-
नाहै तिसको देने हारा है ६६ तिसको जाने संते महा कल्याण होताहै अरु निर्वाण या-
तिका आनंद प्राप्त होताहै जिसते यह पुरुष पुण्यात्माही होताहै जिस निर्वाण प्रकरण
को जान करके यह पुरुष और करके चेतया नहीं जाता है ऐसा चैतन्य स्वरूप होता
है अरु स्वयं प्रकाश होताहै ज्ञान स्वरूप होताहै अरु निर्विकार होताहै अरु आकाशकी
न्याईं निर्मल होताहै जिस पुरुषको संपूर्ण जगतके भ्रम शांत होते हैं ६७ हे रामजी

तिस पुरुषका जगत में आवना जाना शांत होताहै अरु कृत्य कृत्य होय कर स्थित हो-
ताहै अरु संपूर्ण जगतकी रचना को ग्रहण करने को वज्र के स्तंभकी न्यांई लय करने हारा
होताहै अरु आकाशकी न्यांई असंग होताहै ६८ हेरामजी तिस पुरुषके अंतःकरण
में संपूर्ण जगतकी रचना का जाल अनेक प्रकारकी संख्याके प्रमाण सहित लीन होता है
सो पुरुष अपने स्वरूपमोंही अत्यंत तृप्त होताहै ६९ हेरामजी तिस पुरुषको कार्य का-
रण का भेद ज्ञान नहीं होताहै अरु कर्त्ताकी कर्मकी ज्ञान दृष्टि नहीं होतीहै अरु ग्रह-
ण करना अरु त्यागना यह दृष्टिभी नहीं होतीहै ७० हेरामजी सो पुरुष फेर कैसा होता
है अरु देह करके युक्त है तोभी देहके अभिमानसे रहित होता है अरु संसारमों वर्त्तमा-
न है तोभी संसार के बंधन से रहित होताहै अरु चैतन्य स्वरूपहै तोभी तिस पुरुषके
उदरमों बहुत पत्थर भरे होये अरु अत्यंत स्थूल होय अपने देहके चलनेकी सामर्थ

जिसको नहीं होवे तिस पुरुषकी न्यांई संसार कर्मोंकी चेष्टासे रहित होताहै ७१ हे रामजी तिस पुरुष कों संसारकी दुष्ट लीला प्रतिबंध होजाती है अरु आशा रूपी विसूचिका रोग क्षीण होताहै अरु अहंकार रूपी वेताल नष्ट होता है अरु देह धारी है तोभी देहके धर्मसे रहित होताहै ७२ हे रामजी तिस पुरुषके एक रोमके अग्रभागमें यह संपूर्ण जगतकी संपदा सूक्ष्म रूप स्थित होतीहै अरु जैसे सुमेरु पर्वत लक्ष योजन है तिसमें भ्रमरी सूक्ष्म रूपकरके दृष्ट होतीहै ७३ हे रामजी सो पुरुष स्वरूप करके परमाणू के भी परमाणू से सूक्ष्म रूप होताहै अरु जिसके चैतन्य स्वरूप आकाशमें हजारों जगत कियां लाक्षियां दृष्ट होतीहैं अरु अपने स्वरूप में धारण करके अपने स्वरूपमें देखताहै ७४ हे रामजी यह हमारा कहिया वेदांत शास्त्र सुखोंका बोध करने वाला है अरु अलंकारों करके शोभायुक्तहैं अरु उत्तम काव्यहै शांति-

रस शृंगार आदि रसों करके युक्त है अत्यंत सुंदर दृष्टांतों करके हमने सिद्ध किया है ७५ हे रामजी यह शास्त्र कैसा है थोड़े पद पदार्थों के ज्ञान करके भी आपही मुख से बोध को प्राप्त कर देता है जो पुरुष इसके अर्थ को आप नहीं जाने तिस पुरुषने इस का श्रवण वेदांत शास्त्रों को जानने हारे पंडित से श्रवण करने योग्य है ७६ हे रामजी यह शास्त्र कैसा है तिसको श्रवण किये संते माने संते अरु जाने संते मोक्ष की प्राप्ति निमित्त तप अरु ध्यान अरु जपादिक कोई भी योग्यता को प्राप्त नहीं होता है केवल इसके श्रवण मनन किये संते मोक्ष की प्राप्ति निश्चिय करके होती है ७७ हे रामजी इस शास्त्र के दृढ़ अभ्यास करनेते बार बार विचार करने ते अपूर्व पंडिताई होती है अरु चित्तमों संस्कार सहित ज्ञान होता है ७८ हे रामजी इस शास्त्र करके दीनता अरु दरिद्रता से लेकर दोष दृष्टि जो हैं विघ्नों के करने हारी है तो भी मुमुक्षु पुरुष के मरने को वेध नहीं

·सा·

करती हे जैसे कवच धारण करने हारे पुरुष को बाण वेधनहीं करते हैं ७९ हे रामजी सं
सार कीयां भय करने हारीयां भीती जो हैं सो आपने सन्मुख आये प्राप्त भये कों भी हृदय मों
खेद नहीं करती हे जैसे आभागे स्थित भये पर्वत को बाण जल धारा भेद नहीं कर सकती
हैं ८० हे रामजी इस शास्त्र का श्रवण करनेते पुरुष को समुद्रकी न्यांई गंभीरता होती हे
समुद्र की न्यांई गंभीरता होती हे अरु सुमेरु पर्वत की न्यांई स्थित होती हे अरु चंद्रमा की
न्यांई अंतः करण मों शीतलता होती हे ८१ हे रामजी जेसे चित्रमों लिखिया सर्प देखने हा-
रेको भय नहीं देता हे तेसे शास्त्र विचार करने हारे पुरुष को प्रत्यक्ष देखा संसार रूपी सर्प
भी भय को नहीं देता हे ८२ हे रामजी पुष्प के संचने मों देर होती हे इस शास्त्र के विचार
करने हारे को आत्मा की प्राप्ती मों देर नहीं होती हे ८३ हे रामजी पुष्प के पत्रकों तोड़ने मों
कुछ अंगों करके खेद करने बनता हे इस शास्त्र के विचार करने हारे को परमात्मा की प्रा-

मीमों खेद नहीं करने बनता है ८४ हेरामजी इस शास्त्र को विचार करने द्वारा पुरुष सुख करके आसन में बैठे पद्मासनादि आसन का नियम का बंधन से रहित होता है अरु अपनी इच्छा करने विना देव योग्य करके जो मिले तिसको भोजन करे तिस पुरुष को तप अरु व्रतादि को का नियम कोई नहीं होता है अरु भोगभी आचार से सेवे तो विरुद्ध कर्मों का त्याग आपही होजाता है ८५ हेरामजी जो पुरुष जैसा मिले तैसा सत्संग करे इस शास्त्रकों अथवा और वेदांत शास्त्र को श्रवण करे विचार नकरे तिस पुरुष को ज्ञान करके महा बोध होता है जिस करके संसार की शांति होती है अरु जिस करके माता के गर्भ के यंत्रकी पीड़ा को नहीं प्राप्त होता है ८६ हेरामजी जौन से पुरुष ऐसे सुखाले मोक्ष के उपाय मों भी भय को प्राप्त होते हैं अरु पाप करके भोग रसों में आसक्त भये हैं सो पुरुष माता के मलमों कीड़ा होते हैं जिन्हका नाम मुख से उचारण नहीं करना सो पुरुष नीच हैं ८७

·सा· हे रामजी यह पुरुष आपने कल्याण के वास्ते पहिले सत्संग करके युक्ति करके आपनी बुद्धि
२ कों सुधारे तिसते उपरंत महात्मा पुरुषों के लक्षणों करके महात्मा पुरुषों की वृत्ति को धारण
करे ८८ हे रामजी शम अरु दम इत्यादि महा पुरुषों के लक्षण है सो भले प्रकार कर ज्ञान बिना
सिद्ध नही होते हैं ८९ हे रामजी ज्ञान में शमादि गुण होते हैं शमादि गुणों से ज्ञान होता है अ
रु ज्ञान अरु शमादि गुण आपस मों शोभा को प्राप्त होते हैं जैसे कमल अरु सरोवर आप-
समों शोभित होते हैं ९० हे रामजी सत्पुरुषों के आचार से ज्ञान बढ़ता है अरु ज्ञान करके
सत्पुरुषों का आचार बढ़ता है ज्ञान अरु सत्पुरुषों का आचार दोनो मिल करके आपस मों
बढ़ते हैं ९१ हे रामजी मैंने यह दोनो ही समान सेवे हैं इन्ह दोनों में एक बिना दूसरा सिद्ध
नहीं होता है ९२ हे रामजी जैसे कोई इस्त्री आपने खेत में पशु अरु पंछीयों को दूर निकाल
तीहै अरु गीत गायन करतीहै अरु गीतके आनंद मों प्रीति वाली है अरु पशुओं को दूर

करने साथ ही गीत का आनंद करती है तैसे चतुर पुरुषने ज्ञान करके सत्पुरुषों के
आचार करके आत्म पद की प्राप्ति सिद्धि करीदी है ९३ हेरामजी जिसने आत्मा स्वरूप जानिया॰
है सो आपही अवश होय कर परम पदको प्राप्त होताहै जो इस पुरुषने मनकी सावधानता
करके उत्तम अखंड वस्तु जानिया है सो वस्तु ज्ञान के वशातें दूर नहीं होताहै ९४ इतिश्री
वासिष्टसारेमोक्षोपायेमुमुक्षव्यवहारप्रकरणंद्वितीयं २ अथउत्पत्तिकर॰
णम्। तृतीय प्रकरण मों श्रीवसिष्टजी श्रीरामचंद्रजी प्रति जगत की उत्पति कहते भये
जगत और जीव उत्पति अरु प्रलय यह सभ अज्ञान से कल्पना मात्र भासता है स्वप्न की
न्याई मिथ्याही प्रतीत होताहै अरु ज्ञान भये संते सभही एक अद्वितीय आत्म स्वरूप ब्र॰
ह्मही भासताहै इस अर्थ को श्रीवसिष्टजी श्रीरामचंद्रजी को पहिले संक्षेप करके श्रवण
करावते हैं १ हेरामजी ब्रह्मही तत्वमसी इत्यादि महा वाक्यों का विचार सें भई एक अखंडा॰

कार वृत्ति करके वृद्धभये आत्मप्रकाशों करके अपने तत्वकों साक्षात्कार करके आपही वा
स्तव नित्य मुक्त पूर्ण स्वरूप करके भासता है आपनी मुक्तिमों महावाक्य विचार सें भई एका
ग्र वृत्ति विना और उपाय की इच्छा नहीं करताहै सो कैसे जिस कारणतें यह देह इंद्रियआदि का
र्य रूप करके आकाशादि कारण रूप करके दृश्यमान बंधरूप जो विश्वहै सो जीव रूपी ब्रह्म
विषेही स्वप्नेकी न्यांई प्रकट भयाभासता है स्वप्नेका बंधनकी निवृत्ति जाग्रत होनेतें अन्य
उपाय को नहीं चाहती है तैसेही आत्म स्वरूपका अज्ञान करके ब्रह्मही स्वप्नकी न्यांई जीव
रूप करके संसार बंधको प्राप्त भयाहै सो महा वाक्य विचारते आत्मस्वरूप का ज्ञान बिना
अपना बंध दूर करनेको और उपाय को नहीं चाहता है जो कोई हमारे जैसे अधिकारीहै
सोभी ब्रह्मरूप है ब्रह्मसेही प्रकटभये अरु वेदांत वाक्योंका श्रवण मनननिदिध्यासन कर
के ब्रह्मको जानता है सो अहं ब्रह्म इस प्रकार से जीवता ही नित्य शुद्ध बुद्धि परिपूर्ण अ-

द्वितीय नित्य मुक्त पर ब्रह्म होताहै २ हेरामजी मुमुक्षु व्यवहार प्रकरणते उपरांत अब तेरे प्रति उत्पत्ति प्रकरण हम कहते हैं अरु तिसको तुम सावधान होय कर श्रवण करो ३ हेरामजी यह संसार बंध दृश्य पदार्थकी सत्य भावनोंते होताहै अरु दृश्य पदार्थका असत्य भावनाते नहीं होताहै जिस प्रकार करके दृश्य पदार्थ की सत्यभावना नहीं होवे तिसको तुम क्रमसे श्रवण करो ४ हेरामजी जौंनसा यह स्थावर जंगम संपूर्ण जगत दृश्यमानहै सो जैसे सुषुप्ति अवस्यामो स्वप्नालीन होताहै तैसे कल्पके अंतकाल मों प्रलय को प्राप्त होता है ५ हेरामजी प्रलयते उपरांत किंचित् सत्ता मात्र वस्तु बाकी शेष रहता है कैसा है निश्चलहै अरु गंभीर है नातो वह तेजहै अरु नावह अंधकार है सर्वत्र एक रूपही व्याप्तहै जिसका रूप नहींहै सो केवल सत्तामात्र ब्रह्महै ६ हेरामजी सो अविनाशीहै आत्माहै अरु परंब्रह्म है अरु सत्यहै इत्यादि नाम तिसके पंडितोंने व्यवहार वास्ते

कल्पन किये हैं ७ हे रामजी सो अद्वितीय सत्तामात्र परमात्मामें एकहो ऐसे फुरने को प्रा
प्त होताहै तो तुच्छ रूप जीव भावको प्राप्त होताहै ८ हे रामजी तिसते सो जीव शब्दके अर्थकी
कल्पना करके व्याकुलभाव को प्राप्त होताहै तो मनकी कल्पना करके युक्त रूप होताहै तो
मननव्यापार को प्राप्त होताहै ८ हे रामजी तिस मनन व्यापार के फुरनेते तिस परमात्माते
मन प्रकट होताहै कैसा है परमात्मा निश्चिलहै अरु मन कैसा है चंचल रूपहै परमात्मा से
मन कैसे प्रकट होताहै जैसे समुद्रमें तरंग प्रकट होतेहैं अरु समुद्र अचल है तरंग उसके
चंचलहैं ९ हे रामजी सो मन स्वतंत्र होय करके शीघ्रही संकल्प करता है तो संकल्प करके
ही इस प्रकारकी जगत रूप इंद्रजाल की संपदा विस्तार करके विस्तारण करी दीहै १० हे
रामजी जैसे भूषण शब्दका अर्थ सुवर्ण से भिन्न नहीं होताहै अरु सुवर्ण शब्द भूषण से
भिन्न नहीं दृष्ट होताहै तैसेही जगत शब्दका अर्थ परमात्मा विषे भिन्न दृष्ट नहींहोता है ११

वा·सा· हे रामचंद्र जी जगत रूपी इंद्रजाल की लक्ष्मी मन करके ही विस्तार को प्राप्त
९० करीदी है वह कैसी है सत्य नहीं है अरु असत्य भी नहीं है प्रत्यक्ष देखने ते स
त्य है अरु नाश होने करके असत्य है जैसे नदी करके लहरी चलती है १२ हे रा
मजी सो मन से विस्तार कों प्राप्त भई जगत नाम इंद्रजाल की लक्ष्मी है तिसका ना
म अविद्या है संसार नाम है अरु बंधन भी नाम है अरु माया भी नाम है अरु मो
हभी नाम है महा अंधकार इत्यादि नाम तिसके सर्व शास्त्र वेत्ता पंडितों ने कल्प
ना किये हैं १३ हेरामजी द्रष्टा आत्मा है अरु दृश्य जगत है इन्हका आपसमें सं
बंध जो है सो बंधन कहिया है सो आत्मा दृश्य की सत्ता होनेते बद्ध भया है
दृश्य पदार्थ का अभाव भये संते मुक्त होता है १४ हेरामजी जगत है तुमहो
हमहैं इत्यादि कथन मात्र दृश्य है अरु मिथ्याही कहीदा है जब लग यह

सत्य भासता है तब लग मोक्ष नहीं होता है १५ हे रामजी यह जगत दृश्य रू-
प करके सत्य होवे तो किसीकों भी शांत नहीं होवे जिस कारण तें असत्य पदा-
र्थ की सत्ता नहीं होती है अरु सत्य पदार्थ का अभाव नहीं होता है १६ हे राम-
जी तिसतें यह जगत दृश्य है असत्य है जो कोई कहे मैने जानिया है और त-
प करके अरु ध्यान करके अरु जप करके त्यागिया है ऐसे जो कहिता है
सो कांजी करके तृप्त होने की न्याई मिथ्या है अरु जैसे कांजी करके तृप्ति व-
त नहीं होती है तैसे तपादिकों करके दृश्य का त्याग नहीं होता है १७ हे
रामजी जब लग दृश्य भासता है तब लग परमाणु के भी अंदर चैतन्य रू-
पी दर्पण मों प्रतिबिंबत होता है जो कोई समाधि वणावता है वह कहि-
ताहै मैने दृश्य हर किया है अरु मैं अब समाधिमों स्थित हों हे रामचंद्रजी

इसका यही बीज है जो समाधिमें संसार की स्मृति होनी तिसते समाधिमें भी दृश्य दूर नहीं होताहै १७ हेरामजी तिस दृश्य का कारण होतसंते निर्वि कल्प समाधि करके भी अखंड दृश्य पदार्थ का सुषुप्ति जैसा लय नहीं होता है अरु तुरीय पदभी नहीं प्राप्त होता है १८ हेरामजी यो दृश्य पदार्थ मन तें शांत होवे तो समाधि करके क्या है अरु समाधि से उपरांत फेर दृश्य पदार्थ का दुःख होवे तो क्षणमात्र समाधिमें शांत भयेतें क्या सुख है २० हेरामजी देखने द्वारा जो समाधि करके अपने आप जड़ होय करके बल करके दृश्य की शांति को देखता है तो भी क्या सुख है अरु समाधि उपरांत दृश्य कर उद य होता है २१ हेरामजी तिसतें यह दृश्य मन को शांत बिना शांत नहीं हो ताहै अरु तप करके ध्यान करके जप करके शांत होवेगा यह अज्ञानी पुरुषों

की कल्पना है २२ हे रामजी यह आकाशज विप्रका कथानक में तुम्हारे प्रति कहिता हूं वह कैसा है श्रवण करने मों भूषण है जिस करके उनपति प्रकरण का भली तरह सें बोध होता है २३ हे रामजी एक आकाशज नामा ब्राह्मण होता भया चिरंजीवी होता भया अरु ध्यान मों निष्टा करता भया तिसके मारने को मृत्यु अग्नि मंडल को भेद करके जाता भया परंतु तिस ब्राह्मण के मारने को असमर्थ होता भया तब मृत्यु अपनी असमर्थता का यम कों पछ्ता भया २४ तब यम मृत्यु को कहिता है हे मृत्यु तूं अकेला इस आकाशज ब्राह्मण के मारने को समर्थ नहीं है जौंनसा तैने मारना है इसके किये कर्म ही इसको मारने हारे हैं अरु तैने अवश्य मारना होवे तो यत्न करके इस के कर्मों को ढूंड कर्मों की सहायता करके तूं इसको मारेंगा २५ तिसतें उपरांत मृत्यु आकाशज विप्र के कर्म

ढूंडता भया तिस के कर्मो को नहीं प्राप्त होता भया तब आइ करके धर्म राजको पूछता भया २५ हे धर्मराज आकाशज विप्र के कर्म कहां स्थित है मृत्यु का प्रश्न सुन करके धर्म राजा चिंतन करके वचन कहिता भया २६ हे मृत्यु आकाशज विप्र के कर्म कोई नहीं है यह आकाशज विप्र के बल अद्वितीय आकाशतें प्रकट भया है २७ तिसते जौंनसा केवल आकाशते भया है तो केवल निर्मल आकाश रूप है इस के सहकारी कर्म भी कोई नहीं है २८ इसके पिछ्ले के कर्म भी नहीं है अबभी कर्म नहीं करता है यह क्या है कौन है केवल ज्ञान रूप है २९ यौंनसी इस की प्राप्त किया हम सिरीष्यों करके लखित होती है सो केवल सत्ता मात्र है इसको कर्म की बुद्धि मात्र भी नहीं है ३० जिसते यह केवल आकाशतें भया है ज्ञान स्वरूप है सत्ता मात्र है तिसतें पृथिवी

आदिकों ने इसका संभव कहां होता है तिसते हे मृत्यो तूं इसके मारने मों यत्न मत कर ३१ आकाश ग्रहण करने को कदापि युक्त नहीं होता है तिसते तूं यत्न को त्याग कर इतना सुन कर मृत्यु विस्मय को प्राप्त भया तब अपने स्थान को जाता भया ३२ **श्रीरामजीकाप्रश्न॰** हे गुरुजी सो आकाशज विप्र तुमने मेरे प्रति आदि देव ब्रह्महीं कह्या है बुह कैसा है सर्व लोक को रचन करने हारा है अरु स्वयं प्रकाश है अरु जन्म से रहित है अरु एक स्वरूप है बुद्धि को प्रेरण करने हारा है यह मेरी बुद्धि कहती है ३३ **श्रीवसिष्टजीकोवचन॰** हे रामजी जो तुम को निश्चय भया है सो तैसे ही है मैंने तेरे प्रति ब्रह्मही कह्या है इसको ग्रहण करने वाले मृत्यु यम के साथ वाद करता भया ३४ हे रामजी सो चैतन्य रूपता करके आकाश की न्याईं असंग है केवल एक रूप है अंत से आद से मध्य से रहित है

सो ब्रह्म ही अपने चित्त के वशते स्वयं प्रकाश है तो भी स्वरूप वाला देह धारी जैसा भासता है पुरुष देह जैसा भी भासता है वास्तव विचार ते जैसे बंध्या स्त्री को पुत्र नहीं होता है तैसेही आत्मा को देह नहीं है २५ हे रामजी यह स्वयं प्रकाश आत्मा का देह संकल्प मात्र है पांच भूतों का बनिआ देह जन्म करके रहित जो आत्मा तिस को कदाचित नहीं होताहै २६ हे रामजी सर्व प्राणियों के दो शरीर बने हैं वुह कैसे हैं प्राणी पांच भूत जिन्ह के कारण हैं तिनका एक संकल्प मात्र देह है एक पांच भूतों का है यह आत्मा जन्म से रहित है इसका कारण कोई नहींहै तिसते इसका एक संकल्प मात्र शरीर है २७ हे रामजी यह आत्मा का शरीर केवल मनका संकल्प मात्र है अरु पृथिवी आदिकों का नहीं बना है तिसते यह संसार मनो मात्र है जैसा जानिआ है तैसा ही है २८ हे रामजी जन्म रहित यह आत्मा के सहाय

कारण हारे कर्मा दिक नहीं है तिसते आत्माते संकल्प मात्रते प्रकट भये विश्व के भी कर्मा दिक सहाय करने हारे नहीं है ३९ हे रामजी ब्रह्ममें कार्य कारण का भाव कोई नहीं बनता है जैसा परब्रह्म है तैसा ही त्रैलोक्य है ४० हे रामजी मनु नाम करके एक मनुष्य है सो संकल्प करके ब्रह्म का स्वरूप धारण करता है तिसके मन का संकल्प मात्र जगत है तिसते जगत सत्य रूप भासता है ४१ हे रामजी जैसे अपने चित्त संकल्प से उठेआ जो पिशाच है सो बालक को मरने पर्यंत दुःख को देता है तैसे ही यह दृश्य रूपी पिशाचिनी अपने संकल्प से बनी है सो देखने हारे को अंतः करण मों दाह करती है ४२ हे रामजी जैसे अंकुर बीज के अंदर रहता है सो देश काल के स्वभाव ते अपने स्वरूप को प्रकट प्रकाश करती है ४३ हे रामजी जब लग यह दृश्य फुरणेमों विद्यमान है तब लग देखने हारे को इसका दुःख शांत नहीं होता है सो दुःख जब

लग बनिया है तब लग जानने हारे को अपना अद्वैत रूप नहीं भासता है जब दृश्य मनतें शांत होजावे तब दृश्य का जानना अरु जानने हारे का भाव स्थित है तो भी शांति होता है दृश्य का देखने के भाव की शांति को पंडित मोक्ष कहते हैं ४४ श्रीरामचंद्रजीकाप्रश्न॰ हे भगवन मन का स्वरूप कैसा है तिस को तुम मेरेको प्रकट करके कहो जिस कारण तें तिस मन करके यह संपूर्ण लोक रचना विस्तार करी है ४५ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं। हे रामजी इस मन का रूप नाम मात्र ते अवर दृष्ट नहीं होता है जैसें आकाश का रूप शून्य है अरु जड़ है तैसे मन भी रूप रहित है अरु शून्य है अरु जड़ है ४६ हे रामजी मन बाहिर भी सत्य रूप नहीं है अरु हृदय के अंदर भी सत्य रूप नहीं है अरु सर्वत्र मन दृस्थिर है जैसे आकाश जगत मों सर्वत्र है ४७ हे रामजी नातो अंदर है

सा· नातो बाहिर है मध्य में सत्य का अथवा असत्य का फुरना जो प्रकट भया है
९६ तिस को तुम मन करके जानों अवर मन का रूप नहीं है ४८ हे रामजी संकल्प
करने को तुम मन जानो सो मन संकल्प से भिन्न नहीं है जैसे चलने तें जल भि-
न्न नहीं है अरु सपंद तें पवन भिन्न नहीं है ४९ हे रामजी सत्य अथवा असत्य
पदार्थों का जो फुरना है एतन्मात्र ही तुम मन को जानों सोही ब्रह्मा है सो ही
सृष्टि कर्त्ता है ५० हे रामजी संकल्प शरीर ही मन कहिया है सो ही संकल्प मा-
त्र शरीर चिर काल तक दृढ होता है तो पांच भौतिक बुद्धि कों धारण करता
है ५१ हे रामजी त्रैलोक्य है अरु हम हैं तुम हो इस प्रकार कर दृश्य को अस-
त्य भाव को प्राप्त भये संते देखने हारे निर्मल रूप आत्मा का केवल अद्वैत भाव
प्रकट होता है ५२ हे रामजी पर्वतादि कों के नाम रूप से रहित ऐसे जो निर्मल

वा॰सा॰ दर्पण में जैसे संपूर्ण पर्वतादिकों के प्रति बिंब होते हैं तैसे केवल अद्वितीय
१॰७ आत्मा में जगत का प्रति बिंब होता है ५३ हे रामजी हम हैं तुम हो अरु जगत
है इत्यादि जगत का भ्रम शांत भये संते देखने हारे को मै देखता हूं इस प्रकार
देखने के व्यवहार की स्थिति नहीं होती है यथायोग्य आत्मा की अद्वैत भावनाही
सिद्ध होती है ५४ श्रीरामचंद्रजी का प्रश्न॰ हे गुरुजी यह परमात्मा देवतों का भी
देवता है सो कौन तप करके अरु केते क्लेश करके शिताबी समीप प्राप्त होताहै
तिस को तुम मेरे को कहो ५५ श्रीवसिष्ठजीवचनन॰न॰ हे रामजी अपने पौरष
के यत्न करके प्रकाश मान विवेक करके सो आत्मा प्राप्त होता है तप करके
स्नानादिक कर्मों करके नहि प्राप्त होता है ५६ हे रामजी राग द्वेष अरु मोह
अरु क्रोध मद ईर्ष्या इन्ह के परित्याग बिना जो कुछ तपदान क्लेश करा जाता

सा॰ हे सो अपने फल को नहीं करता है ५७ हे रामजी राग द्वेषादि करके चित्त
८ युक्त होवे जो कोई पर धन को वंचन करके अरु यज्ञ दान तप करता है सो
पुरुष यज्ञ दान तप के फलों को नहीं प्राप्त होता है अरु जिसका धन होवे ति-
सको फल प्राप्त होता है ५८ हे रामजी राग द्वेष युक्त चित्त करके जौनसा व्रत नि-
यम दान यज्ञ करता है सो दंभ कहिया है तिसका तुच्छ मात्र भी फल नहीं प्रा-
प्त होता है ५९ तिसते हे रामजी अपने पौरुष के यत्न करके संसार रोग निवृ-
त्तिके लिये उत्तम शास्त्र अरु सत्संग रूपी औषध को उपार्जन करै शास्त्र अरु
सत्संग संसार रोग का नाश करते हैं ६० हे रामजी सत शास्त्र अरु सत्संग कर
के भये विवेकों के बलते संपूर्ण अविद्या तैसे नष्ट होती हैं जैसे जल की मली-
नता खादे हूर्ती के प्रसंग करके दूर होती है जैसे पुरुषोंकियां मलीन बुद्धी योग-

भ्यास ते शुद्ध होती हैं ९१ श्रीरामजीकोप्रश्न॰ हे गुरुजी आत्म ज्ञान के जानने वास्ते
कौनसा शास्त्र प्रधान है तिस को तुम मेरे प्रति कहो अरु जास को जानने ते फिर
शोक नही करने बने अरु तुम शास्त्र वेता पुरुषों में श्रेष्ठ हो ९२ श्रीवसिष्टजीकहि
तेहैं। हे रामजी आत्मा के जानने वास्ते वेदांत शास्त्र साधन हैं तिन्ह वेदांत शास्त्रों
मों यह महा रामायण शास्त्र उत्तम है अरु प्रधान है ९३ हे रामजी आत्मा को जा-
नने का उपाय जो महा रामायण मो कहा है सो और शास्त्र मो भी है अरु जो इ-
समो नही है सो और शास्त्र मों भी नही है इस महा रामायण शास्त्र को सर्व शा-
स्त्र ज्ञान का भंडार कहते हैं अरु संपूर्ण पंडित लोग इस शास्त्र को मानते हैं ९४
हे रामजी जो पुरुष इसको नित्य प्रति श्रवण करे तिसको उदार चमत्कार होता है
अरु तिसकी बुद्धि बोध का भी परम बोधको प्राप्त होती है इसमों संशय कोई-

नहीं है ६५ हे रामजी जिसकों अपने पाप के दुष्ट फल प्रगट होवें अरु तिस कों इसमों रुचि नहीं होवे तब सो पुरुष आत्म ज्ञान के वास्ते और शास्त्र को विचारण करे ६६ श्रीरामजीकोप्रश्न· हे गुरुजी विदेह मुक्त का लक्षण को और जीवन मुक्त के लक्षण को मेरे प्रति कहो जिसको श्रवण करके अरु तिस प्रकार की ज्ञान दृष्टि करके में भी मुक्त वास्ते यत्न करूं ६७ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं · हे रामजी जौंनसा पुरुष जगत के व्यवहार कों करता भी है तो भी जिसकों जेसा है तैसाही मन से जगत का व्यवहार आकाश की न्याई शून्य होइ गया है अरु जगत का भ्रमअस्त होइ गया है सो जीवन मुक्त कहिया है ६८ हे रामजी जौंनसा पुरुष आत्मज्ञान की मुख्य निष्ठा कों प्राप्त भया है जिसकों जाग्रत अवस्था मों सुषुप्ति अवस्था के बरोबर जगत का भ्रम नही होता है अरु लोकों को जगत का व्यवहार कर

ता अरु जैसा इष्ट होता है सो तिसको जीवन मुक्त कहिया है ६९ हे रामजी जिसके मुख की शोभा सुख प्राप्ति मों प्रकाश नही होती है अरु दुःख प्राप्ति मों मलिन नही होती अरु जैसा प्राप्त होय तैसाही संतोष करके स्थित भया है सो जीवन मुक्त कहिया है ७० जौंनसा पुरुष जाग्रत अवस्था मों सुषुप्ति अवस्था जैसा जगत की चेष्टा सें रहित भया अरु जिस पुरुष कों लोक व्यवहार की जाग्रत अवस्था नही है अरु जिसकों वासना रहित आत्म बोध है सो जीवन मुक्ति होताहै ७१ हे रामजी जौंनसा राग द्वेष भयादि कों के अनुसार वर्त्त मान है तो भी अंतः करणमें आकाश की न्याई निर्मल है सो जीवन मुक्त कहिया है ७२ हे रामजी जिसकों कर्म करते को अथवा नही करते को देहका अहंकार नही है अरु जिसकी बुद्धि फल वांछा को लिप्त नही होती है सो जीवन मुक्त कहिया है ७३ हे रामजी जिस

सा· कों मन के संकल्प विकल्प करके त्रिलोकी की उत्पत्ति प्रलय का ज्ञान होता है ॥
२ जो आकाश की न्याई निर्लेप है सो जीवन मुक्त कहिया है ७४ हे रामजी जिस ते
लोक दुःखी न होवे अरु जो लोक से दुःखी नही होवे अरु हर्ष अरु क्रोध अरु
भय से जो रहित होवे सो ही जीवन मुक्त कहिया है ७५ हे रामजी जिस कों संसा-
र कल्पना शांत भई है अरु गुणवान है तो भी निर्गुण है अरु चित्त युक्त है तो
भी चित्त के धर्म ते संसार के चिंतन ते रहित है सो ही जीवन मुक्त कहिया है ७६
हे रामजी जौंनसा संपूर्ण पदार्थ समूह में व्यवहार वाला है तो भी शुभ शील-
युक्त है अरु संपूर्ण पदार्थों की हानि वृद्धिमें संतोष करके पूर्ण भया है सो ही
जीवन मुक्त कहिया है ७७ हे रामजी जब जीवन मुक्त का देह काल के वशाते
नाशे तो जीवन मुक्त नामको त्याग करके देह से रहित होय करके मुक्त होता-

वा॰ सा॰ है जैसे पवन स्पंदते रहता है तो आकाश मों लीन होता है तैसें आत्मासत्ता
११३ मों स्थित होता है तो विदेह मुक्त होता है ७८ हे रामजी जब विदेह मुक्त
होता है तो न उदय होता है अरु न अस्त होता है अरु शांत होता है और न
सत्य होता है ना असत्य होता है अरु ना दूर अरु समीप ना अहं पद होताहै
अरु न त्वं पद होता है और न कुछ नाम वाला होता है ७९ हे रामजी विदेह
मुक्त करके अपना जीव भाव को नाश करके मन की वृत्तिका क्षय भये सं-
ते सता मात्र रूप होताहै जो कहिने मों नहीं है वही रूप परमात्मा का होताहै ८०
हे रामजी तब जो सत्ता मात्र शेष रहती है तुम तिस को सुनों जिसमों सुषा भी
नहीं है अरु जिसका अंत नहीं है अरु मनकी स्थितिते जड़भी नहीं है ऐसी दीर्घ
निद्रा का जो रूप है सो विदेह मुक्तिमों शेष रहताहै ८१ हे रामजी यह जगत कीयं

रचना अनुभव करियां होइयां आकाश की न्याई निर्मल रूप आत्मा विषे नहीहै जै-
से स्वप्ने मों संकल्प के कारण मों पृथिवी आद भूत नहीहै ८२ हे रामजी तिस आत्मा-
का चिंतन करना कथन करना आपस मों तिसका बोध न करना इस प्रकारका एक
आत्मा चिंतन विषे तत्पर होना है अरु तिसको पंडित ब्रह्मा भ्यास जानते हैं ८३
हेरामजी जौन से पुरुष विरक्त हैं सोही महात्मा हैं अरु भोगों की भावना सूक्ष्म क-
रते हैं तिसके अंतमों भोगों का अभाव ही मानते हैं सोही कल्याण रूप है अरु पृ-
थिवी मों संसार जीतने को समर्थ हैं ८४ हेरामजी जौनसे पुरुषों को उदारता उदय
भई है अरु सुंदर वैराग्य रस करके रंग को प्राप्त भये हैं और तिसते सर्व त्याग-
करने हारे हैं अरु जिन्ह की बुद्धि आनन्द प्रवाह मों मगन भई है अरु ते पुरुष
संन्यासी कहे हैं ८५ हे रामजी ज्ञेय वस्तु जो ब्रह्महै तिसके जानने को संसारके

अत्यंत अभाव को मानते हैं तत्त्व विचार की संपदा सो शास्त्र की युक्ति करके यत्न करते हैं सो ब्रह्मा भ्यासी कहे हैं ८६ हे रामजी यह जगत है अरु यह हम तुम हैं अरु ऐसा जगत सृष्टि के आदमें उत्पन्न नही भयाहे तिसतें यह अबभी दृश्य सत्य नहीहै अरु इस प्रकार का दृढ बोध के अभ्यास कों बोधा भ्यास पंडित कहते हैं ८७ हेरामजी दृश्य का जो असंभव है अरु अभाव तिसके बोध होने करके रागद्वेषादिकों के तनु भाव करने को सूक्ष्मता करने को निरंतर आत्म विचार केवल करके प्रीति जो उदय होती है सो ब्रह्म विचार का अभ्यास कहिया है ८८ हे रामजी दृश्य के अभाव के बोध बिना राग द्वेषादि कों के जीतने का अभ्यास जो करना है सो तप कहिया है अरु तिसतें आत्म ज्ञान नही होता है वह कैसा है सो तप दृश्य पदार्थों की वासना फ़ुरनेहैं अरु महा दुःख कों करता है ८९ हे रामजी दृश्यके फ़ुरनेकों

अभाव मोंही ज्ञान की सिद्धि होती है और ज्ञेय वस्तु जो परमात्मा तिसकों स्वरूप। का उपदेश भी होता है और तिस के अभ्यास मों निर्वाण पदभी प्राप्त होता है अरु इस प्रकार के बोध का अभ्यास होवे तो परमानन्द का उदय होता है ९· हे रामजी यह संसार रूपी महा रात्रि है इसमों मोह रूपी महा निद्रा उदय भई है सो निरंतर आत्म विचारते भया जो बोध रूपी जल तिसके सिंचन करके संपूर्ण निवृत्त होजातीहै अरु जैसे शरत कालमों वर्षा के जल करके बर्फ़ गल जाती है यह हमारे मनमों नि-श्चिय भया है ९१ हे रामजी एक चित्तका आकाश है जिसमों संकल्प का फुरना होता है अरु एक चिदाकाश है जिसमों दृश्य पदार्थ का फुरना भासता है अरु एक स्वरू-प करके आकाश है अरु जिसमों जगत वर्तमान है इन्ह तीनों को तुम एकही जानों जिसतें भावना का त्याग करने ते ९२ हे रामजी यह संकल्प रूपी चित्त शरीरकों सर्वत्र

प्राप्त भये को जानें जैसी इस कों संवेदन की इच्छा होती है अरु तैसीही संवेदनाउ-
दय होती है ९३ श्रीरामचंद्रजीकाप्रश्न॰ हे गुरुजी तुम जो कहा सूक्ष्म चित्त ही सर्व जगत
के सृष्ट करने की शक्ति वाला है सोही स्थूल जैसा बन करके स्थूल देह के आधीन हो-
ताहै और सर्व देहों विषे तत्व को जानता है और सर्वत्र व्याप्त है अरु स्वतंत्र है हे गुरुजी
तुमसों मेरे दो प्रश्न हैं ऐसा चित्त हम जैसोंका भी होता है अथवा नही होता है अरु जो
ऐसा चित्त हमारा होता है तो एक एक चित्त प्रति अनेक प्रकार की सृष्टि का भेद हो-
वेगा जैसा जैसा चित्त तैसी तैसी सृष्टि सबोंको सत्य ही भासे अरु जो ऐसा चित्त हम
लोकों का नही होता है तो चित्तभी असत्य रूप है अरु सृष्टि भी असत्य रूप है तो दो-
नों एक जैसे सभको हैं तो ज्ञान भये संते चित्तका नाश होता है अरु तब जगत भी
नाश को प्राप्त होजावेगा ९४ श्रीवसिष्टजीकहतेहैं। हे रामजी किसी चैतन्य के दाण-

मात्र संकल्प का लय भये संते लीन होते हैं अरु चैतन्य के संकल्प के उदय ते कल्प-
मात्र रहते हैं अरु संकल्प लय भये संते कल्प के अंतमें लीन होते हैं अरु कल्प कि-
सको कहते हैं सत्ययुग त्रेतायुग अरु द्वापरयुग कलियुग यह चारो हजार होजावे तो
एक कल्प होता है अरु यह ईश्वर का संकल्प है अब जीव संकल्प की वार्ता कहते
हैं ९५ हे रामजी मरण से आद मूर्छा सभ जीवोंने अनुभव करीदी है अरु सोही जी-
वोंके महा प्रलय की रात्रि को तुम जानो ९६ मरण समय में जीव संकल्प की सृष्टि
लय होती है अरु मरण से उपरांत सभही जीव अपने साथ संकल्प सृष्टि लय भ-
ईको फेर भिन्न भिन्न संकल्पते अपने अपने अनुभव की सृष्टि को भिन्न भिन्न रच-
ना करते हैं अरु जैसे भ्रम करके जेवड़ी में सर्प की माला कार फुरणा होती है
जैसे सभामें नृत्य होता है ९७ हे रामजी जिसकी बुद्धि ज्ञान करके युक्त नहीं है

अरु मूढ है अरु निर्मल विशाल परमपद के विचार को नहीं प्राप्त भयी ऐसे अज्ञानी पुरुष को जगत वज्रकी न्याई दृढ सार वालाहै अरु असत्य है तोभी सत्य भासता है ९८ हे रामजी जैसे बालक को वेताल मरण पर्यंत दुःख देता है तैसे मूढ बुद्धि पुरुष को जगत असत्य भी सत्य भासता है दुःख देता है ९९ हे रामजी अमृत की भावना करके विषभी सदैव अमृत होता है मित्र भावना ते शत्रु भी मित्र भावको प्राप्त होता है १०० हे रामजी इन्ह पदार्थों का स्वरूप अपनी भावना के अनुसार होता है अरु तैसेही दैव की नियत के वश प्राप्त भया अरु जगत चिरकाल का अभ्यासते सत्य भासता है १ हे रामजी एक दिनमों पंद्रा मुहूर्त होतेहैं अरु जौंनसा ब्रह्मा का एक मुहूर्त होता है अरु सो एक मनु का राज्य होता है चारयुग ७१ वार होवे तो एक मनुका राज्य होता है अरु चौदा मनु का राज्य होवे तो

ब्रह्मा का एक दिन होता है अरु इस प्रकार के तीस ३० दिन ब्रह्मा का १ एक मा-
स होता है अरु १२ बारां मास करके ब्रह्मा का एक वर्ष होता है अरु ब्रह्माजी की
आयुषा इस प्रकार करके एक १०० शत वर्ष प्रमाण है सो आयुषा ब्रह्मा की विस्नुजी
का एक १ दिन होता है २ इस प्रकार की शत १०० वर्ष श्री विस्नु भगवानजी की आयुषा
अरु जो विस्नु भगवान जीकी आयुषा है वोही शिवजी महाराज का १ एक दिन होता
है सो शिवजी स्वामी ध्यान मों चित्त लगाय कर स्थित हैं अरु तिसको दिन रात्रिका भे-
द ज्ञान नहीं है ३ हे रामजी सो सदा शिव सदा ध्यान मों मगन हैं अरु तिसको जग-
त अरु जगत के भाव कोई नहीं भासते हैं अरु तिसके विचार मों जगत सत्य रूप
है अथवा असत्य रूप है तोभी ना लय होता है अरु ना उदय होता है अरु कदाचि-
त कहींभी सदा शिवजी को जगत का भ्रम नहीं होता है ४ हे रामजी सो शिवजी^

पर ब्रह्म है अरु वुह कैसा है सर्व रूप है अरु शांत रूप है अरु जन्म से रहितहै
अरु चैतन्यता करके पूर्ण है अरु जैसे पत्थर जडता करके पूर्ण होता है अरु
तिस पर ब्रह्म के अणु अणु प्रति अनेक सृष्टि के समूह हजारों वर्त्तमान हैं
अरु जैसे चित्त से अनेक भ्रांति उदय होती हैं तिन अणु के अणु अंदर अने-
क ब्रह्मांड हैं १ जैसे चित्त की भ्रांतिमों अनेक भ्रांति होती हैं ५ हे रामजी तिस
तें पुरुष की वासना क्या वस्तु है अरु इस पुरुष को वासना बंध करती है
अरु जब पुरुष को विषय भोगमों अणु मात्रभी विराग होवे तब ही यह पुरुष
अणु मात्र विरागते भी सभते उच्च परम पद को प्राप्त होता है यह वेदकी श्रु-
तिका प्रमाण है ६ हे रामजी यह पुरुष जिस जिस पदार्थते विरक्त होता
है अरु तिसी तिसी पदार्थ ते मुक्त होता है अरु यत्न करना रक्षा करनी हानि-

दृष्टि अरु हर्ष शोकतें रहित होता है सो सर्वज्ञ पुरुष है निवृत्त होनेतें अणु
मात्रभी दुःख कों नहीं जानता है ७ श्रीरामचंद्रजीकाप्रश्न॰ हे ज्ञानि पुरुषों में श्रेष्ठ
गुरुजी भले प्रकार विचारते अल्प मात्र आत्मा अरु परमात्मा एक रूप ज्ञान भये
संते विकल्प रहित आत्म ज्ञान भये संते ज्ञानीपुरुषों के भी देह किस निमित्त कर
के रहित है ८ तुम कहो जो ज्ञानिओं के देह दैव कर्म के आश्रय करके रहते हैं
सो दैव क्या वस्तु है अब इसमों दैव नाम क्या कहते हैं ९ श्रीवसिष्टजीउवाच श्री
रामजीप्रतिकहतेहैं॰ हे रामजी पर ब्रह्म की एक नियति नाम करके एक शक्ति है
सो चैतन्य शक्ति करके युक्त है अरु वुह कैसी है अवश्य जो भवितव्यताहै ति-
सकी एक सत्ता है सो अनेक कल्पादिक मों सत्ता मात्र रूप है अरु अनेक कल्पों
मों व्याप्तहै १॰ हे रामजी आदि सृष्टिमों यह नियति अनेक भावों की अरु अनेक

प्रकार की अलय रचना कों धारण करती है इस पदार्थने इस प्रकार करके होने योग्यहै अरु इस प्रकार की परमात्मा की इच्छा सो नियति कही है ११ हे रामजी सो नियति महा सत्ता कही है अरु महा चिति कही है महा शक्ति कही है अरु महा क्रियाभी कही है महा दृष्टि कही है अरु महा उत्पत्ति कहीहै महाकारणभी कही है अरु महा आत्मारूप करके स्थित है १२ हे रामजी अवश्य भवितव्य रूप है यह ईश्वर की इच्छा शक्तिहै अरु रुद्रादि देवता की बुद्धि करकेभी उलंघन करी नहीं आतीहै १३ हे रामजी पुरुषने ऐसी नियति को बलवती जान करके अपना पोरष नही त्यागना यह नियती पोरुष रूप करके सभको प्रेरण करती है १४ हे रामजी नाम रूपसे रहित ईश्वर का निश्चित संकल्प नियती कहीहै सो ईश्वर का पोरुष है अरु वुह सर्वत्र गतहै अरु सर्व व्यवहारोंमों वर्तमान है अरु पोरष रहित पुरुषों मों निस फल रूप है अरु पोरष वाल्योंमें सफल

रूप है १५ हे रामजी जो पुरुष ईश्वर को नियन्त मान करके अरु मौन धार कर पौरुष की क्रिया त्याग करके रहता है उसके प्राण पवन कौन अर्थ के निमित्त जातेहैं अरु उस्के श्वास वृथा जाते हैं १६ हे रामजी जो कोई दैवको मान करके पौरुष को त्याग करना है अरु खान पानादिक देह के व्यवहार को भी त्याग देवे जो दैव देवेगा सो खावेंगे जो उस पुरुषको खान पान मिले तो भी मुखमें ग्रास देना चर्वण करके निगलना पौरुष विना नहीं होताहै १७ हे रामजी जो कोई पौरुष को त्याग करके प्राण क्रिया को रोक करके अरु निर्विकल्प समाधि करके मोक्षको प्राप्त होनाहै सो भी प्राण रोकने के पौरुष बिना नहीं सिद्ध होताहै १८ हे रामजी जैसे चैतन्य रूप आत्मा का जीवका भेद नहीहै तैसे ही चित्तका जीवका भेद नहीहै अरु जैसे चित्तका जीवका भेदनहीं है तैसे कर्म का देहका भेदनहीं है १९ हे रामजी कर्मही देह है यह मांस रक्त वाला देह देह नहीहै

अरु कर्म ही चित्त है चित्त ही जीव है सो जीव ही ईश्वर है सो ईश्वर ही आत्मा है सो आ-
त्मा सर्व रूप है सो सर्व व्यापी शिव है अरु यह मैने एक वारही निश्चय करके कहिया
है १९ हे रामजी कर्कटी राजा प्रति मंत्री का वचन है कर्कटी तेरे सिरीषे लघु चित्त वा-
ले अनेक हजार हमारे आगे पर्वतमों मच्छर की न्याईं संख्यामों नही है अरु हमारे धीर-
ता रूपी पवन की अंधेरी मों तृण पत्रकी न्याईं उड जाते हैं २॰ प्राप्त पुरुष ने क्रोध वेग
की चंचलता को आत्म घातके द्वार को जान करके त्याग करके अरु सम दृष्टि करके
शुद्ध बुद्धि करके व्यवहार वाली युक्ति करके स्वार्थ सिद्ध करीदा है २१ अपने पौरुष
के व्यवहार करके कार्य सिद्ध होवे भावें नहोवे अरु नियत महाबल वान है ऐसे
कहिने का भी समय कहांहै तिसते पौरुष ही धारण करने योग्य है २२ बुद्धिवान
पुरुषों के भाव जो है सो बचनों करके अरु मुख की चेष्टा करके नेत्रों की चतुरता

के द्वारों करके अरु एक रूप होय कर प्रवृत्त होते हैं जैसे नदी जल अपने प्रवाह करके एकत्र होते हैं २३ तिसकारण ते मैं इन दोनों को पूछता हो उनको संदेह क्या प्रकट भया है जो कोई चतुर पुरुष को प्राप्त होय कर अपना संदेह दूर करने को न-हीं पूछते हैं सोपुरुषों में नीच हैं २४ संपूर्ण गुणों के समूहों का अभ्यासतें उत्तम ज्ञान होता है अरु तिसके जानने द्वारा राजा होता है अरु मंत्री भी होता है २५ प्रभुता अरु सम दृष्टि यह राजविद्या करके होते हैं अरु जो सम दृष्टि को नही जा-नता है सो नतो राजा है अरु मंत्रीभी नही है २६ जो वचन युक्ति करके मधुर वा-नी करके कहीदा है सो वचन श्रवण करन वाले के हृदय को प्रवेश करता है अरु जल विषे तेल की न्याई विस्तार करके व्याप्त होता है अरु युक्ति कैसी है हृ-दय को प्राप्त होने हारी है अरु उपमा करके और दृष्टांत करके युक्त है वानी के-

सीहै योग्य अर्थ वाले पदों करके युक्तहै २७ हे रामजी चित्त बालक है अरु जग-
त लय है अज्ञान करके मिथ्या ही देखता है जो इसको सद्गुरु उपदेश करके
बोध करते हैं तो अपने निर्विकार स्वरूप को देखता है २८ हे रामजी ऐसी कोई
क्रिया नहीं वर अरु शापादिक भी दृढ भये मनको चलाऊंने को समर्थ होवे दृ-
ढ संस्कार के बोध को प्राप्त भया मन किसी कारकेभी अपने बोधको नही त्याग
करता है २९ हे रामजी यह मन अपने चाहे अर्थ को चिरकाल तें प्राप्त भया है
अरु दृढता करके उसी अर्थको धारता है अरु तिसमोंही प्राप्त भयाहै इस को
शरीर के भाव अरु अभाव बाधा करने को नही समर्थ होते हैं ३० हे रामजी तिस
को अर्थ विवेक भया है अरु निर्मल आत्म पद को नही प्राप्त भया है और भोग
पदार्थों को त्याग करता है अरु ऐसे मनको आत्यंत संताप होता है ३१ हे रामजी

अरु जिसकों विवेक प्राप्त भयाहै संसार मर्य्यादा को त्याग करने हारा ऐसे मनको भोग पदार्थ त्याग करेते आनंद शुद्ध होता है ३२ हे रामजी बोध युक्त पुरुषों का मन ब्रह्म ही है अरु भिन्न नही है जैसे समुद्र को जल रूप जानने हारे को तरंग समुद्र के जल से भिन्न दृष्ट नही होते हैं ३३ हे रामजी मन के संयमते संसार का भ्रम शांत होता है जैसे समुद्र मथने ते अनंतर मंदिर पर्वत स्थिर भये संते क्षीर समुद्र स्थिर होता भया ३४ श्रीवसिष्टजी श्रीरामचंद्रजी को चित्तकी चिकित्सा कहते हैं॥ हे रामजी अब हम चित्त रूप महा रोग की महा औषध कहते हैं वुह कैसी है अपने आधीन है अरु सुंदर स्वाद वाली है अरु निश्चित है ३५ हे रामजी अपना संकल्प फुरणा त्यागने ते पौरुष यत्न करके चित्त रूपी वेताल शीघ्र जीता जाता है अरु किस उपाय करके मन के चारु पदार्थ के त्याग करके चित्त का जय होता है ३६ हे रामजी जो पुरुष ३७

वा॰सा॰ वस्तु को त्याग करके वासना रहित होवे तिस पुरुषने मन जीत्या है जैसे हाथी चले भ-
१२९ ये दांत को दूर करके सुखी होता है ३७ हे रामजी आत्म ज्ञान का यत्न करके चित्त रूपी
बालक की रक्षा करीदी है अरु असत्य वस्तुतें फिराय करके सत्य वस्तु मों युक्त कियाजा
ताहै अरु बोधन किया जाता है ३८ हे रामजी शास्त्र करके अरु सत संग करके धीर
भया है ऐसे मन करके चिंताते रहित भया है चिंता करके तपे हुए अपने मन को तु
म छेदन करो अरु जैसे शीतल लोहे करके तपा लोहा छेदिया जाता है ३९ हे राम-
जी जैसे बालक यत्न बिना ही इहां उहां फिराया जाता है तैसे चित्त भी अशुभते फिराय
करके शुभमों युक्त किया जाता है अरु इसमों क्या कठिनता है ४० हे रामजी जौन सा
सत कर्ममों लगा है वुह सतकर्म कैसा है अंतमों शुभ फल देने हारा है ऐसे मन
कों चैतन्य विचार मों युक्त करे ४१ हे रामजी इष्ट वस्तु का त्याग अपने अधीन है

वा॰ सा॰ अरु एकांत करके हित करने हारा है जिसमों जो कठिनता को प्राप्त भयाहै सो पुर्षों
१३॰ मों कीट है अरु तिसकों धिकार है ४२ हे रामजी अशुभ वस्तुकों शुभ करके भावन करें
अरु आत्म विचार करके चित्त यत्न करके जीतीदा है जैसे बालक यत्न बिनाही वश करी
दाहै ४३ हे रामजी अपने पौरुष के यत्न करके चित्त शिताबी जीता जाता है अरु चित्त
रहित पुरुष ने पर ब्रह्म विषे यत्न बिनाही स्थिति प्राप्त होती है ४४ हे रामजी अपने पौ-
रुष करके साधन करने योग्य ऐसी इष्ट वस्तु का त्याग करके मन का शम करने बिना
शुभ गत नहीं होती है ४५ हे रामजी आत्म विचार करके साध्य है अरु ऐसे मन के
मारणे करके निर्विघ्न अखंड आनंद को प्राप्त होता है ४६ हे रामजी देव गतिकों त्याग
करके कैसी है वुह देव गति मूढ पुरुषों के ज्ञानमों इछ भई है अरु तिसको त्याग
करके पौरुष अरु ज्ञान करके चित्त कों चंचलता से रहित करना ४७ हे रामजी अपने

अधीन अरु सुख से साधने योग्य ऐसे अपने चित्तका जीतने को जो पुरुष समर्थ नहीं होते हैं सो पुरुष रूपी सृगाल हैं तिन्हको धिक्कार है ४८ हे रामजी जो कोई उत्तम पदवी कों प्राप्त होने चाहता है तो चित्त को चैतन्य भावना कों प्राप्त करके तद चित्तसें भी परे परम पदमों स्थिर होता है ४९ हे रामजी मुमुक्षु पुरुष आत्म भावना करके युक्त होवे अरु उत्तम बुद्धि करके युक्त होवे अरु ग्रसा गयाहै चित्त जिसका ऐसे आत्मा के भाव को यत्न करके धारण करे ५० हे रामजी अपने परम उत्तम पौरुष को आश्रय करके चित्त को चित्त बनेते रहित करके महा पदवी को प्राप्त होवे अरु जहां जाय करके शोच करने नहीं बनता है ५१ हे रामजी चित्त के बेगको जीतना कल्याणका मूल है अरु तिसते मनका जीतना सिद्ध होता है अरु मनके जीतने तें त्रैलोक्यका जीतना तृण समान है ५२ हे रामजी जिसमों शास्त्रका घात नहीं होता है अरु ऐसा

मनका स्वभाव बदलने मों क्या काइरता है ५३ हे रामजी जौनसे पुरुष अपने मन के संकल्प को फिराओंने मों समर्थ नहीं होते हैं सो पुरुष संसार के व्यवहार मों कैसे प्रवृत्त होवेंगे ५४ हे रामजी मैं पुरुष हों अरु मैं मृत भया हूं अरु मैं जन्मिया हूं अरु मैं जीवता हूं यह कुदृष्टि भासती है अरु किसते मन की चंचलता तें ५५ हे रामजी यह मन अपने फुरणे करके इहांसे और लोकको जाता है अरु तहां और रूपके फुरणेको करता है तिसते मनके फुरणे का त्याग करने तें मोक्ष होताहै अरु इसकारण ते मनका भय कहांते है ५६ हे रामजी नातो कोई मृत होताहै अरु नकोई कहीं जन्म लेताहै अरु आपही अपने मरणे को जानता है अरु परलोक को भी आपही जाता है अरु मनका क्या रूपहै ५७ हे रामजी यह लोकमें इस देहमों अरु परलोकमों दूसरे देह मों रहताहै मोक्ष पर्य्यंत चिंता को धारता है अरु इसका और रूप नहीं है ५८ ॥

यो·वा·
१३३

हे रामजी भ्राता मृत भये संते चाकर आदि संबंधी मृत भये संते कहा शो-
क क्लेश होता है सो कैसे होता है चित्त अपना चैतन्यता चमत्कार ते फिर ग-
याहै यही शोक मूल है यह हमारी बुद्धि निश्चित भई है ५९ हे रामजी चित्त
का उपशम भये बिना संसार भ्रम शांत नहीं होता है वह चित्त का उपशम
कैसा है पथ्य रूप है अरु शुद्ध है अरु तिरछा भी ऊंचा भी अरु नीचा भी बा-
रं बार विचारणा किया है तिसते चित्तका उपशम जब लग नहीं भया अरु त-
ब लग विश्रांति नहीं होती है ६० हे रामजी हृदय रूपी जो आकाश है तिसको
चैतन्य रूपी चक्र की धारा करके विशाल भये संते मनको तुम मारो नहीं तो
तेरे को संसार रूपी व्याधि पीड़ा करती है ६१ हे रामजी जो तेरे मन की प्रिय
वासना को दुःख रूप जानेगा होवे तो चित्त के सर्व अंगे कटे गये है यह हमारी

बुद्दि निश्चित भई है ६२ हे रामजी यह पुरुष है यह हम हैं अरु यह वस्तु हमारी है अरु मन का यही रूप है अरु इस भावना का त्याग मात्र करके मन रूपी तृण विचार रूप दात करके मूल सें छिन्न होता है ६३ हे रामजी जैसे शिरद ऋतु मों छिन्न भया बदलों का मंडल पवन की अंधेरी करके छिन्न भिन्न होता है अरु तैसेही विचार करके मन भी छिन्न भिन्न होता है ६४ हे रामजी यहां पास्त होवे अरु जहां आग्नि होवे तहां भय होता है यह मन का संकल्प त्याग आपने अधीन है इस भये संते कोई भय नही है ६५ हे रामजी यह भला है अरु यह भला नही है इस प्रकार करके जैसे बालकको शिक्षा करते हैं तैसेही मन रूपी बालक को विचार करके शुभ मार्ग मो प्रवृत्त करै ६६ हे रामजी यह चित्त रूपी सिंह है अरु संसार वासना इसकी गर्जना

है अरु जो विचार रूपी शस्त्र करके इसको जीत लेते हैं सो निर्वाण पदको प्राप्त होते हैं ६७ हे रामजी यह मन की कल्पना ते संसार किया आपदा प्रकट होतियां हैं वुह कैसी हैं भयानक है अरु भ्रम के करने हारी हैं जैसे निर्जल मारवाड़ देशमों रेती के चमकने तें मृगों को जल की भ्रांति करके तृष्णा होती है ६८ हे रामजी भावें प्रलय करने हारे पवन चले अरु भावें द्वादश सूर्य इकट्ठे होय करके तपें भावें सातों समुद्र सभही एक रूप होकर चलें तोभी जिसका मन लय भया है तिसकी हानि नहीं होती है ६९ हे रामजी मन रूपी बीजतें संसार के सुख दुःख शुभ अशुभ अंकुर होते हैं सप्त लोक रूपी नये दल भी प्रकट होते हैं ७० हे रामजी क्षीण भया मन उत्तम आनंद को देता है जैसे अंगार को चाहने पुरुष को दग्ध भया काष्ठ अलय अंगारें को देता है ७१ हे रामजी जिसका चित

वा·भा· आत्म विचार करके नष्ट भया है तिस के मन के संकल्प मों कोटी ब्रह्म लोकभी
१३६ तुच्छहैं सो किसतें जिसते आत्म सत्ता के अणु मात्र मों यह संपूर्ण ब्रह्माण्ड कोटी प्र-
त्यक्ष दृष्ट होती है ७२ हे रामजी यह मन कैसा है केवल संकल्प उदय करके अ-
नेक अनर्थ को करता है अरु संकल्प मात्र करके अपने अर्थ को सिद्ध करता है
अरु ऐसे मन को संतोष मात्र तें जीत करके विचार करके त्रैलोक्य जय को सिद्ध
करता है ७३ हे रामजी समता कैसी है परम पवित्र है अरु आत्म वेत्ता पुरुषोंने
भी मानी है अरु तिस करके मनकी शांति होती है अरु संसार की रचना संकल्प
सहित नाश भये संते जो सत चित आनंद परमात्मा शेष रहता है सो तुम को
सिद्ध होवे ७४ इतिचित्तचिकित्सा· हे रामजी तुम्हारा वासना रहित मन ही वासना
सहित मन को जीतने को समर्थहै अरु जैसे राजा बिना राजा को जीतनेको कोई

समर्थ नहीं होता है ७५ हे रामजी यह जीवों के समूह संसार रूप समुद्र के प्रवाह में तृष्णा रूपी ग्राहने पकड़े हैं और संकल्प विकल्प रूप जलके चक्र फेरमें मग्न भये हैं इन्ह जीवों को दूर पार पहुंचने को अपना शांत भया मन ही बेड़ी बना है ७६ हे रामजी शांत भया मन रूपी शस्त्र करके दुष्ट मनके पाश बंधन को छेद करके जो अपने को नहीं मुक्त करे सो और किसी करके भी मुक्त नहीं होता है ७७ हे रामजी जिन्हका मन चैतन्यता स्वभाव को लेच गया है अरु अपनी इच्छा के संकल्पों में दौड़ता है फिर तिस चित्त कर के आत्मा मलीन होता है सो मन जीतने योग्य है ७८ हे रामजी यह मन जो है सो मैं ब्रह्म नहीं इस संकल्प करके दृढ़ कर बंद्ध होता है अरु सर्व जगत ब्रह्म है इस दृढ़ संकल्प ते मुक्त होता है ७९ हे रामजी संकल्प ही

परम बंधन है संकल्प त्यागही मुक्ति है अरु तिसते संकल्पको अंतः करण मों-
जीत करके जो तुम्हारी इच्छा होवे सो तुम करो ८० हे रामजी तुम मूढ मत बनो
ज्ञानी बनों अरु संसार वासना को दूर करो अरु आत्मा को आत्म भावना करके
जानो अरु मूर्खों की न्याई क्यों रोदन करते हो ८१ हे रामजी यह हम को बडा खे-
द है अरु बडा आश्चर्य है जो सत्य वस्तु ब्रह्म है सो विस्मरण भया है अरु जो अ-
सत्य अविद्या बंधन है सो जीवों की स्मृति मों आइ प्राप्त भया है ८२ हे रामजी
जो राजा अनीति युक्त होवे तिस के राज मों स्थित भई प्रजा जिस जिस दुःखि अरु
दशा को उह प्राप्त होती है सो सो दुःख रूपी दशा पाप कर्म करने हारे चंडाल
कोभी योग्य नहीं है ८३ हे रामजी तुम राज्य व्यवहार मो वर्त मान भये हो तो भो-
ग पदार्थों में तुम्हारी प्रीती मत होवे जैसे फटिक सम के प्रति बिंब को धारण कर्ता

है अरु आप अपने स्वभाव करके निर्मल होता है ८४ हे रामजी श्रेष्ठ गुणों के-
ही विलास जांनने तें वथी है अरु सदैव सुशील अरु ऐसी उत्तम बुद्धि करके अ-
संग होय कर संसार कार्य करेगा और आत्म विचार में तत्पर होवेगा अरु तब ते-
री उपमा किसी करके नहीं होवेगा ८५ हे रामजी ऐसे उत्तम विवेक वाले पुरुषमें
देहाभिमान लग जाता है अरु निर्मल शुद्ध सतो गुण वाली वृत्ति करके आत्म स्वरूप
की समाधि में स्थित भये अरु पुरुष में योग की सप्त भूमिका चित्त को शुद्ध करती
है अरु शिव रूप में प्राप्त करती है ८६ श्रीरामचंद्रजीका प्रश्न श्रीवासिष्ठ जी प्रति ॥
हे भगवन् योग की सिद्धि करने हारी सप्त भूमि का कैसी है अरु तिन्ह का स्वरूप
करके मेरे प्रति कहो क्योंकि तुम आप तत्व ज्ञानी मो श्रेष्ठ हो ८७ श्रीवासिष्ठजी श्री
रामचंद्रजी प्रति कहतेहैं॥ हे रामचंद्रजी अज्ञान की सप्त भूमिका हैं अरु तैसेही

वा·प्र·
१५·

ज्ञान की भी सप्त भूमिका इन्हमों और भूमिका असंख्य हैं सो इन्ह विषेही अंतर्भूत हैं ८८ हे रामजी स्वभाव करके कर्म की प्रवृत्ति कर्म करने में पुरुषार्थ होना और भोग वासना की दृढता करके भोग के आनंद में आसक्त होना यह अज्ञान भूमिका का लक्षण है अरु स्वरूप भी है यही अज्ञान का मूल है ८९ हे रामजी नित्य अनित्य वस्तुका विवेक और यह लोक के अरु पर लोक के भोगों से वैराग्य और शमदम श्रद्धा क्षमा समाधान और मुक्त होने की इच्छा यह चार साधन युक्त श्रवण मनन में यत्न और मुक्त होने की इच्छा की दृढता और अखंडानंद में प्रीति और सभका आधार ब्रह्मको सभतें अधिक मानना यह सभ आत्म रूप की प्राप्तिके कारण है अरु आत्म सत्ताका लाभ यह ज्ञान भूमिका का लक्षण है अरु स्वरूप भी है यही मूलभी है इन्ह लक्षणों करके अरु कारणों करके ज्ञानकी भूमिका और

वा॰सा अज्ञान भूमि का वह मूल हैं अरु संसार दुःख कों अरु संसार मुक्ति ब्रह्मा नंद
१५१ की प्राप्ति रूपी फल को देती हैं अरु सप्त अज्ञान भूमि का नीचे नीचे प्राप्त करती
है सो रजो गुण अरु तमोगुण करके युक्त हैं अरु दुःख करके पूर्ण है अरु
जन्म मरण नरक को देने हारी है अरु ज्ञान भूमिका सप्त उपर उपर लोक-
मों प्राप्त करती है सतो गुण करके युक्तहैं ज्ञान वैराग्य प्रधान है अरु क्रम
करके जीवन्मुक्तिको विदेह मुक्तिकों देतीहै ८९ हे रामजी प्रथम अज्ञानकी सप्त
प्रकार भूमिका को तुम्ह सुनो इसते उपरांत ज्ञान की सप्त भूमि का को श्रवण करो
गे ९० हे रामजी आत्म स्वरूप मों स्थिति और देहाभिमान का त्याग ज्ञान यह भूमि
काका संक्षेप लक्षण है और आत्म स्वरूप का विस्मरण और देहाभिमान की दृढता
यह अज्ञान भूमीका संक्षेप लक्षण है ९१ हे रामजी शुद्ध सत्ता मात्र आत्मज्ञानते

अरु आत्म स्वरूपतें जौनसे पुरुष नही भूलते हैं तिनके रागद्वेषादिक अज्ञान के
लक्षण कदाचित भी प्रसंग नहीं करते हैं ९२ हे रामजी अपने आत्म स्वरूप का भूल
ना और चित्त का चितवने मों मगन होना इसते परे अज्ञान का मोह न भया है नाहो
नाहै ९३ हे रामजी एक अर्थको त्याग कर और दूसरे अर्थ को चित्त के याने में मध्य
मे जौनसी स्थितिहै सो नातो जाग्रत है अरु ना निद्रा है सो स्वरूप की स्थिति कही
है ९४ हे रामजी अहंकार अंशक्षीण भये संते चित्त शांति भये संते अरु द्वैत भाव ल-
य होत संते जड़ता रहित जो स्थिति है सो आत्म स्वरूप कहते है ९५ हे रामजी तिस
आत्म स्वरूप मों अज्ञान आरोपन किया है अरु तिसकी भूमिका तुम सुनों १ एक बीजजा
ग्रत है २ एक जाग्रत है ३ एक महा जाग्रत है ४ एक जाग्रत स्वप्न है ५ एक स्वप्न है ६
एक स्वप्न जाग्रत है ७ एक सुषुप्त है ७ ९६ हे रामजी सभ मिल करके अनेक प्रकार

होती है अब इनके लक्षण तुम श्रवण करो यह सप्त प्रकार का मोह है वारं वार आ-
पसमें नित्य संबंध करके अनेक रूप होता है ८७ हे रामजी प्रथम सृष्टि के आदिमें
अथवा जाग्रत अवस्था के आदमें चैतन्य के आभासयुक्त प्राण धारण किया की
उपाधि करके अज्ञान का जो फुरणा है जिस करके आगे प्राप्त होने के समयमें
यह आत्मा जीवादि नाम रूप अर्थों का पात्र होता है और बीज रूप करके जाग्रत
अवस्था जिसमें स्थितहै सो बीज जाग्रत कहिया है ८८ हे रामजी सो बीज रूप जा-
ग्रत हो अज्ञान सृष्टिमें इस की न्याई प्रत्यक्ष देह रूप बनिआ तो यह देहमें हो यह
भोग मेरेहैं सो जाग्रत कहिया है ८९ हे रामजी यह मैं हूं अरु यह वस्तु मेरी है इस
प्रकार का जन्मजन्मांतरे के अभ्यासतें दृढ प्रतीत भया प्रत्यक्ष भासता है अरु व्यव-
हार करने में सिद्ध भया जो अज्ञान है सो महाजाग्रत कहिया है ९० हे रामजी जाग्रत

अवस्था का संकल्प संस्कार अंतः करण में दृढ भया है अथवा नही दृढ भयाहै अरु ऐसा मनोरथका फुरण है और जाग्रतमें स्वप्न जैसा वर्तमान भया जो अज्ञानहै सो जाग्रत स्वप्न कहिया है १ हेरामजी जो जाग्रत स्वप्न अनेक भेदोंका है जैसे एक चंद्रमा में दो चंद्रमा की भ्रांति अरु सुक्तिमें रजतकी भ्रांति अरु जेवड़ी में सर्पकी भ्रांति रेतीकी चमक में जलकी भ्रांति अज्ञानतें होती है अरु अभ्यासते जाग्रत अवस्था के भावको प्राप्त होती है सो जाग्रत स्वप्नका रूपहै २ हे रामजी निद्रा प्राप्त भई संते जो कुछ जाग्रतमें देखिया है अनुभव कियाहै अरु निद्राके अंतमें ऐसा प्रतीत होताहै मैने क्षणमात्र में गज तुरंग राज्य धन संपदा देखीहै सो सत्य नही है मिथ्याही है ऐसा जो निश्चय है सो सुपना कहिया है सो सुपना कैसे होता है महाजाग्रत का अज्ञान अंतः करणमें वासना रूप दृढ होताहै अरु निद्रा समयमें

दृश्य होता है अरु चिरकाल देखने मों नहीं स्थित होता है अरु विशाल रूप करके दृ-
श्य नहीं होता है ३ हे रामजी सो स्वमाही प्रबल अपने संस्कार करके अंतः करण मों आरू-
ढ होता है अरु जाग्रत अवस्था के समान प्रत्यक्ष होता है महा जाग्रत जैसा दृढ होता है
देह पात भये संते अरु नहीं भये संते भी चिरकाल वर्तमान होताहै तो स्वम जाग्रत क-
हीदा है अरु जैसे राजा हरिश्चंद्रको बारां १२ बर्ष तक चंडाल भाव का स्वम भया है और
जैसे जडभरत को हरिण जन्म का स्वम भया है ४ हे रामजी पहिलीआं षट् अज्ञान
भूमिका कर्म फल के भोग करके अरु त्याग करके केवल अज्ञान बलते जीव की क-
र्म अरु ज्ञानसें रहित जड़ रूप जो स्थितहै सो सुषुप्ति भूमिका कही है ५ हे रामचन्द्र-
जी तिस अवस्था मों जितने तृण काष्ट पर्वत पाषाणादिक पदार्थ हैं सो परमाणु रूप
करके स्थित होते हैं ६ हे रामजी पहिली षट् अज्ञान भूमिका अज्ञान करके किये पाप

पुण्य कर्म का संस्कार करके होते हैं अरु जब संपूर्ण कर्म फल भोगे जाते हैं अरु आ-
गे कर्म नहीं होते हैं अरु ज्ञानभी नही होता है तो जीव केवल अज्ञानमें स्थित होता
है सो सुषुप्त भूमिका होती है ७ हे रामजी जौनसी अज्ञान की भूमिका स्वप्ना वस्था क
हीहै इसमें भी अनेक शत प्रमाण अवस्था हैं फिर एक एक कें जाग्रत महा जाग्रत
आदि अवस्था अनेक होती हैं अरु कोई अज्ञान भूमिका की अवस्था स्वप्न जाग्रत की न्याई
चिरकाल तक संसारमें जन्म मरणादिक कों करती है अरु कितनी जाग्रत स्वप्न की न्याई
तुच्छ काल अज्ञान क्लेश कों देतीहैं ८ हे रामजी अज्ञान भूमिका सप्त ७ प्रकार मैने कही
है सो कैसी है अनेक विकारों करके जगतमें अज्ञान क्लेश करके निंदा करने योग्यहै
शास्त्र विचार करके अरु सतसंग करके ज्ञान विचारते निर्मल आत्म स्वरूप प्राप्त होय
करके इन्ह सभकों तुम तरोगे इसमें संशय नहीं करना ९ इति अज्ञान भूमिका वर्ननं

अथज्ञानभूमिकासप्तप्रकारकीवर्ननं॰ हेरामजी निर्मल बुद्धे अब तुम ज्ञान की सप्त-भूमिका सुनो ज्ञान भूमिका ज्ञान करके मोह रूपी कीचड़ में पुरुष फेर मग्न नहीं होताहै १॰ हे रामजी योग शास्त्र वेत्ता वादी लोक बहुत योग भूमि का कहते हैं सो योग भूमिका इन्ह ज्ञान भूमिकों के समान नहीं है सो योग भूमिका ममता अहंकार युक्त है वुह मुक्ती नहीं करती है अरु ममता अहंकार अज्ञानकों दूर करने हारी यह ज्ञान भूमिका मुक्ति देनेकों श्रेष्ठ हैं ११ हे रामजी आत्म बोध कों ज्ञान कहते हैं अरु मुक्ति को ज्ञेय कहते हैं सो मुक्ति ज्ञानकी सप्त भूमिकानें परे है १२ हे राम जी आत्म बोध अरु मुक्ति इन्हका नाम भेदहै अरु आत्म बोधकों जीव पाइ करके फेर संसारमें नहीं प्राप्त होता है १३ हे रामजी प्रथम ज्ञान भूमिका शुभ इच्छा है १ दूसरी विचारणा है २ तीसरी तनु मानसा है ३ अरु चतुर्थी सत्वा पत्ति है ४ पंचमी असं-

सक्त मानसा है ५ षष्टी पदार्थ भावनी है ६ सप्तमी तुरीया है ७ अरु मुक्ति इन्हतें परे है जिसमों फेर संसार रूपी शोक समुद्रका उदे नहीं होता है अब इन्ह ज्ञानभूमिकों के लक्षण कों तुम श्रवण करो १८ हे रामजी मैं मूढ होय कर क्यों स्थित भया हूं अरु शास्त्र करके अरु वैराग्य धारण करके आत्मा को देखो ऐसी जो इच्छा सो शुभेच्छा ज्ञानभूमि का कही है १४ हे रामजी शास्त्र विचार अरु सतसंग करके वैराग्य को प्राप्त होय करके अरु श्रवण मननादिक मों विचार करना सो विचारना ज्ञान भूमिका कही है १५ हे रामजी विचारना अरु शुभेच्छा करके इंद्रियों के भोगों से चित्तकों असंगकरना अरु सूक्ष्मता को प्राप्त करना सो तनु मानसा ज्ञान भूमिका कही है १६ हे रामजी यह तीन भूमिकों के अभ्यासतें चित्त मों भोग पदार्थों के वैराग्य करके अंतः करन शुद्ध होता है अरु सत्व मूर्ति आत्मा विषे स्थित होती है सो सत्वा पत्ति ज्ञानभूमिका क-

हीहै १७ हे रामजी यह चार भूमिकों के अभ्यासतें मन की असंगता केवल करके ब्रह्म साक्षात्कार का चमत्कार जिसमें होता है सो असं सक्त मानसा ज्ञान भूमिका कहीहै १८ हे रामजी इन्ह पांच भूमिकाओं के अभ्यासतें आत्मारामता करके स्थित होना बाहिर के पदार्थों की भावना नष्ट होनी सो पदार्थ भावनी ज्ञान भूमिका कही है १९ हेरा मजी इन्ह षट् भूमिकों के अभ्यासतें द्वैत भेद का लय होनेते जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिका भेद लय भये संते केवल स्वरूपा नंदमें स्थिति होवे सो तुर्यगा ज्ञान भूमिका कही है २० हे रामजी जौनसें महा भाग्यवान पुरुष हैं सो सप्तमी ज्ञान की भूमिका तुरीया वस्था को प्राप्त होते हैं सो पुरुष आत्माराम है अरु महात्मा है सो उत्तम पदको प्राप्त भये हैं २१ हे रामजी सो जीवन्मुक्त है अरु सुख दुःखते रहित हैं अरु देहके वर्णाश्रम प्रसंग करके कर्म करते हैं अथवा नहीं करते हैं उन्हकों कर्म करनेका विधि

वा॰ सा॰ १५॰

निषेध कोई नही हे २२ हे रामजी उन्हको पास रहने वाले लोक कर्म करने को बोध न करते हैं तो आचार का कर्म सर्व प्रकार का करते हैं जैसे सोवते हुवे पुरुषको जगाय करके मित्रादिक शुभ कर्म करावते हैं अरु उन्हको कर्म करने का हठ नहीं रहता है अरु स्वरूपा नंदमो मगन रहते हैं २३ हे रामजी आत्मारामता करके आंनंद से स्थित है अरु तिन्हको जगत की क्रिया नहीं भुलावती है जैसे सम पुरुष को सुंदर इस्त्रिआं अपने रूप करके आनंद नही करती हैं २४ हे रामजी यह ज्ञानकी सप्तभूमिका ज्ञानी पुरुषों के गोचर होती है विषय भोगमों आसक्त भये को जड़ बुद्धि अरु पाप बुद्धि पुरुषों के गोचर नहीं होती है २५ हे रामजी ओंनसे यह ज्ञान की सप्तभूमिका को प्राप्त भये है सो उत्तम पशुयोनी भी हैं अरु हनुमान से आदि अरु म्लेछयोनी हे अरु धर्म व्याधसे आदि असुरयोनी अरु प्रह्लाद बली से आद सोभी ज्ञान

ज्ञानभूमिका के प्रभावतें जीवन मुक्त भये हैं २६ हे रामजी ज्ञान भूमिका अज्ञान बंधन को छेदन करती है अरु तिस भये संते मुक्त होती है जैसे मृग तृष्णाकी भ्रांति और शुक्तिमों रजत की भ्रांति वास्तव ज्ञान भये संते दूर होतीहै २७ हे रामजी जौनसे दूसरी अरु तीसरी अरु चतुर्थी ज्ञान भूमिका कों प्राप्त भये हैं तिन्हको ज्ञान उदय भया है अरु अज्ञान दूर भया है मोह सें पार भये हैं अरु प्रारब्ध वशतें मनो नाश अरु नित्यानंद पद प्राप्ति विदेह मुक्तिकों नहीं प्राप्त होतेहैं तदभी आत्माकों प्राप्त भयेहैं २८ हे रामजी कोई ज्ञानकी सप्त भूमिका को प्राप्त भये हैं कोई दूसरी अरु तीसरी को प्राप्त भये अरु कोई छठी भूमिका कों प्राप्त भयेहैं अरु कोई सर्व भूमिका कों प्राप्त भये हैं सो समही क्रम करके मुक्त होते हैं २९ हे रामजी कोई सनकादिक जैसे एकजन्ममों ही सप्त भूमिका कों प्राप्त भयेहैं अरु कोई जन्म

जन्मांतरो में भी क्रम करके सबही सप्त भूमिका को प्राप्त होइ करके मुक्त होतेहैं ३०
हे रामजी कोई चार भूमिका मों स्थित हैं अरु कोई साढ़े चार भूमिका मों स्थित हैं अरु
कोई षट् भूमिका मो हैं अरु कोई साढ़े छः भूमिका मों हैं ३१ हे रामजी जौनसे विवेकी पु-
रुष हैं सो यह ज्ञान भूमिका मों विचरते हैं अरु देह गेह के संताप दूर करनें को उद्य-
म करते हैं ३२ हे रामचंद्रजी जौनसे ज्ञान अरु बल करके इंद्रियां सहित मनको जीतले-
तेहैं सो पुरुष महा धीर हैं अरु ज्ञान भूमिका मों स्थित हैं सो पुरुष आत्म लाभ पदवी
के राजा हैं अरु दिग्दंति सहित सर्व जगत के जय कों तृण के समान जानते हैं ३३ हे
रामजी जौनसे पुरुष यह ज्ञान भूमिका मों सावधान होइ करके मन सहित इंद्रिय रू-
प शत्रु गणको जीत लेते हैं सो त्रैलोक मों बंदनीय हैं अरु महा पुरुष हैं जिसमों राज-
सूय करने हारे चक्र वर्त्ती राजा की पदवी और जगत को सृष्टि करने हारे ब्रह्माकी पदवी

दर्श समान नष्ट होती हैं ऐसे परम पद को प्राप्त होते हैं ३४ इति ज्ञान भूमिकोपदेशः ४
हे रामजी जैसे नट लोक अन्य पृथिवी के लोकों को मोहित करने वाले औषधियों के
चूर्ण को आकाश में उडावते हैं अरु तिस करके लोकों को आकाश में नगर का भ्रम
होता है सो सत्य अरु असत्य कहने में नहीं होता है तैसे अपने अज्ञान के कारणे में
संसार भासता है सो असत्य रूप असत्य रूप कहा नहीं जाता है ३५ हे रामजी जब
लग वासना सहित अविद्या आत्म विचार करके ज्ञान भूमिकाओं के बलते नहीं ना
श भई जैसे मूल सहित पुरानी लता नष्ट नहीं भई है सो जैसे फेर अंकुर पत्र पुष्पों को
प्रकट करती है तैसे यह अविद्या अनेक प्रकार के सुख दुःखों के बनों के बनों को प्र
कट करती है तिस कारणतें जीवन्मुक्त पुरुषों ने अविद्या के मूल वासना जाल को न
य करने वास्ते ज्ञान भूमिका का अभ्यास सदैव करना ३६ हे रामजी जैसे शिला में

जल नहीं है अरु तैसेही जलमों अग्नि नहीं है अरु तैसे आत्मामो जगत रूपी चित्र नहीं है परमात्मा मो कहांते है २७ हे रामजी यह जगत रूपी चित्त दृष्ट होताही कछु सत्य नहींहै इसमों जो कछु किया है सो सत्य कहा है अरु ऐसा मान करके चिंता को लय करके सुखी रहो २७ हे रामजी यह चित्त अत्यंत आत्मा भाव से रहित है अरु नीच है जो इसके अनुसार वर्त्ते सो पुरुष चंडाल के अनुसार क्यों नहीं वर्त्ते जैसे चंडाल के समान होना योग्य नहीं तैसे चित्त के अनुसार होना योग्य नहीं है ३८ हे रामजी तुम चित्त रूपी चंडाल कों निरंतर दूर करके आत्मा स्वरूपमों निशंक सुखी रहो अरु तुमको चित्त रूपी चंडालने कीचड़ जैसा जड़ किया है ३९ हे रामजी यह असत्य रूप चित्त यत्नने जौनसे मूढ पुरुष वश किये हैं अरु तिन्ह जड़ बुद्धि पुरुषों को चंद्रमंडल ते उलका पात और वज्रपात प्राप्त होता है ४० हे रामजी जौनसे असत्य रूप अरु असत्य संकल्प वाले चित्तके अनु-

सार वर्त्तमान हैं सो पुरुष आकाश के अनुसार वर्त्तमान हैं सो पुरुष आकाश के छेद करने की वार्त्ता करके काल क्षेप करते हैं तिन्हको धिग है जैसे आकाश के खंडन की कथा वृथा है तैसे चित्त के संकल्प अनुसार होना वृथाहै ४१ हे रामजी दृश्य पदार्थके दृष्टिके मध्यमें जौंनसा देखने हारे साक्षि चैतन्यका ज्ञान मात्र स्वरूप है सो दृश्य पदार्थ नेंदर्शन इंद्रियते भिन्न है सोही तेरा परम स्वरूप है ४२ हे रामजी जब चित्त एक देशतें अन्य देशको जाता है तिन्ह दोनों में जौंनसा जड़ता रहित केवल फुरणा मात्रहै अरु सत्ता मात्रहै तद्रूप ही तुमहो ४३ हे रामजी नतो जाग्रत सों उदय भयाहै अरु नसुसमें लय भया है अरु नजड़ है अरु ना चैतन्य है ऐसा सत्ता मात्र जो रूप है सो तुम तिसमें सावधान हो ४४ हे रामजी यह जीव नष्ट देहतें अपने स्थानतें चिर कालतें धारण करी देहकी वासना को त्याग करके अन्य देहकी वासना को साथ लेकर चला जाता

है अरु जैसे भ्रमर पुष्पोंकी वासना ले करके अरु पहिले पुष्पों को त्याग करके और दू
सरे पुष्पों पर चला जाताहै ४५ हे रामजी जो तुम ऐसा कहो जो जीव प्रतिबिंब है अपने
आधार देह के नाश भये संते नष्ट होवेगा तो भी तुमने शोक नहीं करना जौनसा इस देह
में नष्ट होवेगा सो नये देहमें नहीं होवेगा अरु जो देह के साथ नष्ट होवेगा सो अगले
देहमें क्यों नष्ट होवेगा ऐसा जान करके क्यों शोक करता है ४६ हे रामजी तुम सत्य
भावना करो आत्मा सत्य है अरु मोहकी भावना मत करो मोह असत्य है अरु उपाधि
रूप है अरु आत्मा इच्छा रूप उपाधितें रहित है अरु शुद्ध सत्ता मात्र रूप है ४७ हे रामजी
आत्मा साक्षी रूप है अरु सभमें समान है विकल्प रहित है अरु चैतन्य रूप है इच्छा र-
हित है अरु शुद्ध है तिसमें अनेक जगत दर्पण की न्यांई प्रतिबिंब होते हैं ४८ हे रा-
मजी सो आत्माकी चैतन्य सत्ता मनकी कल्पनातें परेहै अरु संकल्प विकल्पोंसे अन्य

हे हे रामजी सो चित्त के सुखदुःखों करके कैसे नष्ट होवेगी ४९ हे रामचंद्रजी संकल्प लय भयेते चित्त गलित भये संते संसार की मोह रूपी घटा गल जाती है अरु एक अद्वितीय चैतन्य मात्र आत्मा निर्मल भासता है वुह आत्मा कैसा है जन्मसे रहित हैं अरु अंतसे रहित है कैसे जैसे शरद ऋतु प्राप्त भई संते अरु वर्षा ऋतु के बादल दूर भये संते आकाश निर्मल होता है ५० हे रामजी यह चित्त सहित जगत असत्य रूप है तोभी आपे दृश्य मान होता है पुनः लयभी होता है अरु बार बार चैतन्य सत्ता में मन द्वारते चित्त रूप करके उदय होता है अरु लीनभी होता है जैसे समुद्र में जलके तरंग बार बार उदय होते हैं अरु लीनभी होते हैं २५१ इतिश्रीवासिष्ठसारे मोक्षोपाये उत्पत्तिप्रकरणं तृतीयंसमाप्तम् ३ ॥ अथस्थितिप्रकरणं लिख्यते श्रीवासिष्ठोवाच० हे रामजी यह जगत रूप चित्र जिस प्रकार स्थित है सो तुम श्रवण करो वुह कैसा है कर्ता रहित है अरु निस प्र-

योजन है अरु साधन क्रियाते बिना है लिखने हारे चितेरेसे बिनाही है अरु श्वेत पीत रं-
ग करने से रहित है मूलते बिनाहै पत्र कागद के आधार बिनाही है अरु आकाशमें प्रती
त भये हुये गंधर्व नगर जैसा है अरु देखने हारेके दृष्टि गोचरहै तोभी चिरकाल दृष्ट न-
ही होता है अरु मोह निद्रा करके प्रमाण करने हारे चैतन्य को तिरसकार करता है तोभी
साक्षी चेतन्य को तिरसकार नही करता है अरु अपने लय होनेमें साक्षी चेतन्यको लय
नही करता है १ हे रामजी फेर कैसे स्थितहै जैसे मर्कट शीत काल में शीत निवारण के
वास्ते काष्ट समूह इकठ्ठा करके अंगारस्थान में गेरि को धर लेते हैं अरु फिर मुखके प-
वन करके प्रज्वलित करते हैं उन्हसे अग्नि प्रज्वलित नही होती है अरु शीतभी निवृत्त न-
ही होता है अरु प्रकार भी नही होताहै तैसेही यह जगत प्रयोजन रहित है इह लोक
में अरु पर लोकमें किसी अर्थ को भी सिद्ध नही करताहै २ हे रामजी तुम सर्व अर्थोंकी

वा॰ सा॰ कला रूपी कलंक को शांत करो अरु सर्व विकल्प जाल रूपी शय्या का परित्याग करो वि-
१५९ २ कालकी मोह रूपी दीर्घ निद्रा को दूर करो भय से रहित होजाओ अरु आत्मज्ञान करके
अंतः करण को शोभित करो अरु स्वरूपा नंदमें सावधान रहो ३ हे रामजी यह मन रू-
पी पिशाच है सो दृश्य पदार्थ की भावना के त्याग विना और उपायों करके सैंकड़े कल्पों
करके भी शांत नहीं होता है ४ हे रामजी मनही सर्व जगत है अरु तैसे जगतही मन
है यह दोनों आपसमें सदा मिलेहैं तिन्ह दोनों में मनका क्षय होनेते जगत का क्षय
होता है ५ हे रामजी जैसे लवण राजाको मनमें चंडाल का स्मरण करनेते चंडाल
ता भई है तैसे यह जगत मनमें स्थितहै ६ हे रामजी जैसे भार्गव मुनि को तप क-
रते को भोग की तृष्णा मनमे रहीते भोग भोगने का स्वामी भाव भयाहै अरु संसारी
भावभी भयाहै तैसे यह जगत मनमें स्थित है ७ हे रामजी जैसे भृगु मुनी का पुत्र

सा· बालक भाव में मृतभया तिसको देख करके भृगु यमके ऊपर क्रोध करके शाप देने
६· लगा तो यम भृगु मुनी को कहता भया हे मुनि तुम जैसे विवेकी पुरुष लोक स्थिति
को असत्य जानते हैं अरु उत्पत्ति प्रलय को देखते हैं सो मोह के निमित्त में भी मो-
हित नहीं होतेहैं अरु मोह के निमित्त बिना कैसे मोहित होतेहैं ८ हे भृगुजी तुम वि-
वेक करके अनंत भयेहो हम देवकी आज्ञा पालने हारे हैं अरु तुम विवेक करके हमारे
पूज्य हो अरु क्रोधादिकों करके पूज्य नहीं हो ९ हे मुने तुम बुद्धि करके रहित हो अ-
रु क्रोध करके तप का क्षय मत करो कल्पांत समयमें हमने तुम्हारे कोभी दग्ध करना
है अरु शापदे करके हमारा क्या करलोगे १० हे मुने मैने अनेक संसार रचना ग्रस्त क-
रीहै अरु कोटि रुद्रभी ग्रस्त किये हैं अरु कोटि विष्णुभी ग्रस्त किये हैं अरु हम ग्रस्त
करने को कहा समर्थ नहीं हैं ११ हे मुने हम तुम्हारे भोक्ता हैं अरु तुम जैसे हमारे भोजन

ा·सा·
९६१

है यह सभ देव की इच्छा का बिलास है हे ऋषिजी हमारी तुम्हारी चेष्टा क्या व-
स्तु है १२ हे मुने यह संसार का व्यवहार ईश्वर की इच्छा करके वर्तमान है अरु वि-
वेकी पुरुष इसके अधीन वर्तमान होते हैं तो भी महात्मा पुरुष अभिमान नहीं क-
रते हैं १३ हे मुने तुम्हारी ज्ञान दृष्टि कहां है अरु महत्त्व कहां है अरु धीरता कहांहै
अरु संसार का मार्ग सभ को प्रसिद्ध है अरु अंय पुरुष की न्याई क्रोध अरु मोहके आ-
धीन क्यों भये हो १४ हे मुने यह मरणा वस्था अपने कर्म के फल के परि पाकते होती
है इसके विचार विना सर्वज्ञ तुम मूढ पुरुषोंकी न्याई मेरे को वृथा शाप देने की इच्छा-
करते हो १५ हे मुने संसार व्यवहार मों जैसे मूढ हैं हम को तैसेही ज्ञानी पंडित है अ-
रु मूढ वासना करके बद्ध है अरु ज्ञानी वासना त्याग करके मुक्त होता है अरु मृत्युको
सभही समान है १६ हे मुने ज्ञानी पुरुष सुखी पुरुषों में नित्य सुखी होतेहैं अरु दुःखी

सा॰ पुरुषों में दुःखी होते हैं अरु महात्मा पुरुष अज्ञानी पुरुष जैसे द्दश्यमें वर्त्त मान दृष्ट
२ होते हैं पर अंतः करणमें असंग है १७ हे रामजी भृगु मुनि यमका इह वचन सुनकर
यमको प्रसन्न होइ कर बिदा करते भये अरु आत्म विचार करके पुत्र शोक को त्याग क-
रते भये १८ हे रामजी तिस कारणते जो पुरुष ज्ञानींद्रियों को वासनाते मुक्त करे तो क-
र्मेंद्रियों करके अरु कर्म बंध से मुक्त होता है अरु कर्मेंद्रियों करके कर्म त्याग करे
श्रोर ज्ञानिंद्रियों करके वासना बद्ध होवे तो संसार मो बंधन को प्राप्त होता है ताते सं-
सार वासनामें स्थित है १९ हे रामजी जब तुम ममता अहंकार के अंधकार से रहि-
त होवो तो सर्व वासना रहित बनों अरु चित्तकी इह लोक अरु पर लोककी भोग इ-
च्छासे रहित बनों तब चित्त सें परे महा पदवी को प्राप्त होवोगे तुम को सभ ही प्रजा
नमस्कार करेगी २० हे रामजी वासना रहित चित्तही अमृत है अरु तिसते परे अमृत

सा॰ नहीं है वासना सहित चित्तही अग्र है अरु तिसते परे अग्र नहीं है जो चित्त दुखीकी
६३ भावना वाला होवे तो बाहिर दुखी नहीं होवे तोभी दुःखी के अंतः करणमों विवेक न-
हीं होवे तो बानीसे कहाहुवा विवेक क्या करेगा २१ हे रामजी जैसे फटिकमों प्रति
बिंब होते हैं परंतु अंदर प्रवेश नहीं करते हैं अरु तैसे लोक व्यवहार करके भोग इ-
च्छा तुम्हारे मों इष्ट होती है तोभी अंतः करणमों तुमको नहीं है २२ हे रामजी जो पुरु-
ष विचार करके उदय भयाहै अरु चित्त के स्वभावको जाने आत्मा के तत्वको जाने तिस
पुरुष के ब्रह्मा विष्णु इंद्र शिवजी सभही शिष्य होते हैं २३ हे रामजी यह शरीर मिथ्या
वासना के भारते प्रकट भयाहै आपदा का निवासहै जो पुरुष इसको आत्मभावना करके
नहीं देखते हैं सोही आत्मा को देखता है २४ हे रामजी शरीरमों देशकाल के वशते सु-
खदुःख प्राप्त होतेहैं अरु तिन्हकों जो अपने मों नहीं देखता है सो पुरुष आत्माको देखता

सा॰ हे २५ हे रामजी पार मर्यादासे रहित देश काल क्रियासे रहित ऐसा आकाश जैसा मैं हूं
४ इस प्रकार करके सर्वत्र आत्माको व्याप्त भयेको देखताहै सोही देखताहै २६ हे रामजी बाल-
कके रोमका अग्र भागका जो लक्ष भागहै तिसकी कोटि अंशाकी न्याई मैं सूक्ष्मरूप करके
सर्वत्र व्याप्त भयाहूं इस प्रकार आत्माको जो देखता है सोही देखताहै २७ हे रामजी अपने
को अथवा इतर पुरुषको भेद दृष्टि विना नित्यही सर्वव्यापी चैतन्य रूप स्वयं प्रकाश आ-
त्मरूप जो देखता है सोही देखताहै २८ हे रामजी जो पुरुष सर्व शक्तियुक्त अनंत रूप स-
र्वभावमें स्थित ऐसे अद्वितीय आत्माको अंतःकरण मो देखता है सोही देखताहै २९ हे
रामजी जो पुरुष आधि व्याधि भय करके व्याकुलहै अरु जन्म मरणादि धर्म सहित ऐसे
देहको जो आत्मरूप नहीं देखता है अरु अपनेको देहसे भिन्न देखताहै सोही देखता है ३०
हे रामजी तिरछी अरु ऊर्ध्व अरु नीचे आत्माकी महिमाको व्याप्त भई देखता है मेरे सिरीषा

दूसरा कोई नहीं है अरु ऐसे प्रकार जो आत्मा को देखता है सोही देखताहै ३१ हे
रामजी जो कोई ऐसा देखता है सर्व जगत मेरे मोहीहै अरु कैसे जैसे सूत्रमों माला के
मनके लगे होतेहैं अरु चित्तमों भी सर्व जगत है परंतु चित्त जड़है तिसते मैं चित्त नहीं
हूं ऐसे जो देखता है सोही देखता है ३२ हे रामजी नातो हम है नतो कोई और है अरु स-
र्व व्यापी सर्वत्र पर ब्रह्महै ऐसे प्रकार सत्य असत्यमों जो देखता है सोही देखता है ३३
हे रामजी नाम रूप करके जो कछु त्रैलोक्य है सो मेराही अंशहै जैसे समुद्रमों तरंग हो-
ताहै ऐसे जो देखता है सोही देखताहै ३४ हे रामजी जौनसा भोग प्रमाणका स्वभाव जान
करके भोगिया होवे सो भोग संतोष को करताहै अरु दुःख को नहीं देताहै जैसे चोर जान-
करके चोरकी सेवा करे तो चोर मित्र भाव करताहै अरु शत्रु भाव नहीं करताहै ३५ हे राम-
जी जैसे मार्ग चलने हारे पुरुषोंको मार्गमों तीर्थ यात्रा अकस्मात् प्राप्त होती है अरु तैसे

ज्ञानी पुरुषको संसार के व्यवहार चिंतन किये विनाही अकस्मात् प्राप्त होतेहैं ३७ हेरा
मजी जैसे नेत्रोंके आगे जो अकस्मात् दृष्ट होतेहैं उसमों दृष्टि प्रीति विनाही प्रवृत्त हो-
तीहै तैसे धीर अरु बुद्धि वाले पुरुष जगतके व्यवहारमों प्रीति विनाही प्रवृत्त होते हैं
हेरामजी उत्तम बुद्धिवाले पुरुषको अप्राप्त पदार्थोंकी चिंता जो है अरु अप्राप्त पदार्थ की
जो हानिहै अपने निश्चयतें चलायमान करने को नहीं समर्थ होतीहै जैसे पंछीओंके परों
का प्रहार पर्वतको चलाय मान नहीं करतेहैं ३८ हेरामजी ज्ञानी पुरुष पदार्थोंकी चिंत
मों दृढभावना को दुःखोंकी खान जानतेहैं अरु पदार्थों की दृढभावना त्यागको अनंत
सुखोंकी खान मानतेहैं ३९ हेरामजी संसार समुद्र तारणेको संतजनों की सेवा विना तप
अरु तीर्थ अरु शास्त्र विना समर्थ नहीं होते हैं ४० हेरामजी जो पुरुष लोभ मोह क्रोध कर
के अंधाभया है सो पुरुष दिन दिन प्रति क्षीण होताहै अरु जो सत पुरुष हैं वुह पुरुष लोभ

यो·वा·
नि·प्र·
स·८६।

अरु मोह क्रोधसे रहित होय करके अरु शास्त्रकी विधि करके अपने धर्म कर्ममें विहार
करतेहैं ४१ हे रामजी जो नीच पुरुषहैं तिनको अहंकार रूपी पिशाचने ग्रहण किया है तिसको
शांत करने वास्ते शास्त्र अरु मंत्रभी समर्थ नहीं होतेहैं ४२ हे रामजी जो कोई ऐसा विचार क-
रे कि यह जगत की झूठी इंद्रजालकी मायाहै इसमें स्नेह करना अरु विराग करनेमें मेरे
को क्याहै ऐसा अंतः करणमें विचारतेते अहंकार उदय नहीं होताहै ४३ हे रामजी जो
ऐसा मनमें दृढ़ होय सो परम उत्तम अहंकार कहियाहै अरु सर्व विश्वमें हूं अरु पर-
मात्माभी मैं हूं अरु अविनाशी मैं हूं अरु मेरेते परे और कछु नहींहै यह जो परम उत्तम
अहंकार है मोक्षको देताहै अरु बंधको नहीं देताहै ४४ हे रामजी मैं सभसे भिन्नहूं अ-
रु बालकके रोमके अग्रभाग के सैंकड़े अंशोंते सूक्ष्म हूं ऐसी जो अहंकार की कल्पना
है सो दूसरी कहीहै यहभी बंधन ही करतीहै अरु जीवन मुक्तों को मुक्त करती है ४५

हे रामजी हस्त पादा दिक करके जो कर्म करताहै अरु तिसको मानता है मैं करता हूं
यह तीसरा लौकिक अहंकारहै सो तुच्छहै त्यागने योग्यहै अरु दुष्ट है अरु परम शत्रुहै ४६
हे रामजी पहिले शिष्यको शम दम आदि करके मन इंद्रियोंते शुद्ध करके अरु शुद्ध अंता-
करण जान करके ब्रह्मज्ञानका उपदेश करे हे शिष्य तुम ब्रह्म हो ऐसे बोधनकरे ४७ हेरा-
मजी जौंनसा अज्ञानी है अरु शुद्ध अंतःकरण नहीं है तत्त्व ज्ञानसें रहितहै उसको जो ब्र-
ह्मज्ञान उपदेश करताहै सो श्रवण करने हारे को अरु अपने आपकोभी नर्क मों गेरता है ४८
हेरामजी जौंनसा गुरु शिष्यको परखे बिना उपदेश करताहै सो गुरु अरु शिष्य दोनों नर्क
मों प्राप्त होतेहैं अरु जब लग पंचभूत सृष्टि प्रलय नहीं भई तब लग नर्कमों दोनों पीडित हो
तेहैं ४९ हे रामजी यह माया दृढहै अरु दूर नहीं होतीहै ऐसी विचारणा तुमको मत होवे इस
मायाको मैं कैसे मारों जैसे होवे तैसे मैं इसको मारों ऐसी दृढ विचारणा तुमको होवे ५०

हे रामजी शुभ अशुभ कर्म करके जिस को अपना स्वरूप विदित नहीं हो ताहै अरु जन्म मरण का मन में खेद जिस को नहीं होता है अरु ऐसा रके दुःख सुखों में वैराग्य नहीं होता है मोक्ष की इच्छा जिस को नहीं हो तीहै सो मनुष्य रूप करके राक्षस है ५१ हे रामजी यह जगत मेरे देहाभि मान सहित असत्य है अरु ऐसा जान करके तेरे को विषाद मनमो होवे कि यह मेरे ही स्वरूप सहित सत्य रूप है अरु ऐसा विचार करके तेरे को विषाद दूर होवे ५२ हे रामजी सुंदर धन मों इस्त्री पुत्रादिक मों ज्ञानी पुरुष को हर्ष शोक का समय कहां है अरु जैसे रेती की चमकमों ज लकी तृष्णा भई संते जल चाहते को क्या आनंद होता है ५३ हे रामजी जि न्हू भोगों के अधिक भये संते मूढ पुरुष को प्रीति होती है अरु विचारी पु-

वा·सा· पुरुष को तिन्ह भोगों करके विराग होता है ५४ हे रामजी भोगों के आगम भये
१७· बिना वांछा जो नहीं होवे अरु भोग प्राप्तिमों भोगों का स्वाभाविक भोग करणा यह पंडितों का लक्षण है ५५ हे रामजी भावें स्वर्ग का नंदन बन शुन्य होजावे तो भी महात्मा पुरुष शोक मोहको नहीं करते हैं अरु देवगती करके यो प्राप्त होवे तिसको त्याग नहीं करते हैं सूर्यकी न्याई मोहांधकार को दूर करते हैं अरु असंग रहते हैं ५६ हे रामजी यह जगत की स्थितिमों बहुते ब्रह्मा के लक्ष चले गयेहैं अरु शिव इंद्रोंके अनेक शत चले गये हैं अरु नारायण के अनेक सहस्र चलेगयेहैं ५७ हे रामजी जगत की स्थितिमों कदाचित् शिव से सृष्टि भई है अरु कदाचित् ब्रह्मा से भई है अरु कदाचित् विष्णु से भई है अरु कदाचित् मुनी श्वरोंसे भी भई है ५८ हे रामजी यह पुरुष अपनी चेष्टा करके आपही रोदन करता है

अरु मर्कट दलित भये काष्ठ ऊपर बैठता है उसके अंड काष्ठ के अंदर पड़जाता

है सो मर्कट काष्ठ के मध्यके कीले को निकाल लेता है अरु काष्ठ मिलनेतें मर्कट
के अंडे काष्ठमों फस जाते हैं सो मर्कट अपने हाथकी चेष्टाते आप मृत होताहै ५९
हे रामजी जो तुम हजार वर्ष उग्र तप करो अथवा अपने शरीर को पर्वत शिखर
तें गिराय करके शिला मों चूरण करें अथवा अग्निमों बडवा अग्निमों प्रवेश करें
अथवा बडे गर्त्तमों पड़ा रहे अथवा तलवार की धारा करके शरीरकों तिल तिल प्र-
माण छेदन करें तेरेको शिव उपदेश करके विष्णुभी उपदेश करे अरु ब्रह्माभी उ-
पदेश करे अथवा त्रैलोक्य नाथ ईश्वर की कृपा करके तेरेको आप उपदेश करे
अरु चाहें आपही तुम त्रैलोक्य को सृष्टि पालन लयभी करें पाताल मों रहें अथवा
स्वर्गमों रहें अथवा पृथिवी मों रहें तोभी अपने मनके संकल्प का लय बिना मोक्ष

का उपाय तेरे को कोई नहीं है ६० हे रामजी यह मेरा गुरु है अरु मैं शिष्य हूं अरु यह मेरे विलास हैं ऐसा भ्रम तेरे को अंतः करण में मत होवे अरु मैं अरु तु म यह जगत यह संपूर्ण एक आत्मा तत्वही विलासको प्राप्त भया है ६१ हे रामजी यह मैं हूं सो मैं हूं अरु यह मैं करती हूं यह मैं नहीं करता हूं अरु यह पदार्थ हमारा है ऐसे भाव वाली दृष्टि संतोष को नहीं करती है ६२ हे रामजी यह देह मैं हूं ऐसी जो स्थित है सोही असि पत्र नामा नरक है अरु सोही वैतरणी नदी के तरंग हैं अरु सोही काल सूत्र नामा नरक है ६३ हे रामजी सर्व पदार्थ के नाश भये संते भी देहाभिमान की स्थिति सर्व यत्न करके त्यागनी जैसे उत्तम पुरुषने चांडालकी इस्त्री कदीभी स्पर्श नहीं करनी ६४ हे रामजी कर्ताभी कोई नहीं अरु मैंभी कोई नहीं सो भी कोई नहीं ऐसी प्रकार जान करके कर्ता कोन है अरु मैं कोन सो कोन है यह

सभ पर ब्रह्म है ऐसा निश्चय करके सभसे उत्तम पदमों स्थित हो जैसे निर्मल बुद्धि वाले उत्तम साधुजन स्थित होते हैं ६५ हे रामजी जो वासना करके बद्ध है सो ही बद्ध है अरु जो वासना का लय है सोही मोक्ष है वासना को तुम त्याग करके मोक्ष की आशा को भी त्याग करो ६६ हे रामजी पहिले तामसी अरु मलीन वासना को त्याग करो अरु शुद्ध मैत्री आद वासना को धारण करो तब मुक्त होवेगी ६७ हे रामजी मैत्री वासना कर के सर्व भूतोंमे प्रीति होती है सोभी मोहके करती है इसको व्यवहार करके केवल चैतन्यकी वासना मों धारण करो सो चैतन्य मात्र की वासना को मन बुद्धि सहित शुद्ध अहंकार करके त्यागन करो अरु जिस शुद्ध अहंकार करके सर्व वासना त्यागी है अरु बाकी रहिया अहंकार को भी तुम त्याग कर देवो अरु अहंकार के त्यागने करके तुम शुद्ध चिन्मात्र पर ब्रह्म स्वरूप को प्राप्त होवेंगे ६८ हे रामजी जो हृदयने सर्व परि-

वा·सा· त्याग करे अरु जो शेष चैतन्य सत्तामों रहे सोही मुक्त है अरु सोही परमेश्वर है ६९ हे
१७४ रामजी सो पुरुष चाहे समाधि करो अरु चाहे कर्म करो चाहे नहीं करो अरु जिसके हृद
यमों सर्व वासना नहीं है सो पुरुष मुक्त भया है ७० हे रामजी जिस पुरुष का मन वासना
रहित भयाहै तिस पुरुष को कर्म त्याग करके कछु पाप नहींहै अरु कर्म करनेते क
छु पुण्य नहीं है अरु ध्यान जप करके भी कछु सिद्ध नहीं है सो आत्मा बिचारते आप
ही सिद्ध भया है ७२ हे रामजी शास्त्र भली तरासें बिचारण किया है श्रवण करने हा
रेको समझाया भी है अरु तोभी वासना त्याग करके मन के मौन धारण बिना उत्तम
पदकी प्राप्ति नहीं है ७३ हे रामजी दशा दिशा भ्रम करके जो देखना सो देखिया है
अरु जगत मों यथार्थ वस्तु को देखने हारे कोई बिरले जनहैं ७४ हे रामजी सर्वत्र
पंचभूत हैं छिद्र कछु नहीं देखिया है अरु पातालमों स्वर्ग मों अरु पृथिवीमों और

वा० सा०
१०४

कब्बु नहीं है ७४ हे रामजी विचारवान् पुरुष युक्ति सुनाय करके उपदेश करे तो संसा-
र गौके खुरस्थान के जल जैसा सुगम तरा जाताहै अरु युक्ति को नहीं जाने तो संसार समु
द्र जैसा दुस्तर होताहै ७५ हे रामजी जगत के कोई भी भाव तत्व ज्ञानी को प्रीत नहीं करते
हैं अरु जैसे रत्न कलश को देषणे हारे को मृत्तिका कलश देखने में प्रीत नहीं होती है
जैसे पार्वती के नृत्य को देखने चाहते शिवजी को मर्कट नृत्य करते प्रीत नहीं देतेहैं ७६
हे रामजी हम क्या करें अरु कहां जायें क्या ग्रहण करें अरु क्या त्याग करें अरु सर्व ब्रह्मा-
ड सहित जगत आत्मा करके पूर्ण है अरु जैसें प्रलय काल के समुद्र जल करके ब्रह्मांड पू-
र्ण होताहै ७८ इति श्रीवासिष्ठसारे मोक्षोपाये स्थिति प्रकरणं ४ अथ उपशम प्रकरणम् राजा
दशरथ श्रीवसिष्ठ जी की स्तुति करते हैं १ हे मुने जिस सज्जन पुरुष रूप कल्प वृक्षतें युक्ति
रूपी कल्पता प्रकट होतीहै सो सज्जन कल्प वृक्ष सदा सर्वदा बंदना करने योग्यहै वुह सज्जन

है मुक्ति रूपी कल्पलता अरु आत्मा रूपी रत्न देखने वास्ते मुख्य एक मशाल है अरु आनं-
द रस रूपी तैलसें प्रकाश वान होती है १ हे मुने तुम्हारे वचन शक्ति करके संसार बंधन के
जंजीर रूपी काम क्रोधादिक सभही हमारे क्षीण होय गये हैं अरु जैसे शरद ऋतुमें श्वेत
बदल क्षीण होजाते हैं २ हे मुनि ऐसे आनंद कों स्वर्ग के मंदार वृक्षों की मंजरी नहीं करती
है अरु अमृत रूपी समुद्र के तरंगभी ऐसा आनंद नहीं करते अरु जैसे उदार बुद्धि वाले
पुरुषों कियां वाणीयां अंतः करण मों आनंद करती हैं ३ राजा दशरथ श्रीरामचंद्रजी को क-
हते भये हे राम जोंनसा दिन महात्मा जनों की सेवा करने में जाता है सोही दिन उत्तम है
अरु उत्तम उज्वल प्रकाश वाला है अरु जो दिन बाकी के हैं उह अंधेरेही चले जाते हैं ४ हे रा-
म हे कमल नेत्र जोंनसा प्रसंग वसिष्टजी कहते हैं अरु इसको तुम वसिष्टजी को फिर पू-
छो वसिष्टजी तुम्हारे ऊपर कृपा करने मों स्थित हैं ५ श्रीरामचंद्रजी वसिष्टजी प्रति प्रश्नकरतेहैं

वा॰ सा॰ हे भगवन् तुम सर्वज्ञ हो यह तुम्हारा प्रसाद भया है जिसतें में परम उदार बुद्धि
१८८
भया हूं अरु तुम्हारा बचन जो मैने समझा अरु यह तुम्हारा प्रसाद है ६ हे मु
ने जो तुम उपदेश करते हो सो तुम्हारा उपदेश मैने हृदय मों धारण किया है अ-
रु मैने मोह रूपी निद्रा दूर करीहै जैसे तुम कहते हो तैसेही मैं मानताहूं अरु सो
अन्यथा नहीं है सो तैसेही मैने हृदय मों अर्थ करके चिंतन कियाहै ७ हे मुने तुम्हा
री आज्ञा हित को करने हारीहै अरु हृदय मों प्रीत करने हारी अरु पवित्र है अरु
आनंद को सिद्ध करने हारी है अरु सिद्ध लोकोंने भी शिर करके धारण करीहै ८ श्री
वसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजी प्रति कहतेहैं। हे रामजी हे सुंदरमूर्ते यह उपशम प्रक
रण उत्तम अरु सिद्धांत विचार करके सुंदर है अरु इसको तुम सावधान होयकर श्रव
णकरो ९ हे रामजी यह माया बड़ी विशाल है अरु राजस तामस वासना वाले जीव-

वा·सा· लोकोने धारण करीदी है जैसे सुंदर स्तंभों करके मंदिर धारण करीदा है ९ हे रामजी
१०८ यह माया तुम्हारे जैसे पुरुषों ने तृण समान त्यागीदी है अरु कैसे हे तुम जैसे पुरुष अं
तः करणमों ज्ञान विचार वाले हैं अरु गुणों करके दृढ भये हैं सो कैसे मायाको त्यागते हैं
जैसे सर्प त्वचा को त्याग करता है १२ हे रामजी जौनसे सतो गुणकी वासना वाले पुरुष
हैं अरु राजस सात्वक वृत्ति वाले हैं सोभी जगत के आदि अंतको विचारण करते हैं १२
हे रामजी तिन्ह पुरुषोंको शास्त्र ज्ञान अरु सत्संग होता है अरु सत्कर्म करके तिन्हकी
पाप वासना हत होती है अरु तिन्ह पुरुषों की बुद्धि सार वस्तु विचार करनेको होती है अ
रु वह बुद्धि कैसी है मशालकी न्याई उज्वल भई है १२ हे रामजी अपने विचार करके आप
ही आत्माके अपनेमों जब लग नहीं विचारण किया है तब लग शास्त्रोंका तत्व प्राप्त नहीं हो
ता है १४ हे रामजी जिसका मन आद अंतमों असत्य जगत वस्तु विषे अत्य प्रीति को

प्राप्त होना है अरु तिस मूड बुद्धि पुरुष रूपी पशु को विवेक किस करके होनाहै १५ हे रामजी पहिले अपना मन शास्त्र करके वैराग्य करके सत्संग करके पुण्य कर्म में प्रवृत्त करना १६ हेरामजी जब मन सुजनता को प्राप्त होवे अरु वैराग्य को धारण करे तब सद्गुरु ज्ञानी पुरुष को प्रश्न करना सेवा भी करनी १७ हे रामजी तदनंतर सद्गुरु उपदेश करके ध्यान पूजा जप करने करके क्रम से परम पवित्र पदको भी प्राप्त होता है १८ हेरामजी शुद्ध विचार करके यह पुरुष आपने निर्मल मन करके आत्मा को देखता है अरु जैसे शीतल चंद्रमा करके संपूर्ण आकाश देखीदा है १९ हे रामजी यह लोक तब लग संसार समुद्र में तृण के समान बहा जाता है अरु जब लग चित्त करके विचार रूपी तट में विश्रांत को नहीं प्राप्त होता है २० हे रामजी जब पुरुष विचार करके आत्म वस्तु को जानता है अरु तब संपूर्ण मानसी चिंता को दबाइ लेता है अरु जैसे निर्मल जल रेती के नीचे करताहै रा

वा॰ सा॰ हे रामजी मैं ऊर्ध बाहु होय करके बोलता हूं अरु श्रवण कोई नहीं करता है अरु ज-
१८॰ ब लग मन जड़ता को प्राप्त भया है जैसे गर्त्त में कछू पड़ा होता है अरु भोग मार्गमें मू-
ढ मन भयाहै अरु आत्म विचार को विसर गयाहै तब लग यह संसार का अंधकार चंद्रमा
करके अग्नि करके अरु बारां सूर्यों करकेभी भेदको नहीं प्राप्त होताहै २२ हे रामजी तुम॰
मनको जीत करके राग द्वेष बिना सुखसैं रहित होवो अरु नित्यही आत्म विचारमों रहो
अरु हानी अरु वृद्धिसों रहित होवो आत्मनिश्चय वाले होवो अरु अद्वैत भावनामों दृढहोवो
अरु शोकसे रहित होवो चिंताज्वरसों रहित होवो २३ हे रामजी विश्वसे परे परम पद को प्रा-
प्त होवो अरु संपूर्ण प्राप्त होने योग्य पदार्थ करके पूर्ण होवो अरु पूर्ण समुद्र जैसे क्षोभसे
रहित होवो अरु चिंता ज्वरसे रहित होवो २४ हे रामजी तुम अनंत होवो अरु अपार होवो
अप्रमेय होवो आत्म वेता पुरुषोंमें श्रेष्ठ बनो अरु पर्बत की न्याई धीरबनो अरु चिंताज्वर

से रहित बनो २५ हे रामजी यथा योग्य ईश्वर की इच्छा करके प्राप्त भये पदार्थ कर के संतोष करो अरु सर्वत्र वांछा का परित्याग करो अरु त्याग करना ग्रहण करने ते रहित बनो चिंता ज्वर से रहित होवो २६ वसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजी को राजा जनक का सिद्धों का संवाद सुनावते हैं॥ हे रामजी सिद्ध आकाशमो छिप करके कहते हैं अरु द्रष्टा जो है अन्य पुरुष सो नेत्रादि इंद्रिय द्वारा करके रूपादि विषयों को प्रमाण करने हारा है अरु तिसको रूपादि विषयों के साथ संबंध करके विषयों की प्रतीति अरु आनंद अरु निश्चय जिसको होते हैं सो चैतन्य आत्म तत्व का विचारते प्रतीत होताहै ऐसे निर्विकल्प चैतन्य को हम निरंतर उपासन करते हैं २७ देषणे हारा पुरुष है अरु देषणे के साधन इंद्रियां हैं अरु दृश्य विषय है यह त्रिपुटी को वासना सहित त्याग करके केवल प्रकाश रूप करके जो प्रतीत होता है अरु तिस स्वयं प्रकाश

आत्माकों हम निरंतर उपासना करतेहैं २८ जिस आधार स्थानमों यह जगत हैं अरु जिसका यह सर्व जगत अंश रूपहै कारण जिस रूपनें प्रवृत्त भयाहै अरु जिस प्रयोजन वाले अरु जिस साधन करके जिस क्रिया को करताहै अरु जो इसका रूप हैं सो संपूर्ण आत्माही है अरु तिसको हम निरंतर उपासना करतेहै २९ अकार है शीरस्थान रूपी आद जिसका ओंहकार है अंत जिसके ऐसा सर्व शास्त्रमों सर्व जगतमों अन्तर वर्णमात्रा रूप करके पंच भूतों से लेकर नाम रूप करके सर्व व्यापी होय करके स्थित भया है अरु जिसको कर्म कांड वाले उपासना कांड वाले अरु ज्ञान कांड वाले वेद वाक्य करके अरु मंत्र शास्त्र करके वेदांत शास्त्र करके नित्यंप्रति उच्चारण करतेहैं सोहं मंत्र करके अजपा मंत्र जपने वाले अपने चाहे हुये जिस तत्वको जानते हैं तिसही आत्माकी हम निरंतर उपासना करते हैं ३॰ जो पुरुष अपने हृदय मंदिर

में स्थित भये अरु ईश्वर को त्याग करके और देवताको उपासने वास्ते प्राप्त होते-
हैं सो क्या करते हैं अरु आपने हाथतें कौस्तुभ मणिको त्याग करके और रत्न ढूंढने
को देश देशांतर में वृथा भ्रमण करते हैं ३१ वैराग्य करके हृदयमें स्थित भई सर्व
वासना को त्याग करके जिसके स्वरूप जानने करके संसारका मूल जाल अविद्या के
दकों प्राप्त होती है अरु तिसको हम निरंतर उपासना करते हैं ३२ जो पुरुष पदार्थों
में अत्यंत विरसता जान करके दुर्बुद्धि करके फेर भावना को बांधता है अरु सो मनुष्य
नहीं है वह मनुष्य रूप करके गधा है ३३ यह पुरुष इंद्रिय रूपी शत्रुन को बार बार
उठतेको विवेक रूपी दंड करके बार बार मारे जैसे इंद्र वज्र करके पर्वतोंको भेदन क-
रताहै ३४ यह मन रूपी काल कूट विषहै सो खाने वालेको मार देताहै जो इस विष
को युक्ति करके शोधन करे तो अमृत रूप होताहै तैसे मनभी स्वच्छ होजावे तो मोक्ष को

सा॰ प्राप्त करता है २५ उपशाम रूपी सुख परम पवित्रहै अरु तिसको यत्न करके सिद्ध-
थ करे उपशाम वालेका चित शिताबी शुद्ध होताहै अरु जिसका मन शुद्ध भयाहै तिस
को आत्म स्वरूप के सुखमें स्थिति शीघ्र होती है २६ इति सिद्धगीता॰ राजा जनक ऐसे
बचन श्रवण करके विलाप करता भया यह हमारा राज्य कितना प्रमाणहै तुच्छ है
अरु तिसमें हमारा जीवना क्या प्रमाण है सोभी तुच्छ है अरु मेरे को इसके बिना और
क्या दुःख है अरु में इसमें मोहित होय करके नष्ट बुद्धि जैसा दुःखमें स्थित भया हूं २७
मेरेको वर्ष वर्ष प्रति अरु मास मास प्रति अरु दिन दिन प्रति क्षण क्षण प्रति सुखजो
है सो दुःखों के पिंड प्राप्त होते हैं अरु बार बार मेरेको दुःखही प्राप्त होते हैं २८ यह जग-
तमें ब्रह्माकी कोटी चली गई है अरु अनेक सृष्टि चली गई हैं राजे अनेक रेणु सरीखे
चले गये हैं अरु मेरेको इस जीवनेमें क्या धैर्यहै २९ यह संसारकी रचना दुष्ट सुमा-

सिरीषी है अरु तिसमों देह की स्थिति भ्रम मात्र है इस देहकी जो में स्थिरता मानता हूं तो मेरे को धिग २ है ४० इस संसार मों जड़ लोक दिन दिन प्रति पापसे भी पापकी दशा को प्राप्त होते हैं दिन दिन क्रूर दशा को प्राप्त होते हैं अरु दिन दिन प्रति खेदकी अवस्था को प्राप्त होते हैं ४१ यह लोक बालक अवस्था मों अज्ञान करके नष्ट होताहै अरु यौवनमों विषय भोगों करके नष्ट होताहै अरु वृद्धा वस्थामों स्त्री पुत्रादि चिंता करके नष्ट होताहै अरु यह दुष्ट जीव किस समय मों अपना भला करेगा ४२ जिन्ह के नेत्रों के खोलनेमों अरु मिलाओनेमों जगत के उत्पति प्रलय होतेहैं अरु ऐसे पुरुष अनेक ब्रह्मा अरु विष्णु रुद्रादिक जगत मों चले गये हैं तो हमारी क्या गतीहै ४३ इस शरीर को एकांत करके दाह करतेहैं अरु ऐसा रौरवादिक नरकों की अग्निमों लोटना चंगाहै परंतु जिन्हमों जन्म

मरणादिक चक्र फिरते हैं अरु ऐसी संसारकी स्थितिमों रहना चंगा नहीं है ४४
यह संसार वृक्षके हज़ारों अंकुरहैं अरु हज़ारों इसकी शाखाहैं अरु हज़ारों पत्रहैं
अरु हज़ारोंही इसमें फलहैं इसका मनही महा दुःखके अंकुरका मूल है ४५ तिस
मनकों में संकल्पही रूपजाननाहूं इसकों में संकल्प त्याग करके सुकाय देता हूं
जैसे यह मन फिर शेष नहीं रहे ४६ इसपीछे मेरा मन रूपी मोती अनविधा रहा
है अरु अब उपदेश करके वेधा गयाहै अब विवेकादिक गुण रूपी सूत लगाओने
को योग्य भयाहै ४७ मन रूपी तुषारकी कणका विवेक रूपी सूर्य के ताप करके चिर
काल पर्यंत लग जावेगी ४८ मेरेको अनेक साधु पुरुषोंने सिद्ध पुरुषोंने बोध करा
याहै अब में परमानंद कों देने हारे आत्माकों ग्रहण करता हूं ४९ यह में जनक रा-
जाहूं अरु यह मेरा राज्य विस्तारको प्राप्त भयाहै अरु ऐसे कारणोकों अंता करनते

यो·वा· दूर करके अरु मन रूपी शत्रुओं को मार करके हे विवक मे तेरे प्रसाद तें शांति-
९८ को धारता हूं तो कोनमस्कार है ५० हे मन ऐसा इहां कछु उत्तम सभतें उच्चा पदार्थ को
ई नहींहै जिस करके तूं पूर्णताको प्राप्त होवेगा तिसते हे शठ अरु हे मन तूं धीरताकों
धारण करके चंचलता कों दूरकर ५१ इति राजन वाक्यम्· श्रीवसिष्टजी श्रीरामचंद्र
जीके प्रति कहतेहैं· हेरामजी जिसकी बुद्धि तीक्ष्ण है अरु आद अंतको विचारण क-
रतीहै अरु दीप शिखाकी न्याई प्रकाश मानहै तिस पुरुषकोंजड़ता का अंधकार वा
धा नहीं करताहै ५२ हेरामजी जौनसा यत्न भोग पदार्थ सिद्ध करनेको करीदाहै सो
ही यत्न बुद्धि के वधाउने के करने योग्यहैं ५३ हेरामजी बुद्धिकी जड़ता संपूर्ण दुः
खोंकी अवध है अरु संपूर्ण आपदा का भंडारहै अरु संसार वृक्षोंका बीज है तिसते
इसको नष्ट करें ५४ हेरामजी यह निर्मल बुद्धि विवेकी पुरुषके हृदय रूपी भंडार

में स्थित भई है अरु चिंतामणि की न्याई कल्प लताकी न्याई चिंतित किये उत्तम फलको देती है ५५ हे रामजी जो कोई परम श्रेष्ठ अत्यंत उंचे फलको चाहता है तिसने प्रथम आपनी बुद्धि सुधारणे योग्य है जैसे उत्तम फल वाली खेतीको चाहने हारे कृषाणने पहिले पृथिवी सुधारी है ५६ हे रामजी विवेकी पुरुषको इतने गुणों की संपदा नचारी प्राप्त होती है अरु आशाते रहित होना निर्भय होना नित्य सुखों में प्रीतिहोनी अरु समदृष्टि होनी अरु ज्ञानी होना इच्छा रहित होना अरु क्रियाक- रहित होना सौम्यता होनी विकल्प रहित होना अरु धैर्य होना सतजनों विषे मैत्री होनी सभको मानना अरु संतुष्ट होना कोमल चित्त होना मधुर बचन कहिना ग्रहण त्यागसे रहित होना इतने उत्तम गुण वासना बिना स्थित होते हैं ५७ हे रामजी तृष्णा रूपी चांडाली हृदयमें स्थित भई करके केशी है अरु अमंगल रूप है इस

करके भगवान् विष्णुभी बलीको याचना करने वास्ते वामन रूप भयाहै ५७ हेराम जी जो तू रागसें रहित होवें पदार्थ संग्रहकी वासना रहित होवे तो तेरे चित्तकी तृष्णा रूपी सत्ता गल जातीहै तो तूं दुःखसे रहित उत्तम पदकों प्राप्त होवेगा तिस तें हे रामजी तुम अंतःकरण को शांतिको प्राप्त करो ५८ हेरामजी यह अहंकारकी भावना पाप युक्तहै इसको अहंकार त्यागकी भावना रूपी शस्त्र करके छेद करके आत्म तत्वकी भावना को धारण करहै कल्याण रूप संपूर्ण मूर्ती करके गाईहै गीति जिसकी इसप्रकारकी शांतिकों तुम प्राप्त होवे ६० हेरामजी हे कमल नेत्र वासना त्याग दो प्रकारका तत्व ज्ञानी पुरुषोंने कहाहै एक जानने योग्य है अरु ध्यान करने योग्यहै ६१ हेरामजी मैं पदार्थोंका नहीं मेरे पदार्थ नहीं इस प्रकार करके अंतः करणमें शांत बुद्धि करके क्रियाभी करी जातीहै अरु अंतः करण के निश्चय क-

रके जौंनसा वासना त्याग करीरी है हेरामजी सो ध्यान करने योग्य वासना त्याग क॰
हिआहै ६२ हेरामजी अहंकार वाली वासनाको लीला करके जौंनसा त्याग करके ध्येय
वस्तुको भी त्याग करताहै सो जीवन्मुक्त कहिआ है ६३ हेरामजी समबुद्धि करके त-
त्व जान करके वासना का लय करके अरु ममतासें हीन होय कर वासना त्याग जो
कियाहै सो ज्ञेय वासना त्याग कहिआ है ६४ हेरामजी जौंनसा वासनाकी कल्पना
सहित निर्मूल त्याग करके शांतिको प्राप्त भयाहै तेसके त्याग करके जो युक्त भया
है अरु तिसको तुम मुक्त भयेको जानो ६५ हेरामजी जिस पुरुषने सखुमिकी न्या-
ई शांत हृत्ति वाले चित्त करके स्थिति करीहै अरु सो पुरुष संपूर्ण कला सहित चंद्रमा
की न्याई सर्व जीवों करके सेवने योग्यहै सो मुक्त भया है ६६ हेरामजी विचार वाले
पुरुषके मनमो चार प्रकार प्रकट रूप वाला श्रोर निश्चय होताहै ६७ हेरामजी में माता

पिताने जन्म देने करके आपदा का शिरोमणि कियाहूं अरु ऐसा जो निश्चय है सो
एक ही काहिआ है वह कैसा है असत्य दृष्टि वालाहै अरु बंधन करने हाराहै ६८
मैं सर्व भावोंसे रहितहूं अरु बालकके रोमके अग्रभाग सेभी सूक्ष्म रूपहूं ऐसा दू
सरा निश्चय होयाहै सो मोक्ष सिद्धिको करता है ६९ जितना यो जगत का जाल है
अरु जितने पदार्थ है सो संपूर्ण अक्षय रूपमें हो ऐसा तीसरा निश्चय कहाहै सो मो
क्षरूप है ७० मैं जोहूं अथवा यह संपूर्ण जगत जो है सो सभही आकाशकी न्याई शू-
न्यहै अरु असत्यहै ऐसा जो दृढ निश्चयहै सो चतुर्थ कहते हैं अरु यहभी मोक्ष सिद्धि
के निमित्त महा श्रेष्ठहै ७१ हेरामजी जो पुरुष सभसे परे उत्तम पदको आलंबन कर
ताहै सो पूर्ण चंद्रमाकी न्याई शीतल रूपहै अरु दुःखमें उद्वेगभी नही करताहै अ-
रु सुखमें संतुष्ट नही होताहै ७२ हेरामजी प्रश्न किया तो प्रसंगकी वार्ता कहता

है अरु नहि प्रश्न कियेतें तूष्णी रहताहै इच्छा अनिच्छाते जो रहित भयाहै सो संसार मों पीडित नहीं होताहै ७३ हेरामजी भावों विषे अद्वैत भावनाको आश्रय कर सत्ता के अद्वैतके सरूपको प्राप्तहो अरु धर्मशास्त्र की मर्यादाके निमित्त कर्म मार्गमों यह शुभ कर्महै अरु यह अशुभ कर्महै यह करना अरु यह नहीं करना इस प्रकारकी द्वैतभा वना को करो इसीतें कर्म विषें अद्वैत भावना को दूर करके द्वैत अद्वैत विचार मों तत्पर रहो ७४ हेरामजी तुम ब्रह्महीहो ब्रह्म वेत्ताहो अरु परमार्थ विचारतें सर्वलो क विषें देवता भावको प्राप्त भयेहो ७५ हेरामजी यह बांधव हमाराहै अरु यह हम हैं यह हमारा शत्रुहै ऐसी गिणती तुच्छ बुद्धिवाले को होती है अरु उदार चित्तवाले को सर्वत्र मात्र आत्म बुद्धि होती है ७६ हेरामजी सो नहीं है जिसमो हम नहीं हैं सो नहीहै अरु जो हमारा नहीहै ऐसा निर्णय करके धीर पुरुषोंको भेदसें बुद्धि रहित होती

है ७७ हे रामजी माता अरु पिता के मरण करके संताप को प्राप्त भये हुये पावा-
मानज ऋषि को पुण्य पुरुष कहता है अरु जौनसी मृत भई हुई माता है सोही ते
री माता नहीं है अरु जो मृत भया सोही पिता तेरा पिता नहीं है अरु तूंभी उन दोनों
का पुत्र नहीं है अरु उन्हके पुत्र असंख्य हैं अरु तेरे माता पिता अनेक सहस्र भ
ये हैं जैसे जल प्रवाह के अनेक तरंग और अनेक तट और अनेक मार्ग होते हैं ७८
हे रामजी नदीके तरंग की न्यांई अनेक माता पिता तेरे भये हैं तिसतें तेने माता
पिता अरु पुत्रादिक स्नेह करके शोचने योग्य नहीं है ७९ हे रामजी अज्ञान करके
मृग तृष्णा की नदी विस्तार वाली भई है अरु सो अविद्या है शुभ अशुभ वासना
रूपी तरंग युक्त है अरु अपनी वासना रूपी जल की तृष्णा अनंत फुरणे वाली भई
है ८० हे रामजी तूं आत्मा को भाव अभाव से रहित स्मरण कर जरा मरणते रहि-

त जान ऐसे आत्माको जान कर सूक्ष्मन मन होवे ८१ हेरामजी पुरुष ऋषने ऐसे समुझाया तो पावमानज ऋषि आत्म बोध के प्रकाशको प्राप्त होता भया अरु जैसे प्रात समय मो मनुष्य लोक प्रकाश युक्त होता है ८२ हेरामजी इस प्रकार पीछे तजे ऊये अनेक शरीरों किम्बा अनेक धन अरु पुत्रादिकों किम्बा आशा अरु वासना होती है अरु उन्हते क्या ग्रहण होता है त्याग किसका होताहै ८३ हेरामजी तिससें अनंत वासना त्याग करणाही मोक्षका उपाय है अरु आकाश नाम भी मला नहीं है ८४ हेरामजी चिंतन करणे करके चिंता बढती है अरु जैसे काष्ट करके अग्नि जलती है अरु जैसे काष्ट के बिना अग्नि शांत होतीहै तेसे चिंतन बिना चिंता शांत होती है ८५ हेरामजी मन पूर्ण भये संते जगत अमृत करके पूर्ण होता है अरु जोड़ा चरणों में लगा होया हो तो पृथिवी सारी चर्म मय प्रतीत होतीहै ८६ हेरामजी

वा॰सा॰ वासना रहित पुरुषको जगत एक कमल के बीज समान तुच्छ होताहै अरु अनेक
१९५ जोजनों का मार्ग गौके खुरबराबर होता है अरु ब्रह्माजी का दिन क्षण के बराबर हो
ताहै ८७ हेरामजी जैसी शीतलता और आनंदता वासना रहित पुरुषको होतीहै ऐसी
चंद्रमामें नहीं है अरु हिमाचल की कंदरामें नहीं है अरु केले के स्तंभमें नहीं है
अरु चंदनमें भी नहीं है ८८ हेरामजी ऐसा पूर्णमासी का चंद्रमा नहीं शोभता है औ
र क्षीर करके पूर्णभया क्षीर समुद्रभी नहीं शोभता है अरु विष्णुका मुखभी ऐसा न-
हीं शोभताहै जैसा वासना रहित मन शोभता है ८९ हेरामजी जैसे बदल की रेखा
पूर्ण चंद्रमाकों कलंक युक्त करती है जैसे सुपेदी कों सियाही की बूंद कलंक लगा
वती है अरु तैसे उत्तम पुरुष कों आशा पिशाचिनी खराब करती है ९॰ हेरामचंद्र
जी अथवा हेरघुबंश रूप आकाश के पूर्ण चंद्रमा हेरामजी राजा बलीकी न्याई बुद्धि

भेद करके तुम निर्मल ज्ञानकों सिद्ध करो ९१ हेरामजी सो राजाबली लीला करके संपूर्ण जगत को जीत लेना भया अरु दशकोटी वर्ष राज्य करता भया ९२ हेरामजी निरंतर भोगे जो भोग हैं वुह भोग कैसे हैं अरु त्रैलोक्यमों अत्यंत उत्तम हैं तिन्हमों उदासीनता धारता भया अरु एक समयमों आपही संसारकी स्थितिकों चिंतन करता भया ९३ हेरामजी स्त्रीयों को बारं बार आलिंगन करना बारं बार भोगना यह बालकोंकी क्रीडा है इसमों महात्मा पुरुषों को लज्जा क्यों नहीं आती है ९४ हेरामजी फेर दिन होता है अरु फिर रात्रि होती है बारं बार जगतके कार्य प्राप्त होते हैं अरु यह बारं बार ज्ञानी पुरुष को भूलने का मूलहै ९५ हेरामजी संसार के कार्योंका समूह को बारं बार दिन दिन प्रति करने हारे लोककों लज्जा क्यों नहीं होतीहै ९६ हेरामजी इ वैकालेंसः मेने ज्ञानवान् और आत्म तत्वकों जानने हारा लोकोंके आद अंतको विचार

करके देखने हारा ऐसा आपना पिता विरोचन सहित्या है ९७ हे पिताजी संपूर्ण सुखदुः
खों के भ्रम जिसमों शांत होतेहैं ऐसे उपाय कों तुम कहो तुम महा मतिहो ९८ हे रामजी
मनका मोह कहां शांत होताहै अरु संपूर्ण वासना कहां शांत होती है अरु आनंद सहि
त चिरकाल विश्राम कहां होताहै ९९ हे पिताजी जिस करके तुमको आनंद निरंतर है
अरु यहां चिरकाल विश्रामका सुख है अरु तिस उपायके ज्ञानको तुम मेरेको कहो
इतना श्रवण करके स्वर्गलोक को जीत करके कल्प वृक्ष ल्याय करके अपने अंगनमें
लगाया अरु ऐसे कल्पवृक्ष के पास बैठ करके पिता विरोचन कहता भया हे पुत्र ए
क देशहै उह कैसा देशहै महा विशाल है जहां हजारों त्रैलोक्य पूर्ण नहीं होतेहैं १०१
अरु जिसमों संपूर्ण समुद्र अनेक पर्वत अरु अनेक बन अरु अनेक तीर्थ हैं अरु अ
नेक नदियां अनेक सरोवर पृथिवी अरु आकाश अरु स्वर्ग अरु पवन अरु सूर्य चन्द्रमा

अरु लोकपाल देवता असुर यह उसमें फिरे नहीं होतेहैं अरु एक किनारेमें स्थित हैं
ऐसा महा विशालहै ९२ हेपुत्र एक उपदेशमें महा बली राजाहै वुह राजा केसा है म-
हा तेज वालाहै अरु सर्व कार्य करने हाराहै सर्वत्र व्यापहै अरु सर्वत्रगति वालाहै सो
राजा आप चुप रहताहै ९३ अरु तिसने अपने संकल्पसें एक मंत्रीको कल्पना कियाहै
वुह कैसा है जो सर्व मंत्र करने हारा है अरु जो कछु संकल्पकी घटनामें नहीं हो इ
तिसकोभी शिताबी करलेताहै ९४ बली पूछता भया हेपिताजी चिंतासे अरु रोग से
रहित सो देश कहांहै अरु प्राप्त कैसे होताहै अरु किस करके प्रकाशमान है अरु
ऐसा मंत्री कहांहै अरु ऐसा महाबली राजा कहांहै हमने लीला करके त्रैलोक्य
जीतियाहै परंतु सो राजा हमने कैसे नहीं जीतिया है ९५ विरोचन कहता भया
हे पुत्र तिस देशमें सो मंत्री महा बलीहै अरु देवता असुरों के लक्ष सेना करके

भा० सा० भी देखनेको भी सामर्थ्य नहीं है तिसका जीतना तो कहा बनताहै ९०६ हेपुत्र सो इंद्रभी
१९९ नहींहै अरु यमभी नहींहै कुवेरभी नहींहै अरु देवताभी नहीहै असुरभी नहींहै मनुष्य
भी नहीहैजो तुमसेजीताजावे ९०७ सोमंत्री अस्त्र शस्त्रों करके पराक्रम करके किसी जो
धासें नहीं जीता जाताहै तिस मंत्रीने संपूर्ण देवता अरु असुर अपने वशकिये हैं ९०८ सो
मंत्री विष्णुभी नहींहै अरु हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु आदि संपूर्ण दैत्य काल वश किये
हैं जैसे प्रलय कालके पवनने सुमेरु पर्वतके कल्पवृक्ष गिराये जातेहैं ९०९ हेपुत्र सोमं
त्री अपने राजा का दर्शन करके जीता जावे तो सुख करके जीता जाताहै नहीं तो पर्वतों
सेभी अचल है ९१० हेपुत्र त्रैलोकी मों जो बलवान है तिन्हसेभी मूल बलवान है ऐसे
मंत्रीको जेकर तेरी शक्ति जीतने की होवे तो तूंपराक्रम वान होवे ९११ हेपुत्र सो मंत्री यु
क्ति करके ग्रहण करा जावे तो क्षणमात्रतें वश होता है अरु युक्ति विना सर्पकी न्यांई

दृग्य करता है ११ हे पुत्र जब लग राजाको नहीं देखीया तब लग जीता नहीं जाता है अरु जबलग मंत्री जीता नहीं गया तब लग राजा दृष्ट नहीं होता है १२ हे पुत्र पौरुष करके अरु यत्न करके अभ्यास करके क्रम क्रम करके मंत्रीका जय अरु राजाका दर्शन करके तिस देशको तूंभी प्राप्त होवेगा १३ हे पुत्र सो देश कौन है अरु राजाकौन है मंत्री कौनहै मै तेरेको प्रकट करके सुनावता हूं तूं सावधानता करके श्रवण कर १४ सो देश मोक्ष नामा है तिसमों राजा आत्मा है वुह सभसें परे है अरु तिस राजाने मन मंत्री किया है १५ तिस मनरूपी मंत्री जीते संते सभ अपने वश होते हैं सो मन मंत्री जीतना कठिन है अरु युक्ति करके जीतिया जाता है १६ हे पुत्र सर्व विषयों की सर्व प्रकार करके आशा जो नहीं होवे तो यही मन जीतनेकी युक्ति है १७ हे पुत्र अभ्यास किये बिना विषयों से विरक्ति नहीं होती है यद्यपि देहधारी कैसाही बलवान होवे तोभी चलने के उद्यम बिना देशांतर मों

वा॰सा॰ नहीं प्राप्त होता है १८ हे पुत्र आत्म तत्व देखने करके विचार करके विषयों से विरक्ति
२०१ हृदयमें स्थित होती है जैसे कमल के मध्यमें लक्ष्मी रहती है १९ तिसतें बुद्धि का
उदय करके सुंदर विचार के आत्मा को देखे भोगों से विरक्ति करे २० हे पुत्र चित्त के
जीतने वास्ते चित्त के चार भाग करे दो भाग भोगों करके पूरे करे अरु तीसरे भागको
शास्त्र विचार करके पूरण करे चौथा गुरु सेवा करके पूरण करे २१ जिस समय
में चित्त शास्त्र के अर्थको पावे तो दो भाग चित्तके ज्ञान वैराग्य करके पूर्ण करे दो
भागकों ध्यान करके गुरु पूजा करके पूर्ण करे २२ हे पुत्र भोग त्याग करके पर
मार्थ विचार विना ब्रह्म पदमें विश्रान्ति सुख करके नहीं होती है २३ हे पुत्र पौरु
षकों यत्न को आश्रय करके अरु परालभ्य देव को दूर करके विचार वान पुरु
ष भोगन को त्याग करे वुह भोग कैसेहैं मोक्षद्वार को प्रतिबंध करते है २४ ॥

भोगनिंदातें विचार होताहै विचारतें भोग निंदा होती है यह दोनों आपसमों पूर्ण होते हैं जैसे समुद्र अरु बादल आपसमों पूर्ण होतेहैं २५ हे पुत्र भोग निंदा अरु विचार अरु आत्म दर्शन यह तीनों आपसमों मिल करके मोक्ष अर्थकों सिद्ध करते हैं जैसे प्रीति वाले मित्र मिल करके अपने अपने अर्थको सिद्ध करतेहैं २६ हे पुत्र देशांतर गमन करके तुच्छ धनकी निंदा करके साधुजनों को मान पूर्वक पूजन करके अरु सत्संग करके भोग निंदा करके भले प्रकार विचार के उदय करके तेरे कों आत्म स्वरूप कालाभ होताहै २७ बली कहता है पूर्वकाल मों उत्तम विचार वाले पिताने यह ज्ञान मेरेको कहि याथा सो मेरे को बिसर गयाथा अब मुझको फिर स्मिरण भयाहै अब ज्ञानकों में प्राप्त भया हों मेरेकों आनंद भयाहैं २८ अहो महा नंद भया है शमकी दशा महा रमणीक है अरु शीतलता करके युक्तहै अरु सुखडःख कीयां संपूर्ण दशा शम विषे शांत होती

वा० सा० हे २९ जो मैने पहिले अपने देह के मांस करके इस्त्री के देहके मांस को पीडित क-
२०३ राहै अरु अंग करके अंगको पीडित करके प्रसन्न होता भया येही मोह कोउदय है ३०
इतना कालमें मूड होता भया जो तुच्छ जगत के राज्यकी इच्छा करके देवता गण के-
साथ वैर करता भया ३१ पहिले में कौन हूं अरु यह कौन है अरु जगत क्या है इस प्र-
कार करके अज्ञान की शांति वास्ते आत्म ज्ञान वास्ते अपने गुरू शुक्रजीको प्रश्न करता
हूं अरु स्मरण करने तें प्रकट भये हुये शुक्रजी कों बली कहता भया ३२ हे गुरुजी
में भोगन के प्रति विरक्त भया हूं अरु यह भोग कैसे हैं जो महा मोह को देने हारेहैं
तिसतें में तिस तत्व को जानना चाहता हूं जोनसा महा मोहको दूर करने हाराहै ३३
यह भोग जाल कितना प्रमाण है स्वरूप करके क्याहै अरु मैकौन हूं तूंकौन है य
ह लोक कौनहैं यह तुम मेरे प्रति कहो ३४ अब शुक्रजी कहतेहैं) हे दैत्यराज बहुत

वा॰ सा॰ २०४

कहने करके क्या है अरु आत्म रूप को प्राप्त होने को यत्न करे तूं मेरे से ज्ञानके सार को संक्षेपतें श्रवण कर २५ यहां सर्वत्र चैतन्य है अरु चैतन्य मात्रही दृष्ट होता है अरु चैतन्य रूपही है तुम चैतन्य रूप हो हमभी चैतन्यहैं संपूर्ण लोक चैतन्य रूपहैं २६ हे दैत्यराज तूं उत्तम बुद्धिहै जो निश्चय करेगा तो सर्वसार ज्ञान को प्राप्त होवेगा जो निश्चय नहीं करेगा तो तेरे को बहुत कहाभी अरु भस्म विषे होम जैसा वृथा होवेगा २७ हे दैत्यराज चैतन्यका चित्तके संकल्प से संबंध होनाही बंधन है चित्त के संकल्पसें मुक्त होनाही मुक्ति कही है चैतन्यता कर चित्तकोभी चैतन्य मात्र जाने सभही आत्माही होता है यह मेने संक्षेपतें सिद्धांत संग्रह निश्चयतें कहाहै २८ चिति कैसी है चित्त के धर्मने मुक्त है सोही मेहूं चैतन्यता रूपी ज्योति युक्तहूं सभ को प्रकाश करने का दीप हूं ऐसे मेरेको नमस्कार होवे २९ वासिष्टजी कहते हैं ॥

वा. सा. वली ऐसा चिंतन करता भया परम ज्ञान कों प्राप्त होता भया ॐकार के अर्थ
२०५ कों धारण करता भया अरु मौनकों धारण करता भया ४७ सर्व संकल्पो से रहित
होता भया निर्मल अंतः करण होता भया अरु जिसकी संपूर्ण वासना शांत
होती भई सर्व संकल्पना शांत होती भई अरु शंका से संदेह से रहित होता
भया अरु चित्त को चैतन्यमों एक रूप करता भया ध्याता ध्यान करना ध्यान
करने योग्य इन तीनों तें रहित होता भया अरु सर्व भोग इच्छातें रहित होताभ
याहै अरु आनंद करके पूर्ण होता भया मनके दोषों से रहित होताभया ऐ
सा होय करके जैसे निर्मलता करके शरदऋतु का आकाश शोभता है तैसे
शोभता भया दिव्य हज़ार वर्ष ध्यानमों एकाग्रस्थित होता भया ४९ हेरामजी
वली दिव्य हज़ार वर्षते उपरांत ध्यानतें जाग्रत होता भया आत्म तत्त्व चिंतन

करता भया मेरेको बंधनही है अरु मोक्ष नहीं है मूर्छना मेरी क्षीण भई है ध्यान बिलास करके मेरे को क्या है ध्यान करने करके क्या है ४२ मेरेको परम तत्व की बांछा नहीं है अरु जगत की स्थिति में मेरी बांछा नहीं है ज्ञान दृष्टि से मेरा कार्य नहीं है अरु राज्य करके मेरेको कार्य नहीं है ४३ हेरामजी बलीको जैसे ज्ञान प्राप्त भया सो तुम्हारे को कहा है ऐसी ज्ञान दृष्टिको धारण करके तुमभी मोक्ष का उद्यम करो ४४ हेरामजी बली असुरोंका राजा भी होता भया अरु दश हजार वर्षको त्रैलोक्यका राज्य करता भया अंत काल भोगोंते विरक्त भया ४५ तिसतें हेरामजी तुमभी अवश्य करके भोग भागको विसरजान त्याग करके सत्य परमानंद को जान करके विसरना ते रहित सदा एक रस पदको प्राप्त होवो ४६ पहिले इष्ट बस्तुको अनिष्ट जान अनिष्टको इष्ट जान ऐसी अभ्यास करके पश्चात् दोनों

का त्याग कर ४७ इस दृश्यके पदार्थों में इष्ट अनिष्ट दृष्टिके त्यागने तें निरंतर सम दृष्टि हृदयमों उदय होती है तिस करके फिर जन्म नहीं होताहै ४८ हेराम जौंन से शरीरकों आत्मा मानतेहैं झूठी ज्ञान दृष्टि करके जिन्ह की बुद्धि हत भई है अरु संकल्प विकल्पके अधीन भये हैं धुनें हैं ऐसे मूढनरों की बराबरी को तूं मत धारण करे ४९ हेरामजी जौंनसे पुरुष स्वात्मा निर्णयमों ज्ञान करके रहितहैं पदार्थों के कहेमों फस गयेहैं ऐसे यह मूढ पुरुषों को आपनी मूर्खता से अधिक दुःख देने हारा कोई नहींहै ५॰ हेरामजी जब लग अपने आत्मा ने अपने देखने मों अरु यह यत्न करके नहीं किया अरु तब लग आत्म विचार का उदय नहीं होताहै ५१ हेरामजी जब विष्णु भगवान जीने हिरण्य कशिपु मारियाहै तब तिसका पुत्र प्रह्लाद विष्णुको जीतने चाहता भया अरु जीतने

का उपाय चिंतन करता भया अरु विस्नुको जीतने का एक यहि मुख्य प्रकार उपाय है अरु सर्व प्रकार करके सर्व बुद्धिको विचार को बेग करके सर्वत्र विस्नुका विस्मरण नहीं करना विस्नुस्मरण विना बिस्नु को प्राप्त होने का अवर उपाइ कोई नहीं है ५२ अबसे लेकर जन्मादिकों से रहित नारायणकों सर्वत्र ध्यान करताहूं तब मैं नारायणकी शरण प्राप्त होइ करके नारायण कों प्राप्त होवेगा ५३ ॐनमोनारायणाय यह मंत्र सर्व अर्थोंकों सिद्ध करने हारा है सो मेरेहृदय कमलतें दूर नहीं होताहै अरु जैसे आकाशतें पवन दूर नहीं होता है ५४ दिशामों सर्वत्र हरिहै अरु आकाशमों हरिहै पृथिवी मों हरिहै अरु सर्वजगत हरिहै मैभी हरि हूं कैसा हरी है जो जिस हरिका परिमाण नहीं है अबमैंविस्नुरूप भया हूं ५५ जो आप विस्नुरूप नहीं भया है अरु विस्नुकी पूजा करता है

सो विस्नु की पूजा के फलकों नहीं पावता है जो कोई विस्नु रूप होय करके विस्नु को पूजता है सो विस्नु रूप होता है तैसेही मैंभी विस्नु रूप भया हूं ५६ प्रहलाद की भक्ति करके प्रसन्न भये विस्नु प्रहलाद कों वर देने को कहते भये तो प्रहलाद कहता भया हे महाराज तुम संपूर्ण संकल्प के फलकों देने वाले हो सर्व लोकके हृदयमों अंतर्यामी रूपस्थित हों जो कुछ तुम अत्यंत उदार वस्तु जानते हो तिसकों मेरे प्रति कहो ५७॥ श्रीभगवानजी प्रहलादके प्रति कहतेहैं॥ हे प्रहलाद संपूर्ण संकल्प की शांति वास्ते उत्तम फल के वास्ते ब्रह्मविश्रांति पर्यंत विचार ही उत्तम कहा है ५८ प्रहलाद विचार करता है श्रीभगवान जीने मेरे को विचार करना कहि आहै तिसतें में आत्म विचार करता हों ५९ अब मेरे को पांच भूतोंसें अरु भूतोंके विकार भूत देहोंसे भिन्न आत्माका विवेक करके अनुभव भयाहै चित्तसें परे सत्तामात्र

स्वरूप सभको प्रकाश करने हारा मैंहों सर्व विश्वके बाहिर अरु अंदर व्याप्त हों नि

कलंक निर्मल सत्ता रूपहों ६० में विशाल चैतन्यता को दर्पण हों सो वस्तु नहीं है
जो मेरे विषें प्रतिबिंब नहीं होताहै मेरेते भिन्न कुछ नहीं है ६१ जो कुछ यह स्था
वर जंगम जगत् दृश्यमान है सो संपूर्ण संकल्प विकल्प रहित चैतन्य मात्र तत्त्वमें
हों ६२ तुम हम यह जगत् इस प्रकारका मिथ्या भ्रम भयाहै देहधारी कौन है देह रहि
त कौनहै मृत कौन भया है जीवता कौन है ६३ काष्ठ के जल के पत्थर के किला व
नाय करके पृथिवी के राजा बनके देहाभिमान को करता है ऐसे नीचबुद्धि दैत्य
रूप करके कीटक जैसे मेरे को धिक्कार है काष्ठमों जलमों पत्थरमों कीड़े वृश्चिक भी
रहते हैं सो उत्तम कहां होते हैं आत्म विचार के बिना उत्तमता नहीं होतीहै ६४ हि
रण्यकशिपु त्रैलोक्य का राज्य करता भया सो विचार बिना क्या उत्तमताको प्राप्त भया

वो॰ सा॰ जितने हमारे पितासे लेकर दैत्य भयेहैं सो सभही नीच बुद्धि भयेहैं जिस कारणतें य
२२२ ह आत्म विचार की उत्तम राज्य पदवी कों त्याग करके जगत की जन्म मरणादि पदवी
में प्राप्त होते भये अहंकार करके नष्ट होते भये तुच्छ पदार्थोंमें आनंद मानते भये ६६
यह आत्म विचारसे भई चेतन्य दृष्टि सभ दृष्टिमों उत्तम हैं कैसीहै अंतसे रहित है अनं
त अखंड आनंद के भोग वाली है उत्तम उपशम शांति करके शोभायमानहै अरु सं
कल्प विकल्पों करके रहित होनेतें शुद्धहै ६६ मे संपूर्ण भावों के अंदर स्थित हों वि
नके धर्मसे रहित चेतन्य रूपहों सर्वव्यापी चेतन्य रूप करके वर्त्तमान हों ऐसे मेरेको
ही मेरी बार बार नमस्कार है ६० आत्म विचार के आनंदका स्वाद लिये बिना जगत मे
पेंकड़े राज्य सुखों का स्वादलेने करके कछुभी स्वाद नहीं होता है ६८ ऐसी आत्म वि
चारकी दृष्टि कों त्याग करके दग्ध भये खर जैसा राज्य सुखमों कोन प्रीत करना है जे

से स्वादिष्ट खंडमिसरीका शरबत छोड़ करके अत्यंत कडुए निंब के जलकों कौन पीवताहै ६९ हे मेरे आत्मा तेरे ताई मेरी नमस्कार है तूं अखंड चैतन्य रूपहैं संपूर्ण लोककों देखने का महा मणिहै हे देव तूं मेरेकों प्राप्त भया हैं ७० हे देव तूं मैंने विचारिया है प्राप्तभी भयाहै बोधकों प्राप्त भया है अरु विकल्पोंसे निकासिया हैं जो रूप तुमहो सो तूपही हो तेरेकों मेरी नमस्कार है ७१ मैं तेरा रूपहों अरु अंतर रहित हों ऐसे मेरे ताई तेरे ताई नमस्कार है अरु कैसाहै शिव रूप है अद्वैत रूप है देवताका भी देवता रूप है इंद्रियों को प्रेरण करने हारे इंद्रादिक देवताहै तिन्हकोभी प्रेरण प्रकाश करने हाराहै सभसे परे हैं परमात्मा रूप हैं ७२ हे देव तूं कैसा है जिसनें बदलदूर भये हैं ऐसे पूर्णचंद्रमाके बिंबकी न्याई अविद्या के संकल्प विकल्प रूपी बंध दूर होनेतें स्वात्म प्रकाशरूप हैं अपने स्वरूपा नंदमों प्रसन्न हैं आपही आत्म रूप

में स्थित है आपही उदे भया है अपने वश है तेरे कों आपही नमस्कार करता हूं
हे देवतूं कैसा है जिसतें अहंकार रूपी कीचड़ दूर भया है निर्मल है अंदरका मा
त्मा जिसका ऐसा आनंदका सरोवर है ऐसे आत्म रूपतेरे ताई मेरे ताई नमस्कार है ७३
हे देव हे आत्मा तूं आनंद समुद्रहै कैसा है शांत भया है इंद्रिया रूपी तरंग जिस
के लीण भई है चित्त रूपी बडवाअग्नि जिसकी ऐसे मेरे स्वरूपतेरे ताई नमस्कार है ७४
हे देव हे आत्मा तूं आनंद का पर्वत हैं कैसाहै अहंकार रूपी बदल जिसतें दूर भयाहै
माया रूपी दावाग्नि जिसतें शांत भई है ऐसे मेरे ताई तेरे ताई नमस्कार है ७५ हे देव
हे आत्मन् तूं सत्तामात्र का मान सरोवर है कैसा है जिसमों आनंद रूपी कमल
प्रफुल्लित भया है चित्त रूपी लहर शांत भई है ऐसे मेरे ताई तेरे ताई नमस्कारहै
हे देव हे आत्मन् तूं कैसाहै लीला करके अनेक विश्वों का ईश है अपने स्वरूपा

तेरे प्रसादतें मेरे कों परमशांति करके
वा॰सा॰ नंद के अनुग्रह कों प्राप्त करने हाराहै आत्मनु में अब देखता हों मोह
२२४ युक्त यह आनंद की प्राप्ति भई है ७७ हे देव हे आत्मनु में अब देखता हों मोह
रूपी वेताल चला गयाहै अहंकार रूपी राक्षस चला गया है आशा रूपी पिशाच
नी चलीगई है अबमें चिंता ज्वरसें रहित भया हों ७८ हे देव में अब देखताहों मे
रा अहंकार रूपी तोता तृष्णा रूपी जेवड़ीकों छेद करके शरीर रूपी पिंजरातें कहा
गयाहै ७९ हे देव हे आत्माजी तूं कैसा है तेने आपनी सत्ता करके संपूर्ण विश्व पू
र्ण कियाहै विश्वकों अपनेसें उत्पन्न करने हाराहै सर्वत्र लक्षित होताहै अब कहां
भागजाता है ८० हे आत्माजी मेरा तेरा जन्म बंधनतें बहुत अंतराल भयाथा अब
समीपता भई है बहुत आनंद भयाहै जो तेरेको मैने अब देखिया है ८१ हे आत्मा
जो तेरेको मेरे विषे स्थित भयेसंते में सर्वदोषते रहित भयाहों अपने स्थानविषे

आत्माकी स्थिति भई संते रागद्वेषादिकों का रंग दूर होइगया है अब बंधन कहांहै आपदा कहांहै संपदा कहांहै जन्म मरण कहांहै अब अखंड शांति प्राप्त होनेकी इच्छा कहांहै ८२ श्रीवसिष्ठजी कहते भयेहैं ॥ हेरामजी शत्रुगणको जीतने हारा प्रह्लाद इस प्रकारका आत्म चिंतन करताभया निर्विकल्प परमानंद समाधिकों प्राप्त होताभया ८३ इस प्रकार करके हज़ार वर्ष आनंद पूर्ण होय करके एकाग्रदृष्टि होय करके असुरों के नगरमों स्थित होताभया जैसें सूर्य पत्थरमों प्रति बिंबनही करताहै तैसें कार्योंकी कल्पनातें रहितहोता भया ८४ तिसतें उपरांत ध्यानमों एकाग्रभये प्रह्लादकों विष्णु भगवानजीने संसारकी राज्य मर्यादा पालने वास्ते पांचजन्य शंखकी धुनि करके समाधितें जगा या तो दैत्योंके राज्य कों पालना करता भया ८५ श्रीरामचंद्रजी श्रीवसिष्ठजीको पूछतेभये ॥ हे गुरूजी तुम

कहते हैं जो अपने पौरुषके यत्न करके सबकार्य सिद्ध होताहै तो प्रहलाद विष्णु के वर विना बोधकों कैसे नहीं प्राप्त भया यह मेरे प्रति कहो ८६ श्रीवसिष्ठजी कहतेभयेहैं॥ हेरामजी जोजो प्रहलाद कों प्राप्त भयाहै सोसो अपने पौरुषतें प्राप्त भया और किसीनें नाहि प्राप्त भया ८७ हेरामजी आत्मा अरु नारायण आपसमों भिन्न नहींहैं जैसे तेल अरु तिल भिन्न नहीं होतेहैं दोनों एकहीहैं जैसे श्वेतरंग अरु वस्त्र भिन्न नहीं होतेहैं पुष्प अरु सुगंध भिन्न नहीं होतेहैं ८८ कदाचित् आत्मा अपनी विचार शक्ति करके बोधकों प्राप्त होताहै कदाचित् विष्णु रूप करके अपनी भक्ति करके आपही वर प्रदान करके बोधकों प्राप्त होताहै ८९ सो विष्णु रूप आत्मा चिरकालतें आराधन कियाभीहै तोभी आत्म विचार बिना जानने को अथवा वर देनेको समर्थ नहींहोताहै तिसतें प्रहलादकों सर्वत्र नारायण सरूप आत्माज्ञानके पौरु-

षनें वर प्राप्त भया ९० हे रामजी आत्म बोध के दो कारण हैं तिन्हमों अपने यत्न सें भया आत्म विचार मुख्य कारण है देवता का वर प्रदान गौण कारण है जिस तें तुम मुख्य अपने पुरुषार्थ सें यत्न करके आत्म विचार मों सावधान रहो ९१ हे रामजी तुम अपने पुरुषार्थ के यत्नकों आश्रय करके इंद्रिय मन रूपी पर्वत कों लंघ करके संसार समुद्र कों तर करके पार जाइ करके परम पद कों प्राप्त होवो ९२ हे रामजी जो पुरुषार्थ के यत्न बिना विष्णु रूप आत्मा इष्ट होवे तो जड़ योनि मृग पक्षिगण कों पुरुषार्थ बिना क्यों उद्धार नहीं करता है ९३ हे राम जी जिसका मन अज्ञान करके युक्त है तिसको गुरु सेवाभी अरु विष्णु पूजा कछु नहीं कर शकतीहै जो कछु प्राप्त होताहै सो आत्म विचार करके होताहै ९४ हे राम जी औंनसें शास्त्र विचारमों अपने पुरुषार्थ सो मूढहैं पराये कहेमों प्रवृत्त हैं ति-

मुकों शुभ कर्म की प्रवृत्ति निमित्त विष्णु भक्ति कहीहै ८५ हेरामजी विचार विना उप
शाम विना विष्णु भी नही प्राप्त होता है विचार करके उपशाम करके मुक्त होवे तो वि
ष्णु करके क्या अर्थ है ८६ हेरामजी विचार करके उपशाम करके युक्त अपने चित्त
कों शुद्ध कर चित्त शुद्ध भये संते तूं मोक्ष सिद्धिको प्राप्त होवेगा जो तेरे कों विचार उप
शाम करके चित्त शुद्ध नहीं होवे तो तूं बनके गधे सिरीषा हैं ८७ हेरामजी हृदयकं
दरामें चित्त कों स्थापन करणा ही आत्माका स्वाभाविक अविनाशि सदा एक जै
सा मुख्य रूप है अरु शंख गदा पद्म धारणे हारा आत्मा का गौण रूप है ८८ हे
रामजी जो पुरुष मुख्य आत्माके रूपकों त्याग करके गौण रूपकों सेवा करता
है सो अपने हाथ सें सिद्ध रसायन कों त्याग करके साधन करणे योग्य अवर
रसायन के यत्न कों दोड़ता है ८९ हेरामजी यह माया संसार नाम रूपवाली

है अंत से हितहै अपना चित्त जीतने करके लय कों प्राप्त होनीहै २० हेरामजी कोशल देश में रहणे वाला एक गाधि नामा ब्राह्मण विष्णु की आराधना कर के माया देखने वास्ते वरकों प्राप्त होय करके जलमें स्नान करणे कों प्रवेश करता भया जल के बीच अघमर्षण मंत्र पढ़ता भया मनमें माया की सृष्टि देख करके फेर प्रत्यक्ष देखता भया मनमें संदेह करता भया माया यहीहै नहींहै फेर विष्णुको आराधन कर प्रत्यक्ष अनुभव करके विष्णु जी को वचन कहता भया १ हेदेव में छः महीने माया करके भ्रमता भया भूतों के स्थान में कीरलोकों की पदवी को प्राप्त भयाहों तहां जो मेरा वृत्तांत भया है सो कथा में भी नहीं आवता है २ तेरी माया करके भूतों की भूमिमेने देखनी थी यही तुम्हारावचन करके वरथा हेभगवन् महात्मा पुरुषों का वचन मोह नाश वास्ते होताहै मोहकी वृद्धि वास्ते नहीं होताहै ३

ह्कों शुभ कर्म की प्रवृत्ति निमित्त विष्णु भक्ति कही है ९५ हे रामजी विचार विना उप
शाम विना विष्णु भी नही प्राप्त होता है विचार करके उपशाम करके मुक्त होवे तो वि
ष्णु करके क्या अर्थ है ९६ हे रामजी विचार करके उपशाम करके युक्त अपने चित्त
कों शुद्ध कर चित्त शुद्ध भये संते तूं मोक्ष सिद्धि को प्राप्त होवेगा जो तेरे कों विचार उप
शाम करके चित्त शुद्ध नही होवे तो तूं बनके गधे सिरीषा हैं ९७ हे रामजी हृदयकं
दरामें चित्त कों स्थापन करणा ही आत्माका स्वाभाविक अविनाशि सदा एक जै
सा मुख्य रूप है अर शंख गदा पद्म धारणे हारा आत्मा का गौण रूप है ९८ हे
रामजी जो पुरुष मुख्य आत्माके रूपकों त्याग करके गौण रूपकों सेवा करता
है सो अपने हाथ सें सिद्ध रसायन कों त्याग करके साधन करणे योग्य अवर
रसायन के यत्न कों दौड़ता है ९९ हे रामजी यह माया संसार नाम रूपवाली

है अंत में स्थितहै अपना चित्त जीतने करके लय को प्राप्त होनीहै २० हेरामजी कौशल देश में रहणे वाला एक गाधि नामा ब्राह्मण विष्णु की आराधना कर के माया देखने वास्ते वरको प्राप्त होय करके जलमें स्नान करणे को प्रवेश करता भया जल के बीच अघमर्षण मंत्र पढ़ता भया मनमें माया की सृष्टि देख करके फेर प्रत्यक्ष देखता भया मनमें संदेह करता भया माया यहीहै नहींहै फेर विष्णुको आराधन कर प्रत्यक्ष अनुभव करके विष्णु जी को वचन कहता भया १ हेदेव में छः महीने माया करके भ्रमता भया भूतों के स्थान में कीरलोकों की पदवी को प्राप्त भयाहौं तहां जो मेरा वृत्तांत भया है सो कथा में भी नहीं आवता है २ तेरी माया करके भूतों की भूमिमेने देखनी थी यही तुम्हारावचन करके वरथा हेभगवन् महात्मा पुरुषों का वचन मोह नाश वास्ते होताहै मोहकी वृद्धि वास्ते नहीं होताहै ३

गा॰ सा॰ श्रीभगवानजीकहतेहैं हे गाधि जैसें काग ताल वृक्षके ऊपर आय करके अकस्मात् बैठ
२२॰ जाता है अकस्मात् ताल वृक्ष का फल गिरके फूट जाताहै ताल वृक्षके फलको काग
खाय लेताहै ताल फल को काग तोड़ने नहीं सकता है तैसेही सर्व भूत रूपी कीरों के
चित्तमों चांडालकी स्थिति प्रतिबिंब होती है तिसतें तेरे चित्तमों अकस्मात चंडाल स्थि
ति प्रति बिंब भई है ४ तिसतें जैसी चित्तमों स्थिति होती है तैसा वृत्तांत कहा जाता
है जैसा चित्त का कारण होताहै तैसाही माया के वेगते दृष्ट होताहै सो ज्ञान बिना वि
स्मरण नही होताहै तिसका वृत्तांत कहते हैं ५ किसी चंडालने ग्राम मों गृह रचन कि
या सो तेने देखेया फेर उसमों प्रवेश किया उसकी ईंट खंडित भई ६ हेगाधि कदाचि
त् एककारण बहुत जीवों को होताहै जैसे अकस्मात कागकी ताल वृक्षमों स्थित
होतीहै तैसे अकस्मात कारण होताहै ७ हेगाधि तैसेही बहुत मनुष्य अकस्मात

एक स्वप्न को देखतेहैं उह स्वप्ना केसाहै शयन रूप भ्रमको देने हाराहै जैसें
 मदिरा पानतें बहुत मनुष्यों को एक जैसा अमल होताहै ८ हेगाधि पृथिवी
लोकमों जौंनसा कटंजक नामा चंडाल भयाहै जिस प्रकारका वृत्तांत भया है
सोही तेरेकों फुरण भयाहै सो चंडाल स्त्रीसें रहित भया स्त्री वियोग करके दे
शांतर मों गया तहां कीरदेशांतर मों गया तहां कीर देशका राजा भया राज
काज करता भया फेर उस चंडाल के पुत्रादिक राजा के पास आय उस राजा
कों अपना पूर्व वृत्तांत स्मरण भया अपनी इस्त्री का मरण का स्मरणतें वि
योग दुःख भया तो अग्निमों प्रवेश करता भया ८ हेगाधि सोही वृत्तांत तेरेकों
जल के अंदर चित्तमों फुरण भया तब तेरे को चंडाल भावसें ले करके अग्नि
प्रवेश पर्यंत वृत्तांत के मोहते भ्रम भया है ९ हेगाधि माया के वेगते दृष्टि किये

अनुभव किये अर्थको भूल जाताहै कदाचित् देखे बिनाभी अर्थकों चित्त देखे जैसेकों प्रत्यक्ष अनुभव करता है ११ हेगाधि जैसे स्वप्न होताहै जैसे मनोरथ की कल्पनाभी होती है जैसें धातु विकार करके एक चंद्रमें दो चंद्रमा की प्रतीति होती है चंद्रमा का पीत वर्ण भासता है तैसेही अपने मन करके अपने कों जगत का भ्रम होताहै १२ हेगाधि जैसें त्रिकाल दर्शी पुरुषकों पूर्व वृत्तांत अरु भविष्यत् वृत्तांत प्रतीत होताहै तैसें तेरेकों चंडाल वृत्तांत प्रतीत भया है १३ हेगाधि यह पुरुष हैं सो हम है यह पदार्थ मेरा है आत्म वेत्ता पुरुष ऐसी कल्पना में मग्न नहीं होताहै जो पुरुष आत्म वेत्ता नहीं सो ऐसी कल्पनामें मग्न होताहै १४ हेगाधि तत्व वेत्ता पुरुष सभमें आत्म रूप जान करके मोह कों प्राप्त नहीं होता है पदार्थों विषे भेद भावना कों भी ग्रहण नहीं करता है १५ जिस कारणतें आत्म वेत्ता पुरुष

अनेक प्रकार के सुख दुःखों के बिलास भ्रम के जोगों बिषें मग्न नहीं होना है जैसे तूंबेका पात्र जलमों डुबता नहीं है १६ हेगाधि ज्ञानकी इच्छा नहीं होने ते मन के भ्रम कों हटाने कों तूं समर्थ नहीं होना है जैसे यत्न रहित पुरुष कछु कार्य्य करने कों समर्थ नहीं होताहै १७ हेगाधि इस माया चक्रका चित्तनाभिस्था नहै जैसे नाभि दबाओने ते चक्र नहीं भ्रमता है तैसे चित्त जीतने तें माया चक्र नहीं भ्रमता है १८ हेगाधि तूं अब उठ करके हृदय रूपी पर्वत के कुंजमों चित्त की एकाग्रता के निमित्त दश वर्ष पर्य्यंत सावधान बुद्धि करके तप कर तब तेरे कों ज्ञान प्राप्त होवेगा १९ श्रीवसिष्ठ कहतेहैं। हेरामजी भगवान इतना कहिकर के अदृश्य होते भये गाधि ब्राह्मण विवेक वशातें वैराग्य पदकों प्राप्त होना भया २० सर्व संकल्प रहित होइ करके पर्वत के कुंजमों दश वर्ष तप करता भया तब ज्ञान

को प्राप्त होता भया २१ सोगाधि ब्राह्मण आत्म सत्ताको पाइ कर आत्मा नंद विषें रमण करता भया जोग भावना सें भय शोकतें रहित होता भया सदा उदित जीवन मुक्त शांत रूप होता भया जैसें चंद्रमा कला करके संपूरण होताहै तैसेंही चित्तमें पूर्ण होता भया २२ तिसतें हेरामजी तीर्थ दान तप किया कों त्याग करके कल्याण वास्ते सावधान होइ करके चित्तकों वशाकर २३ हेरामजी वर्तमान भोगको वाह्य बुद्धि करके खेद बिनाही भज भूत भोगकी न्याई भविष्यत भोगकी भावना को त्याग करे तो चित्त क्षीण होता है २४ हेरामजी जो पुरुष तत्व ज्ञानी नहीं है सो कीरोंतें गधियोंते पशुपंछियों तें अतिही तुछ्छ हैं २५ हेरामजी चित्त दृढ भये संते आत्मसत्ता ढक जाती है जैसे बदल के चढेसंते सूर्यका प्रकाश बंद होताहै २६ हेरामजी भोगों को नही भोगनेतें आदर नहीं करणेतें शनैःशनैः चित्तको कृश करना रसकों त्याग करना

वा॰ भा॰
२३४

जैसे पुराण पत्र गिरता है तैसेही चित्तभी क्षीण होताहै २७ देहमों आत्म भाव नकार नेतें देह भोग के अधीन होनेतें स्त्रीपुत्रादि स्नेहतें चित्त वृद्ध होताहै २८ अहंकारके विकार करके ममता की लीलातें यह मेराहै ऐसी भावनातें आदि व्याधि के विलासतें संसारकी स्थिति के विश्वासतें त्याग ग्रहणके यत्न करके धन रत्न के लोभ करके इन्द्रियों के स्नेह करके दुष्ट आशा रूपी क्षीर पानतें भोग वासना रूपी पवनके बलतें चित्तहृद्ध होता है २९ हे रामजी गंधमादन पर्वत मों उद्दालक तपस्वी विवेक कों प्राप्त होरकरके चिंतन करता भया ३० मैं किस समय मों मनको त्याग करके परम पवित्र पदमों सुमेरुशृंग मों बद्दल की न्याईं विश्राम को प्राप्त होवोंगा ३१ भोग वासना मेरे अंतः करणमों कब शांत होवेगी जैसे समुद्रमों चंचल तरंग माला शांत होती है ३२ परमपदमों विश्रांत भई बुद्धि करके यह किया यह करना ऐसी कल्पना कों मै कब

·सा· त्याग करूंगा ३३ यह संकल्प विकल्पों का जाल मेरे चित्तके संगकों कब त्याग करेगा जै
२६ से कमल पत्र कोजल प्रसंग नहीं करताहै ३४ बहुत तरंग वाली तृष्मा नदीको बुद्धि रू
पी नाव्रों करके कब मैं पार तरूंगा ३५ यह जगत के प्राणियों करके करी जाती झूठी
जगत की क्रीडाकों बालकों की क्रीडाकी न्याई अनादर करके कबमैं उपहास करूंगा ३६
शांत भया है मनज रूपी मनका व्यापार जिसका ऐसा मैं पर्वतकी कंदरामो निर्विकल्प
समाधि बडाय करके पत्थरकी समानता कों कब प्राप्त होवोंगा ३७ निराकार वस्तुका ध्या
न विषें विश्राम कों प्राप्त भया जोमैं मेरे शिर ऊपर बनके पंछी तृणका आलना कब
करेंगे ३८ ध्यान विषें एकाग्रता कों प्राप्त भया जोमैं मेरे हृदयमों बनके पंछी पर्वत
की कंदराकी न्याई निर्भय होय करके कब विश्राम करेंगे ३९ हे रामजी उद्दालक
ब्राह्मण इस प्रकारकी चिंताके अधीन भया वार वार बैठ करके ध्यानके अभ्यासकों कर

ता भया ४॰ विषयों करके चित्त रूपी मर्कट चंचल भये संते उद्दालक मुनि चित्त कों देने द्वारी समाधान की प्रतिष्ठा कों प्राप्त नही होता भया ४१ किसी कालमों उद्दा॰ लकका चित्त रूपी मर्कट बाहिर के विषय संबंधकों त्याग कियेतें अंतः करणमों ब हुत उद्वेगकों प्राप्त होताभया ४२ किसी कालमों तिसका चित्त रूपी मर्कट अंतः करण के विषय संबंधकों त्यागकरके चंचलतातें जैसें विष पान कियेते व्याकुलता होतीहै तैसें व्याकुल होताभया ४३ किसी कालमों तिसका मन प्रचंड सूर्य के तेज बराबर प्रकाश मान अंदर के तेजकों देख करके व्याकुल होय करके विषयों के सन्मुख हो ताभया मलिनता करके ठहरा नही ४४ किसी कालमों तिसका मन अंदरके अ॰ ज्ञान के संग करके विषय वासना मों लंपट होय करके ध्यानसें उच्चाटनकों प्राप्त॰ होताभया जैसें त्रास करके पंछी उड़जातेहैं ४५ किसी कालमों ध्यानके दृढ अभ्यास

है तिसका मन वाहिर के तथा अंदरके विषय संबंधोंकों त्याग करके अज्ञानके अं
धकार के हरणे हारे आत्मज्योति के प्रकाशकी संधीमों मगन होय करके चिरकाल
की स्थितिकों प्राप्त होता भया ४६ हे रामजी इसतें अनंतर उद्दालक मुनि मनकी चंचल
तातें व्याकुल बुद्धि भया पर्वतमों भ्रमता भया जैसें सूर्य सुमेरु पर्वतके चारो तर्फ भ्र
मताहै ४७ एक कालमों उद्दालक पर्वतकी कंदरामों प्राप्त होता भया कैसी है कंदरा
समस्त भूतों कों दुःख करके प्राप्त होने हारीहै शांत भयाहै सभका संचार जिसतें
कैसी है मानो मोक्षकी दशाहै ४८ सो मुनि तहां बैठता भया चित्तकी वृत्तिकी शांति
कों प्राप्त होताभया जैसें पर्वतमों प्राप्त होय कर बदल वर्षा करके शांत होता है ४९
सो मुनि तहां उत्तर दिशा सन्मुख होय करके पद्मासन बांध करके अंजलि बांध करके
वेदकी उपनिषदों कों पाठ करता भया ५० वासना सो भ्रमते मन रूपी हरणकों स्थिराय

वा॰सा॰ करके निर्विकल्प समाधि के अर्थ इस प्रकार विचारणा करता भया ५१ रे मन मूर्ख ते
२२९ रेको संसार की इच्छा करके क्या अर्थ है जिस कारणतें विचार वान पुरुष अंतः काल
मों दुःख देने हारी क्रिया कों सेवन नहीं करते हैं ५२ रे मन जौंनसा पुरुष शम रू-
पी अमृतकों त्याग करके भोगों के अर्थ भ्रमता है सो कल्प वृक्षोंके बन कों त्यागक
रके कंटकों वाले बनकों सेवन करता है ५४ रे मन तूं पाताल के तले जावेगा अ
थवा ब्रह्म लोकमों जावेगा तोभी चित्तके उपशम विना निर्वाणके आनंदकों नहीं पा
वेंगा ५५ रे मन रे मूढ यह शब्दादिक विषयों की वासना निरंतर त्रास करने हारी
हैं इन्ह करके निरंतर वृथा क्यों फिरता है जैसें बदलकों देख करके मीडक फिरते
हैं ५६ रे मूढ मन जिसकारणतें तेरेकों हमारा कहना क्या अर्थ है व्यर्थ है जिस कार
णतें विचार वान पुरुषकों चित्तका फुरणा नही होता है ५७ रे मन मैंने चरणके अंगूठा

में लेकर शिखापर्यंत तिल तिल मात्र भलि तेरे विचारणा कियाहै इस देहमों आनंद का लेश नहीं पाया तो इसमों क्यों आसक्त भयाहै ५८ इस देहका चलना पवनकी शक्तितें है ज्ञानतो चैतन्यके अंशतें है हृद्धावस्था अरु मृत्यु इसके धर्महै मे इसमों किस अर्थतें स्थित भयाहूं ५८ इसमों नेत्र इंद्रिय रूपके सन्मुख होयकर अपने रूप विषय को देखताहै तिस कारणतें में इसमों कोनहों रूपको देख करके क्यों मोहित होय कर दुःखित भयाहूं ६० इसमों त्वचा इंद्री अपने तत्वस्पर्श ग्रहण करनेकों सन्मुख होती है में इसके पीछे परायेका मनकों पिशाच की न्याई क्योंउद्यत भयाहूं ६१ इसमों जिह्वा इंद्री अपने रसतत्व ग्रहण करणेकों उदय भई है में इष्ट भोग कों भोगता हूं ऐसा दुष्ट भ्रम मेरेकों कहांतें भयाहै ६२ इसमों नीच श्रोत्र इंद्री अपने शब्द तत्व ग्रहण करणे कों पीडित भईहै में शब्द के दुःख करके क्यों दुःखी भयाहूं ६३ इसमों नासि

का इंद्री अपने सुगंध तत्वमों मगन भईहै में गंधकों सूंघता हों ऐसा चोर की न्याई
सूंघने कों प्रमाण करना कौन हों ४४ हे मन तूं वासनातें ही नहो नेत्रादि इंद्रियां बा
हिर अपने तत्वोंकों प्रवृत्त होती है तूं इन्हके साथ वासना करके क्यों प्रवृत्त भया है य
ह वासना आनंदका कारण नहीं है ४५ तिसतें हे मन तूंभी मूर्ख है और इंद्रियांभी मू
र्खहैं यह तुम सभही बाहिर के भोगों की वासनाकों अंतः करणतें त्याग करके आत्म
स्वरूप प्राप्तिका यत्न करो जिसतें फेरदुःखकों नहीं पावेगें ४६ हे इंद्रिय रूपी बालको तु
म अपने सें प्रकट भई तृष्णा करके आपही नष्ट भयेहो जैसे खोपड़ी का कीड़ा आ
पही प्रकट करी हुई खोपड़ी करके आपही बद्ध होताहै ४७ विषकी न्याई विषय वा
सना की बिसूचिका अनंत दुःखकों देने हारीहै तिसतें चतुराई करके जैसें होवे ते
सें विषय वासनाकों दूर करके इष्ट आत्म चिंतन मंत्रकी युक्ति करके आत्म स्वरूपमों

वा॰ मा॰ सावधान होवो संसारके विषय वासना का त्याग करना जोहै सो संसर्ग भयको दूर क
२३२ रने का स्थानहै ६९ यह अहंकार का भ्रम आकाश के नीलवर्ण की न्याई मिथ्याही उद
य भया है इसका फेर जो नही आरण ऐसे विस्मरण को सभसे भला मानताहूं ७०
यह अहंकार के भ्रमको चिरकाल मूल सहित त्याग करके शांत रूप होय करके मैं
आत्म स्वरूपमों स्थित होताहूं जैसें शरद ऋतुमों आकाश आप निर्मल होय करके
अपनी शोभा करके आपही निर्मल शोभताहै ७१ यह चित्त परमात्मा रूपी अग्नि मों
प्राप्त होय करके अपने संकल्प विकल्प रूपी अंगोंको जलाय करके सुवर्णकी न्याई
स्वछता को प्राप्त होताहै ७२ यह मन रूपी घना बनहै इसके संकल्प विकल्प दोनों
वृक्षहैं तृष्णा इसकी लताहै इसको विचार शस्त्र करके छेद करके आत्मा रूपी मदा
न पृथिवी विषे सुख करके बिहार करता हूं ७३ जिसके लिये भोग संपदा चाहीदी है

सो देह मेरा नहीं है मैंभी तिसका नहींहूं तिस कारणतें शरीर सुख के लेश करके
मेरा क्या अर्थ है ७८ यहां आत्मा प्रकाशमानहै तहां मन और इंद्रियों और वासना यह न-
हीं फुरते हैं जैसे यहां राजा पास रहताहै तहां दीन लोक रहने नहीं सकते हैं ७९
सो अपने आत्मा के स्थानसें मै चलित भया हों और मेरी बुद्धि भिन्न भई है मेरेकों
यह इंद्रियां मन देह इनका परिवार शुभ नहीं करता है ८० अब मेरेकों निर्मलता
प्रकट भई है आत्म सत्ता उदय भईहै और हृदयमों सत्यता और सर्वज्ञता प्राप्त भ
ईहै सभमों एक रूपता और निर्भयता प्राप्त भई है और द्वैत कल्पना क्षीण भईहै ८१
यह शांतिसें आद सभही सुंदरीयां इस्त्रीयां मेरे हृदय मंदिरमों प्रकाशमान है
और स्वस्थ हैं अपने अपने सौभाग्य करके युक्तहै मैं कैसाहों सभमों एक आत्मबु
द्धिवाला हों यह सभ इस्त्रीयां मेरे हृदयकी पिआरी हैं ८२ अथ इसतें उपरांत उद्दाल

कमुनिः ॐकारके ध्यान प्राणायाम करके पवित्र होय करके समाधिके विघ्नोंको मन
की चंचलता कों दूर करके आत्मस्वरूप के करणेतें आत्म सत्तामें मग्न होता भया
सविकल्प समाधितें आत्म रूप को प्राप्त भया जैसें सुवर्ण कड़ा बन करके सुवर्णही
होताहै ८४ इस प्रकार सविकल्प समाधि कों प्राप्त भये मुनिका चित्त चित्त भावकों
त्याग करके चैतन्य भावकों प्राप्त होता भया जैसें समुद्रमें तरंगादिकों की शांति
भये संते केवल एक समुद्रही समान रूप होताहै ८५ ऐसे फेर समाधि के अभ्यास
तें सो मुनि निर्विकल्प समाधिमें स्थित होता भया एक ब्रह्मभावकों प्राप्त होता भया जि
तनीपांचभूतों की मन बुद्धि अहंकार की कल्पना और आत्मा परमात्मा के भेदकी कल्पना
थी सो दूर होती भई जैसें महा काश होताहै तैसे शुद्ध बोधको प्राप्त होय करके ब्रह्मरू
पहोताभया ८६ तिस ब्रह्म भावमें सो मुनि अखंड आनंद को पाइ करके देखने हारा

०·सा० पुरुष और दृश्य और दृष्टि इसभेदतें रहित अद्वैत भावकों प्राप्त होता भया जैसें अमृत
२३५ पूर्ण समुद्र होताहै तैसें ब्रह्मा नंदमों मगन होता भया ८६ सो मुनि सिद्ध कारण और
साधना इन्हते रहित आनंदके मंदिर रूपी निर्विकल्प समाधिमों छः महीने स्थित होता
भया जैसे सूर्य उत्तरायणमों रहता है ८७ सो मुनि आनंद से भी परे होता भया यहां
आनंद और नहीं आनंद दोनोंका कारण नहींहै ऐसा केवल सत्तामात्र आत्म रूप होता
भया ८८ तहां सो मुनि दिव्य हजार वर्ष स्थिति पाइ करके उसका मन फेर भोग वा
सनामों उदय नहीं होता भया जैसे स्वर्ग देखने वालेको पृथिवी के पदार्थ देखनेंकों
मन नहीं उदय होताहै ८९ सो मुनि तिसकालतें लेकर व्यवहारभी करता है तोभी
चित करके चेतन्य सत्तामों सावधान होताभया ९० चैतन्य तत्वका एक अभ्यास ने
महां चेतन्य रूप होता भयाजैसें सूर्यका तेज सर्वत्र पृथिवीमों एक समान होताहै ९१

तब सो मुनि कहींभी आसक्त नहीं होता भया ऐसी पंचमी ज्ञान भूमिकातें पदार्थ क
छुभी नहीं भासता ऐसी छठी ज्ञान भूमिका कों प्राप्त भया चैतन्य तत्त्वकी सामान्य सत्ता के
अभ्यासतें जैसे सुमेरु पर्वतमों सूर्य अस्त उदयते रहित होताहै तैसें सत्ताकी सामान्य
ता कों प्राप्त होता भया ९२ हे रामजी तब तैसी उद्दालक मुनिकी अवस्था कों देख कर
में वसिष्ठ और नारदादि मुनि गण ब्रह्मा विष्णु ईश्वरादि देवताः तहां प्राप्त होतेभये ९३
हे रामजी उद्दालक मुनि ऐसी संसर्ती भयकों नाश करणे हारी पदवी कों पाइ कर
जीवन मुक्ति कों प्राप्त होताभया ९४ हे रामजी वैराग्यका अभ्यास करके वेदांत शास्त्र
के अर्थका अभ्यास करके शुद्ध बुद्धि करके और गुरु सेवा करके उत्तम पद पाईदाहै अ
थवा एक शुद्ध एकाग्र बुद्धि करकेही उत्तम पद पाईदाहै ९५ हे रामजी बोध करके युक्त
और एकाग्र और निर्मल ऐसी शुद्ध बुद्धि होवे तो वैराग्यादि साधन बिना भी उत्तमपद

पाईदा है ९५ हेरामजी यह दोनों यत्न करके सिद्ध करने योग्य हैं दो कौन एक स
माधि और चित्त चंचल वृत्तितें रहित करना इन्ह करके अंतः करणमें शीतलता हो
वे तो तद तपका फलभी होताहै ९६ हेरामजी जैसें उन्मत्त पुरुष का नाचना उ
न्मत्त पुरुषको और लोकोंको कुछ चमत्कार नहीं करताहै तैसें वासना क्षीण हो
नेतें चित्तभी विकार नहीं करताहै ९७ हेरामजी संपूर्ण जीवों को जो अंतः करण
में फ़ुरणा होताहै तैसाही बाहिरभी फ़ुरणा होताहै जो अंतः करण तृस्नाके दा
ह करके तपा होवे तो तिसकों जगतभी बनकी अग्निके दाह सरीषा होताहै ९८
हेरामजी नक्षत्र मंडल और पृथिवी और पवन और आकाश और पर्वत और न
दियां और दिशा यह सभही अंतः करण तत्वके फ़ुरणेते बाहिरभी फ़ुरतेहैं ९९
हेरामजी एक मुख्य राजा भयाहै स्वर्णजट देशका स्वामी सो राजा भील होता

भया मांडवऋषि प्रसादतें ज्ञाता भया सो एक समयमों उस राजाकी प्रीत करणे हारा पवित्र मुनि चिरकालसें मिलाप करके राजाकों श्राय करके कहत भया ३०० हे राजन् यह संसार जालमों भारतखंड भूमिमों जो जो कर्म कीदा है सो सो कर्म सावधान चित्त वाले पुरुषकों सुख करना है और व्याकुल चित्त वालेकों दुःख देना है ३०१ हे राजन् हम तेरेकों प्रश्न करतेहैं तूं संकल्पसे रहित परम उपशाम के कल्याणकों देने हारा परमविश्राम के स्थान ऐसी समाधियों अब करताहै नहीं करता है ३०२ अबराजाकहताभया॥ हेभगवन् मैं तुमकों पूछता हों सर्व संकल्पसें रहित होना कल्याण को करताहै अथवा समाधि वठनी कल्याण करतीहै ४ हेभगवन् मार्गमों चलते संते व्यवहार करते संते संकल्पसें रहित होना कल्याण करणे योग्यहै जो चित्त सावधान नहीं होवे तो समाधी कहां होती है यह मा

मतहै ४ हेमुनि जिन्हके चित्त संकल्प रहित होनेतें सावधान हैं सो पुरुष जगत के
कार्योंकों करतेभी हैं तोभी आत्मतत्व मों निष्ठा वालेहैं सो पुरुष सदा समाधिस्थहैं ५
हेमुने पुरुष पद्मासनभी बांधे दोनों हाथोंकों अंजलि बनाय रखे प्राणभी चढावें परं
तु जिसका चित्त संकल्प रहित नहीं भया तिसकों समाधी क्या करेगी ६ हेमुने तत्व
का बोध जो है सो संपूर्ण वासना रूपी तृणको अग्निकी न्याई नाश करणे हारा है
सोही समाधि नाम करके कहाहै प्राण चढाइ करके चुप्प रहना समाधि नहीं क
हीहै ७ हेमुने सावधान बुद्धि होवे विषय वासनाते रहित होवे यथा योग्य तत्वको
देखने हारी ऐसी जो बुद्धि सो समाधिनाम पंडित लोकों करके कहीहै ८ परीव मुनि
कहता भया हेराजन् तूं निश्चै करके तत्व ज्ञान करके प्रबोधकों प्राप्त भया है आ-
त्म पदकों प्राप्त भयाहै अंतः करणमों शीतल भयाहै अब पूर्णिमाके चंद्रमाकी न्याई

वा॰ रा॰ शोभता है ९ वसिष्ठजीश्रीरामचंद्रजीप्रतिकहतेभये॥ हेरामजी जीवने सोई दिन है
२४॰ आनंद करणे हारी सोई क्रिया है जिन्हमें तत्व विचार होताहै और हृदय रूपी आ
काशमें चैतन्य चंद्रमाकी चांदनी प्रकाश मान होताहै १० हेरामजी सो पुरुष चिरका
ल शोच करतेहैं और जन्म मरण रूपी बनके झाड़हैं जिन्हकों आत्माके देखने में
अनादर होता है केसे हे सो पुरुष महा पापों करके युक्तहै ११ हेरामजी महात्मा
पुरुषों के सत्संगते संसार समुद्र तरणेमें युक्ति प्राप्त होतीहै जैसें मलाहते नदी
तरणे कों पक्की नाउ प्राप्त होतीहै १२ हेरामजी जिस देशमें सत्पुरुष रूपी महा वृ
क्ष नहींहै कैसाहै ज्ञान रूपी फल करके युक्तहै आनंद करणे हारी शीतल छाया यु
क्तहै ऐसे सत्पुरुष जहां नहीं मिलें तहां एक दिनभी नहीं रहणा १३ हेरामजी संसा
रमें मगन भये आत्माके उद्धार करणेमें धनभी उपकार नहीं करतेहैं मित्र और शत्रु

ओर बांधव कोई उपकार नहीं करते हैं ३१४ हे रामजी एक शुद्ध भया मन रूपी मित्र स-
दा सहचारी है तिस करके विचार करने तें आत्माका उद्धार होताहै ३१५ हे रामजी आत्मा स
र्व देवोंका ईश्वरहै सो इतना मात्र विचारनेते भास होताहै किसतें यह देह काष्ट लोहा के
बरोबर जड़ जानना ओर आत्मा देहतें भिन्न चैतन्य रूप जानना ३१६ हे रामजी एक भास
नामा तपस्वी होता भया उसका विलास नामा तपस्वी मित्र होता भया सो विलास चिरका
लतें भास तपस्वी कों मिल करके कहता भया ३१७ हे भास तेरेकों इस जगतमों आनंद
है ना ओर तेरी बुद्धि चिंता ज्वरसें रहित है ना ओर तूं अब आत्माकों जानता है ना ओर ते
री पूरी भई अभ्यास करी विद्या अब फल देती है ना ओर अब तूं कुशली है ना ३१८ भास
कहिताभया हे विलास हे साधो तेरा आगमन मेरेकों आनंद देताहै आजतक मैने आनंद
करके देखियाहैं तू मेरेकों मान करताहै अरु तूं हमारा कुशल पूछताहैं परंतु यह संसार

में स्थित भये हमारे कों कुशल कहता है २१९ जब लग आत्मा नहीं जाना जब लग चित्त की भूमिका क्षीण नहीं भई तब लग संसार नहीं तरिआ तब लग हमारे कों कुशल कहां है २० जब लग चित्तसें प्रकट भई आशा संपूर्ण छेदी नहीं जैसें दात्री करके झाड़ छेदे जाते हैं तब लग कुशल कहां है २२१ जब लग ज्ञान उदय नहीं भया जब लग समता उदय नहीं भई जब लग आत्म बोध नहीं भया तब लग कुशल कहां है २२२ हे रामजी सो दोनों इस प्रकार करके आपसमें कुशल प्रश्न करते भये समय करके निर्मल ज्ञानकों पाइ करके मोक्षकों प्राप्त होते भये २२३ हे रामजी संगति दो प्रकार की है एक बंधन करणे हारी है एक मोक्ष देने हारी है मूर्खों की संगति बंध करणे हारी है तत्त्व वेत्ता पुरुषों की संगति मोक्ष देने हारी है २४ हे रामजी जिन्हका अंतः करणसें प्रसंग है तिन्हका संगम अग्नि बराबर दाह करता है जिन्हका अंतःकरणसें प्रसंग नहीं है तिन्हका संग अमृतकी न्याई मोक्ष दे

नाहे ३२५ हे रामजी सम पुरुषों समके साथ सर्वत्र रहना सर्व काम भोग विषें रतभी रहना परंतु मन समसे असंग करणा ३२६ हे रामजी यह मन कहीभी स्थित नहीं होता है ना चेष्टामें ना चिंतामें ना वस्तुमें ना आकाशमें ना पातालमें ना आगे ना पीछे ना दिशामें ना वस्तुमें ना आकाशमें ना बाहिर के विशाल भोगोंमें ना इंद्रियों की वृत्ति में ना बाहिर प्राणोंमें ना कपालमें ना तालुस्थान में ना भ्रूमध्यमें ना नासाग्रमें ना नेत्रों की तारामें ना तारामंडलमें ना अंधकारमें ना प्रकाशमें ना हृदय आकाशमें ना जाग्रत में ना स्वप्नमें ना सुषुप्तमें ना निमिलमें ना भोजनमें ना जलपान में ना रक्त पीतादि कमें ना चंचलतामें ना स्थिरतामें ना आदमें ना मध्यमें ना अंतमें ना दूरमें ना समीप में ना पदार्थमें ना बुद्धिमें ना शब्दस्पर्श रूप रस गंधमें ना मोहमें ना आनंदवृत्ति में ना आवागम चेष्टामें ना कालकी कल्पनामें कहीं भी स्थिर नहीं होता है ३३१ हेरामजी

यह मनके बल चैतन्यकी चैतन्य सत्तामें आलंबन करे तो सर्वत्र रसतें रहित होय कर के आत्मा विषे रत होवे तो स्थिर होताहै ३२ हेरामजी जगतका सत्य रूप और असत्यरूप अंतः करण चैतन्यमें भासताहै और आत्माका केवल एक रूप ज्ञान होनेंतें संसारभी आत्म रूप भासता है जैसे सूर्य के प्रकाश होनेंते सर्वत्र प्रकाशही होताहै ३३ हेरामजी अनेक प्रकारके भूतोके भेदकारण अंतः करणहीहै आत्मा सर्वव्यापी होनेतें कारण है तो भी कारण नहींहै किसतें आत्मा सर्वत्र समान सत्ता वालाहै ३४ हेरामजी जिसनें अंतः करणके उपशम पाइ करके निराशता रूपी भूषण करके आपने स्वरूपको शोभित कियाहै तिस कों सप्तद्वीपा पृथिवी गौके खुरके बराबर तुच्छ होतीहै सुमेरु पर्वत मृत्तिकाके पिंड बराबर तुच्छ होताहै दश दिशोंका मंडल एक संपुटके बराबर तुच्छ होताहै ३३५ हेरामजी वैराग्य वाले उत्तम पुरुषोंने लेना देना विहार ऐश्वर्यादिक जगतकी क्रिया प्रयतनसें त्याग

नहीं करीदी हैं ३२६ हेरामजी आत्म ज्ञानी पुरुष बाला स्त्री कों आलिंगन करता है तोभी आत्म ज्ञान की उदारता करके उसके मनसें भस्मकी न्याई काम देवके बाण आप ही शिथिल होते हैं ३३० हेरामजी जेसें व्यभिचारणी स्त्री परपुरुष के व्यसन कों मन में धारण करती है ओर घर के काममें तमाम दिवस लगी रहती है परंतु मन में पर पुरुषके संगकों त्याग नहीं करती है तेसेही जो पुरुष परम तत्वमें विश्राम कों पा मभया है सो व्यवहार भी करता है तोभी उसको इंद्रादिक देवता भी परम तत्वसें चला नेको समर्थ नहीं होते हैं ३३१ हेरामजी केते पुरुष व्यवहारोमें स्थितहैं सुंदर वस्त्रभी धारण करते हैं परंतु जिन्हका अंतःकरण उपशम करके शीतल भयाहै सो पुरुष लो कोंकों शिला समान जड़ ओर मूढजाने जातेहैं ३३२ हेरामजी तत्व जान करके जोंन सी भोग संपदा सेवन करीदी है सो अंतकाल मो भी सुख देतीहै तत्व विचार विना सब

-सा- नकरी भोग संपदा अंतमो दुःख देती है ३४० हे रामजी यह संसार संतजनों के साथ वि
३६ चार करने योग्य है विचार करके देखने योग्य है इस संसार की व्यवहार क्रीडा विचारतें शो
भाकों देती हैं विचार विना दुःख देती है ३४१ हे रामजी यह संसारके भोग सर्पोंकी न्या
ई भयकों और मृत्युको देने हारे हैं और विचारतें भोगे तो आनंद देते हैं जैसे सर्प औ
र जीवोंकों भय देते हैं परंतु गरुड सर्पोंकों भक्षण भी करता है तोभी गरुडकों कछु
नहीं करते हैं ३४२ हे रामजी यद्यपि सूर्यका तेज शीतल होजावे और चंद्रमा का मंड
ल तप्त होजावे तदभी उपशम वाले जीवन्मुक्त पुरुषकों कछु आश्चर्य भय ज्ञान नहीं
होता है ३४२ हे रामजी जगतमें जितनी आश्चर्य रूप अथवा साधारण लीला होती है
सो सभही परमात्मा की शक्तिं स्फुरती हैं तत्व विचारी पुरुष ऐसें जान करके देख-
नेमें इच्छा नहीं करता है ३४४ श्रीरामचंद्रजी वसिष्ठजी प्रति प्रश्न करते भये॥ ॥

रा॰ हेभगवन् यह प्राण और इंद्रियां देहमों निरंतर चलतेहैं जैसे पंछी आकाशमों उ
डतेहैं इन्ह प्राणोंका और इंद्रियादिकों का रोकना कैसें बनेहैं सो तुम मेरे प्रति कृ
पा करके कहो॥ श्रीवसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजी प्रति कहते भये॥ हेरामजी शास्त्रके विचा
रतें संतजनों के सत संगतें वैराग्य के अभ्यासतें और योगकी युक्तितें और संसार की
वृत्तों विषे विश्वास त्यागनेतें अपनी इष्ट देवताका ध्यानतें और सर्वत्र एक आत्माका त
त्व जाननेतें और प्राणायाम का हठ अभ्यासतें प्राणादिकों का चलना रोक आजाता है
हेरामजी ओंकारको १६ सोहलें बार उच्चारण करना दाहिनी नासिका दाहिने हाथके अं
गूठेसें बंद करनी और पवनको चढ़ाउना यह एक प्राणायाम कहा है और ओंकार
कों चोसठ ६४ बार उच्चारण करना दोनों नासिका बंद करके पवन रोकना यह एक
क प्राण याम कहाहै और ओंकारकों बत्तीस ३२ बार उच्चारण करना दाहिनी नासिका

·सा·
३८

करके पवन उच्चारण यह रेचक प्राणायाम कहाहै इसीकों द्विगुण त्रिगुण करके वथा
इ लेना इस प्रकार करके प्राणोंका चलना रोकने बनताहै ३४७ हेरामजी प्राण याम करणे
मों ओंकारकी मात्रा तीन है उन्हके देवता ब्रह्मा विष्णु रुद्र तीन अवस्था जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति
और तीन प्रकारका अभिमानी जीव है विश्व तैजस प्राज्ञ इससे लेकर औरभी बहुत अर्थ
विचारण शास्त्रोमों आचार्य लोकोंने कहाहै सो योग करने वाले पुरुषने गुरु मुखसें अ
भ्यास करना इहां विस्तार भयतें कठिनता करके वार्त्तिकमों नहीं लिखाहै ३४८ हेराम
जी इस प्रकार के प्राण रोकने के उपाय बहुत हैं अनेक आचार्यों के मुखोसें प्रकटभ
येहैं तिन्हकों अपने अपने बुद्धि केवल करके करणेतें प्राणों का चलना रोका जाता
है ३४९ हेरामजी योगकीयां युक्तियां अभ्यास करके दृढ भईआं तों संसार के जीतने
कों उपाय होजातीआं है ३५० हेरामजी सो युक्तियां अभ्यासतें दृढताकों प्राप्त भईहोवे

ओर वैराग्य करके युक्त होवे ओर वासना का जो रोकना होवे तो प्राणायाम सफल होता है ५१ हेरामजी प्राणायाम के अभ्यासतें प्राणों का चलना क्षय को प्राप्त भये संते मनभी शांत होताहै तो केवल निर्वाण मात्र शेष रहताहै ५२ हेरामजी किया है विशाल विचार जिसनें तिसकों मन ओर भोगा दिक जो शत्रु है सो अल्प प्रमाण भी भेद नहीं करसकते है जैसें मंद मंद पवन पर्वतकों नहीं हिलाइ सकतीहै ५३ हेरामजी संवर्त्त गीता मों संवर्त्तने कहाहै रे मन पिशाच तूं तृष्णा रूपी पिशाचनी युक्त काम क्रोधादि यत्नों करके संयुक्त मेरे देह रूपी घर से बाहिर निकस ५४ रे मन तूं बड़ा ठगहै ओरजड़ है ओर प्रेत रूपहै तेने मेरे देह सें निकसे संते मेरा देह रूपी घर अब विवेक संतोष धैर्यादिक संतजनों करके सेवने योग्य भयाहै ५५ अब मेरा मन मृत भया है ओर चिंताभी विचार मंत्र करके मृत भई है ओर अहंकार रूपी राक्ष

वा· सा· सभी मृत भयाहै और चिंताभी विचार मंत्र करके मृत भई है और अहंकार रूपी राक्षस
२५· भी मृत भयाहै अबमें शमता को प्राप्त भया हूं अब केवल बल स्वस्थ होय करके रहता
हों ५६ अब में एक अद्वितीय भया हूं और कृत कृत्य भया हूं और नित्य और निर्मल रू
प भयाहूं और निर्विकल्प चैतन्य मेरा नाम है असा जो मेंहूं मेरेताई मेरी नमो नम न
मस्कार है ५७ ना मेरे को आशाहै ना मेरे कर्महैं ना मेरे को संसार है ना कर्त्ता भा
वहै ना संदेह है ना देह है असे मेरे को मेरी नमस्कार है ५८ मे जगतका आद
हूं जगत को रचना करने हाराहूं मै चैतन्य रूप हूं चौदा भुवन में हूं मेरा अंतर
कही भी नहीहै मैं सर्वत्र पूर्ण भया हूं असे मेरेको मेरी नमस्कार है ५९ इतिसं
वर्त्तगीतायां॥ हेरामजी विंध्याचल पर्वत के कुंज मो बीतहव्य मुनि को विचार स
हित तीन शत वर्ष निर्विकल्प समाधी होती भई तिसतें उपरांत प्रारब्ध शेष करके

जीव चैतन्य मनो रूप होय करके जीवन मुक्त दशा करके कैलास पर्वतमों कदंब वृक्ष के तले शत वर्ष मुनि भाव भया बहुरु शत वर्ष विद्याधर भाव भया सत्त युग त्रेता द्वापर कलियुग इन्ह चारों युगोंका एक युग होता है सो मुनि पांच युग प्रमाण इंद्र भाव को प्राप्त भया फेर कल्प ब्रह्माका दिन प्रमाण शिव का गण भया फेर सूर्य मंडल मों प्रवेश किया सूर्य की आज्ञा करके सूर्य का गण पिंगल नामा तिसमों प्रवेश करके इतना विलास प्रारब्ध शेष करके मन के स्मरणेतें समाधिमों अनुभव किया फेर आप ने नख करके देह पीडित होनेतें फेर देहमों प्रवेश करके विंध्य पर्वतमों एक दिन मात्र यह संपूर्ण विलास अनुभव करता भया ६ सो मुनि दिनके अंतमों मनकों समाधान करणे कों एक विशाल विंध्य पर्वत की कंदरा मों फेर प्रवेश करता भया १६१ सोमुनि अपने समाधान कों नहीं त्याग करता भया इंद्रियों करके मन करके जो कछु सर्व

मैनें इंद्रियों का

 कालमों उत्तर कालमों देखा है तिसकों चित्तमों कल्पन करना भया ६३ मैनें इंद्रियों का

 गण पहिले ही परिहार किया था अब विस्तार भई चिंता करके फेर उदय भया तिसकों मैं फे

र परिहार करना हूं ६४ यह जगत है अथवा नहीं है ऐसी कल्पना कों कोमल लताकी न्याई तो

ड करके शेष रही आत्मा की सत्ता मात्रमों स्थित होना हूं जैसे अचल पर्वत के शिखरमों च

ढ करके निर्भय होय करके निवास करीदा है ६५ उदय भयेमों अस्त भये जैसा अस्त भये

मों उदय जैसा समदृष्टि होय करके सम रसके आभास युक्त स्वच्छता कों प्राप्त होय करके

स्थित होताहूं ६६ जाग्रत भया सुषुप्तकी न्याई सुषुप्त भया जाग्रतकी न्याई तुरीय पदवीकों

आलंबन करके अचल होय करके स्थित होताहूं ६७ पर्वत की न्याई एकांतमों अचल हो

य करके स्थित होताहूं अंतः करके सर्वत्र अचल स्थित होताहूं आत्म सत्ता करके सर्वत्र

समान स्थित होय करके संदेह रोगसें रहित होय करके स्थित होताहूं ६८ हे रामजी

सो बीत हव्य मुनि इस प्रकार आत्मा के समाधान में षट् छे दिन रहा तिसतें अनंतर फेर आत्म बोध को प्राप्त भया ३६६ सो फेर जीवन्मुक्त दशा करके चिरकाल स्थित होता भया पहिले सिरीषा फेर उद्वेग कों नहीं प्राप्त होता भया और हर्षकों भी नही प्राप्त होता भया ३७ तिस बीतहव्य मुनि को चलते कों बैठ तेकों स्थित भये कों हृदयमों मनके साथ चित्र कियां कथा होतियां भइयां ७१ हे मन हे दुष्ट इंद्रियों के स्वामिन् तूं अब देखतेने प्राप्त उपाय करके आनंद का सुख विशाल अब कैसा पाया है ७२ हे मन तेने तिस कारणतें ऐसी राग रहित दशा कों आलंबन करके आपही चंचलता त्यागनी तूं चलने वालियों बिषें बड़ा वेगवान हैं ७३ भो भो इंद्रिय रूपी चोरो तुम्हारी अब आशा हत भई है और तुम्हारा नाम भी न रहाहै यह आत्मा तुम्हारा नहींथा अरु तुमभी आत्माके नहींथे तुम

आत्माकी चोरी करनेथे अब आत्माकी सावधानता करके तुम नष्ट भयेहो ७४ हे इंद्रिय चोरो तुम अब चले जावो अब तुम्हारी मेनें आशा विफल करीहे तुम बडे टेहडे आशय वाले हो अब तुम आत्माके ग्रहण करनेकों समर्थ नही हो ७५ हे इंद्रिय चोरो पहिले तुमकों यह वासनाथी क्या हमही आत्माहें सो अब भूल गई है जेसें रज्जु जाननेमें सर्प कीभी भ्रांती नष्ट होतीहे ७६ जोंनसी अनित्य वस्तुमें आत्माकी भावना होवे सोही अवस्तु में वस्तुकी भावना हे सो विचार बिना होती हे अब विचार करके क्षीण भई हे ७७ हे इंद्रिय चोरो तुम ओर स्वभाव वालेहो हम ओर स्वभाव वालेहें ब्रह्म ओर स्वभावहे कर्त्ताका भाव ओर स्वभाव हे भोक्ता ओर स्वभावका हे ग्रहण करने हारा ओर स्वभावका हे यहां दोष कोन हे ओर केसाहे ओर किसको हे सो सभही अज्ञानने हें सो संपूर्ण भ्रम अब ज्ञानते नष्ट भयाहे ७८ जेसें काष्ठ बनमें होताहे ओर रज्जु बांसकी अथवा चर्मकी होती हे ओर वायी

जलोंकी होती है अरु फल वृक्षों के होतेहैं यह सभ सामग्री भिन्न भिन्न है और गुण
त्र जोहै सो सभका गुण रसकों भोगते हैं ७९ इस प्रकार की यह सामग्री देव योग कर
के मिल करके कार्य सिद्ध करतीहै तैसें हम तुम सभ भिन्न भिन्न हैं अज्ञानतें हमारा
तुम्हारा संबंध भयाहै सो अज्ञान अब नष्टभयाहै ८० जो मेरेकों पहिले स्वरूपकी विस्मृति
भईथी सो अब विस्मृति विस्मरण भई है स्वरूपकी स्मृति अब प्रकट स्मरण भईहै ८१ अब
मेरेको जो सत्यहै सो सत्य भासता है अरु जो असत्य है सो असत्य भासताहै असत्य भ्र
म क्षीण भयाहै अरु सत्य रूप स्मरण भया है ८२ हे रामजी सो बीतहव्य मुनिः इस प्र
कार के विचार करके बहुत वर्षोंके गण मोक्ष चिंतनमों रहता भया ८३ हेरामजी बीतह
व्य मुनी की मूढता दूर होती भई यथार्थ पदार्थोंकी दृष्टि होती भई ध्यानकों आलंबन क
रके सुखी होय करके निवास करता भया ८४ बीतहव्य मुनीका मन त्याग करना और ग्र

हरण करने की इच्छितें रहित होता भया ८५ वीतहव्य मुनि विदेह मुक्ति के भावकों प्रा
प्त भया जन्म कर्मों का अंत होता भया संसार के संग त्यागने की इच्छा होती भई ८६
हे रामजी सो वीतहव्य मुनिः पर्वत की कंदरामों पद्मासन बांध करके स्थित भया आप
नें आत्मामों आपही कहता भया ८७ हे रागतूं अब अपने राग भावकों त्याग करके चला
जा हे द्वेष अबतूं द्वेषकों त्यागजा तुम्हारे करके मेने संसारमों बहुत क्रीड़ा करीहै हेभो
गो तुमकों मेरी नमस्कार है तुम्हारे करके मेने संसारमों सुख भोगाहै हे कर्म भोग सु
ख तेरेकों नमस्कार है जिस करके मेने कोटिशत जन्म अपना स्वरूप भुलाया है ८८
हे संसार के दुःखतेरे कों नमस्कार कि तेरे करके संताप पाइ करके मेने आत्मा का
स्वरूप ढूंडिया है ८९ तिसकारण तें हे दुःख तेने मेरेकों मोक्ष मार्गका उपदेश कि
याहै तूं दुःख नाम करके मेरा मित्रहै हे देह तेरेकों नमस्कार है तूंभी मेरा मित्र है

·सा· जिस कारण तें संसार मों तेरा जीवना सार रहित है इस कारण तें मैने अपनी आ-
त्म पदवी पाई है ३९· हे देह की स्थिति तेरे को नमस्कार है अब हम तेरे प्रसाद तें आ
त्माकी पदवी कों जाते हैं ८१ प्रयोजन के अधीन जीवोंकियां बहुत विषम गतिहै सेंकड़े
जन्म पाइ करके भी देह के साथ वियोग होता है हे मित्र हे देह जिस कारणतें मैने ते
राभी त्याग किया है तूं मेरा चिरकाल का बंधु है तैनेही आत्म ज्ञान के वशतें अपनें वि-
षें तीरगता धारी है आत्म ज्ञान पाइ करके तैनें अपना नाश किया है दूसरा देह करके
तूं नष्ट भया है तेने ऐसा मान करके अपना नाश अंगीकार किया है इसतें तेरे को
नमस्कार है ८३ हे तृष्णे मैं अब शांति कों प्राप्त भया हूं अब तूं अकेली सुकनें ल
गीहै तैनें अब दुःख नहीं करना मेरी तेरे को नमस्कार है अब मैं आत्म पदकों जा
ताहूं ८४ हे काम हे महाराज मैं अब तेरे सें उलटा भयाहूं यह मेरा अपराध क्षमा

करने योग्य है मेरेमों उपशम दोष भयाहै तूं मेरे कों आज्ञा कर मे अब मंगल पद कों जाता हूं ९५ हे तस्मे हे मातः अब चिरकालतें चिर काल पर्यंत आत्म योगके दोष करके निश्चय करके मेरेको तेरा वियोग भया है अब पिछले समय की तेरे को प्रणाम है ९६ हे सुकृत हे पुण्य हे देव मेरी तेरे को नमस्कार है तेने मेरेकों नरकों से निकास करके स्वर्गों मों युगत कियाहै ९७ हे पाप हत्त तेरे को मेरी नमस्कार है कैसा है तूं दुष्ट कर्म रूपी क्षेत्रमों प्रकट भयाहै नरक ही तेरी शाखा है नरक पीडा तेरे पुष्प हैं हे मोह हे भाई तेरे कोभी मेरी प्रणाम है तूं आज से लेकर अदृश्य होवेगा तेरे करके मैने अनेक मूर्छियोंनें भोगीहै ९९ हे कंथे तेरे तांई मेरी नमस्कार है तूं अंधकार विषे कंदरामों सहाय करणे हारीहै हे कंदरे तेरेताई नमस्कारहै तूं समाधी मों सहाय करणे हारीहै हे शांति तेरेकों नमस्कार है तूं मेरेकों संसार के मार्गमों

यो.सा. खेद युक्त भये को विश्राम देने हारीहै सर्वत्र सहाय करणे हारीहै हे त्वमे तेरेकों न
५४९ मस्कार है तूं लोभादिक दोषों कों हरने हारीहै मैं सर्व संकटों करके खेद को प्राप्त भया
हूं दोषों से भागता हूं शोक नाश के वास्ते तूंही मैनें सहाय करी है ४०० हे देह कारह
तूं संकटमों ऊंची नीची पृथिवी मों ऊंजों में हाथ को आलंबन देनेहारा है और हु
ष्टावस्था मों मित्र न्याई सहायता करता हैं तेरेकों भी नमस्कार है ४०१ हे देह तेंभी
अपना अस्थीओं का पिंजरा रक्त मांसका पिंड नाड़ियां आंदरों के जाल कों लेकर चला
जा ४०२ जिन्हों करके जलों को क्षोभ होता है ऐसे त्रिकाल स्नानों कों प्रणाम है संसार
के अनेक व्यवहारों कों और अनेक प्रकार के मरणों को भी प्रणाम है तुम मेरे सभ
ही पुराणे मित्रहो ४०३ अब प्राणभी चलेगें प्राणोंको भी प्रणाम है तुम्हारे साथ मैं
ने बहुत योंनियों मों भ्रमण किया है पर्वतों के ऊंजों में और लोकांतरोंमें देशांत

वा·सा· रोंमें नगरों में अनेक प्रकारों की मार्ग यात्रामों विश्राम कियाहै स्थिति करी है यात्रा
२६· करीहै ४·५ यह ब्रह्मांडमों सो नही है जो मैने तुम्हारे साथ नही कियाहै और करने बा-
की रहा है गमन किया है नहीं गमन कियाहै दीया है और नही दिया है आलंबन
किया है नहीं आलंबन किया है अब तुम अपनी दिशाको जावो मै अपनी दिशा कों
जाताहूं अब हमारा तुम्हारा संबंध हो रहाहै ४·६ जितने संग्रह किये हैं सो क्षय करके
अंतकों प्राप्त होते हैं उंची पदवी संपदा की चढाई उतरणे नें पात होनेतें अंतकों प्रा-
प्त होती है संजोग इष्ट जनोंका समागम वियोग करके अंत को प्राप्त होते है यह
संसार का मार्ग है ४·७ यह नेत्रों का प्रकाश सूर्य मंडलमों जावे नासिका की गंधलेने
की शक्ति बन के पुष्पों में चली जावे प्राण पवन का चलना वायुमों लीन होवे करणें
का शब्द श्रवणकी शक्ति आकाश मंडलमों चली जावे ४·८ मेरी जिह्वा की रस ग्रहण

।· सा· की शक्ति चंद्र मंडलमों चली जावे हे रामजी तिसते उपरंत बीतहव्य मुनि अज्ञान मात्र
६१ कों भी त्यागन करता भया प्रातःकाल के आकाश जेसा निर्मल होता भया ४·९ तिसकों तब
केवल प्रकाश मानतेज भासता भया सो मुनि क्षण मात्र तेज कों विचार के तेज के फुरने
कों भी त्याग नही करता भया ९· फेर मन करके तिस अवस्था कों लंघ करके क्षण मात्र
मों काल की कल्पना कों लंघता भया फेर केवल चेतन्य का फुरणा मात्र होता भया फेर
शब्द की पश्यंती पद कों प्राप्त होय करके सुषुप्तिकी प्राप्त अवस्था कों प्राप्त होय करके प-
र्वतकी न्याई अचल होता भया ११ फेर तुरीय पद कों प्राप्त भया फेर आनंद सें रहित
ओर आनंद मय भया सत्ता सें रहित ओर सत्ता मय भया किंचिन्मात्र ते निह किंचन्मा
त्र होता भया ना प्रकाश रूप ना तमो रूप होता भया ना चेतन्य रूप ओर चेतन्य रूप हो
ता भया इहां नाना प्रकारन ही हे ऐसी श्रुति के निषेध पदवी कों प्राप्त होय करके बा

ा·स्था· एीके श्रोर मनके श्रगोचर होता भया १२ तब सो सर्वत्र समान श्रोर सर्व व्यापी श्रोर पर
६२ म पवित्र श्रोर सर्व भावोंके श्रंतर्गत सभसें रहित होता भया १३जो शून्य वादियों का शून्य
है ब्रह्म वेत्ता पुरुषों का ब्रह्म है विज्ञान वादियों का विज्ञान है सांख्य दृष्टि वालियों का पु
रुष योग वादियों का ईश्वर शिवा द्वैत वादियों का श्रद्वैत शिव काल वादियों का काल
है श्रात्म वादियों का श्रात्मा है श्रनात्म वादियों का श्रनात्मा है मध्यम वादियों का म
ध्यम है समचित्तों का सम रूप है जो सर्व शास्त्रों का सिद्धांत है जो सभ के हृदयों में
विराज मानहै जो सर्व रूप है सर्वजगत है जो कछु कहने मों श्रवण करने मों श्रा
वे सो वीतहव्य मुनि होता भया १४ जिसतें परें उत्तम नहीं है जो तेजों कोभी प्रकाश क
रताहै श्रोर श्रनुभव मात्रहै जो एक है श्रोर श्रनेक रूपहै सर्व जनों के रंजन करने सें न
हीं रंजन करनेसें रहित है जो सर्व रूप है श्रोर सर्व रूपसें रहितहै जो जो कछु है सो र

कछु नहीं है सो सो बीत हव्य मुनि होता भया १६ जो जन्म सें रहित हैं और जगतसें र
हित है जो एक है और अनेक है निर्मल है कला सहित है कला रहित है आकाशते भी नि
र्मल रूपहै ऐसा ईश्वर रूप क्षणमात्र करके स्थित होता भया १७ इति बीतहव्योपाख्यानम् ॥
हेरामजी जो यह संपूर्ण मैने तेरे तांई पहिले वर्णन किया है और अबभी वर्णन करता हूं
और आगे भी वर्णन करूंगा सो संपूर्ण त्रिकाल दर्शी जो मैंहूं चिरकाल जीवनें हाराहूं मैंनेजो
कछु विचारिया है सो सभ मैनें देखिया है सो तेरे प्रति कहाहै १८ हे महामते हे रामजी तूं
इस निर्मल दृष्टिकों धारण करके ज्ञानकों प्राप्त हो ज्ञानसें मुक्ति प्राप्त होतीहै ज्ञानसें अज्ञा
न क्षय होता है ज्ञान से परम सिद्धि प्राप्त होती है ज्ञान सें दुःख नष्ट होता है और किसी सें
सिद्धिनहीं होती है १९ हे रामजी बीतहव्य मुनि ज्ञान करके संपूर्ण अज्ञान दशाकों दूर करके
सिद्धि को प्राप्त भया २० श्रीरामजीकाप्रश्न ॥ हे ब्रह्म विदांवर जीवन मुक्त देह धारीयों को आ-

काशमों उडने आदिक शक्ति कैसें नहीं देखीदी है यह मेरे प्रति कहो २१ वासिष्ठजीकहतेभये हेरामजी जो आकाश गमनादिक सिद्धीका समूह है सो संपूर्ण क्रिया का और वस्तु का स्वभा वहै सो आत्म वेत्ता पुरुषोंनें नहीं मानिया है २२ हेरामजी जो आत्मवेत्ता भी नहीं है और मुक्त भी नहीं भया है तोभी द्रव्य शक्ति और कर्म शक्ति और क्रिया शक्ति और काल शक्तिनें आका श गमनादि सिद्धिकों प्राप्त होता है आत्म वेत्ता पुरुष इन्ह सिद्धिकों आदर नहीं करते हैं २३ हेरामजी आत्म वेत्ता पुरुषों का यह विषय भोग नहीं है आत्मवेत्ता आत्मा विषें ही रत हो तेहैं आत्म विचार करके आत्म ज्ञान के सुखमों तृप्त रहतेहैं अविद्या के विलासमों प्रवृत्त नहीं होते हैं २४ येते जगत के योग सिद्धि आदिक भाव हैं तत्व वेत्ता पुरुष तिन्हकों अवि द्याते प्रगट भयेकों जानते हैं जिन्होंने अविद्या त्यागीहै और आत्म वेत्ता है सो इन्हमों प्रीति कैसें करे हैं २५ हेरामजी द्रव्यकी युक्ति देशकी युक्ति क्रियायुक्ति कालकी युक्ति यह सभ

युक्ति भलीभी है तो भी परमात्मा पद की प्राप्तिमों उपकार नहीं करतीहै २५ श्रीरामजी श्रीव
सिष्टजीप्रतिप्रश्नकरतेहैं हे ब्रह्मन् चित्त ग्रस्त भये संते मैत्री करुणादिक उत्तम गुण किसकों
और किस प्रकार करके फुरण होते हैं यह चित्त के धर्म है चित्त बिना कहां फुरण होते हैं
श्रीवसिष्टजीश्रीरामचंद्रजीप्रतिकहतेभये॥ हे रामजी चित्तका नाश दो प्रकार का है एक स्व
रूप सहित है एक स्वरूप रहित है जीवन्मुक्त कों स्वरूप सहित है विदेह मुक्त कों स्वरूप
रहित है २७ हेरामजी संसारकी सुखदुःखों की दृष्टि जिस धीर पुरुष कों समदृष्टिते आत्म
चिंतनतें नहीं चलाय सकतीहै जैसें श्वास के पवन पर्वत कों नहीं चलाय सकते हैं तिस पु
रुष के चित्त कों हम लोक नष्ट भये को जानते हैं २८ सो यह है यह मैं इस प्रकारकी चिंता
जिस पुरुष कों व्याकुल नहीं करती है तिसके चित्त को नष्ट भये को मानते हैं॥२९ जिस पु
रुषकों आत्मा की कृपणता और उद्यम और मद और ईर्ष्या और हर्ष भिन्न वृत्ति नहीं कर

तेहैं तिसके चित्तकों नष्ट भये कों जानते हैं ३॰ हे रामजी जीवन्मुक्त पुरुषको मनो नाश भ
ये संते अंतः करण रूपी हिमाचलमें मैत्री आदि गुणों की संपदा वसंत ऋतु में वृक्षोंके
नये दलों की न्याई आपही प्रकट होती है ३१ श्रीरामचंद्रजीकाप्रश्न वसिष्ठजीप्रति॥ हे ब्रह्मन्
यह संसार नाम करके दाख की लताहै वुह केसीहै अत्यंत विस्तार स्वरूपवाली है इसके मू
ल इछ प्रकट भयेहैं मोह रूपीजल के सिंचन सें वृद्ध भई है इसका बीज क्याहै उस बीज का
भी बीज क्या है और बीज के बीज का भी क्या बीजहै सो मेरे कों कहों ३२ श्रीवसिष्ठजीश्री
रामजीप्रतिकहतेहैं॥ हे रामजी अंतःकरण में लीन भये हैं उत्पत्ति के महा आरंभ जि
सके सुभ असुभ कर्म महा अंकुर है जिसके ऐसा शरीरही संसार लताका बीजहै ३३
हे रामजी उतपत होना और नाश होनेकी दशा का भंडारहै दुःख रूपी रत्नों का संपुटहै
और आशा के वशतें प्रवृत्त होता है ऐसा चित्त ही शरीरका बीज है ३४ हे रामजी यह

चित्त रूपी वृक्ष केसाहै नाना प्रकार की वृत्ति रूपी लताकों धारण करताहै इसके दो बीज
हैं एक प्राणोंका चलना है दूसरी दृढ भावना है ३५ हेरामजी जिस कालमें नाड़ी मार्गोंमें
प्राण नहीं चले तो फुरणा होने के अभावतें चित्त अंदर नहीं रहता है ३६ हेरामजी दृढभा
वना करके आद अंतकी विचारणा त्याग करके पदार्थ का जो ग्रहण करणा सो वासना क
हीहै ३७ हे रामजी पदार्थ की भावना का तीव्र वेगतें वासना का निरंतर प्रवाह होता है
तो और संपूर्ण ज्ञान भूल जाताहै ३८ हे रामजी इस चित्त के दो बीजहैं प्राणों का चलनाओ
र वासना इन्ह दोनोंमें एक क्षीण भये संते दोनों ही सताबी नष्ट होते हैं ३९ हेरामजी वास-
नाके वशते प्राण चलता है प्राणके वशतें वासना चलती है यह दोनों चित्त वृक्षके बी
ज और अंकुर हैं ४० हे रामजी हृदयमें संवेदन के फुरणेकों पाइ करके प्राणका चलना
और वासना दोनोंउदय होतेहैं संवेदन का फुरणा ही इन्ह दोनोंका बीजहै ४१ अहंभा

का फुरणा त्यागनेतें प्राणका चलना और वासना दोनों मूल सहित नष्ट होते हैं ४३
हे रामजी अहंभाव ही फुरणेका बीजहै अहं भाव बिना फुरणा नहीं होताहै जैसे तेल॥
बिना तिल नहीं रहता है ४४ हेरामजी अहंभाव रूपी वस्तुका आलंबन जिसको नहीं
है सो पुरुष फुरणेतें रहित भयाहै सोभी में हजारों कार्य करे तोभी निर्विकार होताहै ४५
हेरामजी जिसका हृदय अहंभाव करके किंचित् मात्र भी लिप्त नहीं होताहै उसका फु
रणा सत्य ज्ञान रूपहै सोजीवन्मुक्त कहा है ४६ हे रामजी इस ज्ञान के फुरणे का बीज
सत्ता मात्र चैतन्य कहाहै सत्ता मात्र चैतन्यतें ज्ञानका फुरणा होताहै जैसें तेजसें प्रकाश
होताहै ४७ श्रीरामचंद्रजीश्रीवसिष्ठजीकेप्रतिप्रश्नकरतेहैं॥ हे ब्रह्मन् हे मेरा मान करने हारे
तुमने यह सबही बीज कहेहैं किसका प्रयोग करके आत्मपद सत्ताबी प्राप्त होताहै यह
मेरे को कहो ४८ श्रीवसिष्ठजीश्रीरामचंद्रजीप्रतिकहतेभये॥ हे रामजी केवल सत्ता मात्र

की कोटी मों स्थित भये संते पौरुष के यत्न करके बलतें वासना को त्याग करके आत्म प
द सिताबी प्राप्त होताहै ४९ हे रामजी तूं जिस क्षणमें तत्व ज्ञान करके सत्ता मात्रमें स्थिति
करेंगा उसी क्षणमें भली प्रकार करके आत्मपद कों पावेंगा ५० सत्ता मात्रका स्वरूप ईश्वरादि
क सविकल्प चैतन्यमें स्थिति करेगा तो बहुत यत्न करके भी आत्मपद कों पावेंगा ५१
हे रामजी सत्ता मात्र चैतन्यमें ध्यान करके रहेगा तो अधिक यत्न करके उच्ची आत्मपदवी
को पावेंगा ५२ हे रामजी वासना का त्यागनें मों तूं यत्न करेगा तो तेरी संपूर्ण चिंता और रोग
क्षणमें शिथिलता कों प्राप्त होवेंगे ५३ हे रामजी पहिले जो यत्न कहे हैं तिन्हसें यह य
ह यत्न कठिन है हे राम वासना का त्याग सुमेरु पर्वत के उठावने सें भी कठिन है ५४ हे रा
मजी जबलग मन लीन नहीं भया तबलग वासना क्षय नहीं होती है जबलग वासना क्षी
ण नहीं भई तबलग चित्त क्षीण नहीं होताहै ५५ हे रामजी जबलग तत्वज्ञान नहीं भया त-

बलग चित्तका उपशम कहां होताहै जबलग तत्वज्ञान की प्राप्ति नहीं भई तबलग वासना का लय नहीं होताहै ५७ हेरामजी तत्वज्ञान और मनका नाश और वासना का नाश यह ती न आपसमों तीनों के कारणहैं यह तीनों असाध्य ही स्थितहैं ५८ हे रामजी तिस कारण ते विवेक सहित पौरुष करके भोगोंकी इच्छाकों दूरसे त्याग करके यह तीनोंही सेवनें योग्य हैं ५९ हेरामजी यह तीनोंही भले प्रकार वारं वार अभ्यास नहि किये होवें तो अनेक यत्नों करके और अनेक वर्षों करके भी परमपद की प्राप्ति नहीं होतीहै ६० हे रामजी वासना के परित्याग के बरो बर प्राणायाम कों तत्व वेत्ता जानतेहैं तिसतें प्राणायाम भी करे ६१ हे राम जी वासना का परित्यागतें चित्त जो है सो अपने चित्त भावकों त्यागनकरता है और प्राणाया मतें भी चित्तनाश होताहै तिसतें दोनों में जो तूं चाहे सो कर ६२ हे रामजी व्यवहार मों असं ग होनेतें संसार के भाव त्यागनेतें शरीर का नाश देखनेतें वासना प्रवृत्त नहीं होताहै ६३

वा॰सा॰ हे रामजी वासना का नाश भये संते चित्त प्रवृत्त नहीं होताहै जैसे पवन के चलने बिना ग
२७१ रद आकाशमें नहीं चढती है ६४ हे रामजी प्राणायाम का दृढ अभ्यास की युक्ति करके सद्गु
रुकी कृपा करके युक्ति करके प्राणायाम होता है ६५ हे रामजी प्राणके चलने के जीतनेका
यत्न बुद्धिवान पुरुषनें अवश्य करके करना एकाग्र चित्त करके वारं वार यत्न करना ६६
अथवा प्राण रोकने के क्रम कों त्याग करके जो तेरेको रुचे तो चित्त कोही रोकने चाहै तो
बहुत काल करके उच्च पदकों प्राप्त होवेगा ६७ हे रामजी उत्तम युक्ति बिना मन जीतिया
नहीं जाताहै जैसें मतवारा दुष्ट हाथी अंकुश बिना नहीं जीतिया जाता है ६८ हे रामजी आ
त्म ज्ञानकी प्राप्ति और सत्पुरुषोंकी संगति और वासना का त्याग और प्राणोंका रोकना यह
युक्तियां चित्त के जीतने मों बलवान हैं इन्ह करके चित्त जीतिया जाताहै जैसें बर्षाकी धारों
करके पृथिवी की गरद दूर होतीहै ६९ हे रामजी यह युक्तियां होत संते हठ करके इन्ह

युक्तियों कों त्याग करके अंजन की मुष्टि करके अंधेरा दूर करने चाहतेहैं ७॰ हे रामजी

 जो पुरुष चित्तकों नहीं जीतते हैं सो पुरुष यज्ञों करके तपों करके दानों करके अरु तीर्थया त्रा करके देव पूजा करके अनेक उपाधि चिंता करके बन मृगोंकी न्याई वृथा काल क्षेप करतेहैं ७१ हे रामजी चलने का स्थित भयेका जाग्रत भयेका शयन करनेका जिस पुरुषका विचार युक्त चित्त नहीं है सो पुरुष मृत भया जानना ७२ हे रामजी यह जगत क्याहै यह देह क्याहै ऐसी ज्ञान दृष्टि करके निरंतर विचार कर आप विचार कर और संतजनों के साथ विचार कर ७३ हे रामजी ज्ञानवान जो पुरुषहै सो आनंद करके उदित रहता है संसार के मोह जालमों कहींभी मगन नहीं होताहै सदा असंग रहताहै अपने आत्मा करके चक्र वर्ती राजाकी न्याई सभसें उपर विराजमान होताहै ७४ हे रामजी जो कोई आत्म ज्ञानीके प्राण हरणे वालाहै और जो कोई धनकों और सुख को देने हाराहै तिन्ह दोनोंको आत्मवेत्ता पुरुष मीति

करके मधुर सम दृष्टि करके देखता है ७४ हे रामजी सो आत्म वेत्ता पुरुष संपूर्ण शुभ और अशुभ वस्तु के समूह विषे सम दर्शी होताहै अंतः करण मों उदार चित्त होता है बाहर करणे मों संसार के काम करके युक्त है परंतु अंतर्दृष्टी करके कछु नही करता है ७५ हे रामजी अथवा संपदा कों प्राप्त होवे अथवा आपदा को प्राप्त होवे परंतु उदार बुद्धि पुरुष सभको सम समान जान करके अपने स्वभाव कों नही त्यागन करता है जैसें क्षीर समुद्र मंदर पर्वत करके मथन भी किया है तोभी अपनी उज्वलता और श्वेतवर्ण कों नही त्यागन करता भया ७६ हे रामजी सो पुरुष चक्र वर्ती राज्यकों पाइ करके अथवा महा आपदाकों पाइ करके सर्पयोनि कों पाइ करके इंद्र पदवी कों पाइ करक हर्ष रहित होताहै और खेद से रहित होता है जैसें चंद्रमा कलाके बंधने मों और घटने मों नाशकों नही प्राप्त होता है हे रामजी तूं आपने आत्मा कों संपूर्ण आरंभों सें रहित जान और अनेक भेद सें रहित जान और

अनेक भेद सें रहित जान और शांत रूप जान नाना प्रकार कर्म फलों से रहित जान और नाना प्रकार रूप वेशनें रहित जान और उदार चित्त हो तिस करके उत्तम दशा जो मोक्ष तिस को प्राप्त होवैंगा ७८ हे रामजी जो मैंने तेरे प्रति आत्म ज्ञान उपशम सहित कहाहै इस कर के कामादिकों सें रहित भई ऐसी प्रकाश मई बुद्धी करके निर्मल आत्म पदको पाइ करके शुद्ध आत्म दृष्टि करके यह संसार मों अनेक जन्म बंधनों करके बद्ध नहीं होवैंगा ७९ इति श्रीमोक्षोपाये वासिष्ठ सारे वसिष्ठ राघव संवादे उपशाम प्रकरणं पंचमं समाप्तम् ५ ॥राम अथषष्ट निर्वाण प्रकरणं ॥ बाल्मीकीजी भारद्वाज प्रति कहते हैं॥ हे भरद्वाज उपशाम प्र करण के उपरांत तूं छठे निर्वाण प्रकरण कों श्रवण करकेमाहे ज्ञान करके निरवाण पद वीकों देने हाराहे १ चतुर्दश दिन मो प्रातः समयमों सभा मों आय प्राप्त भये श्रीरामचंद्र जीकों वसिष्ठ जी कहते भये॥ हे रामचंद्रजी अब तत्व बोध वास्ते मैंने तेरे प्रति निर्वाण

प्रकरण कहोता है हे दुष्ट शत्रुन को मारने हारे तुम इस निर्वाण प्रकरण को सावधान म
न होय कर श्रवण करो २ हे रामजी वैराग्य के अभ्यास के बसतें वासनाका त्यागते तैसें आ
त्मतत्वका बोधतें संसार समुद्र तरिआ जाताहे तिसतें तुम तिन्ह तीनोंमें ही अभ्यास करो ३
हे रामजी देहमों जब लग अहंकार है और इष्य पदार्थ स्त्रीपुत्र धनादिकमों जब लग आत्मभा
वनाहे और जब लग इन्ह पदार्थोमें ममता बनीहे तब लग चिन्तादिकों का भ्रम क्षीण न
हीं होताहे ४ हे रामजी जब लग तूं सभसें अधिक आत्मतत्व कों नही प्राप्त भया जब ल
ग सत संगतें तेरी मूर्खता क्षीण नही भई तब लग चिन्तादिकों करके तेरे कों दीनता बनी
है ५ हे रामजी जब लग आशा रूपी सर्पिणी के विषका मोह हृदय रूपी मंदिर मों है तब ल
ग विचार रूपी चकोर हृदय मंदिरमों प्रवेश नही करताहे ६ हे रामजी जो पुरुष देहादिकों
को स्तुति नही करता है और विश्वासभी नही करताहे और तत्व वस्तु करके नही देखता है रूर

सेंभी दूर असत्य देखताहै उसका चित्त लीन होजाताहै ७ हे रामजी जो पुरुष अंतःकरण मों आत्म परायण होता है चैतन्य रूपी अग्निमों त्रैलोक्य रूपी तृणकों होम करताहै ऐसी मुनिवृत्ति वाले पुरुषको चित्तादिकों के भ्रम निवृत्त होजाते हैं ८ हे रामजी काष्ठ और तृण आदिक जो हैं सो कुहाड़े सें छेदने सें वार वार अग्नि करके दाह होने सें फिरभी उत्पन्न होतेहैं परंतु ज्ञान रूपी अग्निसें दग्ध भया मन फेर नहीं उदय होताहै ९ हे रामजी जौंनसा संसार के व्यवहार मों आपने साथ शत्रुभाव करता है सो अपने पाप हरणे करके नरकमें नाशणे को उदय भया जानना जो पुरुष तिसकों दुष्ट मित्रकों देखता है सोही भला देखताहै १० हे रामजी जो पुरुष संसारी लोकोंकी प्रीती कों और वैर कों अंतः करणसें निर्मल करता है जैसें नदी अपने तट के वृक्षोंकों निर्मूल करतीहै सो पुरुष सर्व दोषोंकों नाश करने द्वारा है ११ हे रामजी जिसकों देहमों अहंकार नहींहै जिसकी बुद्धि कर्म करनेमों लिप्त नहीं होतीहै सो पुरुष इन्ह सभ लोकोंको मारे तोभी हत्या दोष करके

वह नहीं होता है १२ हे रामजी आत्मज्ञान रूपी शास्त्र के मंत्रको अंतः करण में भावना करके धारण करनेसे तृष्णा रूपी विष की विसूचिका रोग क्षीण हो जाहै जैसे शरद ऋतु मों ओसगल जाती है १३ हे रामजी जौनसियां निरंतर संपदां हैं जौनसियां निरंतर आपदां हैं जौनसे बालक अवस्था युवा अवस्था वृद्धा अवस्था और मरण की अवस्था सें लेकर संताप जो हैं जौनसा अनेक दुःखों की परंपरा करके मगन जो होना है यह सभही घोर अज्ञान के अंधकार कीयां विभूती हैं १४ हे रामजी इन्ह सभन की मूल कारण अविद्या है सो प्रकृति कही है तिसको तुम तीन गुणों के धर्म वाली कों जानों सो तीन गुणों को तुम सुनो एक सतो गुण दूसरा रजो गुण तीसरा तमो गुण यह तीन प्रकार का गुणों का भेद है १५ हे रामजी यह अविद्या गुण भेदतें नव

प्रकार के भेद वाली है जो कछु यह देखने में अवता में जगत है सो स
मही इस अविद्याने ही विस्तार किया है १६ हे रामजी ऋषी और मुनि और
सिद्ध और नाग और विद्याधर और देवता यह अविद्या का सात्विक भाग है १७
हे रामजी इस अविद्या के सात्विक भाग के भी नाग और विद्याधर यह तमोगु
णमें है मुनि और सिद्ध रजो गुणमें है शिवजी से आदि देवता सतो गुणमें हैं १८
हे रामजी यह आत्मा ही अपना स्वरूप जानने बिना संसार में भ्रमता रहता
है और सोही आत्मा अपना स्वरूप को जाने तो संपूर्ण ज्ञान की अवधी को प्रा
प्त होता है १९ हे रामजी स्थावर जोनि जो है और पशु पंछी जो है यह सभ
ही जड धर्म वाले हैं सदा सुषुप्ति पदमें आरूढ भये हैं ज्ञान से रहित हैं
वारं वार जन्म को पावने होते हैं २० हे रामजी यहां वासना का बीज रहा है

सो सुषुप्ति जाननी ज्ञान सें मोक्ष सें रहित है यहा वासना निरबीज भई है सो तुरीया कही है सो मोक्ष की सिद्धिकों देती है २१ हे रामजी वासना और अग्नि और स्नेह और शत्रु और विष यह सभसी ज्ञान के और तृण के और अ संगता के और सुजनता के और जीवन इन्हके साथ विरोध करते हैं तिसतें अल्प प्रमाण भी शेष रहे तो भी बाधा करता है तो इन्ह का शेष थोहडा बी नहीं रखना २२ हे रामजी जिस की वासना का बीज दग्ध भया है सामान्य सत्ता मात्र रूप भया है सो पुरुष देह सहित होवें भावें देह रहित होवें सो फेर जन्मादि दुःख का भागी नही होता है २३ हे रामजी जब अविद्या रूप सें रहित देखी तब ही सताबी गल जाती है जैसे वर्फ का पिंड सूर्य की धूपमें गल जाता है २४ हे रामजी यह देह रक्त और मांस और अस्थिआं इन्ह

या·स्था· का यंत्र बना है इस मों में कौनहूं ऐसा जब आपही विचार करे तो अविद्या न
२८· होता ही सर्व प्रकार की लीन होती है २५ हे रामजी यह प्रपंच आद मों और
अंत मों असत्य रूप है इस प्रकार करके सभ प्रपंच कों असत्य जानने संते जो
सत्य रूप रूप बाकी रहे तिसकों अविद्या लय होने का साखी कों जानें २६ हे रा
मजी इस अविद्या का स्वरूप अपने नाम करके स्वभाव करके रहित जानीता
है हे रामजी जिह्वा का स्वाद जिह्वा बिना और किसी करके नही प्रतीत होता
है २७ हे रामजी अविद्या तो कहीं नही है यह सभही एक अखंड पर ब्रह्म है
जिस करके सत् अरु असत् सभही विस्तार युक्त प्रकाश किया है २८ हे रामजी
घट और पट और गाडी और नाखो और सभ ही जो कछु देखीता है यह आत्मा
नहीं है सभ भिन्न भिन्न है ऐसा कहे संते अविद्या उदे होती है जो ऐसा विचारे

यह घट पटादि सभ ही पर ब्रह्म है ऐसा बिचार किये संते अविद्या गलित
होती है २९ हे रामजी मैं तुम्हारे प्रति आत्म ज्ञान वास्ते वार वार कहता हूं क्या
हे राम अभ्यास विना आत्म भावना उदय नहीं होती है ३० हे रामजी सो अवि
द्या रूपी लता तेरे हृदय रूपी स्थलमों आरूढ भई है इसकों ज्ञान का अभ्यास
के विलास रूपी खड्ग प्रहारों करके मोक्ष सिद्धि वास्ते छेदन करो ३१ हे रामजी
जनक राजा ज्ञेय वस्तु को जान करके आत्म ज्ञान का अभ्यासमों तत्पर भया
जैसें विहार कर भया तैसें तूं भी आत्म ज्ञान के विलास करके विहार कर ३२ हे
रामजी जिस आत्म ज्ञान का निश्चय करके विष्णु अनेक अवतार ले करके पृथिवी
मों विहार करता भया और शिवजी गौरी कों अर्ध अंगमों धारण करके आत्म नि
श्चय करके विहार करता है जो निश्चय ब्रह्माको सृष्टि करने मों भी स्थिर रहताहै

तिस कों तूं भी धारण कर ३३ जो निश्चय विद्या पठन करते बृहस्पति कों है जो दैत्या
जो दैत्य गुरु शुक्रकों है जो सदा भ्रमण करने हारे सूर्यकों हैं जो चंद्रमा कों है जो पव
न और अग्निकों है जो नारद पुलस्त्य मुनिकों है जो मेरे कों और अंगिरा मुनिकोंहै जो
प्रचेता और भृगु को है जो निश्चय क्रतु कों और अत्रि कों और शुकजी को है ३४ हेरा
मजी जो निश्चय और राज करते राज ऋषिओं को है और तप करते ब्रह्म ऋषियोकों
जीवन्मुक्तों को है सो निश्चय तुम को भी होवे ३५ हे रामजी जो ब्रह्म वेत्ता हैं सो भी
ब्रह्महैं सभही लोक भी ब्रह्म हैं सभ भूत भी ब्रह्म हैं हमभी ब्रह्म हैं तुमभी ब्रह्म
हो अरु हमारा शत्रु और मित्र और बांधव भी ब्रह्म है ३६ हे रामजी अज्ञानी को स
र्व जगत् दुःख मयहै अरु आत्म ज्ञानीकों सर्व ब्रह्मांड आनंद मयहै जैसे अंधे को
जगत् अंधकार युक्त है अरु नेत्र वाले को सदा प्रकाश युक्त है ३७ हे रामजी जैसें

बर्फ़ और ओस और बिंदु और किरणें और तरंग और लहरी और फेन यह सब जलसे प्रकट भये हैं और जल रूप है और जलमें ही है तैसेही जो देह है अरु जो इंद्रियां हैं जो देखीता है जो बालपना से लेकर अवस्था हैं जो जाग्रतादि अवस्था हैं जो क्षय अरु वृद्धि हैं जो जन्म मरण है जो ज्ञान और अज्ञान है जो बंध मोक्ष है सो सबही ब्रह्म रूप है और ब्रह्मही है ३८ हे रामजी ब्रह्म वेत्ता पुरुष जो हैं सो ब्रह्मको कर्मसे और कर्त्ता से करने से और कारणसे सहित और निर्विकार और स्वयं प्रकाश अपने आत्माको जानते हैं ३९ हे रामजी रक्तभी हम हैं अरु मांसभी हमहैं अस्थिभी हम हैं अरु देहभी हम हैं अरु चेतन्यता भी हम है अरु ब्रह्मभी हमहैं ऐसी तत्व भावना है ४० हे रामजी आकाश भी हम हैं अरु स्वर्ग भी हम हैं अरु सूर्य चंद्रमा ताराभी हम हैं अरु दिशा पृथिवी भी हम हैं अरु घट पट स्वरूप करके

हमही ब्रह्म है यही सत्य भावना है ४१ हे रामजी हम चैतन्य रूप आत्मा कों उपा-
सना करते हैं अरु कैसा है आत्मा सर्व संकल्प के फल कों देने हारा है अरु सर्व ज-
गत को प्रकाश करता है सर्व ग्रहण करने योग्य पदार्थ की अवधी का अंत है ४२ हेरा
मजी फेर कैसा है चिदात्मा सर्व अवयवों में विश्रांत है सर्व अवयवों ते परे है निरंतर
चैतन्य रूप है ४२ हे रामजी घट में और पटमें नीर में और कहा में समान वर्तमान
हैं अरु जाग्रत में भी सुषुप्ति जैसा अचल है ४३ अग्निमें उष्ण रूप है अरु बर्फमें शी-
तलरूप है अन्न में स्वाद रूप है अरु अंधेरे में हास रूप है चंद्रमा में श्वेत रूपहै ४४
हे रामजी सूर्य में तेज रूप है अरु अंधर अरु बाहिर में समान प्रकाश रूपहै जैसे
र समीप है तो भी दूर है ४५ हेरामजी मधुर आदिक रसों में मधुर रूप है तीक्ष्ण
आदिक रसों में तीक्ष्ण रूप है सभही पदार्थों के समूहों में व्याप्त है ४६ हेरामजी

जाग्रत मों स्वप्न मों सुषुप्त मों स्थित है तुरीया मों भी है तुरिया सें परे पदमों भीहै सदा सत्ता रूप करके व्याप्त है ४८ फेर वुह कैसा है चिदात्मा जिसके सर्व संकल्प शांत भये हैं सर्व कौतुकों तें रहित है संपूर्ण आरंभ जिसके गत भयेहैं ४९ फेर वुह कैसा है चिदात्मा निस कौतुक है अरु निरारंभ है निश्चेष्ट है निस्पृह है सर्व गत है नि रवय है अरु निरंकार है सर्व जगत के अंतर्गत है अपार है एक रूप है अमर्याद है अरु चैतन्यता का आरंभ रूप है ५॰ हे रामजी यह सभ जगत में हूं यह मेराहै सभही एक रूप हम और तुम यह सभही कल्पना मात्र है ऐसा विचार करणे हारे मेरे को ज्ञान ज्ञात्यता भई है जगत भावें स्थित होवे भावें नष्ट होजाये में अब चिंता ज्वर सें रहित भया हूं ५१ हेरामजी महात्मा पुरुष जो भये हैं सो ऐसा निश्चिय वानू मुक्त होय करके सर्व व्यसन सें रहित होते भये सत्य और असत्य रूप पदमों संस

य रहित भये सम सुखमों स्थित होते भये शांत पदमों प्राप्त होते भये ५२ हे रामजी।
इस प्रकार करके धीर पुरुष पूर्ण बुद्धि होते भये समदृष्टि होते भये अरु राग द्वेष सें रहि
त होते भये जीवितमों और मरणमों भय और प्रीति कों नहीं करते भये ५३ मोहस्थान मों मो
हित नहीं होते भये अरु आपदामों मगन नहीं होते भये अरु शोकों करके रोदन नहीं क-
रते भये शुभ प्राप्तिमों हर्ष कों नहीं प्राप्त होते भये जैसें तुम पूर्ण चित्त होते सें पूर्ण चित्तहो
ते भये ५४ हे रामजी प्रसंग सें प्राप्त भये कर्मकों केवल करते भये परंतु आसक्त नहीं
होते भये आरंभ सो रहित होते भये दूसरे मानो मेरुपर्वत है ऐसे दृढ और अचल चि
त्त होते भये ५५ हे रामजी जैसी ज्ञान दृष्टि जनकादि कों रही तिसी ज्ञान दृष्टिकों तुम पाइ
करके अहंकार सें रहित होय करके जैसा क्रम व्यवहार कों प्राप्त होवे तैसे कर्मकों करो
सुख करके विहार करो ५६ श्रीरामचंद्रजीका प्रश्न श्रीवसिष्टजी प्रति॥ हे ब्रह्मन् भले प्रकार

करके ज्ञान का विलास करके वासना का लय भये संते में अब जीवन मुक्त पदमों नि
श्चय करके विश्रांत भयाहूं ५७ हे गुरुजी यह मेरेकों संशय है प्राणायाम करके वासना
का लय भये संते जीवन मुक्त पदमों विश्राम कैसे होताहै यह मेरेको कहो ५८ श्रीवसि
ष्ठजी श्रीरामचंद्रजी के तांई कहते भये॥ हे रामजी किसी को योग असाध्य है और किसी
कों ज्ञानका निश्चय असाध्य है हे साधो मेरा यही मतहै प्राणायाम के योगसें ज्ञान का
निश्चय सुख करके साध्यहै ५९ हे रामजी प्राण वायु का और अपान वायु का रोकने कर
के देह की दृढता करके और अंतःकरण की एकाग्रता करके योगभी अनंत सिद्धि कों जि
सप्रकार देता है तिसको भी तुम श्रवण करो ६० हे रामजी मेरु पर्वतकी पद्म रागकी
ईशान कोणमों आम्र नामक कल्प वृक्षहै उसके नीचे सुवर्ण मय पृथ्वी है तिस की
दक्षिण दिशा की शाखाके कोटरमों निवास जिसका ऐसा भुसुंड नामा काक सिरीषा।

चिरंजीवी नाम पंछी भया नतो ऐसा कोई आगे होना है ऐसी चिरंजीवीयों की कथाप्र संगमों इंद्रकी सभामों शांतातप मुनीसें श्रवण करके काक भुसुंडके स्थानमों प्राप्त भये मेरे को भुसुंड काक उठ करके आगे आय मिला अपने संकल्प सें प्रकट भये दोनोंहाथ करके पाद्य अर्घ्य आसन गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य नीराजन पुष्पांजलि प्रणाम प्रदक्षिणा करके पूजा करके अपने हाथ करके दिया कल्पवृक्ष के दलोंके आसन ऊपर बैठे को अत्यंत प्रेम करके मधुर अक्षर युक्त वचन कहता भया काक भुसुंड कहता है हे भगवन् अहो आनंद भया है तुमने चिरकालतें मेरे को बहुत अनुग्रह दिखायाहै दर्शन रूपी अमृतका सिंचन करके कल्पवृक्ष सहित मेरे को अभिषेक कियाहै ८१ हे मुने मेरा चिरकाल से किया पुण्यके समूह करके तुम प्रेरित किये हो तो तुमनें कहींसे आगमन कियाहै ८२ हेमुने तुम मान्यजनों के भी मान्यहो यह महा मोह

पूर्ण भये जगत कों स्मरण करताहूं ८४ हेमुनि एक जगतकी सृष्टिकों पुरुषोंसें और असुरों
सें रहित केवल देवता मयकों स्मरण करताहूं ८५ हेमुने एक जगत के सर्गकों सुरापान क
रने हारे मदोन्मत्त और असुर और शूद्रोंसे भी निषिद्ध ऐसे ब्राह्मणों करके संयुक्त बहुत हे ना
थ जिसमें और धर्म मर्यादासें रहित कों स्मरण करताहूं ८६ हेमुने एक जगत के सर्गकों वृ
क्षों करके निरंतर पूर्ण भई पृथिवी वालेकों और समुद्रकी कल्पना से रहित कों अपने आ
प पुरुष उत्पन्न होते हैं जिसमें ऐसे कों स्मरण करता हूं ८७ हेमुने किसी सर्गकों पर्वत
और पृथिवीसें रहित और आकाशमें ही देवता और मनुष्य स्थित रहते हैं और चंद्रमा सू
र्यके प्रकाशसें रहित और अपने आप प्रकाश भयेकों स्मरण करता हूं ८८ हेमुने किसी सर्ग
को इंद्र बिना और राजा लोक बिना और उत्तम मध्यम अधम भेद बिना स्मरण करता हूं ८९
हेमुनि विष्णुकों हंस वाहन कों याद करता हूं ब्रह्माकों गरुड वाहनकों याद करताहूं और

वा॰सा॰ का प्रलय होताहै तब हम सुषुप्ति अवस्याकी अचल धारणा करके आनंद मय होतेहैं ८८
२९५ हेमुनि जब ब्रह्मा दूसरे कल्पके आदमों फेर सृष्टि करता है तो मेरे संकल्पते इस पर्वत के शिखिरमों फेर यही कल्पवृक्ष हमारे निवास के वास्ते प्रकट होता है ८९ हेमुनि जो जगत का वृत्तांत मेरेको स्मरणमों है सो तुम मेरे सें सुनों यह पृथिवीमों केवल बड़े भारी वृक्ष औ र बड़ी शिला करके पूर्ण तृण वृक्षोंसें बन पर्वतसे रहित पृथिवी कों स्मरण करताहै ९० हेमुनि दश हजार और दश शतवर्ष प्रमाण इस पृथिवी कों केवल भस्म करके पूर्ण भ ईकों स्मरण करता हूं ९१ दशहजार वर्ष प्रमाण मृत भये दैत्योंकी अस्थियों करके पूर्णभई पृथिवी को स्मरण करता हूं ९२ इस प्रकार करके चार युग प्रमाण ऊंचे पर्वतों करके पूर् ण भई लोको के संचारसे रहित इस पृथिवी कों स्मरण करता हूं ९३ हेमुने दक्षिण दिशा कों अगस्त्यमुनि विना स्मरण करता हूं एक बिन्ध्याचल पर्वत करके निक्षत्र मंडल पर्यंत

कुलता करके आपदा होती हैं ८२ हेमुनि जब ब्रह्मा जीका दिन समाप्त होताहै त
ब कल्पके अंतमों त्रिलोकी की प्रलय होती है तब हम इस अपने निवास के कल्पट्ट
तकों त्याग करते हैं जैसे कृतघ्न पुरुष उत्तम मित्रकों त्याग करता है ८३ तब हम संपू
र्ण कल्पना कों त्याग करके केवल आकाशमों रहता हूं माया के संपूर्ण धर्मोंको जीतलेता
हूं जैसे वासना रहित मन अचल होताहै ८४ हेमुनि यब प्रलय करने कों वारा सूर्य प्र
चंड उदय होतेहैं तब हम योग करके वारुणी जलकी ध्यान धारणा करके शीतल हो
य रहते हैं ८५ हेमुने जब जगतकों उलटा पलटा करणेकों प्रलय कालके पवन प्रचंड
बढ़ते हैं तब हम पर्वतों की धारणा करके अचल होइ रहते हैं ८६ हेमुनि जब सुमेरु
पर्वत सें आदि जगत सात समुद्रोंके एकत्र भये जलमों गलित होताहै तब हम पवन
की ध्यान धारणा करके पवन रूप होय रहते हैं ८७ हेमुनि जब ब्रह्मा के दिनांतमों ब्रह्मांड

युक्त और गंभीर और मनकों हरते हारी और मधुर और उदार और धीर वाले हो या
ह त्रैलोक्य रूपी कमलमें तुम एक भ्रमर की न्याई विहार करते हो ७८ हेब्रह्मन् हम
कों परमात्मा का तत्व प्राप्त भयाहै तो भी तुम्हारे दर्शन तें हमारे अशुभ कर्म शां
त भये है आज हमारा जन्म सफल भयाहै हे साधो संतजनों का समागम संपूर्ण सं
सार के भयकों शांत करता है ७९ अब अपना वृत्तांत कहते है हेब्रह्मन् अनेक चो
र युगोंके उलट पलट होते हैं और पवनभी घोर प्रलय करने हारे बहते हैं तो भी
यह हमारे निवास का कल्पवृक्ष स्थिर रहता है कदाचित् भी कंपाय मान नहीं हो
ताहै ८० यह कल्पवृक्ष जो है सो और लोकों में रहने वाले सर्व प्राणियों कों अगम्य
है इसकारण ते हमही यहां एकांत सुख करके निवास करते हैं ८१ ऐसे उत्तम कल्प
वृक्षमें निवास करते हमको संसार कियां आपदा कहां हैं हेमुनि अब चिनकी या

निवास के स्थान दिखाई दिये सभही चिरंजीवी होते भये अरु परमपद को प्राप्त होते भये तिन्ह एक विंशति २१ भाईओं मों एक मैं भुसुंडका केहों परमेश्वर की नेत करके अत्यंत चिरंजीवी हों जीवन्मुक्त हों भयके निमित्त प्राप्त भये मों भी भय रहित हों जगत की मायाकों देखता भी हूं पिताने दिखाय दिया कल्पवृक्ष की लता के मंदिर मों निवास करता हूं श्रोर काल क्षेप करता हूं आनंद सें रहता हूं ७४ हेमुनि तुम्हारे आवने सें अब मैं आनंद करके पूर्ण मन भया हूं जैसे मंदिर पर्वत के भ्रमणातें क्षीर समुद्र क्षीर की लहरी करके पूर्ण होताहै ७५ हेमुने इससें परें मैं अपने कुशलकों श्रोर नहीं मानता हूं सें पूर्ण भोग वासना का त्याग करने हारे संतजनों का समागम जो होता है यही परम लाभहै ७६ हेमुने यह संसार के भोग क्षण भंगु रहे इन्हसे क्या प्राप्त होता है सत संगरूपी चिंता मणिनें सर्व सार परमानंद प्राप्त होता है ७७ हेमुने तुम कैसे हो स्नेह

शांत होता है अब आपना जन्म कहते हैं ७३ हेमुनि जया और विजया जयंती और अ
पराजिता सिद्धा और रक्ता और उत्पला और अलंबुसायह शिवजी की अष्ट योगिनी हैं सो अ
ष्ट योगिनी परमानंद समाधी के वास्ते वाम मार्ग करके भैरव तुंब रूकों पूजा करती भई।
अपने सें भया शिवजी का अनादर जिस का फल ज्ञान दृष्टिका प्रति बंध है सो अष्ट मातृ
का आपना प्रभाव दिखाउने के वास्ते भोजन के अर्थ शिवजी कों यज्ञमों बलि प्रदान के
पशुकी न्याई पार्वती कों मार करके देती भई फेर पार्वती कों संजीवन करके शिवजी कों
विवाह देती भईयां शिवजी कों प्रसन्न करती भई तिनमों अलंबुसा योगिनी का वाहन चंड
का कने मधु पान करके मत्त होय करके उसमों प्राप्त भई जो सभ ब्रह्माणी के रथ की हंस
नी तिन संग क्रीडातें इकीस २१ पुत्र चंडका के होते भये ब्रह्माणी के आराधन का प्रसा
द करके होते भये सभही आत्म ज्ञानकों प्राप्त होते भये अपने पिता चंडका कने सभ कों

करण मों शीतल हो अहो बड़ा आनंद है तुमको कुशलसे देखिया है और यह संसा
रकी मायामों मगन नहीं भयेहो सावधान चित्त हो संसार की माया अत्यंत भयानक है
जन्म मरणादि खेदों करके खेडित करणे हारी है ६९ हे भगवन् तुम यह मेरे संशयको
सत्य करके छेदन करो तुम कौन कुलमों जन्मे हो और ऐसे पूर्णज्ञानी कैसे भये हो ७०
हे भगवन् तुम्हारी आयुषा केती है और तुम कितने वृत्तांत को स्मरण करते हो ऐसे चि
रंजीवी तुम हो तुमको यह निवासका अस्थान किसने दिखाया है ७१ भुसुंडजी कहते भये ॥
हे मुनियो तुम पूछते हो सो सभही तुमको मैं कहता हूं यह हमारी कही कथा तुमने सा
वधान होय कर श्रवण करणी ७२ हे मुनि तुम्हारे जैसे पुरुष त्रैलोक मों पूजनीय चरणा
रविंद है सो जिस कथा प्रसंगको श्रवण करते हैं और कहते हैं जिस करके संपूर्ण पापओ
र दुःख नाशको प्राप्त होते हैं जैसें बदलकी घटा उदय होनेते सूर्यकी किरणों का संताप ॥

के संसार समुद्रमों चिरकालतें विहार करतेहो तुम्हारे चित्तसे समभाव की स्थिति आरो
ढित हुइना ६३ हे मुने तुमने आवने के क्लेश करके शरीरकों क्यों खेद किया है हम तुम्हारे व
चन सुना चाहते हैं हमारे कों आज्ञा कहने योग्य है ६४ हे मुने अब मेरेको तुम्हारे दर्शन
तेही सर्वज्ञता भई है तुम्हारे आवने के उपाय करके तुमने हमकों सावधान किया है ६५
हे मुने तुम्हारे आवने का कारण हमने जानाहै चिरंजीवीयों की कथा वारतामों चिरकाल ते
हमारा स्मरण तुमको भयाहै तिसकारणतें यह हमारा स्थान तुम्हारे चरणों करके तुमने अ
ब पवित्र कियाहै ६६ हे मुने तुम्हारा आवने का कारण जाना है परंतु अब तुम्हारा वचन रूपी
अमृत पानकी वांछी वहुत प्रकट भई है ६७ हे रामजी सो भुशुंड काक चिरंजीवी त्रिकाल निर्म
ल ज्ञान संयुक्त मेरेको ऐसा कहता भया तो हमने भुशुंड काक को वचन कहा ६८ हे पक्षीयों के
महाराज तुमनें सत्य वचन कहाहै हम तुमकों आज देखनेकों आये हैं तुम चिरंजीवी हो अंतः

शिवजी कों गरुड वाहन कों और हंसवाहन कों भी याद करता हूं और ब्रह्मा विस्नु कों वृषभ वाहन कों याद करता हूं ९० हेमुने हेवासिष्टजी अब तुम ब्रह्मा के पुत्र हो पूर्वकाल मो अष्टम सर्गमों तुम हमारे को मिले हो तेरा अब अष्टमा जन्म याद करता हूं किसी सर्गमों तुम आकाशते उत्पन्न होतेहो किसी मों जलसें उत्पन्न होतेहो किसीमों पवन सें उत्पन्न होतेहो किसीमों पर्वत सें उत्पन्न होतेहो किसीमों अग्निसो उत्पन होतेहो ९१ हेमुने यह पृथिवी पांच सर्व सृष्टिमों समुद्रसें कूर्म रूपी भगवान् जीने पांचवार निकासी भई मेने देखीहे ९२ हेमुने यह समुद्रमों संपूर्ण ओषधी के रस पाइ करके देवता असुर पांच वार मथन करते मेने देखे हैं ९३ हेमुने हिरण्याक्षस असुर यह पृथिवी पातालकों तीन वार लेजाता मेने देखिआ है ९४ हेरामजी श्रीभगवान विस्नुजी जमदग्निसें रेणुका का पुत्र होय करके मेरे देखतेही छठी वार क्षत्रियों के क्षय करता भया ९५ हेमुने कलियुगों के सेंकडे मों

वा॰सा॰ विस्नुके बोधावतार शत प्रमाण देखेहैं १०५ हेमुने तीस त्रिपुरासुरों के क्षय देखेहैं दक्ष के
२९८ यज्ञका दो वारी नाश होते देखाहे दशवारी शिवजीसें इंद्रके विनाश होते मैने देखेहैं १०६ हेमु
ने शिवजी का ओर विस्नुका आपसमें बाणासुर के वास्ते आठ वार संग्राम होते मैने देखेहैं जि
नमें ज्वरोंका आपसमें युद्ध भयाहैं १०८ हेमुने युगोंके प्रलय करके उलटा पलट होने करके
पुरुषोंकी बुद्धिकी न्यून अधिक होनेतें किया कांडका अनेक भेदों करके वेदों केउलटा पलटी
होते देखी है १०९ हेमुने यह महा रामायण नामा इतिहास शत लक्ष प्रमाण ज्ञान शास्त्र म
नोंमें स्मरण करताहूं जिसमें यह ज्ञान हाथमें फल सरीखा अर्पण कियाहे रामचंद्रजी
की न्याई व्यवहार करणा रावण की न्याई व्यवहार नहीं करना बालमीकी मुनीने पहिलें
रचन कियाहै आगे फेरभी करेगा होर फेर भी बनेगा तिसकों तूं तत्व करके जानेगा ११० हेमु
ने बाल्मीकी नामा जीवने अथवा ओर किसीने बाल्मीकी रामायण अब बारवी वार करणा

हे विस्मरण भया फेर रचन करायाता है कदाचित् आगें का बनाही मिल जाता है १११ हे मुने इस महा रामायण के बरो बर दूसरा महाभारत इतिहास व्यासनामाजीवने अथवा और जीवने पहिले का विस्मरण भया सातमी वार फेर रचन करना है ११२ हेमुने श्रीरामचंद्र नामा विस्नुका अवतार राक्षसों के क्षय वास्ते अब एकादश मा जन्म होवेगा ११३ हेब्रह्मन् विस्नुभगवान् नरसिंह रूप धारण करके त्रैलोक्यकों पीडा करने हारे हिरण्य कशिपु दैत्यको तीसरी वार मारते भये जैसें सिंह मतवाले हाथीकों मारता है ११४ हेमुने पृथिवीका भार हरणेवास्ते वसुदेव के घर विस्नुजी का अब षोडशमा १६ जन्म होताहै ११५ हे मुने यह जगत की भ्रांति सांची कदाचित नहीं है जो कदाचित दृष्टि होती है सोभी जलमें बुद बुदाकी न्याई मिथ्याही फुरण होती है ११६ हेब्रह्मन् शतवार पुरुषों कों स्त्री भावकों प्राप्त होते कों यादकरताहूं कलियुगमें सत्ययुगके आचार कों याद करता हूं सत्य युगमें कलि युगके आचार

को याद करता हूं १९७ हे ब्रह्मन् कितने सर्ग वेदोंसें रहित वेदोंके अर्थोंसे रहित अपनी इच्छा
सें वर्त्त मान भये को याद करता हूं १९८ हे मुने केते सर्ग मन के मनन व्यापार सें उत्पन्न भयेकों
याद करता हूं पृथिवी के विकार सें रहित भये पवन रूप भयेको ऐसे दशा सर्गों को याद कर
ताहूं १९९ श्रीवसिष्टजीका प्रश्न यक्षराजके प्रति ॥ हे यक्षराज तुम जैसे पुरुष त्रैलोक्यमों विच
रण करते हैं और लोक व्यवहारभी करते हैं तोभी तुमकों मृत्यु बाधा क्यों नहीं करती है २॰
भुसुंडीजी श्रीवसिष्टजीको कहतेहैं ॥ हे मुने तुम सर्वज्ञ हो और जानते भीहो और जिज्ञासु सि
रीखे मेरेकों पूछते हो यह में जानताहूं क्या स्वामीयों होतेहैं सो अपने सेवककों जान करके
भी बोलनेमों प्रीति करके प्रगलभ करते हैं २१ तो हे महा प्रभो जो तुम पूछते हो सो में तु
मको प्रकट कहता हूं सत पुरुषोंकी आज्ञा करनीही आराधन है २२ हे प्रभो वासना रूपी सूत्र
की डोरी दोष रूपी मुक्तामणि युक्त है सो जिसके हृदयमों ग्रथित भई नहीं है तिसकों मृत्यु

वाधा नहीं करता है २३ हेप्रभो मानसी जो चिंता हैं सो कैसियां हैं श्वास रूपी वृक्ष छेदने को
शस्त्र हैं और देह बंधन की लताकी डोरियां है सो जिसकों भेद नहीं करते हैं तिसकों मृत्यु वाधा
नहीं करता है २४ हेप्रभो यह आशा कैसी है देह रूपी वृक्ष के ऊपर सर्प समूह जैसी चढ़ी है चिं
ता रूपी शिर फण वाली है सो जिसके चित्तकों दाह नहीं करता है तिसकों मृत्यु वाधा नहीं करता
है २५ हेप्रभो यह लोभ रूपी अजगर है कैसा है राग और द्वेष जिसकी क्रूर विष है अपना मन
रूपी छिद्र जिसका मंदर है सो जिसकों भक्षण नहीं करता है तिसकों मृत्यु वाधा नहीं करता
है २६ हेप्रभो यह लोभ रूपी अग्नि कैसी है विवेक रूपी जलकों संपूर्ण पान करती है अरु दे
ह रूपी समुद्रका वडवानल है सो जिसकों दाह नहीं करता है तिसकों मृत्यु वाधा नहीं का
रता है २७ हेप्रभो जिसका चित्त एक निर्मल परम पवित्र आत्म पदमों विश्रांत भया है तिसकों मृ
त्यु वाधा नहीं करता है २८ हेप्रभो यह जगत देवता असुर सहित गंधर्व विद्या धर किन्नर स

हित मनुष्य स्त्री गण सहित है इसमें शुभ करने हारा और स्थिर कछु नहीं है २९ वृंदा सहित राजा सहित पर्वत नगर सहित है ३॰ नाग और असुर समूह सहित असुरों की इस्त्रियों सहित है संपूर्ण पाताल सहित इह प्रपंचमें सुंदर और शुभ कछु नहीं है ३१ हेमुने यह जगत कीआं कियां चिंता रोग सहितहै दुःख समूह संयुक्तहै और नित्य तुच्छहैं इन्हमें शुभ और स्थिर कछु नहीहै ३२ हेमुने पृथिवीका एक चक्र वर्ती राज्य श्रेष्ट नहीं है पराई कथा प्रसंगभी वर्णन श्रेष्ट नहीहै पराया कार्य्यकी विवेकभी वर्णन श्रेष्ट नहीं है हेमुने इन करके चिरंजीवी होना श्रेष्ट नहीं होताहै ३३ हेमुने मानसी चिंता और रोग युक्त चिरंजी विना अच्छी नहीं है मरणभी अच्छा नहीं है इ॰ मूढ़ताभी अच्छी नहीं है नरककी विषम स्थितिभी अच्छी नहीं है ३४ हेमुने इस प्रकारकी जगत किआं अनेक समस्त रचना मूढता युक्त होवे तो अच्छी नहीं है यह पदार्थ सभ ही चिरसें कल्पना करनेतें दुःख देने हारेहैं इन्हमें महात्मा पुरुष स्थितिकों कैसें मानते हैं ३५

वा॰ सा॰ हे ब्रह्मन् आत्म चिंता संपूर्ण दुःखोंका अंतःकरणे हारी है चिरकालसे धारण किया संसाररू पी दुष्ट स्वप्नाको भ्रमको हरणे हारीहे २६ हे मुने जैसी आत्म चिंता संसार दुःखकों हरणे हा रीहै तैसेही आत्म चिंता के समान प्राण चिंताभी संसार दुःख के भ्रमको दूर करणे हारी मैने मानी है इस प्राण चिंताकों अनेक योगी लोकोने मोक्ष वास्ते सेवन कियाहै २७ श्रीवसिष्ठजी का प्रश्न यक्षिराज प्रति॥ हे यक्षि राज तुम सर्व संशय कों छेद करने हारे हो तत्त्व ज्ञानी हो चिरंजीवी हो यथा योग्य मेरे कों कहो प्राण चिंता क्या कहीदी है भुशुंडकाकजीका उत्तर श्री वसिष्ठ जीके प्रति॥ हे मुने तुम भुशुंडकाक को दर्शन करके जीव दान देनेहो भुशुंड काकको आत्म दृष्टिका लाभ देने हारेहो संपूर्ण वेदांत के वेत्ता हो सर्व संशय कों नाश करणे हारेहो मेरेकों उपहास के वास्ते प्रश्न करते हो जिसकारणतें तुम ब्रह्म वेत्ता और ब्रह्मा के पुत्र हो मैं काक हूं महा मलिन जीव हूं मेरेकों तुमहारा प्रश्न करना उपहासही है २८ अथवा

२॰२

वा॰सा॰ मेरेको इतना कहने में क्या अर्थहै मैने सर्वज्ञान तुम से ही शिक्षित किया है तुमारे को
३॰४ प्रश्नका उत्तर कहोगेतो फेरभी अभ्यास करके संशय रहित होवोगा ४॰ हेमुने प्राणायामका
समाधान मेरा कहिआ तुम सावधान होइ कर श्रवण करो इडा और पिंगला यह दोनों ना
डियां इस देहमें नासिका के दाहने वामें पार्श्वमें स्थित हैं ४१ हेमुने इस देहमें छे चक्र कम
ल रूपहैं सो अस्थियों के और मांसके बनेहैं और कोमल हैं इन्हके ऊपर भी नालहै और नीचे
भी नालहै और इन्हके दल आपसमें मिले हैं ४२ हेमुने इन षट् चक्र कमलों के नाम और स्व
रूप और अस्थान तुम्हारे को सुनावते हैं प्रथम कमल मूलाधार चक्रहै सो गुदा स्थानमें है
इसके चार ४ दल हैं व॰ श॰ ष॰ स॰ यह चार अक्षर चार दलों में हैं १ दूसरा कमल स्वाधि
ष्ठान चक्रहै सो लिंगस्थान में है इसके छः दल हैं व॰ भ॰ म॰ य॰ र॰ ल॰ यह छः अक्षर
इसके छः दलमें हैं २ तीसरा कमल मणि पूरक चक्रहै सो नाभिस्थान में है इसके दश १०

दलहै· ड· ढ· ण· त· थ· द· ध· न· प· फ· यह अक्षर दश दलमों है ३ चौथा कमल अनाहत चक्रहै सो हृदय मोंहै इसके १२ द्वादश दलहैं क· ख· ग· घ· ङ· च· छ· ज· झ· ञ· ट· ठ· यह बारां अक्षर दलोंमों हैं ४ पांचमा कमल विशुद्ध चक्र सोकंठमें कहाहै इसके १६ षोडश दलहैं· अ· आ· इ· ई· उ· ऊ· ऋ· ॠ· लृ· ॡ· ए· ऐ· ओ· औ· अं· अः॥ यह सोलां अक्षर इसके दलोंमों हैं ५ छठा कमल आज्ञा चक्रहै सो ललाटमें हैं इसके दो २ दलहैं· ह· क्ष· यह दो अक्षर इसके दलों मों हैं ६ यह छे चक्रों के छे कमल हैं सो संपूर्ण देहमों चलने वाले पवनके स्पर्श करके प्रकाश मान होते हैं हेमुने यह छे कमलों के पत्र मंद पवनके स्पर्शनें चलते हैं तिन पत्रोंके चलने करके पवन वृद्ध होताहै सो पवन इस देहमों आठ कम अस्सी हजार एक शत एक ७२००० नाड़ीमों भ्रमण करता है तिसमों हृदय और गुदा नाभि और कंठ और सभही अंग इस पवनके प्रकट होने के मुख्यस्थान हैं ४४ हेमुने यह स्थानोंको कल्पन करके केती नाडी॥

नीचेकों चलती है केती नाडीश्रां ऊपरकों चलती हैं तिन्हमों प्रवेश करके देहमों पसरताहै

वा॰सा॰ नीचेकों चलती है केती नाडीश्रां ऊपरकों चलती हैं तिन्हमों प्रवेश करके देहमों पसरताहै

३-६ हेमुने सो पवन प्राण और अपान और समान और उदान और व्यान इत्यादि नाम करके वर्त्तमान है हृदयमों प्राण पवनहै गुदामों अपान पवन है समान पवन नाभिमो हैं उदान प वनहै गुदामों अपान पवन है समान पवन नाभिमो हैं उदान पवन कंठस्थान मोहै व्यान पवन सर्व देहमों है यह अनेक चेष्टा करके अनेक नाम वालाहै पांच पवन और भी हैं ॥ नाग १ कूर्म २ क्रुकल ३ देवदत्त ४ धनंजय ५ नामाहैं ४६ हेमुने इन्हमो दो पवन प्रधान हैं प्राण और अपान और प्राण ऊपरकों चलता है अपान नीचेको चलताहै ४७ हेमुने प्राण और अपान यह दोनों पवन प्रकट हैं और प्रधान कहेहैं शरीर रूपी नगरकों पालने हारा जो पवन है तिसका मन रूपी रथहै तिसके यह दोनों चक्र हैं ४८ हेमुने तिन्ह दोनोंकी म र्मके अनुसार गतिहै यह प्राण और अपान पवनों की देह की स्थिति पर्यंत गति प्रति बं

एकों नहीं प्राप्त होतीहै ४९ हेमुने यह पवन इस देहमों सुषुप्ति अवस्थामों भी निरंतर च
लता रहताहै इसकारणतें प्राण पवनकों ब्रह्म रूपनाभी कहीहै ५० हेमुने कमल के नालका
सूत्रका हज़ारमा अंश से भी प्राण अपानकी गति सूक्ष्महै देहमों विद्यमानहै तोभी अलक्ष्य है
प्राणायाम के अभ्यासतें और सूक्ष्म नाडियों में चलनेतें सूक्ष्म गति कहीहै ५१ हेमुने जाग्रत भ
ये और सुप्त भयेकों भी यह प्राणायाम उत्तम है जातें जो प्राणायाम को जानताहै तिसकों जि
सप्रकार करके प्राणायाम कल्याण के वास्ते कहाहै तिस प्रकार कों तुम श्रवण करो ५२ हेमु
ने यह प्राण पवन मूलाधार चक्र गुदास्थानतें उपरकों चढ़ताहै सो क्रम करके छे चक्रोंको
भेद करके कपालस्थान ब्रह्म रंध्र चक्र पर्यंत चढ़ता है कपालस्थान मों एक हजार १००० दल
कमलहै तिसमों योगी जन प्राणायाम चढ़ावते हैं और लोको कों यह प्रकार का ज्ञान नहीं
है ५३ हेमुने तीन प्रकारकी पवन की गतिहै रेचक और पूरक और कुंभक प्राणों का चलना

वा॰स्री॰ १०८

रेचकहै चढ़ावना पूरक है स्थित होना कुंभक है अब इनके भेद तुमको सुनावता हूं ५४ हे मुने हृदय कमलके अंदरतें प्राण पवनोंका बाहिरके सन्मुख जो होनाहै स्वभाव करके और यत्न बिना तिसको धीर पुरुष रेचक जानतेहैं ५५ हेमुने बाहिरको चले जो प्राण पवन हैं तिन्होंकी शिर पर्यंत गतिको बाधा पूरक कहतेहैं शिरसें नासिका द्वारसें अथवा मुख द्वारसें बाहिर बारां उंगली १२ प्रमाण बाहिर प्रकट होनेको अर्ध रेचक कहतेहैं ५६ और हेमुने बाहिर सें नासिकाको अथवा मुखको प्रवेश करके अंदरको अपान पवनके स्थान गुदा पर्यंत पवनकी जो गतिहै तिस कोभी धीर पुरुष पूरक जानते हैं ५७ हेमुने बाहिरको सन्मुख भया जो प्राण पवन तिसको नासिकातें शिर पर्यंत गतिको बाह्य पूरक जानते हैं ५८ और बाहिर सें अंदरको प्रहृत्त भया जो पवन तिसकी नासिकातें शिर पर्यंत जो गतिहै तैसेही शिर सें हृदय पर्यंत जो पवन की गतिहै तिस कोभी दूसरे आंतर पूरकको जानते हैं यह दो प्रकारका आंतर पूरकको कहते हैं ५९ हेमुने

वा॰ सा॰ बाहिर को सन्मुख भये प्राण पवन की हृदयसे नासिकाग्र पर्यंत यो गति तिस को॥
३०९ योगी जन बाह्य पूरक कहते हैं ५९ हेमुने नासिकाग्र से भी निकस करके बाहिर बा
रां अंगुल प्रमाण जो गति है तिसको भी दूसरे बाह्य पूरककों कहतेहैं ६० हेमुने बाहिर
गया जो प्राण पवन सो जब लग अंदर अपानस्थान मों नहीं प्राप्त भया तब प्राण
पवन की पूर्णास्थिति होतीहै तिसकों बाहिर का कुंभक कहते हैं ६१ हेमुने जो प्रा
ण पवनका अंदर के सन्मुख होताहै जब लग अपान वायुकी उदय नहीं भया तब
लग प्राण पवन की गतिकों बाहिर के रेचककों कहते हैं ६२ हेमुने द्वादशांत का॥
हीए मूलधार चक्र तिसतें उदय होय करके स्थूल रूपकों प्राप्त भया अपान पव
नकी जो स्थिति तिसकों दूसरे पूरककों कहते हैं ६३ हेमुने बाहिर के और अंदर
के यह कुंभक रेचक पूरक जो प्राण अपान के गतिके स्वभाव हैं तिन्हकों जान॥

करके पुरुष फेर जन्मकों नहीं पावता है ९४ हेमुने यह पूरक रेचक आठ प्रा॰
कारके हैं और दो प्रकार कुंभक केहैं यह दश प्राण पवनकी गति है सो देह पवनके
स्वभाव है स्मरण करनेतें मुक्तिकों देने हारे हैं सो हम तुम्हारे प्रति कहते हैं ९५ हेमुने
जिसका मन यह प्राणायाम के व्यापारमें लगा है बाहिरके व्यापार कों त्याग करता है
तिसका मन थोड़े दिनों करके निर्मल पदकों प्राप्त होनाहै ९६ हेमुने यह प्राणाया॰
मको अभ्यास करने हारे पुरुषका चित्त बाहिर के इंद्रियों के विषयोंकी वृत्तिमें विषें र
तिकों नहीं बांधता है जैसे कुंताकी चमड़ीमें ब्राह्मण प्रीति कों कदापि नहीं करता है ९७
हेमुने अपान पवन चंद्रमाकी कला युक्त है कोहतें अपान पवनकी अंदर को नीमी गति
है इसतें अपान पवनकी कल्य प्राणायाम करके अंदर देह के स्थिति रहेतो यहां शोक
नहीं करना बनता है ऐसी पदवीकों प्राप्त होती है ९८ हेमुने प्राण पवनमें सूर्यकी क

हों ७९ हेमुने मस्तक से लेकर पाद पर्यंत इस देहमों मेरा अर्थ कोई नहीं है इसप्र
कार करके अहंकार रूपी कलंकतें रहित भयाहूं और जो मैं कर्म करता हूं जो भोजन
करता हूं सो सभही मेरेकों प्रीति और निंदातें रहित है तिसतें मैं चिरंजीवी भया हूं ८०
हेमुने जिस २ कालमों मैं कछु जानता हूं तिस तिस समयमों मेरी बुद्धि ज्ञानके गर्व
को धारण नहीं करती है और मैं बल करके समर्थ होताहूं तोभी किसीकों दवाय नहीं
लेताहूं और संताप भये संते खेद युक्त नहीं होताहूं और दरिद्र होय करके किसी कों
याचन नहीं करता हूं तिसतें मैं चिरंजीवी भयाहूं ८२ हेमुने जो जो पदार्थ पुराण है
अरु भिन्न भयाहूं क्षीणभी भयाहूं क्षोभकों प्राप्त भयाहूं धस गयाहै चट जाताहै सभ कों
मैंनवीण और उत्तम जानताहूं सुखी लोकों को देख कर सुखी होताहूं अरु लोगों के
दुःखमों दुःखी होताहूं सर्व लोकका मित्रहूं और सर्व जनका प्रियहूं तिसतें मैं चिरंजी

वी भयाहूं ८३ हेमुने आपदामों पर्वतकी न्याई अचल रहिताहूं अरु संपदा मों
जगत का मित्र होताहूं भावमों और अभावमों अपने कों कछु नही मानताहूं तिस
तें चिरंजीवी भयाहूं ८४ हेमुने नाता मैं किसीकाहूं ना मेरा कोई है नातो मैं अपना हूं ना
मैं परायाहूं इस भावनामों मेरा चित्तहै तिसतें चिरंजीवी भयाहूं ८५ हेमुने घटाभी चै
तन्यहै वस्त्रभी चैतन्यहै वन वृक्षभी चैतन्यहै और नाडो गाडीभी चैतन्यहै संपूर्ण चैतन्य
है ऐसी भावना मेरेकोहै तिसते मैं चिरंजीवी भयाहूं ८६ हेमुने इसकारण ते मैं त्रैलोक्य
रूपी कमलमों भ्रमरकी न्याई विचरण करताहूं भुशुंड नामा काकहूं चिरंजीवी कहियाहूं
हेमुने जैसा मैं हूं जिस प्रकार मैं वर्तमानहूं जो मेरेहूं यह सभ मैने कहा और तुमभीजा
नेते हो सर्वज्ञहो यह मेरा कहना तुम्हारी आज्ञा करणे मात्र है ८८ श्रीवसिष्ठजीकहते हैं
हे पक्षिराज भुशुंडजी अहो इति आनंदे तुमने मेरे प्रति अपना वृत्तांत कहिया है वोकैसा

है अद्भुतहै और तुम्हारा वचन वेदशास्त्र का भूषणहै और परम विस्मयका कारण है ९९
वा॰सा॰ हे भुसुंडजी तुम महात्माहो और अत्यंत चिरंजीवी हो जो तुम्हारे को साक्षात् दूसरे ब्रह्मा
३२५ को देखतेहैं सो पुरुष धन्यहै और महात्मा हैं ९॰ हेरामजी तिसतें उपरंत में भुसुंड काकसें
विदा होइ करके चलनेकी आज्ञा लेता भया तब भुसुंडकाकने सुवर्ण कमल और सुवर्ण
पुष्पों करके और मोतिओं के अर्घ करके पूजन करके विदा किया आकाशमों तीन योजन
भुसुंडकाक मेरे पीछे साथ आवता भया तब मैंने प्रार्थना करके भुसुंड काक को पीछे अ
पने अस्थानकों फेर दिया तदनंतर में अपने सप्त ऋषियों के मंडलमों चला आवता भ
या ९१ हेरामजी यह भुसुंडकाक का वृत्तांत तुम्हारे प्रति कहाहै इसकों तुम अंतः करण
मों विचार करके जो कार्य तुमकों रुचे सोई तुम करो ९२ बालमीकीजी भरद्वाज प्रति कह
तेहैं हे भरद्वाज जी जो निर्मल बुद्धि पुरुष यह भुसुंड काककी कथा को श्रवण करता

है सो पुरुष अनेक भय करके बड़ी दुस्तर ऐसी संसार नदीकों तरजाता है ९३ हे भरद्वाज जी फेर रामचंद्रजीने वसिष्ठजी को प्रश्न किया यह शरीर रूपी घर किसने रचन किया है ऐसा प्रश्न किया तो वसिष्ठजी कहने भये ९४ हे रामजी यह शरीर गृह कैसा है अस्थियां इसकी स्तंभकी घूणा है और रक्तमांस करके इसकों लिप्त कियाहै नव इसके द्वारहैं यह किसीने रचिया नहीहै ९५ हे रामजी जोनसा रक्तमांस अस्थियों करके बनाहै इस देहमों मैं देह हूं यह देह मेराहै तूं ऐसे भ्रमको त्याग कर अपने संकल्प करके रचन किया जो देह है सो हज़ारोंही हैं तिनकी संख्याकी कल्पना कछु नहींहै ९६ हे रामजी तुम रात्रिमों शय्यामों सुख करके शयन करके स्वप्नमों जिस देह करके अनेक देशांतरमों भ्रमण करते हो सो तुम्हारा स्वप्न का देह अब कहाहै और रचा किसने है ९७ हे रामजी जाग्रत अवस्था मों भी मनोरथ के फुरणेमों जिस देह करके स्वर्गादिक लोकोमों और देशांतर सों भ्रमणे

करते हो सो देह तेरा प्रत्यक्ष कहां है ९८ हेरामजी स्वप्नांतर में स्वप्न होता है तिस
स्वप्नांतर के स्वप्न में जिस देह करके तूं देशांतर में विचरता है सो स्वप्नांतर के स्वप्न
का तेरा देह अब कहां है तिसकों तुम कहो ९९ हेरामजी इस संसार कों तुम दीर्घ
स्वप्न कों जानों अथवा दीर्घ चित्त के भ्रम कों जानों अथवा दीर्घ मन के मनोरथ कों जा
नों २०० हेरामजी जैसे पुरुष भय भीत स्वभाव वाला है सो अपने संकल्प की रचना में
भय को नहीं प्राप्त होता है तैसेही निर्मल बुद्धि पुरुष अपने संकल्प की रचनातें भ
ये संसार में भयकों नहीं प्राप्त होता है २०१ हेरामजी तत्व का भले प्रकार विचार क
रके आपने आत्माका स्वभाव निर्मल होता है जैसे शुद्ध सुवर्ण तांबा की न्यांई फेर
मल कों नहीं ग्रहण करता है २ हेरामजी यह जगत् केवल आभास मात्र है ना यह
सत्य है ना असत्य है इस प्रकार करके और कल्पना का जो त्याग करना तिसकों भली

तरा का विचार कों ज्ञानी लोक जानते हैं २·३ हे रामजी में देहादिक नहीं हों यह भो ग मेरे कों नहीं हे और सत्यभी नहीं हैं यह सभही संकल्प के रचन मात्र हे सभ व्य र्थ हे अनर्थ के लिये भासता हे ऐसी भावनातें सभही वृथा होता है ४ हे रामजी त त्व वेत्ता पुरुषने दो प्रकार की दृष्टि करने योग्य हे दो प्रकार कौन हैं यह संपूर्ण वि श्वमें हों अथवा संपूर्ण चैतन्य ही हे और सभ यह आडंबर मात्र हे और व्यर्थ हे ऐ सी दृष्टितें यह प्रपंच अनर्थ करणे के लियें नहीं भासता हे ५ हे रामजी सभको आ त्म रूप जानना अथवा सभकों चैतन्य रूप जानना यह दो प्रकार की ज्ञान दृष्टि सत्य हे और अतिशय करके सिद्धि कों देती हे इन दोनों मों जोनसी को तूं सुंदर मानता हे ति सकों तूं सेवन कर ६ हे रामजी हे निर्मल बुद्धे दो इन्ह प्रकार की ज्ञान दृष्टिओं करके युक्त होय करके तूं विहार करता हुवा रागद्वेष के क्षय कों कर और अपने कल्याण

कों सिद्ध करे ७ हेरामजी जो कुछ पुरुषार्थ इस लोकमें सभसे उत्तम कहाहै आका

 शमें और पृथिवी में और स्वर्ग में सो सभही रागद्वेष का क्षय होनेतें सिद्ध होता है ८

हेरामजी रागद्वेष ही मन को मलिन करणे हारे हैं जिसके रागद्वेष रूपी सर्प नष्ट नहीं भये हैं सो पुरुष कल्प वृक्ष के पासभी रहे तोभी उसकों कुछ प्राप्त नहीं हो ताहै ८ हेरामजी जौनसें लोक ज्ञान वान हैं और नियम वान है और चतुर है और शास्त्र पठने हारे हैं जो रागद्वेष के अधीन हैं सो शृगालों सिरीषे हैं तिन्हकों धिगहै उनका सभ कुछ वृथा है ९ हेरामजी यह मेरा धन पराये लोकने खाया है यह धन मेरे को दिया है इस प्रकार का जो व्यवहार है सोही रागद्वेष का स्वरूप है १० हेरामजी धन जो हैं बंधु जो हैं मित्र जो हैं यह संसार में बार बार आते हैं बार बार चलेजाते हैं विचार वाण पुरुष इन्हमें राग क्यों नहीं करते हैं और विराग क्यों करते हैं इन्हमें

रागद्वेष सों क्या सिद्ध होता है १२ हेरामजी तुम सावधान हो ज्ञान वान हो मैने तुम^
कों यह ज्ञान समझाय दिया है मैं सूर्य लोक पर्यंत निर्विकार आनंद मय देखता हूं १३
हेरामजी बोध को प्राप्त हो आज तेरे को बोध का समय है सत्य वस्तु कों विचार करके
देख यह व्यर्थ भ्रमकों त्याग कर तिस कारण करके तेरे को जन्म नहीं होवेगा दुःखभी
नहीं होवेगा दोषभी नहीं होवेंगे भ्रमभी नहीं होवेंगे तूं सभही संकल्प कों त्याग का^
रके आत्म सुखमों सावधान स्थित हो १४ हेरामजी तुम महात्मा हो विकल्प जिस के
सभ गलित भये हैं संपूर्ण दोष जाल तुम्हारे नष्ट भये हैं तुम्हारी ज्ञान दृष्टि सुखकों
और सार कों प्राप्त भई है और सुभूमि की न्याई अचल भई है और सौम्यभी भई है अ
ब तुम चित्तकों शुद्ध करणे वाले उपशम कों धारण करो और आत्मा के स्वरूप मों सा-
वधानस्थिर हो १५ वालमीकी जी भरद्वाज प्रति कहते भये ॥ हे भरद्वाज श्रीरामचंद्रजी

लाहै जिसकारणतें प्राण पवनकी गति ऊर्ध्व है इस प्राण पवनकी गति प्राणायाम करके अंदर स्थिति करके पुरुष फेर जन्म नहीं पावता है ६९ हेमुने यह प्राणायाम की दृष्टिकों धारण करके मैं अचल पदमों स्थित भयाहूं सुमेरु पर्वतभी चला जावे तोभी मैं चलाय मान नहीं होताहूं ७० हेमुने चलते भये स्थित भये अरु जाग्रत भये सुप्त भये मेरेकों आत्मा विषे स्थित भई समाधि मेरी सुप्तेमोंभी नहीं चलतीहै ७१ हेब्रह्मन् मैं यह जोग दृष्टिमों स्थित भयाहूं भूत भविष्यत वर्तमान कों चिंतन नहीं करताहूं इस कारणतें चिरंजीवी भयाहूं ७२ हेब्रह्मन् मैं भावकी चिंताकों अरु अभावकी चिंताकों इष्ट चिंताकों अनिष्ट चिंताकों एक समान जानताहूं तिस कारणतें निर्विकार होय कर चिरकालतें जीवताहूं ७३ हेमुने मैं प्राणका और अपानके संयोगकी युक्तिकों चिंतन करताहूं आपही अपने आत्मा विषे संतुष्ट भयाहूं तिस कारणतें चिरतें जीवताहूं ७४ हेमुने यह आज मेरे कों

प्राप्त भयाहै यह और प्राप्त होवेगा ऐसी चिंता मेरेकों नहींहै में अपने कों अथवा और किसीकों निंदा और स्तुति नहीं करताहूं तिसतें चिरंजीवी भयाहूं ७५ हेमुनि में सर्व त्याग कों धारण करताहूं जीवनेका उद्यमभी मैने त्याग दियाहै और मेरा मन चंचलतातें रहित भयाहै शोकसें रहित भयाहै और स्वस्थ भया है और सावधान भयाहे तिसतें चिरंजीवी हों ७६ हेमुने में काष्टकों और सुंदर स्त्री कों तृण कों और अग्निकों और बर्फकों आकाशकों सम देखं हूं आज मेरेको सिद्ध क्या भयाहै और प्रातः काल क्या सिद्ध होवेगा ऐसी चिंता मेरेको नहीं है तिसतें चिरंजीवी भयाहूं ७७ हेमुने जन्म मरण दुःखोंमों और राज्यलाभादि सुखोंमों में भयतें हर्षतें रहित भयाहूं और यह मेरेकों अपनेतें बंधहै और यह परायेतें बंधहै ऐसाभी में नहीं जानता हूं तिसतें चिरंजीवी भयाहूं ७८ हेमुने में अचल दृष्टि करके आसक्ति रहित दृष्टिके प्रीति वाली सुंदर दृष्टि करके सर्वत्र एक सत्य रूप आत्माको देखता हूं तिसतें चिरंजीवी

इतना बचन वसिष्टजी का कहिआ श्रवण करते संते ओर स्वस्थ भये संते सम चित्त भये संते ओर आत्म स्वरूप मों विश्रांत भये संते ओर परमानंद मों आपनी इछा पूर्वका प्राप्त भये संते ओर तहां सभामों सर्व देवता ऋषिराजा नगर के लोक देश देशांतरके लोक सभही आनंदकों प्राप्त भये संते वसिष्टजी का वचनामृत रामचंद्रजी के मनकी स्थिति वास्ते जोनसा प्रकट होता भया सो वचन रूपी अमृत विश्रांत होता भया जैसे छेत्रों में खेती सिद्ध भये संते बदलों की वर्षा जल विश्रांत होता है ९६ इसतें उपरांत आधा मुहूर्त समय गये संते श्रीरामचंद्र जी को आत्म बोध भये संते कहने वाले मो श्रेष्ठ वसिष्टजी रामचंद्रको फेर तिस पूर्वले अर्थ कों कहते भये ९७ हे रामजी तूं भली तरां से बोध को प्राप्त भया है ओर आत्म तत्वकों भी प्राप्त भया हैं इसी प्रकार इस अर्थकों पाइ करके स्थित हो यही सभका सार है जैसें सुमेरु पर्वत त्रैलोक्य मों सार है ९८ हे रामजी यह संसार चक्र सा

दा भ्रमता रहता है संकल्प इसके मध्य की नाभी है जैसें चक्र के मध्यकी नाभी किसी प्रकार करके रोकी जावे तो चक्र नहीं भ्रमता है तैसें संसार चक्र की नाभी संकल्प है जिस कों प्रतिबंध किये संते संसार चक्र नहीं भ्रमता है १९ हेरामजी सो मन की संकल्प रूपी क्षोभ कों प्राप्त भये संते संसार चक्रकों भामे कितना रोके तोभी संकल्प के वेग करके निरंतर भ्रमता है २० तिसतें हेरामजी निर्मल बुद्धि करके और सुजनता करके युक्तशास्त्र ज्ञान करके युक्त ऐसा अपने यत्न करके जो प्राप्त नहीं भया सो कहींभी नहीं प्राप्त होता है २१ हेरामजी जौंनसा चित्रमें लिखा जो नरहै तिसेंसा देहधारी नर अत्यंत तुच्छ है चित्रका नर कैसा है सदा प्रसन्न है और क्लेश रहित है देह धारी नर कैसा है दुःख करके मलीन मुख हो और देहका पात और देहका छेदके भय युक्त है २२ हेरामजी तिसतें जौंनसा यह मांस रक्त मय देह है सो चित्रमें लिखे देहसें भी तुच्छ है ऐसे

रक्तमांस के तुच्छ देहमें तुम जैसे विवेकी जनों को क्या प्रीति है और क्या विश्वास है २३ हे रामजी यह देह दीर्घ स्वप्ने का है अथवा चित्त संकल्प करके कल्पन कियाहै इसको भूषण किये संते अथवा दूषण किये संते चैतन्य रूप आत्मा को क्या हानीहै औ र लाभ क्या है २४ हे रामजी यह अहंकार नामा वेताल कैसा है निःसार है और संपूर्ण संतजनों करके निरस्त किया है सो कही से अकस्मात् आइ करके चित्त रूपी घरमें प्रवि ष्ट भयाहै २५ हे रामजी इस अहंकार नाम वेताल के अधीन होनें नें नरक फल प्रा प्त होता है तिसतें तूंभी यह दुर्मति अहंकार के चाकार भावको मत प्राप्त होवें २६ हे रामजी यह शून्य गृह जैसे देहमें चित्त रूपी यक्षनें प्रवेश करके जो ऊधम किया है सो कहा नही जाता है किसतें जिसनें महात्मा पुरुष भय करके समाधि करने में रत होते भये २७ हे रामजी जौनसें अहंकार नाम धारी पिशाचने अपने वश कियेहैं सोही

पुरुष नरक रूपी अग्नको प्रज्वलित करणे कों काष्ठ भाव कों प्राप्त होते भये २८ हेरामजी
जौनसें चित्त रूपी यत्नने जीते हैं तिन्हकों जो आपदा होती है सो आपदा सेकड़े वर्षों करके भी
नही गणी जाती है २९ हेरामजी जौनसा पुरुष चित्त यत्न करके दृढ दबाइ लिया है तिस
कों गुरु और बांधव रक्षा करणे को समर्थ नही होते है ३० हेरामजी जिसका चित्त रूपी वैता
ल शांत भया है तिस पुरुष कों गुरु और शास्त्र और बांधव सभही रक्षा करणे कों स
मर्थ होते है ३१ हेरामजी भोगों के भोगों कों बाहिर करे और संत जनों के चरणों कों आ
श्रय करे अपने उत्तम अर्थ कों विचार करके एक आत्मा कों सेवन करे ३२ हेरामजी य
ह देह अपवित्र है और तुच्छ है और दुःखका पात्र है और पाप का मूलहै ऐसे देह
करके अर्थ कुछ नही मानना देह चिंता रूपी चंडी महा भयानक है ३३ हेरामजी यह
देह रचा और किसीने है और चोर यत्नने और किसीने आक्रांत किया है दुःख और किसी

कोंहै और दुःख भोगने हारा और कोई है यह बिना मूर्खता के चक्र कों भ्रमण करा वती है ३४ हे रामजी इसमें यह परम ज्ञान दृष्टि है सो महा मोहकों विनाश करणे हारी है तिसको तुम श्रवण कर जो ज्ञान दृष्टि सर्व कालमें शिवजीने मेरे प्रति कही है ३५ हे रामजी एक समय में कैलास पर्वतमें गंगा के तट कुंज में मैं निवास करता भया शिव जी कों प्रसन्न करणे वास्ते तप करता भया तब पाद्य अर्घादिकों करके शिवजी का पूजन करके फेर प्रदक्षिणा प्रणाम मैं करता भया तिसते उपरांत मेरे कों अनुग्रह वास्ते प्रसन्न होय करके सदा शिवजी पार्वती सहित आइ करके मेरेकों बचन कहते भये ३६ ईश्व रजी कहते भये हे ब्रह्मन् तेरे अंतः करण कियां वृत्तियां उपशाम करके शोभाय मान और कल्याण कों करणे हारियां हैं सो परमात्मा विषे विश्रांत भई है ना ३७ हे मुने हम तेरेकों कुशल प्रश्न करते हैं तेरा तप विघ्न रहित होता है और ना तेरे कों कल्याण है

सा· ३८

और ना तेरेको प्राप्त होने योग्य सार पदार्थ प्राप्त भया है और ना संसार की भय संपदा तेरी
प्रांत नही भई है ३८ हे रामजी ऐसा वचन सदा शिवजी के कहते संते मैने बहुत बिनती सु
क्त बानी करके शिवजी को बचन कहा तिसको तुम श्रवण करो ३९ हे त्रिनेत्र जो तुम्हारा स्म-
रण करणे हारेहैं सो पुरुष कल्याण युक्तहैं तिन्हको दुर्लभ कछु नही है और उन्हको संसार
के भय नही होते हैं ४० हे ईश्वर जो पुरुष तेरे स्मरण के आनंद करके परि पूर्ण चित्त है तिन्हको
जो प्रणाम नही करता है ऐसा इस जगत मंडल मो कोई नही है ४१ हे स्वामिन् सो देश उ
त्तमहैं सो नगर ग्राम उत्तम है सो देश और पर्बत उत्तम हैं जहां तेरा स्मरण करणे मों एका
ग्र बुद्धि वाले जन निवास करते हैं ४२ हे शिवजी जिस जीवका पुण्य फल देनेको प्रकट होता
है जिससें शुभ कर्म वर्त्तमान होते हैं और जिसका कल्याण आगे होनाहोवे तिसको तुम्हारा स्म
रण होताहै ४३ हेजगत्पते तेरा स्मरण कैसा है ज्ञान रूप अमृत का कलश है धृति रूप चांदनी

ग·सा· का चंद्रमा है और मोक्ष रूप नगर का द्वार है ४४ हे महाराज तुम्हारा स्मरण रूप उदार चिं
३२७ तामणि कों प्राप्त होइ करके मैंने संपूर्ण आपदा के शिर उपर चरण दिया है ४५ हे रामजी
प्रसन्न भये शिवजी कों इतना कह करके मैं फेर प्रणाम करके जो बचन कहा तिसकों तु
म श्रवण करो ४६ हे भगवन् तेरे प्रसादतें मेरिआं संपूर्ण दिशा आनंद करके पूर्ण भई हैं प
रंतु एक संदेश मैं तुमकों पूछता हूं तिस का निर्णय तुम मेरे कों कहो ४७ हे देव प्रसन्न
बुद्धि करके मेरेकों कहो जो सर्व पाप के क्षयकों करे और सभही कल्याण कों वृद्ध करणे
हारे होवे ऐसा जो तुम्हारे पूजन का विधान है सो कैसा होता है ४८ ईश्वरजी कहते भये ॥
हे ब्रह्मन् तूं ब्रह्मवेत्ता जनों मों श्रेष्ट है देव पूजाके उत्तम विधान कों तुम सुनो जिसकों ए
क वार श्रवण करणे तें संसार सें मुक्त होती है ४९ हे ब्रह्मन् हम तेरेकों प्रश्न करते हैं तूंभी जा
नता है जो देवता कौंन है हे मुने ना विष्णु देव है ना शिव देवताहै ना ब्रह्मा है ना इंद्र है ना

औरना तेरेको प्राप्त होने योग्य सार पदार्थ प्राप्त भया है और ना संसार की भय संपदा तेरी
·सा· प्रांत नही भई है ३८ हे रामजी ऐसा वचन मैने शिवजी के कहते संते मैने बहुत बिनती सु
२६ क्त बानी करके शिवजी को वचन कहा तिसको तुम श्रवण करो ३९ हे त्रिनेत्र जो तुम्हारा स्म-
रण करणे हारे हैं सो पुरुष कल्याण युक्त हैं तिन्हको दुर्लभ कुछ नही है और उन्हको संसार
के भय नही होते हैं ४० हे ईश्वर जो पुरुष तेरे स्मरण के आनंद करके परिपूर्ण चित्त है तिन्हको
जो प्रणाम नही करता है ऐसा इस जगत मंडल मो कोई नही है ४१ हे स्वामिन् सो देश उ
त्तम हैं सो नगर ग्राम उत्तम है सो देश और पर्वत उत्तम हैं जहां तेरा स्मरण करणे मो एका
ग्र बुद्धि वाले जन निवास करते हैं ४२ हे शिवजी जिस जीवका पुण्य फल देनेको प्रकट होता
है जिससे शुभ कर्म वर्तमान होते हैं और जिसका कल्याण आगे होनाहोवे तिसको तुम्हारा स्म
रण होता है ४३ हे जगत्पते तेरा स्मरण कैसा है ज्ञान रूप अमृत का कलश है धृति रूप चांदनी

का चंद्रमा है और मोक्ष रूप नगर का द्वार है ४४ हे महाराज तुम्हारा स्मरण रूप उदार चिं
तामणि कों प्राप्त होइ करके मैंने संपूर्ण आपदा के शिर उपर चरण दिया है ४५ हे रामजी
प्रसन्न भये शिवजी कों इतना कह करके मैं फेर प्रणाम करके जो बचन कहा तिसकों तु
म श्रवण करो ४६ हे भगवन् तेरे प्रसादतें मेरिआं संपूर्ण दिशा आनंद करके पूर्ण भई हैं प
रंतु एक संदेश मैं तुमकों पूछता हूं तिस का निर्णय तुम मेरे कों कहो ४७ हे देव प्रसन्न
बुद्धि करके मेरेकों कहो जो सर्व पाप के क्षयकों करे और सभही कल्याण कों वृद्धि करणे
हारे होवे ऐसा जो तुम्हारे पूजन का विधान है सो कैसा होता है ४८ ईश्वरजी कहते भये ॥
हे ब्रह्मन् तूं ब्रह्मवेत्ता जनों मों श्रेष्ठ है देव पूजाके उत्तम विधान कों तुम सुनो जिसकों ए
क वार श्रवण करणे तें संसार सें मुक्त होती है ४९ हे ब्रह्मन् हम तेरेकों प्रश्न करते हैं तूंभी जा
नता है जो देवता कौंन है हे मुने ना विष्णु देव है ना शिव देवता है ना ब्रह्मा है ना इंद्र है ना

वायु है ना सूर्य है ना पवन है ना चंद्रमा है ना ब्राह्मण है ना क्षत्रिय है ना देह रूप है ना चित्त रूप है ना तूं है ना मैं हूं ना देव लक्ष्मी रूप है ५॰ हे मुने जो किसी करके सिद्ध नही भया और आद अंत सों रहित ऐसा जो प्रकाश होना सोही देव कहा है सो केसा है स्वरूप से रहित है हे मुने ऐसा प्रकाश स्वरूप वाले देवने आद अंत सहित और पांच भूतों करके बने हुये देहादिकमों कहांते होना है ५१ हे ब्रह्मन् ऐसे स्वभाव करके स्वयं प्रकाशमान आत्मा को देव कहते हैं और मों जो प्रकाश है सो उपाधिक है और क्रिया करके बना है ब्रह्मा विष्णु रुद्र इत्यादिक सभही उपाधि करके बने हैं ५२ हे ब्रह्मन् जोनसा सदा सर्वदा एक जैसा जो प्रकाश है सो केवल आत्मामों है सो आपही प्रकाशमान है तिसको स्वयं प्रकाश कहीदा है ऐसा प्रकाश रूप देव है सो नाम रूप सहित और गुण क्रिया सहित और उत्पत्ति विनाश सहित और लय वृद्धि सहित ऐसे ब्रह्मादिक मों कहां है जिसमों आद अंतसे रहित और किसी

सेवना नही ऐसा अपने स्वभाव करके अखंड प्रकाश होवे तिसकों देव कहते हैं चेत
न्य कहते हैं शिव कहते हैं सोही आत्मा महादेव है तिसकों ही तूं मेरे स्वरूप वाले देवको
जान ५३ हेमुने सोही आत्मा देवता नाम करके कहीदा है तिसका ही पूजन करणे योग्य है
सोही आत्मा परम देवता है तिसतें ही यह सत्ता वाला और सत्ता रहित संसार जगत् भार
नाहे और उत्पतभी भया है ५४ हेब्रह्मन् जिन्होंनें सो स्वयं प्रकाश आत्मा देवता का तत्व नही
जाना तिन्हकों मूर्ति वाले देवता की पूजा गंध पुष्पादि कों करके कही है कैसे जिस पुरुष
तें जो जन प्रमाण मार्ग नही चला जावे तिसको एक कोश प्रमाण मार्ग चलने कों कही
दाहै ५५ हेब्रह्मन् रुद्रादिको की पूजातें इतने प्रमाण वाला बहुत थोहड़े प्रमाण वाला
फल प्राप्त होता है सो भोगतें उपरांत क्षय कों प्राप्त होता है और आत्मा की पूजातें अ
खंड और प्रमाण रहित फल प्राप्त होता है ५६ हेमुने जो पुरुष अखंड और स्वाभाविक फल

कों त्याग करके और नाश होने वाले फल कों चाहता है सो पुरुष कल्पवृक्षों के बनकों त्याग करके करीर वृक्षों के बन कों फलों की इच्छा करके जाता है ५७ हे मुने आत्मा देव की पूजा में ज्ञान और समदृष्टि और शांति यह तीन उत्तम पुष्प कहे हैं सोही एक आत्मा शिव है और चैतन्य मात्र है और निर्मल है सो ही देवता है तिसको सर्वत्र व्याप्त भये कों देषणा ऐसी देवता का ध्यान है जौंनसे देवता की पूजा कों जानते हैं सो इस प्रकार की पूजा करते हैं ५८ हे मुने शम बोधादिक पुष्पों करके आत्मा कों जो पूजना है तिसकों ही देव पूजा कों जानते हैं जौंनसी काष्ठ पाषान की मूर्तिओं की पूजा है सो देवार्चन नहीं है ५९ हे मुने आत्माही देवता है ज्ञान ही तिस की पूजा विधि है इस पूजाकों त्याग करके जो पुरुष नाम धारी मूर्ति वाले देवता का पूजन करते हैं सो पुरुष चिरकाल पर्यंत क्लेश के पात्र होते हैं ६० हे मुने जिन्होंने परमात्मा का

या·वा· तत्व जाना है ऐसे जो संतजन हैं सो आत्म ज्ञान बिना और देवता का पूजन नहीं कर
२३१ तेहैं जो करते हैं तो भी बालकों की क्रीडा समान करते हैं ५१ हेब्रह्मन् आत्मा ही देवता
है सोही भगवान शिव है और जगत का परम कारण है सो ज्ञान करके पूजने योग्य है
सो सर्वदा जानने योग्य है ५२ हेमुने तूं इस आत्मा कों चैतन्यता के आकाश कों मान
और अविनाशी जान जीव कों जान आपने स्वभाव कों जान सोही पूजनीय है पूजने यो
ग्य का आत्मा है उसकों जानना ही उसका पूजन है ५३ हेमुने यह देह देवता का मं
दिर है और जीवही शिव रूपी देवता है अज्ञान रूपी निर्मल कों त्याग करके सोहं भाव
करके पूजन करै सोहं भाव क्या कहिये सः शिवः अहं सो शिव मैं हों ५४ श्रीवसिष्ठजी
का प्रश्न ॥ हेमहाराज चैतन्याकाश क्या कहिये और माया का स्वरूप यह जगत
कैसें भासता है और आत्मा के पूजनमें आत्मा के पूजन मों आत्मा को जीवादि भाव

कैसे होता है इसको तुम मेरे प्रति कहो चैतन्य और चैतन्यता का आकाश आत्मा और जीव चैतन्य की सत्ता और जगत यह एक है अथवा भिन्न हैं यह भी कहो ८५ ईश्वरजी कहतेहैं॥ हेमुने सर्वत्र चैतन्य रूप आकाश भासता है कैसाहै पारावार की मर्य्यादासें रहित है जिसकी चैतन्यता प्रलय कालमें शेष रहता है आकाश कैसें है जैसें घटतें सर्व वस्तु निकासनेतें शेष अंदर में आकाश ही रहता है तैसेही माया सहित जगत का लय होते संते आकाशकी न्याई एक चैतन्य शेष बाकी रहता है ८६ हेमुने जो जो सूर्य चंद्रादिक आपही प्रकाश मान होते हैं तिन्हका प्रतिबिंब का प्रकाश अपने में नही होताहै जलादिक उपाधिमें प्रतिबिंब होता है ८७ हेमुने आत्मा स्वयं प्रकाशहै माया संकल्प रूप है प्रतिबिंब जीव है तिस आत्मा के प्रकाशतें जगतमें सत्ताहै ८८ हेमुने इसी रीति करके जगत स्वप्ना के और संकल्प के नगर जैसा भासता

है सो चैतन्य के प्रकाशतें भासता है इस कारणतें जगत् चैतन्य रूप है चित्र का आधार दिवाल सिरीखा भिन्न नहीं है ६९ हे मुने सो आत्मा का चेतना विकार रहित होनेतें और प्रतिबंध रहित होनेतें और संकल्पद्वार करके फ़ुरणेतें आकाश की न्यांई दृश्य होता है सो चिदाकाश अपने चेतनेतें सृष्टि आदिमों प्रकाश होता है तिसकों जगत कहते हैं ७० हे मुनि तिस कारण ते स्वप्ने के नगर जैसा अथवा संकल्प नगर जैसा जोंनसा यह जगत यहां भासता है तिसमों चिदा काशतें विना दूसरा कुछ कहांतें है ७१ हे मुने सृष्टि आदितें सभ कुछ जानने मों स्वर्ग पातालादिक मों चिदा काशतें भिन्न क्या है जानने वाले तत्व वेत्ता कह देवे तिसतें सर्वत्र चैतन्य मात्र ही है ७२ हे ब्रह्मन् इहां भेद कोई नही है आकाश है परमा काश है ब्रह्मा काश है जगत है चित है यह सभ नाम भेद है वस्तु एकही है जैसें एक

यो॰ वा॰ बीज के अनेक अंकुर और वृक्ष और फल बीज होते हैं वह बीज एक रूप ही सभ
३३४ मों एक है दो हैं इत्यादि भेद केवल नाम मात्र है ७३ हेमुने जैसे अंतः करणके ज्ञा
न रूपी फ़ुरणा आकाश स्वप्नमों जगत् रूप करके भासता है तैसें ही जाग्रत आत्मा
स्वप्नमों सो संविद का फ़ुरणा रूपी आकाश जगत रूप भासता है ७४ हेमुने इस प्र
कार करके यह संपूर्ण विश्व केवल परमात्मा है और ब्रह्म है और परमा काश है
और यही सनातन देव है ७५ हेमुने तिस आत्मा रूपी देव कों जानना ही पूजनहै
ऐही परम कल्याण है इसतेही सर्व शुभ प्राप्त होता है सो आत्मा ही सर्गादिकका
मूल आधार है तिसमों यह नाना प्रकार का विश्व स्थित भया है ७६ हेमुने तिस
परमात्मा रूप देव का पूजन तें अखंड सुख फल प्राप्त होता है कैसा है किसी
साधन सामग्री से बनता नहीं है और आद अंत सें रहित है बाहिर के साधन

जोहैं कर्म क्रियादिक तिन्ह करके सिद्ध नही होणे हारा है ७६ हेमुने तुम आत्म तत्व जानने मों सावधान हो तिस कारणते तुम्हारे कों प्रकट कहिआ है तुम मूढ लोकों कि रीखे नाम धारी देवता के पूजन को योग्य नही हो जिसमों पुष्प धूपादिकों का महा सा मग्री का संग्रह करणे बनता है सो वृथा है ७७ हेमुने जो पुरुष मूढ बुद्धि हैं बाल कों की न्याई जिन्हके चित्त हैं तिन्हकों पुष्प धूपादिकों करके नाम धारी देवता की कृत्रिम पूजा कही है ७८ हेमुने अपने संकल्प करके किये जो पदार्थ और विधान क्रम है तिन्ह करके नाम धारी कृत्रिम देवता की पूजा करके बाल बुद्धि पुरुष संतोषकों प्राप्त होते हैं ८० हेमुने सो मूढ पुरुष अपने संकल्प सें रचन किये द्र व्यों करके देवता पूजन करके जो जिस देवतातें फलकों पावते हैं सो मिथ्या फ लको पावते हैं अखंड सुख तिन्हकों नही होता है ८१ हेमुने हस्त पादादि अंग

वाला जो देवता प्रजा कों कल्पन किया है तहां अपने चैतन्यका संकल्प फ़ुरणे बिना और सार क्या है सो तुम कहो ८२ हेमुने संसार केवल चैतन्य मात्र है इस का सार चैतन्य ही है सोही चैतन्यात्मा देव है सो सर्व रूप है जिसतें ही सर्वदा सुख प्राप्त होता है ८३ हेब्रह्मन् सो देव दूर नहीं है और दुर्लभभी किसीकों नहीं है सो सदा संपूर्ण देहों में चैतन्य सत्ता करके व्याप्त है जैसें आकाश सर्व ब्रह्मांड में व्याप्त है ८४ हेमुने सो आत्माही कर्म करता है सो ही भोजन करता है सो ही धारण करता है सो ही चलता है सो ही श्वासकों लेता है सो ही अंतः करण कर के जानता है सो ही त्वचा करके अंगों कों जानता है ८५ हेमुने जैसें बसंतऋतु पुष्प अंकुरादि कों की इच्छा रहित है तो भी स्वभाव करके अंकुरों कों प्रकट कर ताहै तैसेही चिदात्मातें इच्छा रहित ही जगत की संपदा स्वभाव करके प्रकट होती

ा·सा· हेमुने केते कहते हैं आत्मा की इच्छा करके भोगो के वास्ते सृष्टि होती है कितने कह
३३८ तेहैं चिदात्मा की क्रीडा की इच्छा करके संकल्प सें सृष्टि होती है परंतु यह विचार कोई न
ही किसते आत्मा इच्छा रहित है उसकों भोग की श्रोर लीला की कोई इच्छा नही है जेसें
सूर्य के उदय होते संते स्वभाव करके प्रकाश होता है तेसेही आत्मा की सत्ता करके ज
गतकी सृष्टि होती है ८७ हेमुने जेसे शारद ऋतुमें निर्मल चंद्रमा के संगम को पाय क
रके जगत के पदार्थोंकी शोभा सर्वत्र लक्षित होती है तेसें चेतन्य रूपी चंद्रमा के बिंब
की सत्तामें संगम को पाइ करके जगत के पदार्थोंकी संपदा चेतन्य सत्ता विषें सर्वत्र लक्षि
त होती है जगत के संपूर्ण पदार्थों की संपदा का लक्षित होने की चेतन्य सत्ता ही श्रा
धार बनी है ८८ हेमुने जेसें रसायन का जल के सिंचनतें लोहके अनेक भार सुवर्ण
होतेहैं तेसें चेतन्य सत्ता रूपी रसायन की व्याप्ति करके जगत के पदार्थ समूहकी माला

ा·सा· सद्रूप करके भासती है और आनंद प्रेम आदि फल को प्राप्त होती है ८८ हेमुने जो तुम
१२८ को ऐसा संदेह होवे कि चैतन्य सत्ता रसायन की न्याई व्याप्त होइ करके पदार्थ रूप करके
फुरे हैं तो जडता कैसे बनी है जैसें जलमो डुबे भये पदार्थका स्वरवने नही बने है इ
समों हम समाधान करे है दृष्टांत करके हेमुने चैतन्यकी छाया करके ही जडताभी उ
दय होती है जैसें मंदिरादिक जो हैं सो सूर्य के तेज करके प्रकाश मान होतेहैं तिन्ह
के अंदर स्तंभादिकभी सूर्य के तेजसे ही प्रकाश होतेहैं परंतु बाहिर सूर्य का प्रका
श प्रकट है और अंदरमों काष्ट मृत्तिका पाषाणादिको के प्रतिबंधतें सूर्य की छाया
करके अंधेरा होवे है तैसेंही चैतन्य सत्ता की व्याप्ति करके देह इंद्रियादिक भासताहै
परंतु देह इंद्रिया घट पटादिको मों चैतन्य सत्ता स्पष्ट नहीं अनुभव होती है तिन्हके
अभ्यास करके अंत करणमों जडता होती है ८९ श्रीवासिष्टजी काप्रश्न॥हेमहा

वा·सा· राज तुमने कहा जो चैतन्य सर्व व्यापी है और सर्वगत है तो चैतन्य तो एक स्थिरी
१३९ था है उन यह देह चैतन्य मय है सो मूर्छा और निद्रा और मरणादिक में जड कैसे
होवेहै और नेत्र श्रवणादिक के होने से अंधा वेहिरासा कैसे होता है ८९ फेर इस
देहको लोक प्रत्यक्ष अनुभव सें कहते हैं यह देह आगे चैतन्य था अब जड हो ग
याहै ऐसा कहना योग्य नही है सो कैसें चैतन्य सत्ता की व्याप्ति करके भासता है
सो चैतन्य अविनाशी है और निर्विकार है और सदा एक रसहै ९२ **श्रीसदाशिवा**
जीवसिष्टप्रतिकहतेहैं॥हेब्रह्मन् जो तुमने प्रश्न किया है सो तुम को हम
कहते हैं तुम सभकों श्रवण करो तुमने यह महान् प्रश्न किया है तुम ब्रह्मवेत्ता ऋ
षियोंमों श्रेष्ठ हो ९३ हेमुने इस देह मों चैतन्य सत्ता व्याप्त है और सर्व भूतों मों व्याप्त
है सो दो प्रकार करके कहीदा है एक चलायमान कही है और एक परा कही है

वा॰सा॰ सो अचल है जौनसी चलायमान है सो देह इंद्रियादिक पदार्थों मों आसक्त भई जे
२४॰ सी है तिन्हकी उपाधि करके ज्ञाता ज्ञान कर्त्ता और भोक्ता इत्यादिक स्वभाव वाली कही
है और जौंनसी पराचित्त है सो निर्विकल्प है और निर्विकार है इसी चित्तकों उपा
धिका भेद करके चल स्वभाव कहा है ९४ हेमुने सो चल स्वभाव चैतन्य सत्ता बु
द्धिमों अपने संकल्प करके आपही रूपांतर कों प्राप्त भयी जैसी स्थित है जैसें सुंदर
शील वाली इस्त्री अपने संकल्प करके पर पुरुष संयोग कों ध्यान करके स्वपनादिक
मों व्यभिचारिणी के स्वभाव कों अनुभव करती है ९५ जैसें कोई पुरुष क्रोध करके
लगामों और जैसा होजाता है तैसे यह चैतन्य सत्ता अपने संकल्प विकल्प करके
और स्वभाव जैसी होती है परंतु अपने स्वभाव कों नही त्यागती है ९६ हेमुने सो चै
तन्य सत्ता ही अपने संकल्प करके शब्दस्पर्श रूप रस गंध पंचभूत देश काल और

चौथा भुवन सप्तद्वीपादि और क्षणसें लेकर वर्ष युग कल्प प्रमाण होय करके आप
ही जीव होय करके बुद्धि और मन और चित्त इंद्रिय देह रूप होती है ९७ हेमुने सो च
ल स्वभाव चैतन्य सत्ता मन होइ करके संसार कों अब लंबन करती है जैसें उत्तम ब्राह्म
ण अपने को चांडाल मानने तें चांडाल रूपकों प्राप्त होताहै ९८ हेमुने सो चल स्वभाव चै
तन्य सत्ता अनंत संकल्प वाली है अपने जड़ता के संकल्पों करके स्थूल रूप होती है
सो जड संकल्पसें मोहकों प्राप्त होती है जैसें जल अत्यंत शीतलता करके पथर भावकों
प्राप्त होता है ९९ हेमुने सोही अपने संकल्प सें भई हुई भय दृष्टिमों भीत होइ करके
पलायन करती है जैसें पुरुष निर्जनस्थान मों वन मों अंधकार मों अपने संकल्प सें क
ल्पन किये वेताल मों भय करके पलायन करता है १०० हेमुने जैसें ऊटनी कंडे वाले
और कंटूय पत्रों कों चाबतीहै और अत्यंत मीठे जानती है तैसें दुःख मय विषयों को

·सा·
५२

सुख करके मानती है १ हेमुने सोही अपने संकल्पके वेगसों भय भीत होतीहै जै
सें गर्धभी अपने बोलने के शब्द सें भय भीत होय करके भाग जाती है हेमुने इस
के तुल्य मूढ कोई नहीं है बाल स्वभावभी नहीं है और चंचल स्वभाव भी नहीं है
और निर्बलभी नहीं है २ हेमुने सोही अपने को दुःखी मान करके झूठे विषय सुखों
का संग्रह करतीहै कैसीहै मानों स्वप्नकों प्राप्त भई है मानों मदोन्मत्त है मानो मोह
करके मूर्छित भई है ३ हेमुने यह चैतन्यसत्ता अपने संकल्पकी उपाधि करके
इस प्रकार चंचल स्वभाव भई है वास्तव विचारे तो इसमों दृश्य और दर्शन और
दृष्टा यह भेद कोई नहीं है जैसें पत्थरमोंतेल नहीं है कर्म और कर्ता और क्रि
याभी नहीं है जैसें चंद्रमा मों श्यामता नहीं है प्रमाता करण द्वारा प्रमाण कर
ने योग्य और प्रमाता यह भेदभी नहीहै जैसें आकाश मों अंकुर नहीं उगे हैं। ४

यो·वा·चेतना और चेतने योग्य और चेतन करणे हारे का भेदभी नही है जैसें स्वर्गके नंद
४३ न बागमें खदिर वृक्ष नही होताहै और हम तुम इतर पुरुषका भी भेद नही जैसेंअं
बरमें पर्वत भाव नही होताहै देह रहित और देह सहित यह भेदभी नही है जैसें क
ज्जलमें शंख जैसी श्वेतता नही होतीहै ५ अनेक रूपता और एक रूपताका भेद नही है
जैसें अणूमें सुमेरु नहीहै शब्द और और शब्द का अर्थका भेदभी नही है जैसें रेती में
लता नही होतीहै नास्ति और अस्तिका भेद नहीहै जैसें सूर्य मंडलमें रात्रि नही है
और वस्तु और अनही वस्तु यह भेदभी नही है जैसें तुषार में उष्णता नही है और शू
न्यता और अनही शून्यताका भी भेद नही है जैसें आकाशमें महा आकाश नही है ३०६
हेमुने जोनसी निर्विकल्प चेतन्यसत्ता है सो सर्व गत है और एक स्वभाव है और नि
र्मलहै सभकों प्रकाश करतीहै सर्वतेजो को मशाल सिरीषी प्रकाश करणे हारी है ३०७

जो निर्विकल्प चैतन्यसत्ता है सो अपने ही चेतनेते चिद्भावको प्राप्त भई है सोही च
लस्थ भाव वाली चैतन्यसत्ता चित्त भई है जैसें साधु पुरुष दुष्ट जनों के संग होनेतें असा
धु जैसा होताहै ३०८ सो निर्विकार चित्सत्ता उपाधि करके विकार युक्त भासती है उपाधि बि
ना शुद्धही है जैसें सुवर्ण मल करके तांबा की न्याई होताहै मल जलावनेतें शुद्ध सु-
वर्ण होताहै ९ इस शुद्ध चित्सत्ताका अभाव जानने तें संसार प्रतीत होताहै और केवल
शुद्ध चित्सत्ता जाननेतें असत्य रूप संसार शांत होताहै १० हे मुने इस चित्सत्ताकों संसा
र दशामें चलावनेको रथ रूपी जीव भावहै जीवकों संसारमें प्राप्त करणेकों अहंकार
रथ रूपहै अहंकार का बुद्धि रथ रूपहै और बुद्धिका मन रथ रूपीहै और मनका इंद्रि
यांका गण रथ रूपीहै और इंद्रिय गणकों प्राण रथ रूपी है प्राणकों स्थूल देह रथ
रूप है और स्थूल देहकों अश्व वृषभादि कों करके चलने द्वारा काष्ट रचित रथहै ११

वा·सा· हेमुने इस रथकी गति कर्म हैं जरा और मृत्यु इसके पिंजरा रूप हैं इस प्रकार वार
३६५ के यह संसार चक्र प्रवृत्त होता है १२ हेमुने इस संसार चक्रका मुख्य प्राणही रथ कहा
है मनके संकल्प विकल्प कल्पना का मूल रथ प्राण है प्राण करके ही मन प्रवृत्त हो
वे है यहां प्राण पवन है तहां ही मन प्रवृत्त होताहै यही जीव रूपी पंछी को जरा म
रणमें भ्रमाओने वाला चक्रहै १३ हेमुने पवन संकल्प बिना आकाशमें लीन भये संते
संकल्प रहित भये संते प्राणभी नहीं प्रवृत्त होता है जैसे तेजके अभाव भये संते रू
प नहीं दृश्य होता है १४ हेमुने चित्तके फुरणे का और प्राणकी नाड़ियोंमे प्रवृत्त हो
नेते मन द्विगुण होय करके प्राण मार्गमें प्रवृत्त होताहै १५ हेमुने सो चित्त सत्ता चित्त
में ज्ञान रूप करके फुरे हैं सो इस देहमें सर्वत्र है प्राणके प्रवृत्त होनेतें क्षोभ को
प्राप्त होती अनुभव होती है १६ हेमुने परमात्माने देह रूपीगाड़ियों के खेंचने निमित्त

मन और प्राण इन काम करणे वाले जीतने के वेलस्थान में अधिकारी किये हैं १७ हेमुने सूक्ष्म शरीर पवन रूप होय करके उठावता है हृदय में स्थित है भूतकी न्याई भ्रमावता है तब शरीर कों जीवता कहते हैं १८ हेमुने जब सूक्ष्म शरीर क्षीण होताहे तो चित्त शून्य होजाताहे तब इस देहकों मृत भया कहते हैं १९ हेमुने इस प्रकार करके अनेक देह धारियों के देह जन्म मरण कों प्राप्त होते हैं इसमों शोक और आश्चर्य नही मानने २० हेमुने चैतन्य सत्ता रूप समुद्रमों यह अनेक देह रूपी बुद बुदे फुरे हैं ऐसेही अथवा इन देहों से विलक्षण हैं तिन्हकों विचार वान पुरुष अहंता और ममता करके शोक हर्षकों नहीं करते हैं २१ हेमुने जो पदार्थ अपने संकल्पसें रचन किया है सो संकल्प के त्यागेसें लय होता है जैसें मनके मनोरथ की रचना है जैसें गंधर्व नगर फुरे हैं वास्तव जाननेतें लय हो जाते हैं २२ हेमुने जैसा संकल्प करने में खेद होता है तैसा संकल्प त्यागने में खेद नही है संकल्प

यो॰ वा॰ मा॰ का यत्त और गंधर्व पुर यह दोनों संकल्प के उदय में सृष्ट भये हैं संकल्प क्षयमें नहीं
३६४ रहते हैं २३ हेमुने पुष्ट भये केवल मनके संकल्प करके यह संसार दुःख प्राप्त भया है
तिस संकल्प के क्षय करणेमें कौनसी दीनता है २४ हेमुने मनुष्य अल्प प्रमाण संकल्प
करने करके दुःखमें मगन होताहै और किंचित्मात्र भी संकल्प नही करे तो अखंड सुखको
पावे हैं २५ हेमुने जब लग तेरी बुद्धि संकल्प रूपी अजगर सर्पसें नही छुटी है तब लग तेरे
को कल्पवृक्षों के बगीचामें भी आनंद नही होवेगा २६ हेमुने जैसे पवनों के वेग करके व
र्षाऋतु के बदलों के उड गये संते शरदऋत में आकाश निर्मल होताहै तैसें तूंभी विवे
क रूपी पवन वेग करके अपने संकल्प रूपी बादलोंको उडाइ करके परम निर्मलता को
धारण कर २७ हेमुने संकल्पों की नदी महा प्रचंड प्रवाह वाली है विवेक सहित मन
करके सुकाइ करके तिसमें बहे जाते अपने आत्मा को सावधान करके मनके संकल्पोंसें

रहित होजावो २८ हे मुने यह तेरा मन संकल्प रूपी पवन करके सूके उराणे पत्रके और
तृणके समान उडता है जिसकों त्याग करके चेतन्य स्वरूप आत्मा को आश्रय करके स्वस्थ
होवो २९ हे मुने जेसे संकल्प उदय करके गंधर्व नगर फुरे है और संकल्प के आभास के क्ष
य होनेते क्षीण होताहे तेसें संसारका भ्रम संकल्प के उदयतें फुरहे संकल्प के लयतें
लीन होता है ३० हे मुने तुम ऐसी भावना करो की मैं एक अद्वितीय आत्मा हूं ऐसी भाव
ना करके शुद्ध होवे तो तुम केवल आत्माही हो ३१ हे मुने जो कछु स्थूल सूक्ष्म जड चेत
न्य प्रत्यक्ष और परोक्ष दृष्ट होता है श्रवण होता है मन करके वाणी करके चिंतन मों
कहने मों आवे है सो संसर्ण एक अद्वितीय शिव रूप है केसाहे शांतहे और वाणी के
सोही परम गति है"
कहनेसें परे है ॐकारकी चोथी मात्रामो है ३२ श्रीवाल्मीकीजी भरद्वाज प्रति कहते हैं॥॥
हे भरद्वाजजी शिवजी इतना बचन कहते भये तदनंतर परम पदमों विश्रांति को प्राप्त

करके मुहूर्त मात्र मौन कों धारण करते भये कैसे हैं शिवजी निर्मल ज्ञान दृष्टि उन
है परमपद कैसा है सर्व विकार के परिणाम सें परे हैं और शांत शब्द है नाम जि
सका ऐसे जो सदा शिवजी वसिष्ठजी करके सहित स्थित होते भये वसिष्ठजी कह
ते हैं हे रामजी सदा शिवजी क्षणमात्र ध्यानमों मग्न होय करके नेत्र कमलों को नि
मीलन करते भये परमपद को आनंदमों स्थित होय करके मेरे सन्मुख नेत्र कमलों
करके देखते भये फिर मेरे प्रति वचन कहते भये सदा शिवजीका वचन (हेमुने तूं
अपने मनके संकल्पादिको कों त्याग करके आत्म सत्ता को मनमें प्रमाण कर आत्मस
त्ताको अर्थ जान करके धारण कर अनर्थ रूपी संकल्प कों त्याग कर जैसें पवन अप
ने वेग करके पुष्पोंकी सुगंध लेताहै ५॰ हेमुने परमात्म विचार करके शांत भये संक
ल्पोंको नहीं शांत भये संकल्पोकों परित्याग करना है याते तूं धीर बुद्धि है आत्म स्वरूप

को देखने हारा बन इसमों संशय नहींहै ४१ हेमुने ब्रह्मा और विस्नु और हर इनसें लेकर जेते देवतादिक हैं सो सभही परमात्मासें प्रकट भयेहैं जैसें समुद्र सें जलके बिंदु प्रकट होतेहैं ४२ हेमुने सो सभही भ्रम मात्र स्वरूप है परमात्माते प्रकट भये हैं स्थित भये है तोभी भ्रमके बीजहैं संसाररूपी कल्पनाके जाल के कर्त्ताहै ४३ हेमुने यह अविद्या परमाकाश मों हजारों तरेसे उदय होतीहै कैसीहै वेद और वेदों के अर्थ के भेद वाली है यथार्थ और अयथार्थ का भेद बुद्धि करके जीवोंको बंधन करने वाले मोह जालकी जड़ोंकी मालाहै ४४ तिसकारणतें यह अविद्या अंत रहित है वार वार उदय होतीहै अपने देशकालकों सिद्ध करतीहै इसका क्रम केवल नाम मात्रसें कहीदा है ४५ हेमुने ब्रह्मा विस्नु रुद्रादिकों कों परमात्मा परमेश्वर जो है सो प्रकट करने का पिताहै तत्त्व वेत्ता पुरुषोंने मानिआहै सोही मूलका बीज है

जैसें पत्रोंका महा वृक्ष मूल कारण होताहै ४६ सो परमात्मा सूर्यकी न्याईं स्वयंप्र
काशहै सभकों सत्ता देने हाराहै तत्ववेत्ता पुरुषने सोही वंदना करने योग्यहै और
पूजने योग्यहै तत्ववेत्ता कों सदैव प्रत्यक्षहै बालक विषय सोहीहै सर्वकालमों सर्व
त्र उदय भयाहै ४७ हेमुने तिसका नातो आवाहन है ना उसका मंत्र है और पूजा
की विधिभी कोई योग्य नहींहै ऐसे परमात्माकों सदैव आवाहन बनिया है जिस
कारणतें सो सर्वव्यापी है सर्वांतर्यामीहै सर्वत्र प्राप्त होने वालाहै आपही चैतन्य
रूपहै ४८ हेमुने तत्ववेत्ता पुरुष जौंनसी जौंनसी दशाकों पावतेहैं तिस तिसतेंही आ
नंद रूप आत्माके स्वरूपकों पावतेहैं जो कछु रूप करके दृष्ट होताहै और श्रवण हो
ताहै मनके संकल्पमों आवेहै सो सभ परमात्मा स्वरूपहैं ४९ हेमुने तत्ववेत्ता पुरुष
इस परमात्माके स्वरूपको सर्वत्र देख करके सदा सुखी होतेहैं वुह कैसाहै स्वरूप

जन्म जरामरण शोक भयको दूर करने हाराहै तिस पुरुषको अग्निमें भूंजे बीजा-
की न्याई फेर जन्मका अंकुर नहीं होताहै ५० हेमुने सो परमात्मा देवतत्व वेत्ता पुरुषों
ने आपना सदा आत्मा जानाहै बाहिर ब्रह्मांडमें अंदर अपने हृदयमो सर्वकाल अनेक
प्रकार क्रम करके पूजा जाताहै ५१ हेमुने हेमहाबुद्धे बाहिर स्थूल मूर्तिमें जब लग
जिस प्रकार करके सो देव जिस प्रकार पूजित कराजाताहै तिसकों भी तुम हमारे से
श्रवण करोगे ५२ हेमुने जेते पूजा के क्रमहैं तिन्ह सभमो देह रूपी मंदिर पवित्र चाहि
ये तिसकारणतें देहमें ममता अहंकार का तिसकों त्याग करके परमात्मा देव पूजने
योग्यहै ५४ हेमुने तिस आत्माका ध्यान करणाही पूजनहै और तिसका पूजनका क्रम
कोई नहींहै तिस कारणते त्रैलोक्य का आधार रूपी आत्मा को नित्यही ध्यान करके पूज
नकरे ५५ हेमुने सो देव सर्वत्र चैतन्य रूपहै सर्वत्र लक्षित करणे योग्य प्रकाश स्व-

रूपहै सभको प्रकाश करने हाराहै अरु सभके अंतः करणमों अंतर्यामी रूप करके
चिदात्मा प्रकाश है जिस करके सो चिदात्मा अहंकार सरीरादिकमों सभका सार बना है
तिसकी सत्ता करके अहंकारादिक सरीरादिक कों वर्त्ते मान हैं सोही सभका सार है ५६
हेमुने सो मर्यादा रहित परम आकाश रूपहै अति विस्तार करके पृथिवी आकाशमों
परि पूर्णहै अंतमें रहितहै सभसें नीचे पाताल रूपी आकाशमों जिसके चरण कमलहैं ५७
हेमुने अंतसें रहितहै ऐसा दश दिशा मंडलमों परिपूर्ण भयाहै भुजा मंडल जिसका
नाना प्रकारके देखनेमों महा प्रमाण वाले महा तेजवाले शास्त्र ग्रहण किये हैं जिसने ५८
हेमुने जिसके हृदय कमलके एक कोणमों अनेक ब्रह्मांडोंके समूह आपसमों स्थि-
तहैं प्रकाश करणेका परम कारणहै आकाशकी न्याई मर्यादासें रहित है उदारहै स
रूप जिसका ५९ हेमुने जिसके नीचे और ऊपर और चारों दिशा चारों विदशामों निरंतर

ब्रह्मा इंद्र विष्णु शिवादिक देवता गण शोभायमान हैं ८॰ हेमुने यह जितनी ब्रह्मांड
में भूतों की मंडलीहै सो सब जिसकी रोम मालाहै और नाना प्रकार के स्वरूप करणे
हारियां और त्रैलोकको बंधन करणेहारी जिसकी अनेक इच्छा शक्ति क्रिया शक्ति
ज्ञान शक्तिसे लेकर शक्तियां जाननियां ८१ हेमुने यही सबका परम देवहै संतजनोंको
यही सदा पूजनीयहै चैतन्यसत्ता मात्र करके अनुभव स्वरूपहै और सर्वगतहै सबका
आधारहै और घड़ेमें वस्त्रमें गर्तमें कंदरामें गाड़ीमें मनुष्यमें सत्ता करके स्थित
है ८२ यही शिवहै यही रुद्रहै यही ब्रह्माहै यही विष्णुहै यही इंद्रहै यही कुबेर है
यही यमहै यही अनेक प्रकारकी नाम संज्ञाका आधारहै और केवल सत्तामात्र शरी
रहै ८३ हेमुने संपूर्ण जगतके जालको विवर्जित करणे वालाहै और काल भगवा
न इसका द्वारपाल है यह पर्वतों करके चौदाभवनों करके युक्त संपूर्ण ब्रह्मांड

मंडल इसके देहके एक किनारेमें स्थितहै कोई एक अंगके अंश मात्रताको प्राप्त भया है ६४ हेमुने तिस देवको इस प्रकारसें चिंतन करैं अनेक कर्ण नेत्र युक्तहै अनेक शिर युक्तहै अनेक भुजा करके शोभितहै सर्वत्र देखनेकी शक्ति युक्तहै सर्वत्र सूंघने की शक्ति युक्तहै सर्वत्रस्पर्शकी शक्ति युक्तहै सर्वत्र रस ग्रहणकी शक्ति युक्तहै सर्व शास्त्रकी शक्ति युक्तहै सर्वत्र शास्त्र श्रवणकी शक्ति युक्तहै सर्वत्र मनन शक्ति युक्ति है ६५ सर्व प्रकारतें मनके मनन कियातें परेहै सर्व प्रकारतें मनका परमानंद रू पहै सदैव सबका कर्त्ताहै संपूर्ण संकल्पके फलोंको देने हारहै सर्व भूतोंकी अं तःकरणकी अवस्थामें स्थितहै सभहीको सर्व प्रकारतें साधन करने हाराहै ६६ हेमुने इस प्रकारके तिस देवको ध्यान करके तदनंतर विधि करके स्रजन करे इसके स्रजा विधानको ब्रह्मवेत्तामें श्रेष्ट तुम हमसें श्रवणकरो सो यह देव आप

ने स्वरूपको जानने मात्र स्वरूपहै सो पुष्प धूपादिकों करके पूजित नहीं होताहै दीप करके अन्नदानादिकों करके चंदन केसर कपूर कस्तूरी आदिक लेपननेंभी पूजित नहीं होताहै ९७ हेमुने नित्यप्रति क्लेश रहित होय करके अमृत रूप अपना आत्मस्वरूपके लाभतें पूजित होताहै यही इसका परम ध्यानहै यही इसकी पूजा कही है जो निरंतर अंतः करणमें शुद्ध चैतन्य मात्रकों जानना ९८ हेमुने तत्ववेत्ता पुरुष देखताहै और श्रवण कर्ताहै स्पर्श कर्ताहै संघता है भोजन कर्ताहै चलताहै शयन करताहै श्वास लेताहै बोलताहै त्याग करताहै ग्रहण करताहै संपूर्ण कर्म करता हुवा शुद्ध चैतन्यमात्र होवे ऐसे ध्यान रूपी अमृत करके पूर्ण होवे आपही अपने आत्माकों ईश्वर जाने ९९ हेमुने ऐसे ध्यान रूपी अमृतके स्वाद युक्त होने करके पुष्प धूपादिकसें रहित होने करके आत्म स्वरूपकी पूजा होतीहै हेमुने ध्यान

कारण और अर्घ देना और पाद्य देना सो सम शुद्ध चैतन्यका जाननाहै ध्यान करके जाननाही पूजाका पुष्पहै यही संपूर्ण ध्यानोंसें परे ध्यान है समस्त क्रिया तिस देव कों अर्पण करणाही पूजनहै ७० हेमुने ऐसे पूजन बिना सो देव कदाचितभी प्राप्त नहीं होताहै तिसके ध्यानतें पुरुष परमानंद रूपी प्रसादकों प्राप्त होताहै संपूर्णभोग सुखोंकी संपदाकों प्राप्त होताहै ७१ हेमुने यह जीव रूपी देवता देह रूपी गृहमें ऐसे ध्यान करके आनंदको भोगताहै इसप्रकार क्षणमात्रभी आत्माका पूजन करेतो मूढ पुरुषभी गोदानके फलकों पावताहै और जो दो घड़ी प्रमाण पूजन करे तो अश्वमेध यज्ञके संपूर्ण फलकों भोगताहै ७२ हेमुने ध्यान करके पुष्पादिक मानसी पूजा एक घड़ी मात्र करे तो राज सूययज्ञके फलकों भोगताहै और मध्यान्ह काल पर्यंत पूजन करे तो लक्ष राजसूय यज्ञके फलकों भोगताहै जो पुरुष संपूर्ण

दिन भजन करे तो परमपदकों पावताहै यही परमयोग है अरु यही परम क्रिया है ७३
हेमुने यह सभमें उत्तम बाह्य भजन कहाहै यह परम पवित्रहै अविद्याके अंत करने
का परम कारणहै इस करके जो अविद्याकों तर जावे तिस पुरुषकों संपूर्ण देवता असुर
यक्ष गंधर्व मनुष्योंके समूह तिसकों हमारे स्वरूप जान करके भजन करते हैं सो पुरुष
परम पदकों प्राप्त भया जानना ७४ हेमुने जौनसा भजन पवित्रकरणो हारेसें भी पवित्र
है जो संपूर्ण पाप अविद्याके तमकों क्षय करणे हाराहै सो अंदर का भजनहै तिस्कों
अब हम तुमको सुनावते हैं ७५ यही आत्मचिंतन रूपी पूजा संतजनोंने चलते हु
वे स्थित हुवे जागते हुवे शयन करते हुवे नित्य करीहै तिसमों अंतः करण मों
स्थित भये शिवरूप परमेश्वरको सभकी प्रतीति करणे हारेकों आपने आत्मा कों
आपही ध्यावे ७६ हेमुने देह लक्षण वाले लिंगोमें शांत रूप स्थितहै और मूर्ति

नि॰
॰सा॰
५९

कादिक लिंगोंसें रहितहै और प्रतिमा मूर्तिसे वर्जितहै ऐसे ईश्वरको जैसा अपने-
को शुद्धबोध होवे सोही जिसका लिंग रूपहै ध्यानमों लीन होनेते रहित है और ध्या
नसें विघ्न मूर्तिके उच्चाटन रहितहै ऐसे आपने आत्मा देवता रूप जान करके पूजाक
रे ७७ हेमुने आपने देहमों ज्ञानरूपी जो आत्माका प्रकाश है तिसको यही देवता है
ऐसी भावना करे मेरेको अनेक प्रकार कियां मन करके नेत्रों करके चिंतन करियां
और देखियां जो शक्तियां हैं सो नाना प्रकार वालियां निरंतर सेवन करतियां है जैसें
सुंदर अनेक प्रकार के भूषण युक्त कामनियां सुंदर पुरुषको सेवती है ७८ हेमुने
मनतो मेरा द्वार पालहै वुह कैसाहै त्रैलोक्य मेरेको निवेदन करताहै परमार्थकी
शुद्ध चिंता मेरी द्वारपालनी है और बुद्धि मेरी आपनी शक्तिहै और क्रिया शक्ति मे
री दूसरी स्त्रीहै और नाना प्रकारके ज्ञान मेरे अंगोंके भूषणहै और पंचतत्वोंने दियां

ओर कर्मेन्द्रियों सहित मेरे देह रूपी मंदिरके द्वारहै ७९ यह मेंहूं यह सो पुरुष हैं
इस प्रकार करके अनंतरूप है ओर भेदसें रहित स्वरूपहै जिसका एक आनंदसे
र्णभयाहै स्वरूप जिसका ओर अपनी सत्ता करके सबको स्फूर्ति करते होताहै ऐसा
स्थित भयाहूं ८० हेमुने सो देव इस प्रकारकी आत्म सत्तामें स्थितहै अपने स्वरूपके अ
रणा रूपी देवी शक्तिकों आश्रय करके देवता भाव करके पति स्फूर्त होय करके स्थि
तहै ओर दुःखदीनतासें रहित स्वरूप करके इस्थित है ८१ सो देव अस्त नहीं होता है
उदय नहीं होताहै संतुष्ट नहीं होताहै अरु क्रोधीभी नहीं होताहै हृष्ट नही होता है
क्षुधाकों नही जानताहै चलताभी नहींहै वांछाभी नही करताहै त्यागभी नही करता
है ८२ हेमुने ओर सबमें एक समानहै सबके समान आधार युक्तहै सबके समान
निवास युक्तहै सबके समान आकार युक्तहै निर्मलता करके सोम्यता युक्तहै अरुसब

नि॰ सा॰ १

प्रकार करके सर्वत्र सदैव सुंदर आशय सुनताहै ८२ पिपीलका से ब्रह्मांतकर सर्व जीवों में एक सोहीहै सर्वब्रह्मांड में जिसकी ज्ञान विचार वाली मति कहींबी किसी प्रकार करके भी कदाचितबी विछेदकों नही प्राप्त होतीहै ८३ और दीर्घसे भी दीर्घ देवता पूजनको भी निरंतर करताहै आपनी चैतन्यता युक्त देह इसका देवताहै तिस देह रूपी देवताको जैसा भोग्य वस्तु प्राप्त होवे तिस वस्तु करके सर्व प्रकार करके पूजन करताहै ८४ हेमुने तिस कारणतें तिस देवताकों सभ प्रकारकी सम बुद्धि करके चैतन्य मात्र देवताकों देवताकी न्यांई जैसा प्राप्त भया क्रम करके सर्व प्रकारके अर्थ करके पूजन करे ८५ हेमुने इस पूजनमों नवीन वस्तुके निमित्त संग्रह के थोड़ाबी यत्न नही करणा जैसा भक्ष्य भोज्य अन्नपान अनेक प्रकार ऐश्वर्य करके युक्त शयन और सवारी जैसी मिले तैसी सुंदर अन्न पानके भोगकी सामग्री के विलास करके पूजन करे ८६ हेमुने स्वच्छ प्राप्ति ।

करके पीडा प्राप्ति करके चिंतारोग करके मोह भय करके संपूर्ण उपद्रव दुःख करके जैसा होवे तैसे करके आत्माकों संबोधन करके पूजन करे ९७ हे मुने जेती जगतकी मर्यादा जीवन स्वभाविक चेष्टा प्राप्त होवें दारिद्र अथवा राज जैसा माया प्रवाह करके प्राप्त होवे तिस संपूर्ण करके आत्माका पूजन करे ९८ हे मुने नाना प्रकारकी देह मन इंद्रियोंकी चेष्टा रूपी पुष्पों करके शुद्ध चैतन्य रूप आत्माकी पूजा करे नाना प्रकारके कलह और नाना प्रकारके विलास करके युक्त स्त्रियों के विहारों करके शत्रु मित्रोंके रागद्वेषों करके सौम्य रूप आत्माकों पूजा करे ९९ हे मुने संतजनों के हृदयमें प्राप्त भई चंद्र किरण न्याई शीतलहै और मधुर बोलना जिसका धर्महै ऐसी सर्व भूतोंकी मैत्री करके सर्वांतर्यामी आत्माको पूजाकरे ४०० हे मुने पापकर्म और पापीजनोंका त्याग रूपी उपेक्षा करे दीन दुःखी जनोंमें दया रूपी करुणा करके पुण्यवान जनोंमें हर्ष रूपी मुदिता करके और शुद्ध

नि॰
सा॰
३

भई शुद्ध आचार प्रहाने करके और आत्म स्वरूपके बोध करके आत्माकी पूजा करे ४०१
हेमुने निषेध रहित जो भोगहैं तिनके सेवने करके और निषेध वाले भोगोंके त्याग क
रके सदा बोध युक्त आत्माको पूजन करे २ हेमुने जो जो भोग पदार्थ नष्ट होजावे तिसके
त्याग करके जो जो भोग प्राप्त होवे तिस तिस ग्रहण करके और सदा सर्वदा एक रस कर
के आत्माका पूजन कहाहै ३ हेमुने सदैव इष्ट चेष्टामों और अनिष्ट चेष्टामों एक समान दृ
ष्टि धारण करणी ऐसी आत्म पूजाके व्रतको धारण करे ४ हेमुने जो जो इसको शुभ प्रा
प्त होवे अरु जो जो अशुभ प्राप्त होवे तिस तिस सभको केवल आत्माके अधीन करे ४०५
हेमुने जौनसा विषय भोग अंत पर्यंत शुभ होवे और जो अंतकाल पर्यंत दुःखदायीहै तिस
संहरणीको सम जाने इस प्रकार आत्म पूजाका व्रत धारण करे ४०६ यह मैंहूं सो मैंहूं यह
मैं नहीं इस प्रकारके विभागका त्याग करे सभही ब्रह्महै ऐसे निश्चय करके आत्मा की

नि॰
सा॰
४

पूजाका व्रत धारण करे ४७ हेमुने चाहे पदार्थका त्याग करे और अन चाहेका भी त्याग
करे और दोनोंको एक समान करे इस प्रकार करके आत्माकी पूजा करे ४८ हेमुने ना किसी
की वांछा करे ना किसीका त्याग करे सभको देव गती करके स्वभावसें प्राप्त भयेको जाने जै
सें नदीओंके जल समुद्रके साथ मिलतेहैं तैसें भोग भूमिका मिलतीहै इसमों तुच्छ बडी व
स्तु विषें उदासीन नही होना ४९ हेमुने जगतमों अनेक पदार्थ उदय होतेहैं और पतित भी
होते हैं देशकाल और क्रिया योगतें जो वस्तु शुभ अशुभ प्राप्त होतेहैं अरु नष्ट होतेहैं जैसें
आकाशनाश दृष्टिको प्राप्त नही होताहै तैसें असंग रहे रागद्वेषसें असंग रहे यह आत्मपू
जाके व्रतको धारण करे ४९ हेमुने यह आत्माके पूजनका विधान कहाहै इसमों जैसा आ
त्मा कहिआहै तिस प्रकार करके शिघ्र करके आत्माकी पूजा करे एक आत्मस्वरूप के आ
नंद रस करके एक रस भावना करे खट्टा और कडुआ और तीक्षा और कचला और

ति॰ मीठा और सलूना और रस सहित और रस रहित यह इंद्रियों के जानने योग्य रसोंकी भा-
वना नही करे एक ज्ञानामृत करके एक रस होवे ५११ हेमुने तिस चैतन्य स्वरूपके ज्ञाना-
मृतकी एक रसता करके सभही दाण अमृतमें होजाताहै इसमें मन लीन होवे तो वि-
कार रहित होताहै क्लेश दुःखसें रहित होताहै यही आत्माका सृजन कहाहै १२ हेमु-
ने जैसें समदृष्टि पुरुषने पूर्ण चंद्रमाकी न्याई आत्मज्ञान करके पूर्ण होनें योग्यहै ते-
सें निर्मल होने योग्यहै स्वरूपानंद करके पूर्ण होने योग्यहै सर्वसंहार करकेभी पाषाण
की न्याई संसार दशामें जड़ होना योग्यहै अंतः करणमें निर्मल होना योग्यहै और
बाहिर मूढोंकी न्याई संसार कार्यमें आसक्त होने योग्यहै ५१३ हेमुने सो पूर्ण ज्ञानी लोक
व्यवहारकी रंजना रूपी मलसें मुक्त होताहै ज्ञान करके पूर्ण होताहै और आत्मा की
उपासना करताहै ५४ हेमुने तुम देशकालकी क्रिया कारण क्रम करके उदय भये

संपूर्ण वस्तु समूहके सबदुःखों के भ्रमों करके रहित होइ करके अपने शरीरको वे
तनेहारे सर्वात्मा ईश्वर कों नित्यप्रति भजन करो और सदा शांत भई समस्त आशा जि
सतें ऐसी बुद्धि करके सावधान रहो ४१५ हेमुने आत्मा सबही कार्य कारण भेदसे रहि
तहै और इंद्रिय मनके व्यवहारसें परेहै अंतः करणमें चित्कला करके व्याप्तहै तिस
कों पूज्य पूजक भाव कहांहै परंतु यह भ्रम तिसमें कहांतें उदित होताहै यह कथ
न मात्रहीहै ४१६ श्रीवसिष्ठजीका प्रश्न ईश्वरजी प्रति॥ हेमहाराज हेईशान जिस आत्मा
को तुमने बुद्धि संयुक्त इंद्रियों की अदृश्यता कहीहै तो हेमहाराज फेर पुरुष तिस कों
कैसे प्राप्त होतेहैं यह तुम कहो ४१७ श्रीईश्वरजी वसिष्ठजी प्रति कहते हैं॥ हेमुने तिसकों
मुमुक्षुजन गुरु शास्त्रकी युक्ति करके होतेहैं तिस युक्तिकों तुम श्रवण करो जो मुमुक्षु
पुरुष होताहै तिसमें अविद्या का सात्विक अंश रहताहै सो केवल सात्विक विद्याके भा॰

नि॰ सा॰ ६

गवाले शास्त्रों करके और नामों करके श्रेष्ठ सात्विक विद्या करके अश्रेष्ठ अविद्याकों दूर करताहै जैसें धोबी मलिन जल करके वस्त्रकों पहिले मलीन करके वस्त्रकी मलिनताकों दूर करताहै ४९८ फेरजैसें ताल वृक्षका फल कठिन होताहै काकादि पंछियों करके भेदा नहीं जाताहै जब पक करके आपही पडेतो भिन्न होताहै तो काकादिक आवें अथवा नहीं आवें परंतु अकस्मात् पक्का तालफल वृक्षतें गिर पड़ा तहां अकस्मात् न त्वालका आइगया उसको फलके रसका भोग प्राप्त भया अब इस दृष्टांतकों पहिलेसें जुकिरकरके दार्ष्टांतके साथ मिलावते हैं २० हे मुने महा वाक्य प्रमाण करके शुद्ध सतो गुणके भाग करके भई ब्रह्माकार वृत्ति करके अविद्याका पटल दूर होताहै जिसके साधन शमदमादिक है अंतः करणकों शुद्ध करणेतें केवल शुद्ध सतोगुणके अविद्याके अंशहै सत शास्त्र और सद्गुरु और सतसंग और ईश्वरके नाम गुण यहभी अविद्याके सतोगुणी

वि०
सा०सा०
१९८

अंशहै इन करके श्रवण मनननिदिध्यासन होने करके श्रेष्ट अविद्याके अंशभागों क
रके अंतःकरण कों पटकी न्यांई छादन करणे हारी तामसी अश्रेष्ट अविद्याकों दूर कर
णे वास्ते मुमुक्षु पुरुष अनेक जन्मोंमें निष्काम यज्ञ दान तप ईश्वराराधन करके पुण्य
संचयतें पवित्र अंतःकरण होय करके गुरु शास्त्रोपदेश युक्ति श्रवणादिकों कों करणे
तें काक तालकी न्यांई अकस्मात् अविद्या दूर भई संते ब्रह्मसाक्षात् कारकों करके चिरका
ल स्थित रहतेहैं ४२३ हेमुने चिरकाल अभ्यास करके अंतःकरण शुद्ध होनेतें अविद्या
पटल दूर होनेतें स्वभाव करके शुद्ध चैतन्यकों केवल आत्म विचारतें अपनेमेंही स
र्वगत एक रस अद्वितीय अखंड सत् चित् आनंद परमात्मा परब्रह्मकों देखतेहैं ४२४ हे
मुने सो आत्मा केवल शास्त्रार्थों करके गुरोंके वचनों करके नही जानीदाहै किंतु आ
त्मा बोधतें जानीदाहै साधनोंका चिरकाल अभ्यासतें और सत गुरोंकी सेवामें और सत्

नि॰ शास्त्रोंके विचारतें और सतशिष्यों के उपदेशतें और सत्पुरुषों के सतसंगतें और आचार
वा॰ सा॰ अंतःकरण होनेतें अविद्याकी निवृत्तिः आत्म स्वरूपकी प्राप्ति और ब्रह्म साक्षात्कार होता
३६९ है केवल नाम मात्र कथातें नही होताहै जैसें दिनमें लोकोंका संचार स्वभावकरके आप
ही होताहै आत्म विचार वालेकों आत्मज्ञान और आत्मस्वरूप का लाभ आपही स्वभाव क
रके होताहै ४१५ हेमुने यही आत्माका भजनहै इसकों जान करके जो करे सो पुरुष य
हां परमात्मा की आज्ञाके वश वर्त्ती इस लोक प्राप्त होवेहै जिस परमपदकों प्राप्त हो
ताहै ४१६ श्रीवसिष्ठजीकाप्रश्न ईश्वरजी प्रति॥ हेमहाराज यह जगतकों गंधर्व नगर की
न्यांई और स्वप्नके नगरकी न्यांई जानतेहैं तदभी महादुःखसेंभी महादुःख देने वाले समा
धीहै इस दुःखके निवृत्त होनेकी कोई युक्तिकों कहो ४१७ श्रीईश्वरजी वसिष्ठ प्रति कहते हैं
हेमुने यह जगतका दुःख वासनाके वशतेंहैं जो जगत वासनासें होवेतो वासना नष्ट

नही होतीहै और जगतका दुःखभी निवृत्त नही होताहै और वासनाते जगत दृश्यावे
तो जगत और जगतका दुःख मृग तृस्नाके जलकी न्यांई तीन कालमें असत्य प्रतीत
होताहै ४८ हेमुने इस कारणते वासना क्याहै किसकोहै वासनामें क्या तत्वहै हेमुने
जैसें स्वप्नके पुरुषने मृग तृस्नाके जलका पान करणा कहीं भी सत्य प्रतीत नही
होताहै तैसें जगतकी प्रतीति वासना मात्र जाननी ४९ हेमुने जगतकी सत्यता में
और देह गेहादिकों की अहंता ममतामें और मृग तृस्नाके जलमें सत्य प्रतीति
जो करे तिस पुरुष कों उपदेश करणे वालेकों धिक्कारहै ५०॰ हेमुने तत्वज्ञानी विवे
की पुरुषकों उपदेश करतेहैं और बालककों विक्षिप्त पुरुषकों भ्रांति युक्त पुरुष कों
दुष्टकों दुर्जन संगति वालेकों उपदेश नही करतेहैं और जो कोई मूढ पुरुषकों उपदे
श करताहै सो पुरुष सुवर्णके रंगकी न्यांई सुंदर अपनी कन्याकों स्वप्नमें देखे पुरुष

कों देताहै ४२१ वसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजीके प्रतिकहतेहैं॥ हेरामजी नीलकंठजी इनका
काहू करके मेरे कों पुष्पांजलि देते संते अपने गणों करके संयुक्त आकाशकों चलता
तेभये ४२२ हेरामजी तिस त्रिलोकनाथजी गये संते मेंभी क्षणमात्र तिसका स्मरण क
रके तिनका कहा देवता पूजनकों अंगीकार करता भया और लौकिक पूजनकों त्यागताभ
या जैसें शांत हुनिवाला पुरुष लोक व्यवहार कों त्या
ग देताहै आत्म विचारकों अंगीकार करता है ४२३ इतिशिवगीता संपूर्णम् समाप्तम्॥
श्रीवसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजी को कहतेहैं॥ हेरामजी तदनंतर तिस कालते अब लग रा
ही क्रम करके एकाग्र होय करके आत्माके अर्चन कों करताही रहाहूं ४२४ हेरामजी
ग्रहण करण और ग्रहण योग्य पदार्थका संबंध संपूर्ण देह धारी जीवोंकों एक सा
मान है परंतु योगी जनकों आत्मस्वरूपमों सावधान रहनाही आत्म पूजन कहाहै २५

हेरामजी धनका और बांधवोंके वियोगतें बहुत दुःख प्राप्त भये संतेभी दृढी आत्मविचा
र दृष्टिकों धारण करके हेशुभ ज्ञान करणेहारे तूंभी विचार कों दृढकर ४२६ हेराम तूं शुद्ध
चिन्मात्र रूपहैं तेरेसें जगत भिन्न नहीहै यातें तेरेकों त्याग करना और ग्रहण करणेकी क
ल्पना कहाहै ४२७ हेरामजी सभही चैतन्यहै ऐसे ज्ञानकों प्राप्त करके सुषुप्ति अवस्था की
न्यांई आत्म स्वरूपमें मग्न होनेकी स्थितिकों तूं प्राप्त भयाहै परंतु मनुसें लेकर स्वरूपादि
की आसक्तिसें परे शुद्ध चिन्मात्र तुरीयावस्था स्वरूप होजाना श्रेष्ठ है २८ श्रीरामचंद्रजीकाव
चन॥ हेगुरुजी आजसें लेकर स्वर्गकी वांछा मैं नही करता हूं और नरककों द्वेष नही क
रताहूं जैसें मंदिर पर्वत समुद्र मथनते उपरांत अडोल रहे तैसें आत्म स्वरूपमें एकाग्रस्थि
त रहूंगा ४२९ हेगुरुजी तुम्हारी कृपातें अब मेरा मन संकल्प कल्पनाके गलनेते संकल्प
रहित भयाहै वांछाभी इसतें गलित भईहै और उदार निश्चय युक्त भयाहै त्रैलोक्य मों॰

जेती ऐश्वर्य आनंद प्राप्तिकी प्रसन्नता होतीहै तिसतेंभी अति प्रसन्न रूप भयाहै अंतः
करणमों ही आनंद पूर्ण भयाहै उत्तमतेभी अति उत्तम भयाहै ४२९ श्रीवसिष्ठजीकावच
न हे रामजी जो तूं केवल शरीर करके अथवा इंद्रियों करके युक्त वर्त्त मान जैसा आ
वे तैसे अर्थमों वर्त्तने हुये असंग मन करके जो कर्म करें सो तैने नही कियाहै तिस
कर्मतें तूं असंगहै ४३० हे रामजी जैसे प्राप्त होनेके क्षणमों वस्तु तुष्टि करता है तैसे
ही नही प्राप्त होनेके क्षणमों तुष्टिको नही करताहै इस जगतमों इस प्रकार करके
पदार्थकौंन नही भोगताहै सभही भोगतेहैं परंतु वस्तुकी प्राप्ति अप्राप्तिमों मनकों अ
संग करणेतें पदार्थ भोगनेका दोष नहीहै ४३१ हे रामजी लोकव्यवहार ऐसाहै प
दार्थ चाहनेमों जैसी तुष्टि होतीहै तैसी पदार्थकी हानीमों तुष्टि नही होतीहै ऐसे
क्षण सुख वाली वस्तुमों अज्ञान बालक प्रीतीकों धारण करतें हैं विवेकी जन तिसमों

ने॰ प्रीतिकों नही करतेहैं ४३२ जिसकी वांछाकालमें तुष्टि होतीहै तिसके सुख दुःखका का
सा॰ रण वांछाहीहै और तिसकी तुष्टि जोहै सो तुष्टिमें अंतको प्राप्त होतीहै तिसतें भोग प
७४ दार्थोंकी वांछाका परित्याग करो ४३३ हेरामजी तुम आत्मज्ञान रूपी पर्वतके उपर अब च
ढेहो फेर अहंभाव रूपी महा गर्त्तमें पड़ेकों योग्य नहीहो ४३४ हेरामजी यहां कछु पदार्थ
फ़ुरे नही और फ़ुरेभी तोभी जैसा फ़ुरा तैसा चला जाय चित्त फ़ुरणे नही फ़ुरणेकी प्रतीतीसे
तें रहितहोजावें तिसकों तुम वासना रहित जानो सोही समता और कोमलता कहीहै ४३५
हेरामजी जो पुरुष वासना रहित इंद्रियों करके कर्म करताहै तो विकारकों नही प्राप्त होता
है जैसे आकाश पर्वतादिक प्राणियोंके उत्पत नाशमें क्षोभकों नही प्राप्त होताहै ४३६ हेरा
मजी ज्ञाता और ज्ञान और ज्ञेय इन तीनोंकों आपनी शांत वृत्तिके अनुभवमें अभाव करे तो
फेर जन्मकों नही पावेंगा ४३७ हेरामजी चित्तके फ़ुरणे नही फ़ुरणेमें संसारके उदय और

लय होतेहैं तिससे वासनाके रोकनेतें और प्राणोंके संयमतें चित्तकों फुरणेतें रहितकर ४४८
हेरामजी प्राणके उदय और लय होनेते संसारके उदय प्रलय होतेहैं तिस प्राणकों संय
मके अभ्यासतें उदय रहितकरो ४९ हेरामजी मूर्छताके उदय प्रलयतें कर्मोंके उदय लय
होतेहैं तिसतें गुरु शास्त्र और संयम करके मूर्छताकों भी दूर करो ४४• हेरामजी यहां चि
त्त उदय नही होवे सो अखंड स्वाभाविक सुखहै सो स्वर्गादिकमों भी नहीहै जैसें माडवार
के थलमों शीतल वृक्ष नही होताहै ४४१ हेरामजी चित्तका उपदेश होनाही अखंड सु
खहै सो मन वानीमें कहा नही जाताहै लय बुद्धितें रहितहै सोना उदयहोनाहै शांत भी
नही होताहै ४४२ हेरामजी तत्त्वज्ञानीका चित्त चित्त नाम करके नहीहै सो चित्तके बल
चैतन्य मात्रहै नाम करकेही चित्तहै अज्ञान करके चित्त बनाहै ज्ञान करके चैतन्य मा
त्रहै मल सहित सुवर्ण तांबा भासताहै मल रहित होनेतें शुद्ध सुवर्ण मात्र होताहै ४४

हेरामजी शिलामें जैसें कमलोंका बन नही होताहै मारवाड़की रेतीमें जैसें जलका प्रवा
ह नही बनताहै तैसें शुद्ध चैतन्यमें प्रपंच नही बनताहै ४४४ हेरामजी परमात्मा चैत
न्य मणीमें जगतके कोटी सैंकड़ेहैं जैसें चिंतामणि पाषानमें जनोंके कोटी मनोरथोंके
सैंकड़े रहतेहैं ४४५ हेरामजी परमात्मा चैतन्य रूपी आकाश में कोटी देह रूपी घड़े उत्पत
भी होतेहैं नष्टभी होतेहैं तिनके बाहिर और अंदरभी चैतन्याकाश व्याप्तहै तोभी तिन्ह के
साथ उत्पत्ति नाशकों नही प्राप्त होताहै जैसें आकाशमें अनेक घड़े उत्पत नष्ट होतेहैं ति
नके साथ आकाश उत्पत नष्ट नही होताहै ४४६ जो वस्तु है सो संपूर्ण ब्रह्महीहै सर्व ध-
र्म कर्मोंसे रहितहै और निर्गुणहै और निर्मलहै और निर्विकार है और आदि अंत से रहि
तहै और नित्यहै और शांत है सर्वत्र सम रूपहै ४४७ श्रीरामचंद्रजीकाप्रश्न ॥ हेमहारा॥
ज ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त भयाहै सो तिसमें विकार उत्पत्ति नाशादिक धर्म नहीहैं तो यह॥

नि॰ जगत उत्पत्ति नाश वाला कैसें भासताहै तिस जगतमों विकार कैसेहै ४८ श्रीवसि-
॰ सा॰ ष्ठजी रामचंद्र प्रति कहतेहैं॥ हेरामजी जिसकी पहिलें स्थिति नहीहै जौनसा स्वरूप
करके ओर बन जाना सोही विकारादि नाम करके कहाहै जैसें दुग्धादिकों का द-
धिआदिक बन जाना ४९ हेरामजी जौनसा दुग्धादिकों का दधि आदिक बनजाना
है सो विकार कहाहै काहेतें कि फेर रूप नही बनता सोभी इहां नही बनता है।
क्यों यह जगतमों आद अंत मध्यमों समही ब्रह्मही जानतेहै ओर रूपकी न्याई विगा-
ड करके दधिकी न्याई ब्रह्मतें जगत नही बनाहै काहेतें ब्रह्म सदा निर्विकार है
जो कहे जो ऐसें परिमाणूकी न्याई ब्रह्म नित्य ओर निर्विकार परमाणूओंके संयोगतें
जगतकी उत्पत्ति माने तो यहभी नही बनताहै काहेतें आदि अंत विभागते रहित
ब्रह्ममों अंग अव यवोंका विकार नहीहै ५० हेरामजी ब्रह्म आदि अंतमों सम है।

जौनसी जगत रूपी विकारता तिसमों देखीहै सो केवल भ्रम करके फुरणा मात्र है क्योंकि रज्जू विषे सर्प भ्रमकी न्याईं निर्विकार ब्रह्ममो जगत भ्रम मात्रहै जैसें रज्जू के विकारते सर्प नहीहै तैसे ब्रह्मके विकारते जगतभी नही बनाहै ५१ हेरामजी जौनसी वस्तु आदि अंतमों एक जैसी दृष्ट होवे सो मध्य विषेभी तद्रूप होतीहै और जो आदिमों और अंतमों नही दृष्टि होवे केवल मध्यमोंही और रूप करके रज्जु विषे सर्प की न्याईं प्रतीत होवे सो अज्ञानका विलासहै भ्रम मात्रहै तिस कारणतें यह जगत ब्रह्ममों केवल भ्रम मात्रही प्रतीत होताहै वास्तव नहीहै ५२ श्रीरामजीकाप्रश्नवसिष्ठ जीप्रति॥हेमहाराज सदा सर्वदा एक अद्वितीय निर्मल परब्रह्म विद्यमान भये संते तिसमों केवल फुरणे मात्र स्वरूप करके भ्रम मात्र प्रतीति भई तो अविद्याका उदय कहांतेहै जिसते यह जगत प्रतीत होताहै ५३ श्रीवसिष्ठजी रामजी प्रति कहते भये॥

हे रामजी यह समझी एर्वकालमें तत्त्व विचारते ब्रह्मही था अबभी ब्रह्म है आगें फेर भी ब्रह्मही होवेगा अविद्यातो नहीहै यह हमारा निश्चय है ५३ हे रामजी तत्त्ववेत्ताओं नाम मात्रही अविद्या प्रतीत होतीहै केवल भ्रम मात्रहै और असत्यहै जौनसी कदापि सत्य नहीहै तिसका नामभी भ्रममात्रही है ५४ हे रामजी जबलग मन प्रबोधको नही प्राप्तभया तबलग ही भ्रमहै भ्रम गये बिना सैंकडे प्रबोधके उचे सुनाये शास्त्रों करके भी बोधको नही प्राप्त होताहै ५५ हे रामजी यह जीव युक्ति करके बोध करायके आत्मस्वरूपमें युक्त करा जाताहै युक्ति बिना नही कार्य होताहै जो कार्य युक्ति करके सिद्ध होवे सो सैंकडे यत्नों करकेभी नही सिद्ध होताहै ५६ हे रामजी जिसको आत्म तत्त्वका बोध नही भयाहै ऐसे दुष्ट बुद्धि पुरुषको जो कोई सम ही ब्रह्म करके सुनावताहै सो पुरुष काष्टके स्तंभको मित्र जान करके आपने दुःख

कों सुनावताहै ५८ हेरामजी यह अविद्याहै यह जीवहै यह संसारहै इत्यादि कल्पना
का क्रम जोहै सो तत्व वेत्ता पुरुषोंने मूढबुद्धियोंको समझाने निमित्त कियाहै वास्त
व कल्पना क्रम नहीहै ५९ हेरामजी इतना कालतें आत्मतत्वको नही जानताथा
तिसतें मैने युक्ति करके बोध युक्त कियाहै अबतूं आत्मतत्वकों जान रहाहै तिसनें
जैसा समझानाहै तिसकों में कहताहूं ६० हेरामजी मैंभी ब्रह्महीहूं तूंभी ब्रह्मही है
और त्रैलोक्यभी ब्रह्महीहै संपूर्ण दृश्यकास्थानभी ब्रह्महीहै दूसरी कल्पना कोई न
हीहै अबतूं जैसा चाहै तैसाकर ६१ हेरामजी अपनें अनुभवकों कहतेहैं हेगुरूजी
तुम्हारी कृपातें जो जानने योग्यहै सो सबही मैंने जानाहै जो देखनाहै सोभी मैंने स
ब देखाहै अब परमतत्व करके मैं पूर्ण भयाहूं तेरे कहे ब्रह्मज्ञानके अमृत करके परि
पूर्णभयाहूं ६२ हेगुरूजी तुम्हारा कहना अब पूर्णभयाहै यह मेरा अंतःकरणभी पूर्ण

भयाहै तत्वकी पूर्णताहोनेतें आनंदभी पूर्णभयाहै ब्रह्मसत्ता करके पूर्ण भये विद्या-
तें पूर्णतातें पूर्णता लेकरके फेरभी पूर्णता शेष रहतीहै ९३ हेमहाराज सर्वत्र पूर्णभ
ये परब्रह्मतें नीचे औरऊपर शिरसें नखाग्र पर्यंत पूर्णभये इस जीव रूपकों परमार्थ
तें पूर्णभया ब्रह्महीतें आकाशतें लेकरजगत प्रकट होताहै सोभी एक समष्टि रूप क-
रके और भिन्न२व्यष्टि रूप करकेभी प्रकट होताहै सोयं देवदत्तः इसका अर्थ कहतेहैं
जौनसा पहिले परके सालमें देखाया सो यह देवदत्त आज देखाहै तत्वमसीका अर्थ
कहतेहैं तत्क्या सो सर्व व्यापी सतचित आनंद रूप जगत सृष्टिस्थिति संहारको कर्ता
और आप अविनाशी परब्रह्म त्वंक्या तूं जीवात्मा असिक्या सदा वर्त्तमानहै तत्व मसी-
इत्यादि महावाक्योंसे भया अहं ब्रह्म ऐसे ज्ञान करके मूल सहित उपाधि दूरकर-
णेतें सर्वत्र पूर्ण भये ब्रह्म करके पूर्णभया जो जीव भाव तिसमें कल्पन करी पूर्णता

तिसके लय होनेसें तिस जीव भावकी प्रतीतासो पहिलेजो स्थितभई ब्रह्म तिसकी प्र
तीता सोही शेष बाकी रहतीहै ६४ श्रीवसिष्ठजी श्रीरामजीप्रतिकहतेहैं ॥ हेरामजी कृ
ष्णभगवानजीनें कही असंगता वाली मतीकों धारण करके पांडुराजेका पुत्र अर्जुन
नामा पांडव महा मुनि नरका अवतार जीवनेकों जैसें चलावेगा तैसें तूंभी अपने जी
वनेकों युक्त करके जीवन मुक्त होय करके वर्त्तमान कर ६५ श्रीरामजीका प्रश्न वसिष्ठ
जीप्रति॥ हेमहाराजजी सो अर्जुन पांडुराजे का पुत्र कब होवेगा श्रीकृष्णभगवान उ
सकों असंगताकों कैसें कहेगा इसको मेरे प्रतिकहो ६६ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥ हे
रामजी यह प्रपंच नाम करके कल्पित भया केवल सत्ता मात्र आत्माही आत्मा वि
षें स्थित भयाहै कैसाहै आत्मा आद अंतसे रहितहै जैसें आकाशमें महा आकाश
नाम करके स्थितहै ६७ तिस निर्मल आत्मामें यह संसारका भ्रम स्थित भयाहै जे

नि॰ सा॰ ८३

में सुवर्णमों और जलमों कंकणादि भूषण और तरंग बुद बुदे नाम मात्र करके स्थितहैं ६७ तिस संसार रूपी जालमों देवता ऋषि यक्ष गंधर्व भूत प्रेत राक्षस मनुष्य पशु पंक्षी सर्प कीट तृण वृक्षादिक प्राणियोंकी चोथा प्रकारकी जाती वर्त्तमान है जैसें जालमों पंक्षी लगे होतेहैं ६८ तिसमों यम और चंद्रमा सूर्य इंद्रादिक देवता पांच भूतोंसें बने संसारकी मर्यादा वर्त्तमान करणे वास्ते परमेश्वरकी नियति नें लोक पाल बनेहैं ७० हेरामजी तिन्ह देवताने इस जगतमों यह पुण्यहे इसका ग्रहण करना यह पापहै इसका त्याग करना इस प्रकारकी लोक मर्यादा वेद मर्यादा करके धर्म रक्षा वास्ते कल्पन करीहे ७१ हेरामजी तिस धर्म मर्यादामों अब लग सभका चित्त हाथीके कर्णके अग्रकी न्याई चंचलहै तोभी जल प्रवाहमो कहने जैसें यथा योग्य वर्त्तमान है ७२ हेरामजी तिसमों भगवान धर्मराजा प्राणियोंका संहार करणे का

अधिकारी है चारयुग प्रमाण समय गये संते पिछला किया प्राणियोंको संहारका पा-
प दूर करणे वास्ते कदाचित् आठ वर्ष कदाचित् दश वर्ष अथवा द्वादश वर्ष अथवा-
पंचवर्ष अथवा सप्तवर्ष अथवा सोडा वर्ष नियम धार करके तप यज्ञ करताहै प्रजाके
संहारतें उदास हो जाताहै तिसकालमों मृत्यु प्रजाका संहार नहीं करताहै ४७४ तिसकारण-
ते यह पृथिवी प्राणियोंके समूह करके पूर्ण होजातीहै जैसे वर्षा कालमों तृण लतादि
कों करके पूर्ण होतीहै जैसें हाथी मच्छियों करके घेरा जाताहै ७५ इसतें उपरांत देवता पृ
थिवीके भार उतारने वास्ते प्रजाकों अनेक युक्तियों करके हृष्ट भई प्रजाकों क्षय कों प्राप्त क
रते हैं ४७६ हेरामजी इस प्रकार करके अनेक सहस्र युग पीछे चले गयेहैं अनेक जग-
तके सैंकड़े होगयेहैं अनंत भूत होगयेहैं अनेक प्राणी व्यतीत होगयेहैं ४७७ हेरामजी अ
बभी जौंनसा यम धर्मराजहैं संपूर्ण पितरोंका स्वामीहै तिस करके केते प्राणियोंको ॥

वि॰ भा॰ भा॰ ६२५

लयकों प्राप्त भये संते अबके युगोंमें बाराबर्ष प्रमाण यत्त लियें ब्रह्मचर्य ब्रत धारण है लोकोंका संहार रूपी अपना कर्म त्यागनाहै ४७८ तिसतें यह पृथिवी प्राणीयोंके मरण बिना मनुष्यों करके पृथिवी भारी होवेगी जैसें बहुत वृक्ष तृणों करके पृथ्वी होतीहै सो पृथिवी प्राणीयोंके भार करके पीडित भई विष्णुके शरणकों जावेगी जैसें दुखी चोरों करके पीडित भई अपने भर्त्तीके पास शरण जातीहै ४९ हे रामजी तिसतें उपरंत विष्णु भगवानजी दो स्वरूप करके पृथिवीमें उतरेंगे एक नर रूप करके एक नारायण रूप करके तिसके साथ सं पूर्ण देवता पृथिवीमें उतरेंगे ४८० एक रूप करके वसुदेवके घर कृष्ण रूपी भगवान होवेंगे ओर दूसरे देह अर्जुननामा करके पांडुके घर होवेंगे ४८१ हे रामजी पांडुराजाका बडा पुत्र युधिष्टिर राजा धर्मके अंशते होवेगा सो पांडुका पुत्र युधिष्टिर चक्रवर्ती राजा होवेगा धर्म मर्यादाकों पालने हारा होवेगा ८२ हे रामजी पंडुका बड़ा भाई धृतराष्ट राजा होवे

नि· गा उस राजेका पुत्र दुर्योधन युधिष्ठरका भाई होवेगा और युधिष्ठरका दूसरा भाई पवन का
वा· सा· पुत्र भीमसेन होवेगा सो दुर्योधनका महा शत्रु होवेगा जैसें नोला सर्पका शत्रु होताहै ८२
१८६ सो युधिष्ठर भीमादिक और दुर्योधन यह आपसमों पृथिवीका राज्य अपने अपने करणे चाहें
गे तिस राज्यके वास्ते युद्धकों करेंगे तिन्हके सहाय निमित्त अठारह अक्षोणीसेना युद्ध क
रणे वास्ते आइ तियार होवेंगी ८४ हेरामजी विष्णुभगवान कृष्ण अवतार होय करके अर्जुन
नामा अपना स्वरूप नरका अवतार करके तिन्हसेनाका नाश करके पृथिवीका भार उतारेंगे ८५
हे रामजी विष्णु भगवान अर्जुन नामा अंश माया करके मनुष्य भावकों प्राप्त भया· है सो
मायाके अधीन होय करके अपने बांधवोंके स्वरूपके निमित्त हर्षशोक युक्त होवेगा ८८
युद्ध रूपी अपने धर्मको त्याग देवेगा विष्णु भगवान अर्जुन नामा करके अपने देहकों स
र्वत्तता कृष्ण नाम देह करके पृथिवीका भार उतारणा रूपी अपने अवतार होनेका जो कार्य

नि॰ भा॰ भा॰ ३८७

तिसके वास्ते अर्जुनकों तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे ४८ श्रीभगवानजीकावचनअर्जुनप्र
ति ॥ हेअर्जुन यह आत्मा जन्मकों नही लेताहै मृतभी नही होताहै फेरभी यह उत्पन्न हो
य करके नही होवेगा यह जन्म रहितहै और नित्यहै और अनादहै और सभसे प्रथम पुरा
णाहै शरीरके मारणेसे भी मृत नही होताहै ८७ हेअर्जुन जो कोई इसकों मारणे हारे कों
जानता है जो कोई इसकों मृतभये कों जानता है सो दोनोंही कुछभी नही जानतेहैं का
हेतें यह किसी कों मारता नहीहै ना किसी करके मृत होताहै ८८ हेअर्जुन यह आत्मा अंत
रहितहै और सदा एक रूपहै और सत्तामात्र रूपहै और आकाशतेभी सूक्ष्महै और परमेश्व
रहै सो क्योंकर किसी करके नष्ट होताहै ८९ तिसतें हे अर्जुन आत्मा कैसाहै अनंतहै और इं
द्रियों करके प्रत्यक्ष दृष्ट नही होताहै इसतें अव्यक्तहै और आदि उत्पतितें रहितहै और
मध्यतें भी रहितहै तिस आत्माकों तूं अंतःकरण वृति करके देख तूंभी ज्ञान स्वरूप हैं

नि॰
गी॰ भा॰
३८८

और जन्म रहितहैं और नित्यहैं और निर्विकारहैं ९१ हेअर्जुन तूं मेरा स्वरूपहैं इथाही धारण किये अभिमानकों त्यागकर तूंजरा मरणतें रहितहैं आप अविनाशी आत्माहै ९२ हेअर्जुन जिसकों देहादिकमों अहंकार नहीहै और कर्म फलों करके जिसकी बुद्धि लिप्त नही होती है सो पुरुष संहर्ण इन लोकों कों मार करकेभी मारन वाला नहीहै और हत्या दोष करके बद्धभी नही होताहै ९३ हेअर्जुन जोंनसा फुरण मनसें प्रकट होताहै सोही अनुभवमों आवेहैं तिसतें यह हमारा शत्रुहै में इसकों मारणे हाराहूं यह पदार्थ मेराहै ऐसे फुरणे कों मनसें त्यागदे अपने पराये भेदवाली दृष्टि करके तूं बद्ध भयाहै तिसतें तूं अपने आपकों नष्ट भयाहूं ऐसें माननाहै इस करके ही तूं पराधीनहै और सुखदुःखों करके पीडित भया है ९४ हेअर्जुन नेत्र अपने रूप विषयेकों देखनाहै और कर्ण अपने शब्द विषयकों सुनेहैं त्वचा अपने स्पर्श विषयकों देखेहै जिह्वा अपने रस विषयकों लेवेहै में कोन हूं ऐसी भ्रम

नि·
भा·सा·
३६९

इसकी स्थिति कहांहै आप तूं सभसें असंगहैं ९५ हेअर्जुन मनभी आपने संकल्पकी रचनामों लगाहै इसमों में करताहूं ऐसी कल्पनाही एक आत्माकों क्लेश करती है ४९६ हेअर्जुन देह इंद्रियां मन यह सभ बहुते आपसमों मिलके आपने २ कार्यकों करतेहैं और एक आत्मा केवल अभिमान करके लोकमों उपहास वास्ते आत्मा पकड़ा जाताहै ९६ हेअर्जु न योगी पुरुष अंतःकरण कों शुद्ध करण वास्ते देह करके मन करके बुद्धि करके केवल इंद्रियों करके कर्म फलके संगकों त्याग करके भी कर्मोंकों करतेहैं ९७ हेअर्जुन पुरुष उत्त म बुद्धिभी होवे और बहुत शास्त्रकों जानने हाराभी होवे तदभी देह गेहादिकमों ममता अ हंकार रूपी मल करके युक्त होवे तो कुबुद्धि पुरुषकी न्याई नहीं शोभताहै ९९ हेअर्जुनजो पुरुष ममता रहित होवे और अहंकार रहित होवे सुख दुःखोंकों समान जाने और क्षमायु क्त होवे सो भावें शुभ कार्य करो भावें दुष्ट कार्यकों करताहै तोभी दोष गुण करके युक्त

नि· नही होताहै हेपांडुपुत्र यह रणमंडल तेरेकों अपने कर्मको क्षत्री धर्मका उत्तम ती
वा·सा· र्थ महातीर्थकी न्याई प्राप्त भयाहै इसमों क्रूर मति करके भी तूं युद्ध रूपी अपने धर्मकों
६९· करेगा तोभी यह क्षत्री धर्मका युद्धभी तेरेकों परम कल्याणकों और परम सुखकों और
परम ऐश्वर्यके उदयकों देवेगा ५·२ हेअर्जुन अपने धर्मका कर्म मूर्ख पुरुषकोंभी क
ल्याणकों देताहै और श्रेष्ठ बुद्धिकों अपना धर्म कर्म क्यों कल्याण नही देवे और जिस
की बुद्धि अहंकारतें रहित होवे सो पुरुष अपने कर्म करके पतित होवे तोभी दोष क
रके लिप्त नही होताहै ५·३ हेअर्जुन तूं अपने धर्मके कर्म योगमों स्थित होइ करके
कर्मोंकों करतारहो और अहंकारकों और कर्म फलकी वांछाके संगकों त्याग कर जो पुरु
ष कर्म फलकी असंगताकों प्राप्त भयाहै सो कर्म करताहै तोभी कर्म फल करके बद्ध
नही होताहै ५·४ हेअर्जुन तूं शांत परब्रह्म स्वरूप होय करके अपने किये कर्मकों ब्रह्म

नि· रूपकों कर और अपने आचारकों ब्रह्मकों अर्पण कर इस प्रकार करके क्षण मात्रमों ब्रह्म
गी·सा· ही होवेंगा ५ हे अर्जुन संपूर्ण अर्थोंकों ईश्वरकों अर्पण कर ईश्वर रूप बन और उपाधि
१८ रहित हो आपभी ईश्वरता करके सभ भूतोंका आत्मा बन अपने स्वरूप करके पृथिवीकों भा
भायमान कर ६ सर्व संकल्पोंको संन्यास कर सदा समदृष्टि बन मन करके शांतिकों धा
रण कर अंतःकरणमों कर्म संन्यास करके युक्त हो कर्मको करताही रहो और फल आ
शातें मुक्त मति बनों ७ अर्जुनका प्रश्न श्रीकृष्णमहाराजप्रति॥ हे कृष्ण संन्यासका और ब्र
ह्मार्पणका और ईश्वरार्पणका और कर्म संन्यासका आत्मज्ञानका और योगका भिन्न भिन्न वि
भाग जैसाहै तिसकों मेरी मोहकी निवृत्ति वास्ते क्रम करके कहो ८ श्रीभगवानजीअर्जु
नप्रतिकहतेहैं॥ हेअर्जुन संपूर्ण संकल्पोंकी शांति भई संते विशेष करके चित्तकी वास
ना सभ शांत होजावें और ब्रह्म स्वरूप भावनाका कोई आकार उदय होना तिसकों ब्रह्म

नि॰ परमा कहतेहैं ८ तिसके उद्योग करणेको ज्ञान कहतेहैं तिसीकों कुशल बुद्धि जोगभी कहतेहैं
गी॰सा॰ संपूर्ण जगत् और हमभी ब्रह्महैं इसकों ब्रह्मार्पण कहतेहैं ९ और कर्मोंके फलोंका तो त्या।
१८२ गहै तिसकों ब्रह्मवेत्ता संन्यास कहतेहैं संपूर्ण संकल्पोंका जो त्यागहै तिसकों असंगता क
हतेहैं ११ हेअर्जुन संपूर्ण कर्मनकी कल्पना जालकों एक ईश्वरकों अर्पण करणेकी भावना
करणी और कर्म करणेके समयमें कर्त्ता कर्म करणेकी सामग्रीमें ईश्वर बिना दूसरे की।
भावना गल जावे जिसमें सोईश्वरार्पण कहाहै १२ हेअर्जुन तूं मेरे विषे मनकों कर और
मेरा भक्तहो मेरे निमित्त यज्ञ करणे हाराहो मेरेकों नमस्कार कर इस युक्ति करके तूं
मेरेकोंही प्राप्त होवेंगा अपने आपकों मेरे विषे परायण कर १३ अर्जुनकाप्रश्नश्रीभगवानप्र
ति॥ श्रीकृष्णजी तुम्हारे दोय रूपहै एक पर रूपहै जौनसा सनातनहै दूसरा अपरहै जौनसा
देखणे श्रवण करणेमें नहीहै सो पर रूप तुम्हारा केसाहै तिसकों में किस कालमें आश्रित होइ

रहो मोक्ष सिद्धि वास्ते कव उसकोंमें आश्रित करूं ९४ श्रीभगवानजीकहतेहैं ॥ हेअर्जुन पहिलेंक हाहै फेरभी जो मैं तेरे हितकी कामना करके कहताहूं तिसकों तूं श्रवण कर तूं मेरे वचनके अ र्थमों प्रीतिकों धारण करताहै ९५ मेरे दोनोंही रूपहैं एक सभके समान दृश्यहै एक परहै जौन सा मन वाणी श्रोर इंद्रियोंके गोचर नहींहै जौनसा हस्त पादादि युक्त श्रोर शंखचक्र गदा पद्मा दि धारण हाराहै सो अपर रूपहै सगुणहै ९६ जौनसा मेरा पर रूपहै सो आदि अंतसें रहितहै औ र निरगुणहै सो ब्रह्म कहाहै परमात्मा कहाहै इत्यादि नाम करके कहा जाताहै ९७ हेअर्जुनज ब लग तूं बोधकों नही प्राप्त भया श्रोर देहादिकों को आत्मा मानताहै आत्मा ज्ञानतें रहितहै तब ब लग मेरे चतुर्भुज रूपकी पूजामों तत्पर रहो ९८ हेअर्जुन तिसतें क्रमतें ज्ञान पावेगा तो तिस रूपकों तूं जानेंगा सो रूप मेरा आदिअंततें रहितहै जिसकों जान करके नही जन्म नहीं प्राप्त होताहै ९९ तिसतें तूं सर्व भूतोंविषे स्थितभये आत्माकों जान सर्वभूतोंको आत्मा विषे जानो

योग करके बुद्धिकों युक्त कर सर्वत्र सम दृष्टिहो २० हेअर्जुन जो पुरुष सर्व भूतों में स्थि
तभये आत्माकों एक रूपता धार करके भजताहै सो सर्व प्रकार करके संसार दशामें वर्त्त
मानहै तोभी फेर जन्मकों नही पावताहै २१ हेअर्जुन जैसे घडे अनेक सहस्त्रहैं परंतु आका
श तिन्हके बाहिर और अंदर एक जैसा व्यापहै तैसेही त्रैलोक्य अनेक सहस्त्रहै मैं आत्मा
रूप करके बाहिर अरु अंदर एकही व्याप भयाहै २२ हेअर्जुन अनेक प्रति बिंबोंमों दर्पण
की न्याई साक्षि रूप वाला आत्माकों प्रति बिंबोंके नाश भये संतेभी नही नष्ट भये मेरेकों
देखताहै सोही देखताहै २३ हेअर्जुन जो पुरुष मान और मोहतें रहित भयेहैं जिनोंने इंद्रि
य संगोके दोष जीतेहैं और आत्म ज्ञानकों नित्य स्थित भयेहैं सुख दुःखोंके द्वंद्व संगोंतें मु
क्तभये हैं सो पुरुष मूढ नहीहै तत्ववेत्ता है ऐसे ब्रह्मज्ञ तिस अविनाशी परमपदकों प्रा
प्त होतेहैं २४ हेअर्जुन जौंनसी इंद्रियोंकी मात्राहै शब्दस्पर्शादिक तिन्हके जो स्पर्शसंग हैं

सो शीत उस्नके सुख दुःखोंके देने हारेहैं और आगम निर्गम वालेहैं तिन्हकों तूं इच्छ
ना करके सहले तिन्हके अधीन नहीहो २४ हे अर्जुन असत्य पदार्थका सत्तारूपी भावना
ही होताहै और सत्य पदार्थका असत्यरूपी अभाव नही होताहै तिसतें सुखादिक सत्य नही
हैं और आत्मा सदा सत्यहै और सर्वव्यापीहै २५ हे अर्जुन तूं मानकों त्याग मदको त्याग शो
ककों भयकों सुखदुःखोंको त्याग यही द्वैतके रूपहैं और असत्यहैं तूं एक सत्यरूप वा
लाहो २६ यह पुरुषोंकी अक्षौहिणी के लय करके अपने अनुभवके स्वरूप ब्रह्म करके
विस्तार भयेको जान केवल शुद्ध ब्रह्मको ही ब्रह्ममों एक कर २७ हे अर्जुन तूं सुखदुःख
कों नही जानता हुवा लाभ खर्चकों जीत हारकों एक समान करता हुवा युद्धकों कर
ब्रह्मकी एकताकों प्राप्तहो तूंही ब्रह्मता का एक समुद्रहैं २८ हे अर्जुन जो तूं करता हैं
जो भोजन करताहै जो होम करताहै जो देता है जो आगे करेगा तिसकों सभ आत्मा

ज्ञान करके युद्धमें स्थिरहो २९ हेअर्जुन समके अंतमें जो जैसे भाववाला हो ताहै सो तिस भावकों प्राप्त होताहै तूं ब्रह्म सत्यहै इस भावकों प्राप्तहो इसतें ब्रह्मकी सत्यता वालाहो ब्रह्म कोही प्राप्त होवेगा ३० हेअर्जुन जो कोई कर्म करणेमें अपनेकों कर्म करणेका अहंकारकों त्याग करके अकर्मवया कर्म संग रहित जानताहै और अकर्ममें वया नही कर्म करणेमें कर्मकों यथा अपने वर्णाश्रम का कर्म अवश्य करणा ऐसे देखताहै सो मनुष्योंमें बुद्धिमान है संपूर्ण कर्म करणेमें युक्तहै ३१ हेअर्जुन मेरेकों कर्मका फल होवे इस प्रकार कर्मफल का निमित्त कारण तूं मत होवे कर्मके त्यागमें तेरी बुद्धिका संग नही होवे कर्म अवश्य करणा इस प्रकार कर्म योगमें स्थित होय करके कर्मोंको करता रहो और कर्मफलके संगकों त्याग कर ४१ हेअर्जुन अहंकार द्वारा फल करके कर्म करणेमें आसक्तिकों त्याग करके और कर्म नही करणेकी बुद्धिकों त्याग करके समताको धारण करके अपनी रुचि करके सुख करके वर्त्तमान रहो ४२ हेअर्जुनजो

पुरुष कर्म फलके प्रसंगकों त्याग करके नित्यही संतोष करके तृप्तहै और ममतातें रहित
है सोभावें अनेक कर्म जालमें प्रवृत्त होवे तोभी कुछ नही करताहै बंधसें रहितहै ५३ हेअ
र्जुन आसक्ति किसकों कहतेहैं में कर्ताहों सो नही कर्म करणे वालेकोंभी होवेहै सो कब होवे
है जब मन संकल्प वासना करके मूढता युक्त होवेहै तिसतें मनकी मूढताकों त्याग देवे ५४
हेअर्जुन कर्म करणेमें आपकों कर्ता नही माननेतें कर्मका भोक्ता नही बननेतें समान एक
ता होतीहै समता एकतातें अनंतता होतीहै अंत रहित होनेतें ब्रह्मता विस्तार सहित हो
तीहै ५६ हेअर्जुन तिसतें तूं भी अनेक चिंतना रूपी मलकों त्याग करके परमात्माकी एक
ताकों प्राप्त होवेतो भावें शुभ कार्यकों करताहै भावें अशुभ कार्यकों करताहै तोभी तू कर्ता
नहीहै ५७ हेअर्जुन जिस पुरुषके संपूर्ण कार्योंके आरंभ फलकामना के संकल्पतें रहित
भयेहैं तिसके कर्म बंधन ज्ञानरूपी अग्नि करके दग्ध होजातेहैं तिसकों तत्ववेत्ता पुरुष

पंडित कहतेहैं ६८ हेअर्जुन तूं सुखदुःखादि द्वंद्वोंतें रहित हो नित्यही आत्मतत्वमें स्थित हो और पदार्थकी प्राप्तिके उद्यमतें रहितहो जैसा प्राप्ति होवे तिस करके वर्त्तमानहो इसप्रकारसे संसारके सभजीवोंका भूषणकी न्याई शोभा करणे वालाहो ६९ हेअर्जुन जो कर्म करणे हारी इंद्रियोंकों कर्म नही करणेतें संयम कर्त्ताहै और मन करके तिन्हके भोगोंको चाहता है सो मूढ तपस्वीहै उसका तप करणा झूठा आचारहै सो पाखंडीहै ७० हेअर्जुन जो पुरुष मन करके इंद्रियोंकों भोग पदार्थोंते रोक करके कर्मेंद्रियों करके कर्मयोगको फलकी आसक्तिते रहित कर्त्ताहै सो विशेष करके उत्तम पुरुषहैं ७१ हेअर्जुन जैसें समुद्र संपूर्ण नदियोंके जलों करके भरा जाताहै संपूर्ण जल तिसमें प्रवेश करतेहै तदभी अपनी मर्यादाके स्थानतें बाहिर नही चड़ताहै तैसेही जिस पुरुषकों संपूर्ण काम भोग प्राप्त होतेहैं और नहीभी प्राप्त होतेहैं तिन्हकी प्राप्ति करके हर्ष शोककों नही प्राप्त होताहै सो पुरुष शांतिकों प्राप्ति होता है॥

नि॰
गी॰ सा॰
९९

जो पुरुष काम भोगोंकी कामना करताहै तिसको शांति नही प्राप्त होतीहै ७२ हे अर्जुन तत्व
वेत्ता पुरुष काम भोगोंको त्यागभी नही करे और अंतःकरणमों भोगोंकी भावनाको भी नही क
रे भोगोंकी प्राप्ति नही प्राप्तिमों सम इत्ति रहे जैसा भोग मिलें तैसे करके वर्त जावे ७३ हे महा
बाहू देहके नाश भये संते आत्माका कुछभी नष्ट नही होताहै आत्माका नाशही नाश कहाहै
सो आत्मा नष्ट नही होताहै केवल स्वरूपको विस्मरणही आत्म नाश कहाहै ७४ हे अर्जुन अ
सत्य पदार्थका सत्तारूपी भाव नही होताहै और सत्य पदार्थका असत्यता रूपी अभाव नही
होताहै तत्ववेत्ता पुरुषोंने इन्ह दोनोंका अंतर जानाहै ७५ हे अर्जुन अविनाशी तिसको जान
जिस करके यह संपूर्ण विश्व व्याप्त भयाहै तिस अविनाशीको नाश करणेको कोई भी स
मर्थ नहीहै ७६ हे अर्जुन यह देह सदा अविनाशी देह धारण करणे हारे आत्माकेहैं सो
अंत वालेहैं जुह कैसाहै आत्मा अविनाशी है और स्थूल सूक्ष्मतादि प्रमाणतें रहित है और

नि· नित्यहै तिसतें तूं अपने युद्ध रूपी क्षत्री धर्मकों निशंक करले ७९ अर्जुनकाप्रश्न हेमहाराज
·सा· जो देह अनित्यहै और आत्मा नित्यहै तो मैं नष्ट भयाहूं ऐसी स्थिति मर्यादा मनुष्योंकी कैसें क
... री और लोकोंको स्वर्ग और नरक यह कैसें स्थित भयेहैं ८० श्रीभगवानजीकहतेहैं· हेअर्जुन
पृथिवी और जल और तेज और पवन और आकाश मन और बुद्धि यह सूक्ष्म अंशों करके सहि
त सूक्ष्म शरीर करके जीव देहोंमों स्थित रहताहै ८१ सोजीव सूक्ष्म शरीर करके सहित वा
सना करके खेंचा जाताहै जैसें रज्जु करके गोका बछड़ा खेंचा जाताहै सोही शरीरमों रहताहै जै
सें पिंजरेमों पंछी रहताहै ८२ हेअर्जुन कर्ण और नेत्र और त्वचा और जिह्वा और नासिका
यह जीव शरीरतें इन्हकों ले करके जाताहै जैसें पवन पुष्पतें सुगंधीकों लेजाताहै तिस क
रके स्थूल शरीरही प्राण चेष्टातें रहित होताहै तिसतें इसकों मर गयाहै ऐसें कहतेहैं ८३
हेअर्जुन वासना सहित होनाही इसका देह है दूसरा देह कोई नहीहै जो वासना रूपी

नि॰ देह मुक्ति विचारनें लीनहोताहै तिसके लय भये संते परमपद प्राप्त होताहै ८४ हे अर्जुन
भ॰सा॰ पिछले कालमों भयी वासनाका मूल अबके यत्न करके पुरुषार्थ करके जीता जाताहै जैसें
४॰१ मूल खोदनेंते वृक्ष गिर जाताहै ८५ हे अर्जुन भावें पर्वत चूर करके गिरजाये भावें प्रलय काल
के पवन चले तदभी शास्त्रमों कहा अपना पोरुष नही त्यागना विचार वाली बुद्धि करके युक्त भ
ये पुरुषनें अपना पोरुषही करना ८६ हे अर्जुन जो पुरुष वासना रहित नही भयाहै और पापक
र्मभी करताहै सो सभ प्रकार करके बद्ध भयाहै जैसें पिंजरेमों पंछी चारों तर्फसे घेरा होता है ८७
इस कर्मको मैं त्याग देताहूं इस कर्मको आश्रय करताहूं मूढमनका यही निर्णयहै और ज्ञा
नी पुरुषकी सदा एक समान स्थितिहै ८८ हे अर्जुन जो पुरुष माया करके संसारके प्रवाहमों आय
पडेहै तिस कर्मको कर्तेहैं सिद्ध होनेमों नही सिद्ध होनेमों सम चित्त रहतेहैं सो जीवन्मुक्त
होतेहैं अंतःकरण करके सुषुप्ति अवस्थामोंहै और लोकोंकोंभी सुषुप्ति अवस्थाकी न्याईं भासते

हैं हठ और इछ किसीमें नही करतेहैं आत्म तत्वमें मगन रहतेहैं ८९ हेअर्जुन सो पुरुष आप
ने अंतःकरण करके अचल स्थितिकों प्राप्त होताहै जैसें कछु अपने अंगोंकों संगेल लेताहै तै
सें सभ विषयोंते इंद्रियोंके स्वभाव करके खेंच लेतेहैं ९० हेअर्जुन जैसें सुंदर चित्रहै रूप करके
सारा पूर्णहै सो चित्तमें स्थित भयाहै तो आकाशतें भी शून्य होताहै कुछ कार्य नही करताहै तै
सेंही तत्ववेत्ता पुरुषकों संपूर्ण जगत् आकाशतें भी शून्य प्रतीत होताहै कुछभी नही करता है ९१
हेअर्जुन जैसें मन असत्य पदार्थें कों भी संकल्प करके मनोरथ द्वारा रचलेताहै तैसेंही क्षण
को कल्प बराबर कर लेताहै ९२ हेअर्जुन जिसकों वासनाका बीज अत्यंत तुच्छभी है चैतन्यास
ना रूपी पृथिवीमें प्राप्त भया तो सेरे तुच्छ वासना बीजही बड़ा संसारका कारण होताहै ९३
हेअर्जुन सत्य रूप परमात्मा का तत्वज्ञान रूपी अग्नि हृदयमें आरूढ भये करके वासना
का बीज एक कालमें दग्ध भया फेर उदय नही होताहै ९४ हेअर्जुन सो वासना बीज दग्ध

भया तो पुरुष फेर पदार्थोंमों मगन नही होताहै संपूर्ण सुखदुःखोंमो लिप्त नही होताहै जै
सें कमलका पत्र जल करके लिप्त नही होताहै ८५ हेअर्जुन तूं शांत अंतःकरण हो और भ
पते रहित हो और संपूर्ण आशाका त्याग कर और वासना रहितहो निर्वाण बोध करके म
हा मनके मोहकों गलित करजो कुछ मैंने तेरे प्रति पवित्र आत्मा तत्व कहाहै इस कों
भले प्रकार विचार करके सर्वात्मा एक शांत रूप होइ करके स्थिर बुद्धि हो ८६ अर्जुनकावचः
नश्रीभगवानजीप्रति॥ हेकृष्ण तुम्हारे प्रसादतें मेरा मोह संपूर्ण नष्ट भयाहै और आत्माके
स्वरूपका स्मरण अब इष्ट भयाहै अब संदेह रहित भयाहूं अब मैं तुम्हारे वचनकों कर
ताहूं ८७ श्रीभगवानजीकहतेहैं। हेअर्जुन जो आत्म स्वरूप जानने करके अंतःकरण की
वृत्ति प्रशांत होजावे तिसका चित्त शांत होजाताहै तो जानना अंतःकरणमों तत्वज्ञान व
धाहै ८८ हेअर्जुन जिसकी प्राप्तिमो यह सभही घट पटादिकों के ज्ञान तुच्छ होजाते हैं।

नि· तो वासना महा नीचभीहै पद पद मोक्ष क्षण क्षणमें उदय होती भी है तोभी क्या करे
·सा· गी ८८ हेअर्जुन जैसें अग्निके पर्वतको प्राप्त होइ करके बर्फका टुकड़ा क्षणमें लीन होजाता
·४ है तैसें शुद्ध चैतन्य तत्वकों प्राप्त होइ करके अविद्या लीन होजातीहै ८९· हेअर्जुन महाउग्र
रजोगुणते भई ऐसी वासना भोगों करके बंधन कारण हारी कहांहै और जिस करके संपूर्ण
विश्वका जाल अखंड व्याप्त होइ रहाहै ऐसा चैतन्य तत्वरूपी महा अग्नि कहांहै जिस तत्व
के किंचिन्मात्र स्मरण करके वासना सहित अविद्या अपने कार्य कारण समूहके जाल स
हित दग्ध होजातीहै जैसें अग्निके पास तृण समूह दग्ध होजाताहै ९० हेअर्जुन इसे तूं अहं
कार करके हे स्थिति जिसकी ऐसी वासना करके दृढ भई विषय रूपी विषकों बधाओने हा
री भोगा शात्रुपणी विसूचिकाकों संकल्प विकल्पका त्याग रूपी मंत्र करके दूर करके के
वल परमात्मा रूप बन कैसाहै संपूर्ण भय निवृत्तिका स्थानहै ९१ अर्जुनका वचन· ॥ ॥

नि·
गी·सा·
३·५

हे भगवन् मेरी बुद्धि सर्व प्रकार करके संपूर्ण मलोंसें रहित भईहै और धीर भईहै परम उद
यकों प्राप्त भईहै तुम्हारे वचन करके सावधान भईहै कैसें जैसें सूर्यनें प्रकाश करी कमलि
नी प्रकाशित होईहै ६२ श्रीवसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजीके प्रति कहतेहैं। अर्जुन इतना कहि
करके गांडीव धनुषकों हाथमें लेता भया श्रीकृष्ण महाराजजी हैं सारथी जिसके ऐसे र
थके ऊपर बैठ करके अरु संदेह करके रहित भया युद्धकी लीलाकों करेगा ६३ इति श्रीभ
गवद्गीतासंपूर्णम्समाप्तम्॥ वसिष्ठजी श्रीरामचंद्र प्रति कहतेहैं॥ हे रामजी ऐसी जो भा
न दृष्टिहै सो पापकों नाश करणे हारीहै जिसकों धारण करके निसंग होइ करके संन्या
स योग करके संपूर्ण कर्मकों ब्रह्मार्पण कर ब्रह्मरूप करके स्थितहो ६४ हे रामजी जेतें जग
तके भावहैं विचार बिनाही सुंदर भासते हैं अरु कैसे हैं जिनका सत्तारूपी भाव है नहीं
विचार करके नष्ट होने वालेहैं ६७ हे रामजी जिसकों हृदयमें आत्म विचारका लेशनहीं

है सुंदर व्यवहार भी करे तो भी दर्पणमें प्रतिबिंबित पुरुषकी न्यांई जड़ है तिसकों मुक्ति
का नामभी नहीहै ६·८ हेरामजी आत्म स्वरूपका केवल बोध मात्र करके भोग वासना क्षी
ण होतीहै भोगोंकी भावना जो नही करणी यही परम तत्व ज्ञान का लक्षणहै ६·९ हेराम
जी तत्ववेत्ता पुरुषकों इस कारणतें भोग अभिमत नहीहै तत्ववेत्ता सर्व संसारके भोगों तें
परे स्वरूपानंद करके तृप्त भयाहै तिन्हके अंतमें महा दुःखहै तिन्ह भोगोंकी तत्ववेत्ता
क्यों इच्छा करेगा ६·९ हेरामजी तत्ववेत्ता पुरुषका यही परम लक्षणहै क्या स्वभाव करा
के भोगोंकी वांछा नहीं करणी ६११ हेरामजी जिस कालमें यह जगतकी सृष्टि संपदा
स्वप्नकी सृष्टि संपदाकी न्यांई वास्तव करके नही भासे तब ब्रह्म लोकभी असत्यही होजाता
है तिसकी इच्छा नही रहतीहै ६१२ हेरामजी जगत का निरोध भी नही भासे और उत्पत्ति
भी नही भासे बंधनभी नही भासे मुक्तिभी नही भासे मुक्तिके साधनभी नही भासे

और मुक्तिकों चाहने वालाभी नही भासे यही परमार्थताहै ८१३ जो जो भाव जैसा दृष्ट होवे सो
तैसाही विद्यमान होताहै सो व्यवहार मों सत्यभी भासताहै और स्वप्न भ्रमकी रीतें (जो हैं सो) कदाचित
भी सत्य नही मानलियां सो कहनेमो भी असत्यहैं ८१४ हेरामजी जगतमों जो नहीहै सो
समों भ्रम नहीहै त्रैलोकमों विचित्र रूपकी वस्तु दृष्टी होताहै ८१५ हेरामजी जलसें मध्य
अग्नि प्रज्वलित दृष्ट होतीहै जैसें समुद्रमों वडवाग्निहै अंबरमो नगर दृष्ट होतेहैं जैसें
देवतोंके विमान होवें शिलामों कमल दृष्ट होतेहैं जैसें हिमाचलमों वृक्ष हैं एकस्थान
मों संकल्प उपाय फल प्राप्त होतेहैं जैसे कल्पवृक्षमों ८१६ शिला वृक्षोंकी न्याईं फलती है
जैसे रत्न समूहहै शिलाके अंदर पाणी होतेहैं जैसे मींडक शिलामोही होतेहैं पत्थरोंते ज
ल निकसते हैं जैसें चंद्रकांत मणीतें जल निकसे असत्यभी भोगमों आवेहै जैसें स्वप्नमों
अपना मरण भोगीदाहै अकस्मात् विना आधार जलभी धारण करीदाहै जैसें बादलों मों

जलहै वस्त्रकी चांदनीकी आकाशमें जल रहताहै जैसे देवतोंकी गंगाहै ६।१७ भारी शिला
आकाशमें उडतीहैं जैसें परों वाले पर्वत उडतेथे पत्थरतें संपूर्ण पदार्थ मनके चाहे प्राप्त
होतेहैं जैसें चिंतामणि पत्थरतें केवल देखनेतें मनोरथ फलतेहैं जैसें स्वर्ग के बगीचों में
कहीं कहीं कोई चिंतन किये मनोरथभी कदीभी सिद्ध नहीं होते हैं जैसें मोक्ष उत्पन्न होवें
ब्रह्म नष्ट होवे प्रपंच सत्य होवे भोग नित्य होवें ईश्वरकी मर्यादा नष्ट होवे वेद प्रमाण नहीं
होवे इत्यादिक चिंतन कियेभी फलते नहींहै १८ हेरामजी इसमें तेरे प्रति एक उपाख्यान इति
हास कहते हैं जौनसा एक भिक्षुको वर्तमान भयाहै कैसाहै भिक्षु शुद्ध मनन को धार
णे हाराहै १९ तिस भिक्षुका मन समाधीके अभ्यासतें सूक्ष्म संपूर्ण स्वरूप धारणेकों स
मर्थ होता भया तिसकों किसी कालमें लीला वास्ते कल्पित किये जीवट नाम करके सा
मान्य जन ब्राह्मण राजा लोकमो हरिणी वल्ली भ्रमर हंसतें लेकर ब्रह्मा परमहंस नारा

यणा रुद्रपर्यंत क्रम करके स्वप्ने का प्राप्त होताभया २० सो जब स्वप्नमें रुद्र भया तब अज्ञाना-
करके जो कुछ विलास किया तिसकों संस्मरणता करके अपनी बुद्धिके विचार करके विचार
कर्त्ता भया ९२१ हे रामजी रुद्ररूप भया सो अखंडज्ञान स्वरूप होइ करके अपने सैंकड़े स्वप्नें
करके विस्मित भया आपही एकांत बैठके आपही वचन कहता भया ९२२ अहो आश्चर्य है
यह माया आश्चर्य रूपहै फिर कैसी है विश्वकों मोहित करणे हारीहै हे असत्य रूप परंतु
सत्यरूपही भासती है जैसें मारवाड़ देशकी रेतीमें जल भासताहै ९२३ इस मायामें सहस्र
वर्ष होगये हैं चार युगोंके सैंकड़े व्यतीत भयेहैं दिन और ऋतुओं के अनेक चरित्र भये हैं २४
यह जगत आकाशकी नीलता की न्याईं भयाहै इसका केवल नहीं जाणणाही दूर करणेकों
उपाय समर्थ हमारेकों होवे २५ यह माया असत्यभीहै तदभी रूप वालीहै चैतन्य सत्ताकी
न्याईं सर्व गतहै सो परमात्माके विलास वाले क्या कुछ नहीं करेगी २६ तिसकारणे जो

स्वप्न संसारमें मेरेकों भयेहैं तिन्ह सभकों उव करके में देखताहूं भले प्रकार अपने स्वरूप
का दर्शन देखने करके अपने अंश रूपकों एक करलेता हूं २७ वसिष्ठजी कहतेहैं॥ हे रामजी
सो रुद्र रूप भिक्षु ऐसा चिंतन करके जिस सृष्टिमें सो भिक्षु भयाहै तिस सृष्टिकों जाताभया
जहां सो भिक्षु शरीर करके मृत मनुष्य जैसा शयन करके पडाहै २८ तहां जाय करके ति-
स भिक्षुके चित्त कों चेतन करण करके संयुक्त करणेतें जाग्रत करता भया सो भिक्षु सावधा
न होइ करके अपनें स्वप्न भ्रमकों स्मरण करता भया २९ सो भिक्षु अपनेकों रुद्र रूप देख
करके जीव भावसें लेकर परमहंस नारायण रुद्र भाव पर्यंत अपनी लीलाकी चेष्टाकों विचा
र करके विस्मयकों प्राप्त होता भया ३० हे रामजी इस प्रकारके जेते स्वप्नके जोजो स्वरूपहैं ति
न्ह सभकों अपना रुद्ररूप अंश देने करके बोधन करता भया शत प्रमाण स्वप्न शरीर सभही
रुद्ररूप होते भये सो शत प्रमाण रुद्र शतनाम करके होते भये रुद्र रूपशोभित होते भये ३१

इस प्रकार करके रुद्रोंके दश शत १००० होते भये महा तेजस्वी होते भये सो पीछे होयगये
हैं अबके संसारमों एकादशमों रुद्रोंका शत स्थितहै ३२ हेरामजी तिसतें जौनसे जीव सम्र
ह बोधरहित हैं सो आपसमों आपने आत्माकों नही देखते हैं मन करके बोधकों प्राप्त भये
प्रेरण किये हुवे आपसमों मिलतेहैं जैसें समुद्रमों तरंग आपसमों मिलतेहैं ३३ श्रीरुद्रजी
अपने अंशरूपी रुद्रोंकों कहतेहैं अब तुम अपनें स्थानोंकों सत्तावीच लेजाओ तहांजाय क
रके पुत्र इस्त्री आदिकोंके अपने अपने मनइच्छ भोगोंकों भोग करके मेरे पास चले आओगे के
२ तुम सभही मेरे अंश होवोगे अरु मेरे गण होवोगे मेरे पुरके भूषण होवोगे तिसतें उपरांत
महा प्रलय होनेतें परमपद कों हम सभ प्राप्त होवेंगे ३४ श्रीवसिष्ठजीश्रीरामजीप्रतिकहतेहैं
सो रुद्र भगवान तिन्हकों ऐसे कहि करके छिप जाते भये सोभी सभ जीवट नाम जिसका सै
सो भिक्षु ब्राह्मणसें लेकर अपने अपने स्थानमों जाय करके अपनीस्त्री पुत्रादिकों करके

प्रारब्ध भोगोंकों भोग करके अपने अपने देहोंकों त्याग करके रुद्रलोककों प्राप्त होय करके रुद्र जीके गण होवेंगे किसी समय मों आकाशमों तारिओंके स्वरूप करके दृष्ट होतेहैं ३५ हे रामजी तपस्वी दो प्रकारके श्रेष्ठ मुनीश्वरोंने कहे हैं एक काष्ठ तपस्वी होताहै दूसरा जीवन्मुक्त कहीदा है ३६ जौंनसी शुद्ध भावनातें रहित और शास्त्र विधिसें रहित शांति शीलादिकों तें रहित ऐसी शुष्कीहै कियामो दृढ निश्चय वाला और हठ करके इंद्रियोंकों जीतने हाराहै पंचाग्नि जलशय्या उर्द्धबाहू इस प्रकारकी घोर तपस्याकों करणे हारा जो मुनिहै सो काष्ठ तपस्वी कहाहै ३७ और जौंनसा व्यवहारमों संसारी लोकों जेसा वर्त्त मानहै तोभी साधनों करके इंद्रियोंकों जीतने हारा और अंतः करणमों आनंद करके पूर्णहै सो मुनि जीवन मुक्त कहाहै जिसकों तत्व निश्चयमों दृढ भावना नही भईहै और आनंद प्राप्ति बिना शीतलता रहित है इसी कारणतें शुष्कहै ऐसी भावना वालाहै और तत्त्वज्ञानकी साधन क्रियामों दृढ नि॰

नि॰ श्रय वालाहै और तत्व जाननें वास्ते हठ करके इंद्रियों को जीतलेनाहै सोभी काष्ट तपसी क
सा॰ हाहै ३९ यह दो प्रकारके मुनियों के नाथों का जो मोन भाव है वुह कैसाहै चित्त का जोनि
२ श्रयहै सो हीहै स्वरूप जिसका सो भाव मौन शब्द करके कहाहै ऐसे भाव करकेही मुनि कहेजा
तेहैं ४॰ तिस मौनकों मोनके स्वरूप को जानने हारे चार प्रकार करके कहते हैं एक इंद्रियोंका
मोनहै एक वाणीका मोनहै तीसरा काष्ट मोन है चोथा सोषुप्त मोनहै ४१ हेरामजी वाणी
का जो संयम करणा तिसकों वाङ मोन कहतेहैं और बल करके इंद्रियों का संयम करणा
तिसकों अक्ष मोन कहते हैं देह इंद्रियां मनकियां चेष्टा जो त्याग देनी तिसको काष्ट मोन
कहतेहैं और सुषुप्ति अवस्थाकी न्याईं संपूर्ण विश्वका कारण जो नहीं होना सोही सोषुप्तमो
न कहाहै तिसकोही जीवन मुक्ती कहतेहैं ४२ हेरामजी तिसके स्वरूपकों तुम मेरेसें श्रवण
करों वुह कैसाहै कर्णमें श्रवण करणेतें भूषणकी न्याईं आनंदको करताहै इसमें ष्वरा॰

क रेचक कुंभक भेद करके तीन प्रकारका प्राणायामभी नही करणा बनताहै इसमें इंद्रिय भोग विषयोंकी वासना उदय नही होतीहै नष्टभी नही होती जानने परती है इसका स्थूल सूक्ष्मादि विभाग भी नही बनता है और अभ्यासभी नही करणा बनताहै और आद अंतके भेदसें रहितहै ४४ इसमें ध्यान करणेमें नही ध्यान करणेमें भी आत्माकी एकाग्रता स्वरूपानंदमें एक जैसी स्थित होतीहै ४४ हेरामजी यह सोप्तम मौन कहाहै इसका अंत नहीहै सदा आत्म बोध सहितहै यही तुरीया पदहै अथवा इसीकों तुरीयातें परे जानो ॥श्रीरामचंद्रजीकाप्र श्नवसिष्ठजीप्रति॥ हेगुरुजी एक यह मेरेकों संदेहहै तिसकों तुम कृपा करके दूर करो सदा शिवजी ईश्वरहैं अपने भक्तोंको ऐश्वर्य भोग देणे हारेहैं सो शिवजी मनुष्योंके कपा लोंकी मालाको भूषण करके धारण सदैव भस्म धारण करतेहैं और नग्न रहतेहैं और श्म शानमें निवास करतेहैं ऐसा जगतमें विरुद्ध कार्यकों किस कामना करके करते हैं ४५

वसिष्ठजीश्रीरामजीप्रतिकहतेहैं॥ महान् जो जगतके ईश्वरहै सो स्वभाव करकेही सिद्ध होते-
हैं तिन्हकों काम संकल्प नही होताहै सो जीवनमुक्त स्वरूप होतेहैं तिन्हकों कर्म क्रिया करणे-
का नियम नही होताहै क्रियाका नियम अज्ञानी पुरुषकोंही कल्पित कियाहै ४६ हेरामजी अज्ञा
नी पुरुषका चित्त ज्ञान बिना स्वरूपके प्रकाश बिना जड होताहै तिसतें क्रियाके नियम वि
ना कुमार्गमें प्रवृत्त होने करके परम दुःखकों प्राप्त होताहै ४७ हेरामजी यह संसार रूप स्व
प्नाहै इसमें एक वैतालनें एक राजा प्रति प्रश्न कहेहैं सो प्रसंग करके मेरेकों स्मरण भयेहैं
सो तुमकों कारण होवेहैं तिन्हकों तुम श्रवण करो ४८ हेरामजी विंध्याचल पर्वतकी झाड़ी
में एक वैतालथा जिसका महा विशाल स्वरूपथा सो वैताल महागर्व करके युक्त भया प्रा
णीओंकों मारणेकी इच्छा करके कोई एक देशमें चला आवता भया ४९ उसका यह एक नि
यमथा जो प्राणी अपना अपराध नही करे सो भावें अपने मुखके पास आवे तो क्षुधाकर्कें

ने· पीडित भयाहै तोभी तिस प्राणीकों नही भक्षण करे ५० हेरामजी तहां एक राजा रात्रिमें न
स्ता· गरकी रक्षा करणे वास्ते भ्रमण करता तिस वेतालको राजा प्राप्त भया तिस राजेकों वेताल॥
हे कहता भया ५१ वेतालकावचन-हेराजन् मैं वेताल हूं महा भयानक हूं तूं मेरेको प्राप्त भया
हैं अब कहां जाताहै अब तूं नष्ट भयाहैं मेरा भोजन तूं बन ५२ राजाकावचवेतालप्रति·हेवे
ताल रात्रिमें चलने वाले तूं मेरेकों विना अपराध बलसें खावेगा तो तेरा सिरसओटूक हो
य करके फट जावेगा ५३ वेतालकावचन· मैं तोको नही भक्षण करताहूं मेरेकों न्यायही॥
रुचदाहै मैं तेरेसें न्याइ वार्त्ताकोही पूछताहूं मैं तेरा न्यायका अर्थी हूं मेरे न्यायके प्रश्नोंनें
पूर्ण करणे ५४ मेरी संभावनाके प्रश्नोंकों तूं भली तरासें कहदे राजा लोक न्याय करते हैं
और अर्थीजनोंके अर्थ पूरे करतेहैं तिसतें तूं न्याउ कहो ५५ हेराजन् ऐसा सूर्यकोणहै जि
सकी किरणोंमें ब्रह्मांडोंके सहस्र सूक्ष्म किणके सिरीखे प्रकाशमानहैं ऐसा पवनकोण

हैं जिसमें महा आकाश की रेणु उडतेहैं ऐसा पुरुष कौनहै जो एक स्वप्नेतें दूस
रे स्वप्नांतर में दूसरेते तीसरेको तीसरे ते चौथेकों इसप्रकार सेंकडे स्वप्नांतरों कों जाता
है फेर अपने स्वरूपकों त्याग करताहै तोभी नही त्याग करताहै ५६ और ऐसा कौनसा
अंडाहै जिसमें केलेके स्तंभकी त्वचाकों बाहिरके उतारणेसे उसके अंदर और त्वचा
निकसतीहै तिसके अंदर और निकसती है उसके अंदरसेभी और इस प्रकार करके
अनेक त्वचा निकसती है तैसें एक ब्रह्मांडके अंदर दूसरा दूसरे के अंदरसे तीसरा तीसरेके
अंदर चौथा इस प्रकार करके अनेक ब्रह्मांड जिसके अंदरसे भी अंदर वर्तमान हैं ऐसा
ब्रह्मांड कौनहै अणुहै जिसमें ब्रह्मांड और आकाशादिक भूतोंके समूह और सूर्य मं
डल सुमेरुआदि पर्वतादिक वर्तमानहैं जिसके ऐसे कौनसे अणुके परमाणु रूपहै और
अपने अंड भावकों त्यागतें नही है ५७ और ऐसा कौन पर्वतहै जिसके एक परि माणु

में एकत्र होय करके अनेक त्रैलोक्य गेरीमन शिला धातू रूप करके स्थितहै ५० हे राजन् य
ह मेरे प्रश्नोंको तूं नहीं कहेगा तो दुर्बुद्धे तेरेकों मैं खाय लेऊंगा तो तेरेकों आत्म ध्यान दोषआ
वेगा और तेरे राज मंडलकों एक फलकी न्याई भक्षण करलेवेगा ५९ राजा हस करके
कहता है हे वेताल किसी कालमों यह ब्रह्मांड चैतन्य परि पक्का फल जैसा होताहै उ
ह कैसाहै जिसके ऊपर दशगुण पृथिवी दशगुण जल जलतें दशगुण तेज तेज
तें दशगुण पवन पवनतें दशगुण आकाश आकाशतें दशगुण अहंकार इस प्रकार
ऊपर वस्त्रके वेष्टनकी न्याई लपेटणे युक्त है ६० तैसें फलोंके सहस्र जिसमों लगे है
ऐसी एक शाखाहै कैसी है विशाल पत्रहै जिसके तैसी अनेक सहस्रशाखा जिस मों
है ऐसा एक महावृक्ष है महा विस्तार वाला जिसकी छाया का मंडलहै तैसे वृक्षों
के सहस्रहैं जिसमों ऐसा एक बनहै जिसमों अनेक वृक्ष लता सतादिकों करके

भराहै ८१ तैसे बनोंके जिसमों सहस्रहैं ऐसा एक पर्वतका महा शिखरहै अत्यंत ऊं
चाहै विशाल विस्तार युक्तहै तैसे शिखरोंके सहस्र जिसमोहैं ऐसा एक देशमहा
विस्तार युक्तहै तैसे देश सहस्र जिसमों है ऐसा एक द्वीपहै महा नदियां महा सरोवरों
करके युक्तहै तैसं द्वीपोंके सहस्र जहांहैं ऐसा एक चौतराहै अनेक रचना युक्तहै ऐसे
चौतरे सहस्र जहांहै ऐसा महा अंडाहै तैसे अंडेयोंके सहस्रोंके करोडियां जिसमों तरे हैं
ऐसा एक विशाल जलों करके भरा एक समुद्रहै ८२ तैसे समुद्रोंके लक्ष जिसमोंहैं ऐ
सा एक तरंगहै तैसे तरंगोंकी अनेक कोटि जिसमों हैं ऐसा एक महा समुद्रहै तैसे महा
समुद्रोंके सहस्र जिसके उदरमों जलकी न्याईं रहेहैं ऐसा महा पुरुष एकहै महा वि
शाल स्वरूप वालाहै तैसें महा पुरुषों के लक्षोंकी माला जिसके हृदयमों शोभेहै ऐसा
संपूर्ण जीवों का प्रधान पुरुषहै ऐसे प्रधान पुरुषोंके सहस्र जिसके मंडल मों

एक रोम सिरीखे भासतेहैं ऐसा महा सूर्यहै जिसके प्रकाशमों ऐसी सैकडों दृष्टि होती
है ६३ हे वेताल जेती कल्पना मैंने तेरे प्रति पीछे कहीहै सो संपूर्ण तिसकी प्रकाश शक्ति
है जिसके प्रकाशकियां छायाके ब्रह्मांड असरेणु सिरीखे महा अणु रूपहै ६४ मायाहै कि
रणा जिसकी ऐसा परमात्मा सूर्यहै सो सभकों प्रकाशमान करताहै कालकी सत्ता और
आकाशकी सत्ता और इनके प्रवाहकी सत्ता संपूर्ण चैतन्य सत्ता और शुद्ध चैतन्य सत्ता यह
संपूर्ण पवित्र है ६५ हे वेताल परमात्मा रूपी महा पवनहै तिसमों महा आकाशादिकारे
णु चंचल होय करके चलतीहै और जगत नामा महा स्वप्नाहै तिसमों अनेक स्वप्नांतर है
तिन्हकों जाताभीहै तदभी अपने सच्चिदानंद स्वरूपकों नही त्यागता है सो परब्रह्महै स
दा शांतहै और प्रकट होना लय होना हद्ध होना लय होना इन्हतें रहितहै ६६ जैसे के
लेका स्तंभ ऊपरसें त्वचा उतारणेतें अंदर और और त्वचाकों प्रकट करताहै एककाही

अनेक बना है तैसे यह विश्व एक ब्रह्मका ही अनेक बना है बाहिरसें असार असार भ्रम
रूप जगतके पदार्थ त्यागनेतें अंदर अंदरतें सारतें सार पदार्थ प्रतीत होताहै ९७ हे वेता
ल यह चैतन्य अणुसेभी सूक्ष्म रूपहै और अनंतहै तिसके एक अंशके अणुमें ब्रह्मांड
आकाश समस्त भूत समूह सूर्य मंडल और सुमेरु परमाणुकी न्याई प्रतीत होतेहैं कैसा है
रूप रहित जैसेहैं स्वप्नके ब्रह्मांडकी न्याई ९८ हे वेताल नही प्राप्त होनेतें यह पुरुष परम अणु
रूपहै और सभकों सत्ता देनेतें सत्ताका महा पर्वत है संपूर्ण विश्व तिसका अवयव अंग रूप है
तोभी इसके नाश विषें नही नष्ट होनेतें निर वयवहै इसकी यह त्रैलोकी केवल नाम मात्र कर
के सत्ता मात्रहै इसकों केवल ज्ञानमात्र कोही जान ९९ वसिष्ठजी कहतेहैं ॥ हे रामजी सो वेताल ति
स राजाके मुखतें ऐसा वचन श्रवण करके परम शांतिकों प्राप्त होता भया अचल ध्यानमों
स्थित होता भया अत्यंत क्षुधा जो लगीथी तिसकों बिसार देताभया ९७· अब भगीरथराजा

के प्रसंगकों सुनावतेहैं हेरामजी सो राजा भगीरथ संतजनों की सेवा वास्ते निरंतर धनों कों
देता भया आप किसीसें तृण मात्रभी नही लेताहै जैसें चिंतामणि रत्न जो चाहै तिसकों देता
है आप पदार्थ ग्रहणके कारणोंतें रहितहै ७१ सो राजा यौवनकों प्राप्त भयाहै तोभी इस लोक
की उलट पलट होणी अवस्थाको देखनेंका विचार करके यौवन मांही वैराग्य उदय होताभ
भया जैसें मारवाड देशमों लता प्रकट होवे ७२ सो राजा भगीरथ एक समयमों उदास म
न होइ करके अपने तितल नामें गुरुकों एकांतमों संसारतें भय भीत होइ करके पूछताभया ७३
हेगुरूजी संसारकों प्राप्त कारणे होरे जरा मृत्यु और मोह रूपी सर्व दुःखोंका अंत कैसें हो
ताहै ७४ तितल गुरु कहताहै॥ हेराजनू यह चित्त ज्ञान करके ज्ञेय चेतन्य वस्तु मों
एक निष्ठाकों प्राप्त होवे तो जीव सर्वत्र परब्रह्म रूपकों जानता है फेर संसार दुःखकों नही प्राप्त
होताहै ७५ तिस ज्ञानकों हम ब्रह्म कहतेहैं॥ पुत्र और स्त्री गृह और धनादिक इनसे संग और

प्रीति नही करणी सुख दुःखकी प्राप्तिमों सम चित्त रहणा आत्म ज्ञानमों नित्यही निष्ठा करणी त
त्वज्ञानका अर्थ विचारणा और आत्माकी एकांत भावना करणी निर्जन पवित्र देशमों रहना संसारी
लोकोंकी संगति त्यागनी यह ज्ञान कहाहै इसतें विरुद्ध अज्ञानहै ७६ हेराजन् सो ज्ञान कैसाहै रा
गद्वेष को क्षय करणे हाराहै संसार रोग दूर करणे की औषधहै सो ज्ञान देहादिकमों अहं भाव
की शांति भई संते होताहै ७७ हेराजन् अपने पौरुष के यत्न करके और भोग समूहकी भावना
त्यागनेतें आत्माकी सत्ताकों सदा प्रकाशमान पाइ करके अहंकार लयकों प्राप्त होताहै ७८
हेराजन् जब लग लज्जा और स्नेह मोहादिकों का बंधन रूपी यंत्र नही टूटा जिसतें परें उक्त
नही ऐसी ब्रह्मचैतन्य की सत्तामात्र जगतके अभावकी शोध नही जानी तब लग अहंकार
बनाहै ७९ हेराजन् तूं संपूर्ण संसारके सुखदुःख हर्ष शोकादि विशेषणों कों शांत कर
और जरा मरणादि भयतें रहितहो लोकेषणा पुत्रेषणा वित्तेषणातें रहित हो और निष्किं-

चन उरुषकी न्याई सभतें ममताकों त्याग कर संपूर्ण संपदाकों भी त्याग कर अहंकार कोंभी शांतिकर और देहकी रक्षातें रहित हो लोकोंमों भिक्षाटन करके सर्व त्यागकों धारण करेगा तो ऊंचेसेभी ऊंचे पदकों पावेगा ८॰ वसिष्ठजी कहतेहैं। हेरामजी तितिल गुरूने राजा भगीरथकों ऐसा कहा तो सो राजाकेते दिन गये संते सर्व त्यागकी सिद्धि वास्ते अग्निष्टो मयज्ञ कों करता भया एक धोती मात्र बाकी वस्त्रकों लेकर सर्व त्याग करके अपने नगरतें और राज्यतें बाहिर निकस जाताभया जहां अपनेकों नाम करकेभी नही बुलावे और जानेभी नही तहां जाय रहताभया ८१ तहां जाइ करके ग्रामों विषें वनोंविषें नदीतीरों विषें आश्रमों विषें पर्वतोंकी कंदरोंमों निवास करता भया और आत्म विचारमों धैर्य करके सावधान होता भया और तीन प्रकारकी इषणा पुत्र और लोक और द्रव्य इनकी इछा उसकीआं शांत होजातियां भईयां ८२ हेरामजी सो राजा भागीरथ परम उपशम करके आत्म स्वरूपमों विश्रांतिकों प्राप्त होता

ने· सा· २५

भया पृथिवी अनेक नगरें देशोंमों कितना काल व्यतीत करके अपने नगरकों आवता भ
या वुह कैसाहै नगर अपने वशमों नहीहै और शत्रुजनों करके आक्रांत कियाहै ८२ तिस न
गरमों प्रवाह करके जो आगे आजावे तिस मंदिरमों चला जाताहै अनेक नगरके लोकोंके
घुरोंमों मंत्रियोंके घरोंमों भिक्षाटन करता भया ८३ और जिस शत्रूणे राज्य लियाहै सो राजा कों
कहता भया हेमहाराज अपनें राज्यकों ग्रहण करो ऐसे कहने सेभी राज्यकों ग्रहण न
ही करता भया जिसकारण तें तिसनें सर्व त्याग कियाहै सो भोजन मात्रतें अधिककों नही
लेता भया ८४ किसि कालमों प्रशांत मन भया सर्व प्रकार करके प्रशांत भई बुद्धि जिसकी
और परम सुखकों प्राप्त भया सो एक कालमों आत्मानंदमों मग्नभये तितिल गुरुके पास प्रा
प्त होता भया ८५ सोतितिल गुरु और राजा भगीरथ शिखा दोनों मुनियों की सभामों प्राप्तभये
आपसमों ब्रह्मविचार करके कालकों व्यतीत करते भये अयाचित अन्नपान करके देह

यात्राकों करतेभये ८६ सोदोंनों पनोकों हाथी घोड़े रथोंकों और अष्ट प्रकारके ऐश्वर्यकों सि
द्धजनों करके सेवित कियाहै तिसकोंभी तृण समान जानते भये ८७ सो दोनों मुनि होत भये
जो कुछ काल जोगते सुख अथवा दुःख जो चला आवता है तिसकों आनंद करके अंगीकार-
करते भये अरु वुह कैसेहैं चाहनातें रहितहैं सम रस अवस्थामों दोनों समान होत भये ८८
सो राजा भागीरथ किसी कालमों किसी देशमों कोई कितने राजे नष्ट होगये तब मंत्रियोंने प्रजा-
ने बेनती करी तो लोकोंके उपकारके वास्ते अपने पराये राज्यकों करता भया सप्तद्वीप पृथिवी
का एक चक्रवर्ती होताभया फेर महातपस्या करके ब्रह्म लोकसें गंगाको पृथिवी लोकमों उतार
ता भया तिसतें उपरांत मन रूपी हंसकों उपशम करके परम गतिकों प्राप्तभया ८९ इतिश्री-
भागीरथराजाकाप्रसंगः॥ श्रीवसिष्ठजीश्रीरामजीप्रतिकहते हैं।हेरामजी तुमभी मन करके-
यह संपूर्ण संसार जालकों त्याग करके मन रूपी पंछीकों अपने वश करके राजा शिखि-

नि॰
सा॰

ध्वजकी न्याई शांत हुति होय करके आत्म सुखमें अचल स्थितिकों प्राप्तहो ८९ हे रामजी ए
क राजा शीखिध्वज मालवे देशका होताभया चूडाला जिसकी रानी होती भई सो दोनों उत्त
म गुणों करके संयुक्त होते भये चिरकाल राज्य भोगों को अपनी इच्छा करके भोगकर्के फेर विचार
कों करते भये ९१ यह संसारमें ऐसाकोंन स्थिर और सुंदर पदार्थ है जिसकों पाय करके ॥
चित्त दुःख दशा करके संतापकों नही प्राप्त होताहै ९२ सो राजा और रानी ऐसा मन में
निर्णय करके संसार रोगकी औषध रूपी वेदांत शास्त्रकों चिर काल विचार करके मन में
निश्चय करते भये संसार रूपी विसूचिका आत्म ज्ञान करके शांत होतीहै ऐसा निश्चय कर
के आत्मज्ञान में परायण होते भये ९३ हे रामजी इसतें अनंतर सो चूडाला रानी तत्त्वज्ञ ॥
पुरुषोंके मुखतें सुंदर पदों करके शास्त्रोंके अर्थोंकों संसारतें तारणे हारे कों सुन करके
इस प्रकार करके आपने आपकों ऐसे विचार करती भई ९४ संसार के कार्योंकों करती ॥

हुई अथवा नही करती हुई निरंतर आपनेमों विचार करती भई मैंदेखूंन सही मैं आप॰
कौनहूं यह मोह किसकों प्राप्त भयाहै और कहांसे उठ खडा भयाहै ९५ जो मैं देहकों आ
त्मा जानों तो देह तो जड़हे और मृतकहै यह आत्मा नहीहै किसतैं जिसतैं बालपने तेंही मैं
ने अनुभव करके जानाहै यह कर्मेंद्रियां करके कर्म करेहै तो मैं कर्मेन्द्रियों कों आत्माजा॰
नों तो कर्मेन्द्रियांभी आत्मा नहीहै जिसतैं कर्मेन्द्रियां देहके अंगहैं और ज्ञानेंद्रियोंकी प्रेरणा
करी हुई कर्म करणेमों प्रवृत्त होवेहैं ९६ जो ज्ञानेंद्रियों आत्माहैं नही ज्ञानेंद्रियाभी जड़ है
जिसतें मनकी प्रेरणा करी हूई प्रवृत्त होवें यह भी शरीरके अवयव हैं जैसें लाठी करके बल
करके लोक काम करेहैं तैसें प्रवृत्त होवेहैं तो मन आत्माहै सोभी नही जिसतें मनभी जड़॰
है जैसें खमाती करके पत्थर फेंकीदा है तैसें मन बुद्धिनें प्रेरणा किया हुआ संकल्प करेहै ९७
तो बुद्धि निश्चय रूपहै सो बुद्धि आत्माहै नही सो बुद्धिभी जड़है सोभी अहंकारणे प्रेरणा॰

ते·
सा·
९८

करी निश्चय करेहै जैसे पृथिवी कों खोरनेके मार्ग करके नदी चलेहै ९८ जो अहंकार आत्मा है सोभी नही जिसतें अहंकार भीजड़है मुर्देके सिरीषाहै जैसें बालकने अपने भ्रम करके जख कल्पन कियाहै सो बालक कोही डरावे है तैसें अहंकारभी जीवने कल्पन कियाहै ९९ जो जीव आत्माहै सोभी नही सोजीवभी चैतन्यका अंश रूप करके हृदयमों स्थितहै अनात्मपदार्थ के हृदयमों स्थित भयाहै और अत्यंत सूक्ष्महै और किसी परमात्मा चैतन्य करके अपनेजीव भावकों करेहै ७० अहो इतिमहा आनंदहै अब मैंने जानिआहै जीव जिस करके देहादिकों को चेतेहै और जड़ पदार्थोंमों जीव भावकों कर्ताहै परंतु जड़ पदार्थोंके नाशमों नाशकों न ही प्राप्त होता है जिस चैतन्य रूप करके प्रकाशिआ है जिसके चेतने बिनाजड़ पदार्थोंते मु क्त नही होताहै सो परमात्मा चैतन्य मैने अब जानियाहै ७१ यह जीव जो है सो असत्य औ र जड़ जो देहादिक है और चिदाभास इनके संबंधते अपना जो चैतन्यता स्वरूपहै तिस

नि॰ को आप शुद्ध चैतन्य स्वरूपभी है अपने स्वरूपको त्याग करके जड़ रूप होजाता है जैसे जल
सा॰ के महा सरोवरमें प्राप्त भया अग्नि अपने प्रकाश रूपको उष्णता गुणको त्याग देताहै ७२ हमको
मन बुद्धि आदिकहैं सो चिदाभासत कर सभही असत्यहैं भ्रम करके सिद्ध भयेहैं जैसे भ्रम
करके एक चंद्रमाके दो चंद्रमाकी प्रतीत होतीहै तैसें दूसरे चंद्रमाके स्थान हैं ३ सत्यरूप ए
क महा चैतन्य परमात्माहै जिसको महा सत्ता कहते हैं सो सदा अज्ञानादि कलंकसें रहि
तहै सर्वत्र सदा समानहै अहंकारसें रहित स्वरूप शुद्धहै ७४ वसिष्ठजीकहतेहैं।हेरामजी सो
चूडाला अपने विवकका यने अभ्यासतें और यना आत्म स्वरूपके उदयतें कांति करके अ
त्यंतशोभित होती भई जैसें लतानई प्रकट होतीहै सो फल और नवदलोंके उदय होनेतें शो
भित होतीहै ५ हेरामजी राजा शिखिध्वज तिस चूडालाको देखता भया कैसाहै उत्तम है
अंग तिसके तिसको अपूर्व शोभा युक्त भई को देख करके मंदहास करके युक्त वचन

नि॰ कों कहता भया हे प्रिये तूं अब फेर नये यौवनकों प्राप्त भई जैसी शोभैहै बारंबार उत्तम
॰सा॰ शृंगार रचना युक्त जैसी शोभतीहै अपनी शोभा करके संपूर्ण जगतकों शोभायमान कर
४२ तीहै ८ हेप्रिये मानो तैने अमृत पान कियाहै अथवा मानो उत्तम वस्तुकों प्राप्त होईहै मानोंआ
नंद समुद्रमों मगन भईहै ९ हे प्रिये चक्रवर्ती राज्यसें और चिंतामणिसें त्रैलोक्यके इंद्रपदा
दीसें तेरेकों क्या अधिक वस्तु प्राप्त भयाहै ऐसी आनंद करके अत्यंत शोभाकों प्राप्त अपनें
आनंदके कारणकों मेरे प्रति कहदे १० चूडालारानीकावचन। हेराजन् मेरे स्वामिन् मैं इस ज
गतकों कुछ स्वरूप करके युक्त भयेकों अथवा कुछ स्वरूप रहित भयेकों कुछभी नही जान
तीहूं तिस कारणतें मैं अत्यंत शोभाकों प्राप्त भईहूं ११ हेस्वामिन् भोगोंकों भोगने करके
अथवा नही भोगने करके हर्ष नही करतीहूं और शोकभी नही करती हूं मेरेकों भोग पा
स प्राप्त भये भी दूर गये जैसेहै तिसतें आनंद युक्तभईहूं १२ हेनाथ यह मैंहूं यह मैं

नहीहूं सत्य मैंहूं असत्य मैंहूं संपूर्ण मैंहूं मैंकुछ नही ऐसे संकल्पोंसे रहित होने करके श्रा

नंद युक्तमें भईहूं १३ हेनाथ निश्चय करके उत्तम शास्त्रोंकी विचार दृष्टि करके उत्तमबुद्धि करके

रागद्वेषसें रहित भईहूं सखीजनों साथ क्रीडा भी करतीहूं तिससे सुखी भई हूं १४ हेनाथ जो कु

छ मे नेत्रों करके देखती हूं सो इहां जगतमों सत्य कुछ दृष्ट नही होताहै तिस परमात्मा ते

तत्वकों मैं भली तरांसें देखती हूं तिससे चिरकाल परम उदयकों प्राप्त भई हूं १५ वसिष्ठजी राम

चंद्रजीप्रतिकहतेहैं। हेरामजी सो चूडाला रानी आत्म स्वरूपमें विश्रांत भई राजाकों आत्मज्ञा

नका मार्ग कहती भई सो राजा तिसके वचनोंके अर्थकों नही जान करके शिखिध्वज राजा

कहता भया १६ हेप्रिये तूं संबंध रहित वचनोंकों कहतीहै तूं अज्ञानेके बालबुद्धिहै राज भोगों

कों भोगने योग्यहै राज कंन्याहै भोगोंकों भोग ऐसे वचन कहनेकों तूं योग्य नहीहै १७

हेप्रिये जो कोई कुछ प्रत्यक्ष पदार्थकों त्याग करके जो देखने भोगनेमें नही आवे तिसकों

विचारे और प्रत्यक्ष भोगको असत्य कहे सो कैसें शोभाकों पावेहैं १८ हेप्रिये जो कोई भोगों
कों बिन भोगें त्यागे जो कछ नही तिसमों प्रीत करे सभ कछ त्याग करके अकेला रहे सो कै
सें शोभताहे १९ हेप्रिये जो कहे नाभें देहहूं मैं देहनें और हूं यह सभ कछ नही ऐसा जिसका
कहना है सो कैसें शोभता है १९ हेप्रिये जो मैं देखताहूं तिसकों मैं नही देखताहूं तिस कों
मैं देखता हूं सो इसतें और है ऐसा कहना जिसनें नही त्यागिया है सो कैसें शोभता है २०
तिसतें हेप्रिये तूं बाला है और मूढ हैं और चंचलहैं ऐसें मत कहो तूं बिलास भोगनें योग्य
है अनेक बिलास वाले वचनों कों कहो और बिलास युक्त भोग क्रीडाकों कर २१ श्रीवसिष्ठजी क
हतेहैं॥सो रानी चूडाला राजाकों आत्मज्ञानतें रहित देख करके दया करके तिसके उद्धार वास्ते
आधि और व्याधितें मुक्त होइ करके आत्मज्ञान की योग सिद्धितें आकाशमों उड जानेकों सम
र्थभी है तदभी राजाके उद्धार करणे वास्ते योगाभ्यास कों करती भई॥२२॥श्रीरामजीका प्रश्न

सिष्ठजीप्रतिकहतेहैं॥हेमहाराज इह देहमें विनाश क्या है और उत्पात क्या हैं और आधी क्या है और व्याधी क्याहैं इसकों तुम क्रमसें कहो २२ वसिष्ठजीकहतेहैं॥हेरामजी आधी और व्याधी यह दोनें दुःखका कारणहैं तिन्हकी निवृत्ति कों तूं सुख जान तिन्हके क्षयकों तूं मोक्ष जान २४ हेरामजी यह दोनें आधी व्याधी किसी कालमें इकट्ठे शरीरमें होतेहैं कदाचित् क्रमसे होतेहैं कदाचित् आगे पीछे होतेहैं २५ हेरामजी देहके दुःखकों व्याधीजानतेहैं वासना के दुःखकों आधीन कहते हैं तिन्ह दोनोंकी अपनी मूर्खताही मूलहै तत्वज्ञानतें दोनोंका क्षय होताहै २६ हेरामजी तत्वज्ञान नही होनेतें और इंद्रियों के जीतने विना और हृदयतें रागद्वेषों के नही त्यागनेतें और जड़तातें घने मोहकों देने हारी आधी प्रवृत्त होतीहै जैसें वर्षाऋतुमें जल धारा होतीहै २७ हेरामजी भोगोंकी हृदयमें निरंतर वांछा करणेतें और मूढतातें चित्तके नही जीतनेतें दुःख करणे हारे क्रूर व्यवहार करके दुष्ट देशमें भ्रमणेतें क्रूरकाल में व्यवहार

करणेतें क्रूर क्रिया करणेतें दुर्जनोंकी संगति दोष करके दुर्जनोंकी सेवा करणेतें नाडीयोंके
मार्गमें पवनके वधने चरनेतें देहकी व्याकुलता करके अत्यंत दुःख देने हारी चित्तकों व्या
कुलता करणे हारी शरीरमें व्याधी होतीहै २८ हेरामजी जैसें नदीके स्वरूपकी वर्षाऋतु में
ओर ग्रीष्मऋतुमें क्षीणता ओर वृद्धि होतीहै तैसें आधी व्याधी यह दोनों पंचभूतों से बने हु
ई शरीरमें उदय होतीहै २९ हेरघुकुल के धुरंधर जैसें आधी व्याधी नाशकों प्राप्त होतीहै ति
सकों तुम श्रवण करो व्याधी दो प्रकारकी है एक साधारण है एक सार है व्यवहारकी व्या
धी सामान्य है जन्मकी व्याधी सारहै जो प्राप्त होय गया भोग पदार्थ तिस करके शरीरः
का प्रयोजन करणेतें व्यवहारकी व्याधी नष्ट होतीहैं ३० हेरामजी जौनसी व्याधि मानसी चिं
तातें भईहै सो मानसी चिंताके नाश भयेते नष्ट होतीहै ओर जन्म रूपी रूः व्याधी जोहै सो
आत्मज्ञान विना नष्ट नहीं होतीहै ३१ हेरामजी मानसी दुःखकी व्याधी कहाहै सो संकल्प

रूपहै और वासना मय है सो जैसें रज्जुका ज्ञान करके रज्जुका सर्प नष्ट होताहै तैसेही सम
का अधिष्ठान आत्माकों जाननेतें वासना सहित मानसी आधी नष्ट होतीहै ३२ हेरामजी जैसें व
र्षाऋतुमें वधी जो नदी सो अपने तटके वृक्षोंके मूलों कों उखाड़ देतीहै आत्मज्ञान संपूर्ण आ
धी व्याधीके मूल कारण अविद्याकों दूर कर देताहै ३४ और जौनसी मानसी चिंताते व्याधीहैं
सो मंत्र औषधी कर्मों करके चिकित्सा शास्त्रमें कहे उपाय करणेतें और आहार व्यवहार का
संयमतें नष्ट होतीहै ३४ श्रीरामजीका प्रश्न वसिष्ठजी प्रति॥ हेगुरूजी आधीसें व्याधीकैसें हो
तीहैं सो औषधी द्रव्यों करके और मंत्रकी युक्ती करके और पथ्य करणेतें कैसें नष्ट होती है
यह तुम मेरे प्रति कहो॥३५॥ श्रीवसिष्ठजी रामजीकहते हैं॥ हेरामजी चित्त व्याकुल भये संते
देहभी क्षोभकों प्राप्त होताहै तब यह प्राणी क्रोधकों प्राप्तभया अपने आगे मार्ग कुमार्ग कों
कुछ नही देखताहै वेग करके युक्तभया जैसें बाण करके पीडित भया मृग वेग करके भिन्न-

विना आत्मज्ञान की सिद्धिकों राजाकों नही दिखावती भई जैसें शूद्रकों वेदोक्त यज्ञोंकी क्रिया न
ही दिखावते हैं ७५३ श्रीरामजीका प्रश्न वसिष्ठजीप्रति॥ हेगुरुजी सो चूडाला रानी आत्मज्ञानकी महा
सिद्ध योगिनी है तिसके बोधन करणेतेभी राजा बोधकों नही प्राप्त भया तो और कोई और किसीने
कैसें बोधन करणाहै ७५४ श्रीवसिष्ठजीश्रीरामजीप्रतिकहतेहैं। हेरामजी उपदेश का यही क
मरहै क्या जो व्यवस्था मात्र कहनी शास्त्र द्वार करके आत्मज्ञान का मार्ग कहना और ज्ञान हो
नेका कारण शिष्यकी केवल शुद्ध बुद्धिहै जो बुद्धि निर्मल नही होवे तो ज्ञान नही होता है
हेरामजी विंध्याचल पर्वतकी छायामें कोई एक महाकृपण किराडथा तिसकी एक कोडी
मार्गमें गिर पड़ी सो किराड़ तिस कोड़ीकों तीन दिन ढूंढता भया तिसकों मार्गमें चिंतामणि
हाथ लगी तिसकी संपूर्ण कृपणता जाती रही तैसेंही गुरु मुखसें शास्त्रका उपदेश श्रवण
करणेतें भावनातें एकाग्र होनेतें आत्मज्ञानभी प्राप्त होताहै ५५ हेरामजी पदार्थ कछु और

प्राप्त करतीहै जो नही होवे तो भी तत्ववेत्ता को भी मूढकी न्याईं दुःखकों प्राप्त करतीहै यह अ पनी भावना विषकों अमृत करतीहै अमृतको बिष करतीहै ४८ हेरामजी यह देह सत्यभाव ना करके देखा होवे तो फेर देहकों करताहै श्रोर असत्य भावना करके देखा होवे तो आकाश की न्याईं शून्य होजाताहै ४९ हेरामजी सो रानी चूडाला अपने भर्त्ता राजा शिखिध्वजकों संपूर्ण यत्न करके बहुत करके आत्मज्ञान रूपी अमृत प्राप्त होनेकों बोधन करती भई तदभी राजा बोधकों नही प्राप्त होता भया ५० सो राजा चूडालाकों आत्मज्ञानकी युक्ति कहती कों ऐसें जा नता भया यह मेरी रानी काम भोगकी कलामें चतुरहै जो कहती है तिस ज्ञानमें मूढ है श्रोर बाला है स्त्रीयों कों ज्ञान नही होताहै ऐसे केवल जानता भया श्रोर आत्मज्ञान करके सिद्ध भईकों नही जानता भया ५१ हेरामजी सो चूडाला आप सिद्ध भईहै परंतु राजाकों आ त्मज्ञान की सिद्धि नही भई देख करके मनमें विश्रांतिकों नही प्राप्त होती भई श्रोर अधिकार

सें हरीड़ां भक्षण करणेतें स्वभाव करके मलकों पचाय करके उदरतें निकाश देतीहे तेसें प्रा
णायाम करके मात्रा लवपल घड़ी आदिक मंत्रोंके आवर्त्तन करणेतें व्याधी शरीरतें निकस जा
तीहे ४३ हेरामजी भावनाके वशतें और श्रद्धा करके उत्तम क्रिया करके साधुजनों की सेवा क
रके मन निर्मल जानीदा है जेसें कसोटीमें सुवर्ण शुद्ध जानीदाहे ४४ हेरामजी मन शुद्ध भ
ये संते देहमें आनंद वधताहे जैसें पूर्ण चंद्रमा उदय भये संते मंदिरमें निर्मलता शोभती
हे ४५ हेरामजी मनकी शुद्धिते मंत्र क्रम करके प्राण पवन यथा योग्य देहमें चलते हैं
और भोजन किये सभही अन्नोंको पचाइ देतेहैं अन्न पचनेतें व्याधि नष्ट होतीहे ४६ हेराम
जी यह शरीरादिक आत्मा नहीहे इहमें जो आत्म भावना हे सोही हृदयमें अज्ञानका अंध
कारहे सो अज्ञान रूपी अंधकार है सो सूर्य चंद्रमा अग्निके प्रकाशते दूर करण दुःख करके
भी नही बनता हे ४७ हेरामजी सत्तारूप आत्माकी दृढभावना जोहे सो मूर्खोंको भी आनंद को

भी चला जाताहै तैसें बहुत वेगकी गति करके व्याकुल होताहै तब तिसके देहके प्राण प
वन क्षोभको प्राप्त भये तो अपने समान चलनेके मार्गको त्याग उलटे चलनेहैं जैसें हाथी
के प्रवेश करणेतें नदी के किनारेमों जल चढ़ आवतेहैं ३८ प्राणके उलटे चलनेतें देह
की नाड़ी उलट जातीहै जैसें राजाकी व्याकुलता करके लोकमों जातिके धर्म उलटे होजातेहैं ३९
हे रामजी इस देहमों कोई नाड़ीयां प्राण पवन करके पूर्ण होतीहै कोई खाली होतीहै प्राण
बिगड़नेमों नाड़ी बिगड़ जातीहै जैसें वर्षा ऋतुमों नदियां बिगड़ जातियांहैं ४० हे रामजी प्रा
णका संचार बिगड़नेतें अन्न विकार करके कम पचेहै कबहूं नहीं पचेहै कबहूं बहुत पचे
है इस प्रकार करके अन्न खाया हुवा देहमों दोष करणे वाला होवेहै ४१ हे रामजी इस प्रका
र करके मानसी चिंता रूपी आधितें व्याधी होवेहै तिसतें आधी के नाशतें व्याधीका नाश
होवेहै और जैसें मंत्रों करके व्याधि नष्ट होवेहै तिस क्रमको तुम सुनो ४२ हे रामजी जे

फूडीदा है और सद्गुरु सेवातें और कृपातें कुछ और पदार्थ प्राप्त होताहै जैसें किराड़ ए
क कौड़ीकों ढूडताथा सो चिंतामणिकों प्राप्त होता भया ५६ हे रामजी सो राजा शिखिध्व
ज तप और तीर्थ दान करणेतें सुखकों नही प्राप्त भया सो एक समयमों पास बैठी रानी
चूडाला कों वचन कहता भया ५७ राजा शिखिध्वजका वचन रानी चूडाला प्रति॥ हे
प्रिये राजमैंने चिरकाल भोगिया है और ऐश्वर्य कियां संपदाभी चिरकालतक भोगियां
हैं अब मैं वैराग्य करके युक्त भयाहूं बनकों जाताहूं ५८ हे रानी बनमों गयेतें मुनिज
नोंकों भोग सुखभी वश नही करते हैं और दुःखभी वश नही करते हैं आपदा और सं
पदाभी वश नही करतीहै देश भंग और पदार्थोंकी हानी का मोह और युद्धमों प्राणियों
का क्षय बन वास करणे वालेकों दुःख नही करतेहैं तिसतें राज्यसेंभी बन वास करणे
वालेकों अधिक सुखकों मैं जानताहूं ५९ हे सुंदरी जैसें एकांत बन रहणे वालेकों सुख

नि- सा- ४२

होताहै जैसा सुख स्वर्गमें चंद्र मंडलमें ब्रह्माविष्णु रुद्र लोकोंमें सुख नही होताहै ६१ हे रानी जो तूं मेरा प्रिय चाहतीहै तो मेरे बन जानेमें विघ्नको नही करणे योग्यहैं जिसकार णतें उत्तम कुलकी इस्त्रियां भर्त्ताके मनोरथ करणेमें स्वप्नेमेंभी विघन नही करतीहैं ६२ रानी चूडाला राजा शिखिध्वज प्रति कहतीहै ॥हेनाथ योग्य काल में किया कार्य शोभता है अयोग्य कालमें किया नही शोभताहै जैसें बसंत ऋतुमें वृक्षों कों पुष्प शोभा करतेहैं औ र शर्द ऋतुमें फल शोभा करतेहैं ६३ तिसतें हे राजन् वृद्धा वस्था करके जर्जर देह वाले पुरुषोंको बन बास शोभता है और तुम्हारे सिरीषे युवा पुरुषोंको बन बास करणा मेरेको यो ग्यता बिना नही रुचताहै ६४ हेराजन् अब तेरेको प्रजापालने का समय है बन जानेंका स मय नहीहै अब तूं राजा होइ करके प्रजाको पालना छोड करके बनकों जावेगा तो राजा बि ना राज्यमें पाप होनेतें सो पापतेरेकों प्राप्त होवेगा ६५ हेराजा जो राजा समयकी मर्य्यादा

को उलंघन करके वर्त्तमान होवे तिसको प्रजा और मंत्री सेवक रोक लेते हैं अयोग्य कार्य को नहीं करणे देते हैं ९६ शिखिध्वजराजाका वचन रानी चूडाला प्रति॥ हे रानी अब तेरा क हना होइ रहा अब मेरे चाहे कार्य में विघ्न मत करे मेरेको अब दूर एकांत बनमें गये को समझ ९७ श्रीवसिष्ठजीश्रीरामजीप्रतिकहते हैं॥ हे रामजी एक दिनमें अर्धरात्रिमें शय्या प र सोइ गई चूडालाको त्याग करके में चौरोंको मारनेको जाताहूं ऐसें पहरे वाले चाकरोंको कह करके हे राज्य लक्ष्मी तेरेको मेरी नमस्कार होवे इस प्रकार राज्यलक्ष्मीको भी त्याग करके बनको चला जाताभया ९८ हे रामजी तिसतें उपरांत चूडाला रानी जाग्रत भई राजा को नहीं देखती भई चाकरोंसें भी खबर राजाकी नहीं पाई तब योग सिद्धि करके आकाश में चडकरके एकाकी बनमें जाते राजाको ध्यान करके देखती भई आप नहीं गई ९९ सोरा जाभी अपना द्वादश राजमंडलको त्याग करके जहां आपको कोई नहीं जाने तहां जाइ करके

एक कुटियामें निवास करता भया ७० हे रामजी सो राजा तहां बैठ करके नियम करताभया
दिनके प्रथम पहरमें संध्याजपकों करता भया दूसरेमें पुष्पोंका संग्रह करके देवता पूजन
करताभया तीसरे पहरमें फलमूलका भोजन करता भया चौथे पहरमें सत्संग शास्त्र श्रव
णकों करताभया सायंकालमें संध्या जप करता भया इस प्रकारका सात्विक तप करते राजा
कों अष्टादश वर्ष काल होताभया तिसके पीछे चूडाला राज्यको पालन करतीभई ७१ हे रामजी ति
सतें उपरांत चूडाला रानी अपने पतिकों निष्काम सात्विक तप करणेतें निर्विकार शुद्ध अंतःकरण
भयेकों ध्यान करके जानती भई ७२ तिसकों आत्मज्ञान का उपदेश करणेकों तिसके पास जाती
भई मुनिपुत्रका स्वरूप धार करके राजाके आश्रम में प्राप्तभई राजा तिसकों देख करके आदर
सत्कारकों करता भया ७३ फेर राजा नाम गोत्रकों पूछता भया हे मुनिपुत्र तेरा नाम और जन्म
गोत्र क्याहै ऐसा सुन करके मुनिपुत्र रूपका अपना जन्म नाम गोत्रकों कहती भई ७४ हे

राजन् एक समयमें सुमेरु पर्वतमें नारदजी जाते भये तहां देवतोंकी गंगामें रंभातिलो
त्तमादि अप्सरा स्नान करतीथी तिन्हके वस्त्र रहित देहोंको देखते नारदजी का वीर्य पातहो
ता भया सो वीर्य नारदजीने फटिकके कमंडलु में गुप्त किया तिससे मेरा जन्म भया है
पिता नारद हो और पितामह मेरा ब्रह्माहै तिन्ह दोनोंने प्रीति करके वेद शास्त्र सहित
संपूर्ण ज्ञान दिया और कुंभ मेरा नाम किया ७५ जो तुम पूछो जो नारदजी सदा ब्रह्मचारी हैं
तिनका वीर्य पात कैसे भया तो श्रवण करो परमात्मा का स्वरूप सदानिर्मल है और सदासत्व
है एक लव मात्रा करकेभी विस्मरण होजावे तोभी तिसमें विकार सहित विश्व उदयभया भासताहै
जैसे वर्षाऋतुमें बादल उदय होतेहैं ७६ शिखिध्वजका वचन। हे मुनिपुत्र आजसें महात्मा सतजनोंकी
गिनतीमें आयाहूं अमृतके प्रवाह सरीषे वचन कहने वाले तेरे साथ जो मेरा समागम भयाहै ७७ हे मुनिपुत्र
जैसे जगतमें राज्य लाभादिक उत्तम भावहैं सो तैसें आनंद को नही कर्तेहैं जैसें सतजनोंका समागम आनंद

करताहै ७८ तिसतें उपरांत चूडालानें मुनिपुत्रके स्वरूप करके प्रश्न किया॰ तूं कोन है किस वास्ते तुम्हारा तपहै ऐसा प्रश्न किये संते राजा शिखिध्वज कहता है ७९ हे मुनिपुत्र तूं सर्वमर्मे संसर्गी तेरेकों विदितहै तदभी तेरी आज्ञातें मैं अपने वृत्तांतकों कहता हूं मैं राजा शिखिध्वज हूं राज्यकों त्याग करके इहां बनमों चला आयाहूं हे तत्ववेत्तानी तेरे दर्शनतें मैं अति प्रसन्न भयाहूं जन्मसें अब कृतार्थ भयाहूं ८० हेतत्वज्ञ इह संसार में बार बार सुख होतेहैं और बार बार जन्म मरण होतेहैं तिसकारणतें मैं बहुत संतापकों प्राप्त भयाहूं बन में आयाहूं ८१ हे ब्राह्मनू मैं चारो दिशामों फिर करके भ्रमाहूं मेरेकों चित्तकी विश्रांति नही प्राप्त होतीहै जैसें निर्धन पुरुष निधि प्राप्त भई बिना चारोदिशा भ्रम करके विश्रांत नही होताहै ८२ हेमुनिपुत्र चित्तकी विश्रांति वास्ते बनमों आइ करके यह अखंड नियम कियाकों मैं करता भी हूं तब भी दुःख समूह कों प्राप्त होताहूं मेरेकों अमृत भी विष रूप भया है ८३ चूडालारानीकावचन

हेराजन् में पहिलें अपने पितामह ब्रह्माजी कों पूछता भया हे पितामह क्रिया और ज्ञा
नमें जौंनसा मुख्य कल्याणकों करे तिस एककों निश्चय करके कहो ८४ ब्रह्माजीकाव
चन। हेपुत्र ज्ञानही परम कल्याणका साधन है तिस करके मोक्ष होजावे तो कर्म इथाहै
कर्म जो कहाहै सो ज्ञान रहित पुरुषोंकों काल क्षेप वास्ते कहाहै ८५ हेपुत्र जिन्हकों ज्ञान
दृष्टि नही भईहै तिनकों कर्मही आश्रयहै जैसें जिस पुरुषके पास शाल दुशाला नहीहै
सो अपने कंबल वस्त्रकों नही त्यागताहै उसकों कंबलही दुशालाहै तैसें जिसकों ज्ञान न
ही भयाहै तिसकों कर्म सेही कल्याणहै ८६ जिसकी सर्वत्र ब्रह्मभावनातें मूर्छना दूर भईहै
तिसकों वासना उदय नही होतीहै जैसें चतुर पुरुषकों मारवाड देशमें जल समुद्रकी भाव
ना नही होतीहै ८७ चूडालारानीकावचन। हेराजन् ज्ञानही परम कल्याणकों देताहै ऐसें म
हात्मा ब्रह्मादिक कहतेहैं॥ तूं क्यों अज्ञान वान बनाहै कहताहैं इहो हमारा कमंडलहै

यहां देउहै यहां हमारा आसनहै इस प्रकार करके अनर्थके विलासमों क्यों आसक्त भया
है ८८ हेराजन् तूं ऐसा विचार क्यों नही करताहै ऐसा कैसा मैं कौनहूं यह संसार दुःख कै
सें भयाहै और शांत कैसें होवेगा ऐसे विचार बिना मूढ जैसा कैसें रहाहै ८९ यह बंध कैसेंहै
और मोक्ष कैसे होताहै ऐसें प्रश्नोंको करना तूं तत्ववेत्ता पुरुषोंके चरणोंकी सेवा करना क्यों
नही शोभाकों लेताहै ९० हे राजन् जिस युक्ति करके मुक्ति होतीहै सो युक्ति सम दृष्टि वालेसं
तजनोंकी सेवा करके और प्रश्न करणे करके प्राप्ति होतीहै ९१ राजाशिखिध्वज आनंदके अ
स्रूंआ छोडके कहताहै हे मुनि पुत्र आज महा आनंद भयाहै तेने मेरेकों चिरकालसे बोध
न कियाहै ऐसीही मेरेकों अपने घरमों रानी चूडालाने कहाहै परंतु मैने इसी ज्ञान करके
तिसका कहा नही माना मैं मूर्खताते तिसकोंभी त्याग करके चला आयाहूं ९२ हेमुनि पु
त्र तूं मेरा गुरुहै तूं मेरा पिताहै तूं मेरा मित्रहै हे सुंदर मुख वाले मैं तेरा शिष्य हूं तेरे॰

चरणोंकों नमस्कार करताहूं कृपा करो जो कछु उत्तम जानतेहो जिसके जाननेमों फेर शोचना
नही बने जिस करके मैं आनंदकों प्राप्त होवें तिस ब्रह्मका उपदेश मेरेकों कर ९२ हे मुनिपुत्र श
स्त्रादिकों के ज्ञान अनेकहैं आपसमों भिन्नहैं जौंनसा ज्ञानोंमों परम ज्ञानहै और संसारतें तारणेहा
राहै सो कौंनसा ज्ञानहै तिसकों कहो ९३ चूडालाका वचन। हे राजन् जो तेने मेरा वचन मा
नना होवे तो मैं कहूं जैसा ज्ञान मेरेकों है तैसा मैं कहता हूं और जैसें वृक्षके ऊपर काकबो
लेहै वृक्षकों काक भाषाका कोई ज्ञान नहीहै तैसें मेरा कहना वृथा नही होवे तो मैं कहूं ९४
हे राजन् आपही प्रश्न किया और कहने वालेने वचन कहा श्रवण करणे वाला वचनकों न
ही ग्रहण करे तो सो कहने वालेकियां उत्तम बानियां निष्फल होतीहै जैसें अंधेरेमों नेत्रों
कियां दृष्टि निष्फ होतीहै ९५ शिखिध्वजका वचन। हे ब्रह्मन् जो तूं कहैंगा सो मैने वेदकी
विधि वाक्यकी न्याई विचार बिनाही तुरत ग्रहण करणा है यह मेरा वचन सत्यहै ९६

हुडालाकावचन।हेराजन् जैसें बालक पिताके वचनकों निमित्त कारणकों विचारणे बिना
ही ग्रहण करताहै तैसें तूं भी मेरे वचनकों ग्रहण कर ९७ श्रवण करणे उपरांत बुद्धि क
रके शुभ ज्ञान करके भावनामें करजैसें संगीतके श्रवणकों त्याग करके हितकारी मित्रके
वचनकों श्रवण करतेहैं तैसें और प्रसंग वार्त्ता श्रवणकों त्याग करके सुन ९८ हेराजन् में
तेरे प्रति कथाके क्रम करके वचनकों कहताहूं कैसाहै मेरे चरित्र जैसाहै जैसें मैंने इसा
करके बोध भयाहै और उदय होती जो बुद्धिहै तिसकों विचारणे करके चिरकाल करके उ
त्त बोध करणे हाराहै और संसारके भय समुद्रकों तुरत तारणे हाराहै महा बोध वाली
बुद्धिकों आनंद करणे हाराहै ९९ हेराजन् कोई एक पुरुष द्रव्य उपार्जन में महा चतुर
था और आत्मज्ञानसें रहितथा तिस पुरुषकों चिंतामणि सिद्ध करणें वाले प्रसन्न भये सं
ते किसी सिद्धने चिंतामणि दई कहा भाई यह चिंतामणि प्राणांत कष्ट करके महा यत्न

करके सिद्ध होने वालाहै इसकों सो पुरुष लेकरके विश्वास नही करता भया वया जानिये शिताकी मणि सिद्ध होवेगी नही ऐसा विचारते संते सो मणि तिसके हाथते उडगई फे र तिस वास्ते महा यत्न करणे लगा तब लोकोंने हास करके कांचकी मणि दई कहा यह चिंतामणिहै सो तिसकों लेकरके अपने घरसें संपूर्ण द्रव्यादिक लुटाइ देताभया और झूठी मणीम्याइ करके और अपने द्रव्यके नाशको प्राप्तभया तब तिसकों महा आपदा प्रा प्तभई ८० हे राजन् जौनसी आपदा अपनी मूर्खतातें होतीहैं तिन्हके तुल्य जरामरणादि क दुःख नही होतेहैं तिसें संपूर्ण आपदाकी शिरोमणि आपनी मूर्खता सबके शिर प र चढीहै जैसे संपूर्ण मनुष्योंके शिर उपर काले केशोंका भार सदाही चढा रहताहै ८१ हे राजन् यह एक और दृष्टांत मेरा कहा सुन कैसाहै महा रमणी कहे बुद्धिकों उत्तम बो ध करणे हाराहै और मैने आपने दृष्टांतके समान अनुभव कियाहै ८२ एक विंध्याचल

वै· सा· ८२

की झाड़ीमें महागजराज था तिसकों पकड़ने वाले एक महावत यत्न करताभया तालवृ
क्षके ऊपर चढ़ करके संगलीयों के जालकों पसारता भया हाथीने संगलियां तोर दीनी वज्र
की न्याई दांतों करके तालवृक्ष भी तोड़दिया फेर महावतको भी मारने लगा फेर सो गजराज
दया करके महावतकों अपने शिरपर चढाइ करके जहां महावतकी इच्छालेजाने कीथी त
हां गया तिस महावतने बड़े टोपमें गेर करके महा दुःख देने लगा सो हाथी अपनी मूर्खता
करके आपही महा दुःखकों भोगता भया ८३ तिसतें हेराजन् जो संपूर्ण शास्त्रार्थमें कुशल
पुरुषथा धनकी उपार्जनको करताथा सो तूं है और चिंतामणि क्याहै जो तेने सर्वत्याग किया
है सो कैसा है संपूर्ण दुःखोंकें अंत करणे हाराहै अबतूं शुद्ध बुद्धी वाला भयाहै ८४ हेरा
जन् जो पुरुष शुद्ध सर्व त्याग करके सर्व सार मोक्षकों सिद्ध नही करताहै तिसकों सर्व
त्याग करके और चिंतामणी करके क्या प्राप्त होवेगा ८५ हेराजन् तेने पुत्र स्त्री धन बांधव

यो· वा·
नि·
·सा·
५२

उक्त राज्यकों त्यागियाहै तेरेकों सर्व त्याग भयाहै तिसमों केवल अहंकार शेष बाकी र
हाहै अब तूं तिस अहंमति कोभी त्यागदे ६ जो कोई सुखे करके सिद्ध होने हारे और अ
नाशातें रहित ऐसे अखंड आत्मा नंदकों त्याग करके दुःख करके साधने योग्य तुच्छ सु
खकों साधने चाहताहै सो आत्म घातीहै और महा दुष्ट कहाहै ७ हेराजन् तूं महा दुःखों
करके भरे हुए ऐसे राज्य बंधनसें मुक्त भयाहै अब अपनी अहंमति करके बनवास रू
पी दृढ बंधन करके बद्ध भयाहै ८ हेराजन् अब तेरेकों शीत वातादि सहनेकी हनी चिं
ता भईहै तिसतें जो ज्ञान रहित पुरुषहैं तिन्हकों संसार दुःखोंके बंधनसें भी बनवास म
हा दुःख कों देणे हाराहै ९ हेराजन् तूं बनवास करके अपनेमों ऐसा जानताहै कि मेरेकों
चिंतामणी प्राप्त भयाहै मेरे जाननेमों तेरेकों एकस्फटिक का खंडभी नही प्राप्त भया है १०
हेराजन् जोंनसा विंध्याचलकी झाडीमों हाथीहै सो संसारमों तूं है जो तिसके दो दांतहैं सो

सो ज्ञान वैराग्यहैं जौंनसा हाथीकों पकडने चाहता महावनहै सो तो अज्ञानहै जो महावन ने
तिस हाथीके ऊपर आरोहण कियाहै सो अज्ञानने तेरेकों आक्रांत करलिया है सो खडे टेये
में गेर करके हाथीकों पीडा दईहै सोही अज्ञान करके संसार दुःख तेरेकों भयेहैं सो हाथीम
हा बल वानहै और निर्बल महावतनें खेंच करके हाथी कों दुःखसे भी दुःखकी दशाकों
प्राप्त कियाहै सो तेरेकों मूर्खत्वनें महा दुःखमों प्राप्त कियाहै जो महावतनें हाथीकों व
ज्र बरोबर दृढ संगलीयों करके बांधाहै सो तेरेकोंही अज्ञाननें आशा पाश करके बांधा
है ११ हेराजन् आशा जो है सो लोहेकी संगली ते भी वडी दृढहै तिसते लोहेकी संगली॰
किसी काल करके टूट जावे आशा रूपी संगली तृष्णा करके दृढ बांधनी है १२ हेराजन्
जो हाथी संगली तोड देता भया सो तैंने भोगोंकी खान रूपी निस कंटक राज्य बंधनकों
त्यागियाहै जो सुख करके हाथीनें संगलीयां तोडियांहैं सो तैंनें भोगोंकी आशा को॰

त्यागन कियाहै जो हाथीनें महावतकों वरतोसें पकड़ करके हथिनीमें गिरायाहै सो तेंनें रा
ज्य त्यागने करके अज्ञान दूर कियाहै जेसी हाथीने तालदृक्ष कों जोर करके कंपाय मान कि
याहै तेसें तेनें भोगाशाकी त्यागन करके अज्ञानको शिथिल कियाहै ८४ हेराजन् जब विवे
की पुरुष भोगोंको त्याग करके स्थित होताहै तब अज्ञान कंपाय मान होताहै जैसें दृक्षके
छेदनेमें तिस दृक्षका पिशाच कंपायमान होताहै ८५ जब तूं बनकों आया तब तेंने अ
ज्ञानकों जीत लियाहै फेर बन वास के अभिमान करके उदय होने लगाहै तिसकों मनते
अहंकार को त्याग रूपी खड्ग करके छेदन कर ८६ जबसें तूं बनवास की साधनामें आस
क्त भयाहैं तबसें दोये रूपी मोहमों गिराहैं ८७ हेराजन् सो रानी तेरी चूडालया कैसी है
राजनीत कों जानने हारी और परमतत्व कों जानने हारी जो जाननेहारे कों कहाथा सो तेनें
कों अंगीकार नही किया ८८ सोचूडाला तत्वज्ञानियों मों श्रेष्ठहै सो जो कछु करती है॥

अरु जो कुछ कहती है सो सत्यहै आदरतें करणे योग्यहै १९ जो तैने तिसका वचन नहीं
किया तो तेरा सर्व त्याग करणा अछीनता नही भयाहै सभ कुछ तेरा कियाझूठ है ८२० रा
जाकावचन। मैंनें राज्य त्यागा है घर त्यागाहै सो देश त्यागाहै इस्त्रीयां त्यागी हैं भोग त्यागे
हैं मेरा सर्व त्याग कैसें नही बना है २१ चूडालाकावचन। हेराजन् धन और घर और राज्य
और पृथिवी राजछत्र और बांधव यह तेरे साथ नही हैं तिसतें सो तेरे नहीहैं जो कुछ तेरा
है सो तैने त्यागाहै सर्व त्याग तेरे कों कहांते भयाहै २२ हेराजन् जो त्यागना है सो तैने नही
ही त्यागिया है तिसकों त्यागे तो बाकी शेष तूं आप रहेगा तो शोक रहित होवेंगा ८२३ रा
जाकावचन। राज्य तो मेरा नही क्यों सो मेरेकों बनमों नहीहै अब बनमों पर्वत वृक्षादिक
मेरे पासहैं तिन्हकों भी मैं त्यागताहूं ८२४ चूडालाकावचन। पर्वत की छाया और बन औ
र कंदरा और वृक्ष और स्थान यह तेरे नहीहैं क्यों यह तेरेसें आगें बनेहैं तिसतें तेरे साथ

ने·
सा·
१०

यह नही हैं तेने सर्वत्याग कहातें कियाहै २५ राजाकावचन। जो वन पर्वतादिक मेरे न
हीहै यह आश्रमही मेरा सभ कुछ है अरु केसा है वाम्रोडीस्थान कुटिया संयुक्त है इ
सकों भी मैं त्याग करता हूं २६ रानीकावचन। हे राजन् इह वाम्रोडी स्थान कुटियादिक १
भी तेरे साथ नही हैं तिसतें यह तेरे नहीहैं सर्वत्यागतेनें केसें किया है २७ राजाकावचन·
जो कुटिया भी मेरी नही तो कमंडुलु और पूजाके वर्तन और कंथा भूर्ज वस्त्र यह मेरे हैं
इनहुकों भी में त्याग देता हूं २८ वसिष्टजीकावच। हेरामजी शिखिध्वज ऐसा कहि करके मोकु
छ कमंडुलु कंथादिक बनवास की सामग्रीथी तिसकों अग्निमों जलाय देनाभया २९ राजाकाव
चन। अब में बन वास की वासनाकों त्याग करके सर्व त्यागी भयाहूं हे देवपुत्र अब मेरेकों आ
नंद भयाहै तेनें यह चिरकाल में बोध करायाहै ३० जेसें जेसें यह बंधनके पदार्थ घटने जाते
हैं तेसें तेसें मेरा मन परम आनंदकों प्राप्त होनाहै अब शांत मन भयाहूं निर्वाणकों प्राप्त भया हूं॥

सम वंध मेरे क्षयकों प्राप्तभये हैं अब मेंनें सर्वत्याग कियाहै २१ कुंभ नामामुनि पुत्र के रूपः
करके चूडाला कहती है हेराजन् शिखिध्वज तूं कहता है मैंने सर्व त्याग किया है ऐसें मत
कहो तेनें कुछ नही त्यागाहै जो त्यागना है सो नही त्यागा है सर्व त्यागके आनंदके स्वरूपकों
मत दिखामें २२ राजा कहताहै।हेमुनिपुत्र यह देह इंद्रियारूपी सर्व समूहका निवासहै औ
र रक्त मांस अस्थीओंका स्वरूप बनाहै सर्वत्याग मों यह शेष रहाहै तिसतें उठ करके निशंक
होय करके बडे गंभीर ठौरमें गेर करके सर्वत्यागी होताहै २३ वसिष्ठजी कहतेहैं।हेरामजी
राजा ऐसा कह करके उठ करके बडे गर्तमों पड़ने वाला खडा भया वेगतें जब पर्वत सें गिरने
लगा २४ तब कुंभकवचन कहताभया।हेराजन् देहने तेरा अपराध नही किया है इसकों
अपराध बिना क्यों गेरता है तूं अज्ञानी है जैसें बडा बलद निरापराध बछेकों मारताहै देहत्या
गतें सर्वत्याग नही बनताहै २५ जिसने यह देह लाभकों प्राप्त करीदा है जैसे मतवारे हाथीने

हुआ कंपित करीदाहै तिस पापीकों जो तूं त्यागेगा तो महा त्यागी बनेगा तिसके त्यागनेमें देहा
दिकों का त्याग आपही होजावेगा तिसकों नही त्यागनेते देह फेर फेर नष्ट और नयेआउतपत
होवेगा ३६ राजाका प्रश्न। हे ॐभक यह किस करके चलायमान है और जन्म कर्मोंका कौन बी
जहै तिसकों तुम कहो। ३७ जो सभ दुःखोंका मूलहै जो सर्व प्रकार करके सर्व बंध रूप बना
है जिसकों सर्व संसार के कारण रूप भये संते सर्वत्याग नही बनताहै सोही सर्व स्वहै जि
सके त्यागमें सर्वत्याग करा जाताहै तिसकों मेरे प्रति कहो ३८ सर्व क्या है सर्वगत क्या
है सर्वसर्वदा प्रकार करके त्यागने योग्य क्या है सो सर्व करके क्या कहीदा है हे तत्वज्ञा
नीओंमें श्रेष्ठ तूं मेरे प्रति तिसकों कहो ३९ ॐभक कहताहै। हे राजन् सो सर्वगत रूपहै जी
व प्राणादि नाम करके प्रसिद्धहै सोना जड़है ना नही जड़है सो चित्त स्वरूप करके कहा
है ४. हे राजन् सभका बीज मन है जैसें वृक्षका वृक्षही बीज होताहै सभका बीज मनके

त्यागनेमों सर्व त्याग होताहै ४१ हे राजन् चित्तके त्यागनमों एक वार संसर्ग हेतका त्या
गा· ग होता है बाकी शेष शांतरूप एक निर्मल चैतन्य रहताहै ४२ हे राजन् सर्व त्याग कारण
परमानंद है तिस बिना संसर्ग दारुण दुःखहै ऐसा वचन अंगीकार करके जो चाहै सो कर ४३
हे महाराज सर्वत्याग संसर्ग संपदाका आश्रयहै यही लोकमों प्रकट है सो पुरुष कुछ नही
मांगे है लोक तिसकों सर्वस्व देतेहैं ४४ हे महाराज चित्तका स्वरूप वासनाकोही जानों चित्त
शब्द वासना का नाम भेद करकेहै तिसका त्यागना अत्यंत सुखाला है नेत्रके मीचनेतें भी सु
खाला है राज्यतेभी अधिक आनंद करताहै पुष्पतें भी सुंदर है ४५ हे राजन् मूर्खकों तो म
नका त्याग महा असाध्य है जैसें निर्धन पुरुषकों चक्रवर्ती राज्य असाध्य है और तृण
कों सुमेरु बनना असाध्यहै ४६ हे राजन् जो पुरुष मनकों कहींभी आधान नही करता
है अनेक प्रकारके कुतर्कोके वादकों शांत करके स्थित रहाहै सो पुरुष देह करके अना

ते· है तोभी तिसकी चित्त रूपी लता छिन्न होजाती है ४८ हेराजन् मैं कौन हूं मेरा क्या स्व
सा· रूप है इस प्रकार करके अपने स्वरूप का जो विचार करणेमें चित्त रूपी दुष्ट वृक्षके द
रि. ग्ध करणेकों अग्नि रूपहै ४९ राजाकावचन॥ हे कुंभ चित्त रूपी वृक्षका अहंभाव मूल मैं
ने जाना है तिसकों मैं त्याग करणे नही जानता हूं जैसें जैसें त्याग करता हूं तैसें तै
सें फेर आइ प्राप्त होताहै ४९ कुंभकावचन हेराजन् कारणतें कार्य होता है और अ
हंभावतें संसार का अंकुर होताहै इसकारण कों ढूंड करके मेरे प्रति कहो ५० राजा
कावचन॥ हेमुनि अहंभाव महा दोषहै तिसके कारणकों मैं जानता हूं क्या इसका सं
वेद नहीं कारण है परंतु जैसें सो अहंभाव शांत होवे तिस उपायकों मेरे प्रतिकहो ५१
कुंभकावचन॥ हेराजन् तूं कारणकों जानता है तो अहंभाव का स्थान कहो तदसें
कारण और नही कारण कों सभ कहताहूं ५२ राजाकावचन॥ चेतने योग्य और चेतन

कारणोंका स्वरूप जानने योग्य और जाननेका स्वरूप तिन्हका कारण पदार्थ सत्ताहै ति
समें देहादिकका कारण है देहादिकों करके अहंभाव का संवेदन है ५५ कुंभकावच
न॥ हे राजन् अहंभाव के संवेदन का कारण देहादिक पदार्थोंकी सत्ताहै तो देहादिक
पदार्थोंकी वस्तु सत्ताको असत्य करके फेर तेरा अहंभावका संवेदन किसमें स्थित है ५६
राजाकावचन॥ हे मुने जिसका स्वरूप और क्रियादिकल्पना प्रत्यक्ष दृष्टि होतीहै सो देहा
दिक असत्य रूप कैसेहै जैसे सूर्यादिकों का प्रकाश प्रत्यक्षहै तिसको अंधकार कहना
नही बनताहै ५७ जिसके हस्त पादादिक अंग प्रत्यक्ष हैं क्रियाके फलके विलास वालाहै
सदा जिसका अनुभव होताहै सो देह सत्यरूपके सें नही है ५८ कुंभकावचन॥ हे राजन्
जिस कार्यका कारण नहीहै सो कार्य यहां कोई नहीहै तिसमें अहंभाव का संवेदन
भ्रम मात्रहै ५९ राजाकावचन॥ हे मुनीश्वर यह शरीर हस्त पादादि संयुक्तहै नित्य ही

प्रत्यक्ष भासित होताहै पिता कारणहै तिस देहको तुम कारण रहित कैसें कहतेहो ८०
कुंभकावचन॥ हेराजन् कारणके अभावतें कार्य नही रहताहै तो तुम्हारे देह कारण तु
म्हारा पिता नही रहाहै शरीर तुम्हारा असत्य क्यों नही भया यह तुम कहो ८१ राजाकावच
न॥ हेमुनीश्वर पिता और पितामह और प्रपितादिक तिन्हका कारण सृष्टि करणेहारा ब्रह्मा
सर्व शरीरोंका कारण क्यों नहीहै ८२ कुंभकावचन॥ हेराजन् जो तुमने सर्व शरीरों का का
रण ब्रह्मा कहाहै सोभी अब प्रत्यक्ष नहीहै तिसके प्रत्यक्ष नही होनेतें शरीरका अभा
व क्यों नही भया सो तुम कहो ८३ हेराजन् कारण जो होताहै सो कार्यका बीज होता
है सो कार्यके साथ होताहै जैसें घटादिकोंके मृत्तिकादिक कारण होते हैं
सो तिनके साथही है जो शरीरका कारणहै सो अनित्यहै तिसके कार्य शरीरादिक अनि
त्यहैं तिससें ब्रह्माभी कथन मात्रहै शरीरकी न्याई अनित्य शरीरका कारण और है सो

कौनहै अविद्या है सो अविद्या ज्ञान करके निवृत्त होतीहै तिसके निवृत्त होनेतें देहादि बंध
सभ निवृत्त होतेहैं ९४ राजाकावचन॥ हेभगवन् मैं अब बोधकों प्राप्त भयाहूं तेने युक्ति करके
युक्त उत्तम वचन कहाहै कारण के अभावतें कर्त्ता भी नहींहै यह सभ ब्रह्मही है ९५
कर्त्ताके अभावतें जगत नहींहै सो जगत किस करके भासताहै और पदार्थोंकों देखने हारा
कौन है इस कारणतें चित्तादिकभी इसके बीज नहींहैं और अहंतादिकभी कोई नहीं हैं ९६ बो
ध होनेतें मैं शुद्ध भयाहूं और बोध प्राप्त भयाहूं और शिव रूप भयाहूं तिसतें मेरेकों मेरी न
मस्कार है मेरेतें परें और कछुभी नहींहै ९७ इस प्रकार करके वस्तु पदार्थ जाननेतें यह स
भ असत्यही भासता है आदभी अंतभी मैंहूं आकाशकी न्याईं शांत भयाहूं ९८ जगतके प
दार्थोंके विभाग दृष्टि और देशकाल और दिशा और संपूर्ण कलाके समूह यह सभही चि
रकाल करके शांत होजाते हैं एक शांतरूप ब्रह्मही अविनाशी है ९९ वसिष्ठजी कहतेहैं॥

हे रामजी सो राजा शिखिध्वज इस प्रकार करके विश्रांतिकों प्राप्त होता भया इत्यात्मा शांत मन होता भया जैसें पवनतें रहित दीपक अचल प्रकाश मान होताहै ७० कुंभकावचन॥ हे राजन् अब तूं अज्ञान रूपी निद्रातें जाग्रत भया है शांत शिवरूप स्थित भयाहै तेरेकों जगतके अस्त होनें सें ओर नही अस्त होनेसें कार्य कोई नहीहै ७१ अब तेरेकों आत्म स्वरूपका प्रकाश भयाहै ओर अनिष्ट पदार्थ सभही नष्ट भये हैं। तिनकी संकल्प रचनातें मुक्त भयाहैं अब तूं जीवन मुक्त भयाहै ७२ राजाकावचन॥हे मुनीश्वर मेरा मोह नष्ट भयाहै ओर आत्म स्वरूपकी स्मृति भईहैं मे तेरे प्रसादतें संदेह रहित भयाहूं ७३ कुंभकावचन॥ हे राजन् यहां जगतही नहीहै तहां अहं ओर त्वं ऐसी भावना वाला संसार कहांहै काहेतें उदय भयाहै ओर कैसाहै ओर किस प्रकार होताहै ७४ यह संसार नाम करके सभही स्थिति रहितहै केवल चित घना मात्ररूप

है जैसे आकाश नील वर्ण वाला भ्रम करके भासताहै ७५ मैराजा हूं ऐसा जो संकल्प
है सो अखंड बंधन वास्तेहै मै कोई नही ऐसा संकल्प निर्मल मोक्ष वास्तेहै ७६ यह वि
श्व केवल नाम मात्र करके कहीदाहै और केवल असत्य रूपहै सो सत्यरूप कैसें होवे
तिसतें यह भ्रम मात्रहै ७७ जो पुरुष दोनों हाथ उठाइ करके आपही कहे मैं शूद्र हूं
सो ब्राह्मण कैसें होवे है तिसतें अपनी संकल्पकी कल्पना करके अपनेकों बंध माना है
सो संकल्प त्यागनेतें निवृत्त होताहै ७८ हेराजन् इच्छा और नही इच्छा यह दोनों बंध
मोक्षकी शक्तीहैं इन्ह करके बंध मोक्ष होते हैं जैसें चंद्रमा अपनी किरणोंके प्रकाश
बिना दृष्ट नही होताहै ७९ तिसतें हे मित्र तेरा कछु नष्ट नही होताहै ना कछु बढता
है तूं आकाश न्याई निर्मल रूपहैं और केवल अनंत रूपहैं ८० श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं
हेरामजी सो शिखिध्वज राजा ऐसा कुंभके वचनकों सत्य जान करके अपनेमों आत्म

वै॰
॰सा॰
६७

तत्वकी भावना करता भया आपही तिसमें क्षणमात्र मगन होताभया ८१ क्षणमात्र निश्चल मन होय करके नेत्रोंकों मूंद लेताभया बानीकों शांत करके मौन धारण करता भया जैसें शिलामें प्रत्यक्ष लिखीभई अंग प्रत्यंग वाली पुतली निश्चल होती है तैसें निश्चल होताभया ८२ हेरामजी तिसतें उपरांत क्षणमात्रतें ध्यानतें जाग्रत भये राजाकों कुंभ कहता भया हेराजन् मै तेरेकों प्रश्न करताहूं तूं इस शुद्ध और विशाल और प्रकाशमान ऐसे आत्मपदमें विश्रांत भयाहै कि नहीं ८३ राजाकहताहै॥ हेभगवान् तेरे प्रसादतें मैनें महती महाऐश्वर्य भूमिका रूपी महा पदवी देखीहै कैसीहै सभके उपर विराजमान है ८४ हेभगवन् जिन्होंनें जानने योग्य तत्ववस्तु जानी है ऐसें महात्मा संतजन तिन्हका सतसंग महा आनंदकों करणें हाराहै अमृत रूपहै और प्रमाण रहितहै और मोक्ष फलकों देनें हाराहै सो कहांतें मिलताहै महा दुर्लभ है सो अब मेरेकों भया

है ८५ जोमैंने जन्मांते निश्चय करके नाम करकेभी पायाहै सो अमृत आज तेरे समागम तें आपही पायाहै ८६ अबमें हठों हूं यह ज्ञान रूपी अमृत मैनें जैसा अब पायाहै तैसा पहिलें कैसें क्यों नही पायाहै जैसा आत्म स्वरूपका आनंद अब स्वादमें आया तैसा पहिले क्यों नही आस्वादन कियाहै ८७ कुंभ कहताहै। हे राजन् जब मन उपशमकों प्राप्त होवे और भोगोंकी इच्छाकों त्यागे संपूर्ण इंद्रियों की वासना रूपी मल परि पक्व होजावें तब सतगुरों के उपदेशकियां उक्तियां चित्तमें स्थित होतीहैं जैसें मल रहित निर्मल श्वेत वस्त्रमें केसरके जलके रंग वाली बूंदा शोभेहैं ८८ हे राजन् आज तूं परिपक्व दोष मल भयाहै आजही ज्ञानकी कथा का श्रोता भयाहै आजही उपदेशके योग्य भयाहै आजही मैनें बोधकों प्राप्त कियाहै ८९ हे राजन् आज तेरे शुभ और अशुभ कर्मोंका संपूर्ण क्षय भयाहै तिसतेंही सतसंगके प्रसंग करके ज्ञानके उपदेशकी सिद्धि तेरेकों भईहै ९०

हेराजन् मैनें आज पर्वमों जाइ करके इंद्रकी सभामों आया हुआ पिता नारद देखना मैं न
हीं जाताहूं इतना कहि करके कुंभ चलागया फेर तीन दिन उपरांत आया और सिंहनाद क
रके समाधीते उठे हुए राजाके पास अंदर प्रवेश करके राजाकों उठाय करके राजाकों साथ
लेकरके और बनकों दोनें चलेगये ८१ सो राजा और कुंभ दोनों मित्र बनमों विचरण करते भ
ये किसी कालमों विभूतिलगाइ करके दिगंबर रहते भये कबही चंदनकालेपन कर्तेहैं कबही नग्नहो
इ रहतेहैं कबही दिव्यवस्त्रोंकोंधारे हैं कबही अनेक रंगके वस्त्र धारेहैं कबही भूर्ज पत्र धा
रतेहैं कबही पुष्पमाला कों धारतेहैं ८२ इसतें उपरांत कुंभ राजाकों कहता भया हे
राजन् मेरेकों दुर्वासा मुनिके आपतें इस्त्री भाव होनाहै ऐसा कहि करके इस्त्री रूपधा
र करके राजाके साथ विवाह करके फेर किसी समयमों राजाकों इंद्र रूप धारण कर
के कहा हेराजा स्वर्गकों चल ८३ तब राजा कहता हेदेव राज मैं स्वर्गके संशर्ग सम्य

चारकों जानताहूं मेरेकों सर्वत्र स्वर्गहै यह स्वर्गादिक भोग अनित्य हैं मैंआत्म विचारके आ॰
नंद करके सर्वत्र स्वर्गसेंभी अधिक आनंदकों भोगता हूं मेरा मन भोगवांछाते रहित भया
है तिसतें मैं सर्वत्र आनंद युक्त रहताहूं ८४ श्रीवसिष्ठजी कहतेहैं॥ हेरामजी इसतें उपरांत
चूडालारानी सर्व शृंगार युक्त आपना स्वरूप प्रत्यक्ष दिखावती भई उह कैसा रूप दिखा॰
वतीभई अपनी मायाके संकल्प सें सुंदर पुरुषकों रचत करती भई उस पुरुषने व्यभिचा
र करके भोगी जब राजाने देखी तो भय भीत होइ करके राजाकों कहती भई ८५ हेराजन् तें
ने वनमें आवनेतें मेरा त्याग कियाहै तिसतें मैं योवनमें कामरूपी अग्निकों सहि नही स
की तिसतें मैंनें यह व्यभिचार कियाहै ८६ हेराजन् मैं अबला हूं ऐसें विचारतें रहित हूं
इस्त्रीहूं इस्त्रियां भर्त्ताका वियोग चिरकाल सहि नही सकती हैं और बालकी न्यांई मूढबु
द्धिहूं तिसतें मैने व्यभिचार रूपी अपराध कियाहै इसकों तूं क्षमा करणे योग्यहैं तूं मेरा

नाथ हैं मे तेरी इस्त्री हूं महात्मा लोकोंमों महत्व का सार क्षमा होतीहै ९७ राजाका वचन॥
हेबाले मेरेमों क्रोध नहीहै जैसें आकाशमों मल नही होता है परंतु व्यभिचार करणे हारी
इस्त्रीका अंगीकार करणेकों साधूलोक निंदा करतेहै तिसतें तेरेकों मैं नही चाहता हूं ९८ अ
च्छा मित्रता करके बनोंमों पहिले की न्यांई रागद्वेष रहित होइ करके इकट्ठे मिलके आनंद॰
से रमण करेंगें ९९ विचारण करते हुवे तब चूडाला मनमों विचार करती भई अहो आज बहु
त आनंद भयाहै अब यह राजा समदृष्टि कों प्राप्त भयाहै और ज्ञानवान भयाहै और रागद्वेष॰
तें रहितभया है अरु क्रोध सेंभी रहित भयाहै और जीवन मुक्त भया है १०० अब इस राजा॰
कों राज्यभोगभी अपने वश नही करेंगे महा सिद्धीभी वश नही करेंगी सुख और दुःख आपदा
और संपदाभी अपने वश नही करेंगी १ इसतें उपरांत चूडाला अपने शुद्ध रूपको दिखाइ॰
करके कहती भई हेराजन् अपने पहिले वृत्तांतकों ध्यान करके देख तब राजा ध्यानकरके

अपने पहिले वृत्तांतकों ध्यान करके देखताभया ९२ राजा चूडालाके प्रसंग करके तत्त्व
भया तिसकों तत्त्वज्ञान संयुक्त शुद्ध स्वरूप जान करके आनंद करके आलिंगन करता भया ९
श्रीवसिष्ठजी कहतेहैं॥ हेरामजी सो राजा आनंदके अश्रुजल छोडनेकरके अंगोंके स्नेहकों प्रका
ट करता हुआ और समागमकी इच्छाकोंभी प्रकट करताहुवा चूडालाके साथ चिरकाल त
क आलिंगन करता भया जैसें नकुल नकुलीके साथ आलिंगन करताहै ९४ हेरामजी ति
न्ह राजा रानीकें आलिंगनमें हर्ष करके जो आनंदका भाव होताभया सो वासुकीकी दो सो र
सिका करके भी कहा नही जाताहै ९५ राजा कहताहै॥ हेकल्याणी अरुंधती अरु इंद्राणी
पार्वती और लक्ष्मी अरु सरस्वती यह सभही तेरे शीलके गुण संपदाके सुंदरता के तुल्य यत्न
करके भी नही होतीहैं ९ जैसें भर्ताकों उत्तम कुलकियां इस्त्रियां प्रेम करके तारण समर्थ हो
तीहैं तैसें शास्त्रोंके अर्थ और गुरुसेवा और मंत्र देवतादिक तारणेकों नही समर्थ होते हैं ९७

हे कल्याणी तैंनें जो मेरे ऊपर उपकार किया है तिसका तेरे प्रति उपकारके उत्तर रूपी
उपकार करणेकों मैं कैसें समर्थ होवां अरु कैसी है तूं इच्छानें रहित है और संसार स
मुद्रकों पार तर गई है ८ चूडालाकहतीहै ॥ हे महाराज तूं फल रहित अशोक कर्मजा
लमें व्याकुलथा ऐसे तोकों देख करके तेरे वास्ते मैं वारंवार दुःखी होती भई ९ हे महा
राज मैं तेरेकों बोध करणेके स्वरूप करके आपनेकों आत्मज्ञान दृढ करणे करके अपना
अर्थ सिद्ध कियाहै तिसनें तूं क्यों इतनी मेरी स्तुती और गौरवकों करताहै १० हे भामिना
य हे महा बुद्धे इस प्रकार मैंने तेरेकों आत्मज्ञान दृढ कियाहै अब कहो तेरेकों क्या कर्त्त
व्य है सो मैं हूं ११ राजाकहताहै ॥ हे प्रिये अब मैं विधिकों नही जानताहूं और निषेधकों
भी नही जानताहूं जो कहेगी तिसकों मैं जान लेवोंगा १२ चूडालाकहतीहै ॥ हे राजन् हम
पृथिवीके आद अंतमें मध्यमें राजेहैं एक मोहकों त्याग करके फेर राजा होवेंगे १३

हे राजन् तिस नगरमें अपनें आसनके ऊपर स्थित होइ करके राज्य कर और संपूर्ण इस्त्रियों
में शिरोमणी मेंही तेरी रानी होतीहूं ८४ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥ सो राजा ऐसा चूडालाका वच
न सुनके हस करके मधुर वचनकों कहता भया ८५ राजाकहताहै॥ हे विशालनेत्रे जो तेरे
कों भोगोंकी इच्छा है तो योग सिद्धिकरके स्वर्गके भोगोंकी संपदा हमारे अधीन नहीहै क्या
हम फेर राज्यकों भोगें स्वर्गमें क्यों निवास नही करेंगे ८६ चूडालाकहतीहै॥ हे राजन् अबरा
ज्य भोगोंमें इच्छा नहीहै और संपदामें भी वांछा नहीहै जैसा कालके स्वभाव करके आजा
वे तिस करकेही मनकी स्थिति करणे चाहती हूं ८७ राजाकहताहै॥ हे विशालनयने॥ तेने
समान बुद्धि करके योग्य वचन कहाहै हमकों अब राज्य करके क्या अर्थहै और अरु त्या
गनेमें भी क्या अर्थहै ८८ वसिष्ठजीकहतेहैं॥ हे रामजी तिसने उपरांत राजा और रानी
अपने संकल्प करकेही कल्पना करके सात समुद्रोंके जल करके पूर्ण रत्न कलसों के

करके आपसमें अभिषेक करके राज्य तिलककों धारण करके मन्नवारे महाराजके अप
र चढ़ करके बड़ी सेना साथ लेकरके अपनी नगरीकों प्राप्त होइ करके सात दिन नग
रमें महा उत्सव करते भये ९ तिसतें उपरांत दश हजार वर्ष राज्य करके राजा शिखिध्वज
चूडालारानी के साथ देहधारणसें विरक्त होताभया ९२॰ सो राजाशिखिध्वज चूडाला रानी
संयुक्त भयतें और चिंतातें रहित होताभया अभिमान और रागद्वेषतें रहित होताभया अपने
वर्णाश्रमधर्मको करता भया भोग भोगता भया परंतु आशक्तितें रहित होताभया इस
प्रकार करके सम दृष्टि होय करके मृत्युकोंभी अपने वश करता भया दशहजार वर्ष रा
ज्यकों करताभया ९२१ हेरामजी सोराजा शिखिध्वज इस प्रकार करके संपूर्ण राजाओंका च
कवर्ती राजा होइ करके चिरकाल पर्यंत राज्यकों पालन करके आत्मस्वरूप मों मगन भ
या परमपदकों प्राप्त होताभया तैसें हेरामजी तुंभी जो समय करके प्राप्तहोवे तिसकार्य

कों करता हुवा शोकादिकसें रहित भया आपही सावधान होइ करके भोगमोक्षकी संप-
दाकों भोग॥इतिशिखिध्वजोपाख्यानं॥श्रीवसिष्टजीकहतेहैं॥हेरामजी जैसें राजाशिखि
ध्वज बोधकों प्राप्त होताभया तैसें बृहस्पतिका पुत्र कचभी तत्वज्ञान करके आत्मरूपके बो
धकों प्राप्त होताभया तिस क्रम करके तूंभी बोधकों प्राप्तहो ९२३ हेरामजी सो कच बाल्या
वस्था जब गई तबही विद्या पढ़के पदोंके पदार्थकों जाननेहारा और संसार तरणेमें स
मर्थ भया बृहस्पति कों वचन कहताभया २४ कचकाप्रश्न॥हेभगवन् हेपितार्जी तुम से
र्वधर्मोंकों जानने हारेहो मेरे प्रति कहो यह संसार नाम पिंजरातें जीवरूपी पंखीनें
कैसें निकलना बनताहै २५ बृहस्पतिजीकावचन॥हेपुत्र यह संसार समुद्रहै इसमें म
हा मोह बड़ा मकरहै सो जीवोंकों संसार समुद्रमों डुबाइ देताहै तिसतें जीवरूपी पंखी
ने सर्वत्याग करणेतें उड करके सुख करके रहीदा है २६ श्रीवसिष्टजीकहतेहैं॥हेरामजी

नि॰ सो कच अपने पिताके वचनकों सुन करके सर्वस्वकों त्याग करके एकांत बनमों चला
ना॰सा॰ जाता भया ९२७ हेरामजी तिस कचका बन जाना बृहस्पति जीकों उत्रशोक कारणेकों न
९७७ ही होता भया जिस कारणतें महात्मा पुरुष संयोगमों तथा वियोगमों समान चित्त होते हैं ९२८
एक वर्षके अनंतर बृहस्पति कचकों देखने वास्ते बनमों जानेभये तब कचने पिताकों प्रश्न
किया हेमहाराज सर्वत्याग कियेतें भी मन मेरा विश्रांत नही भया तद बृहस्पति कहते भ
ये हूंभी तूं सर्वस्वकों त्याग कर तिसतें उपरांत कंथा कमंडलु दंडादिकभी कचने त्याग
दिये तब तीन वर्षमें उपरांत बृहस्पति फेर कचके पास प्राप्तभया तो फेर कचने रुका म
हाराज चित्त विश्रांत नही भया तो बृहस्पतिजी कहते भये ९२९ बृहस्पतिकावचन॥ हेपुत्र
चित्तही सर्वस्वहै तिसके त्यागनेतें विश्रांतिकों प्राप्त होवेगा चित्तके त्यागनेकोंही त्यागी पु
रुष सर्वत्याग कहतेहैं २॰ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥ हेरामजी ऐसा कहि करके बृहस्पति चले

गये तब कचने चित्तका स्वरूप नही जाना तिसके जानने वास्ते स्वर्गमें जाय करके पिता अपना पूछा ९३१ बृहस्पति कहते भये ॥ हे पुत्र यह चित्त अपने चरकी न्यांई स्वरूप वालाहै चित्तको जानने हारे लोक कहतेहैं अंतःकरण की अनेक वासनाजालका सूक्ष्म जो स्वभावहै तिसको चित्त कहते हैं ३२ इसका त्यागना कठिनहै ऐसा प्रश्न कियेते पिता कहते भये हे पुत्र पुष्पके तोड़नेतें और नेत्रके निमीलनेतें अहंकार का त्यागना सुखाला है इसमें खेद कुछ नहीहै ९३३ यह चित्तका भाव अहंकारके बल करके अज्ञानतें भयाहै तत्व वस्तु जाननेतें नष्ट होताहै वस्तु चैतन्य मात्र जाननेतें अहंकार नही रहताहै जैसे रज्जु जानतें सर्पका भ्रम नही रहता है ९३४ हे पुत्र चैतन्य वस्तु एकही है आद अंतते रहितहै निर्मलता करके स्वर्गहै आकाशतेभी असंग है केवल सत्ता मात्रहै ३५ हे पुत्र यह पुरुषहै यह मैं हूं यह तूं है ऐसे झूठी प्रतीतिको त्याग कर यह मेरा है यह तेरा है यह ऐसा है यह हम हैं यह तुमही ऐसा जो भेद वाला ज्ञान है

सो तुच्छहै अरु तुच्छ स्वरूप वालाहै देश काल करके नष्ट होने हाराहै ३५ जो देश काल व
स्तुके भेदसें रहितहै और निर्मल है और सदा प्रकाशमान है सर्व पदार्थोंमों एक रूपहै सोचि
न्मात्र रूप तूंहै ३६ श्रीवसिष्ठजीश्रीरामजीप्रतिकहतेहैं ॥ हेरामजी सो कच इस प्रकारका पि
तातें उत्तम उपदेशकों पाइ करके सो बृहस्पतिका पुत्र तिस उपदेश कों धारण करके जीवन
मुक्त होताभया ३७ हेरामजी जैसें कच ममतातें रहित होता भया और अहंकारतें रहितभया
और संदेह ग्रंथितें रहित भया और शांतबुद्धि होता भया तैसें तूंभी निर्विकार होइ करके स्थि
तहो ३८ हेरामजी अहंकार कों असत्य जान और आत्म विचारतें भया सर्वभूतोंमों मित्रभावकों
धारण कर अहंकार सहेके शृंगकी न्यांई असत्यहै तिसके त्याग और ग्रहण कहां बनतें हैं ४०
हेरामजी द्वैतकी भावना और अद्वैतकी भावना तिन्ह दोनोंको त्याग करके जो इन्हतें शेष
शुद्ध चैतन्य सत्ता मात्र रहै तिसमों स्थित होइ करके अखंड सुखमों मग्न रहो माया पुरुष

सा· की न्यांई वृथा दुःखी मत होवों ४१ हे रामजी जो तुम कहो सो माया पुरुष कौनहै सो तुम सु
नो एक पुरुष मायाके यंत्रका बनाहै सो बालककी न्यांई तुच्छ बुद्धी भया और मूढ भया केवल
मूर्खिता युक्त भया ४२ सो एकांतमें कहूं गया तहां शून्य स्थानमें रहा तिसतें दूसरा तहां और
कोई नहीथा जो कछु है सो आपही है ४२ तिसकों तहां आप बुद्धिकों प्राप्त होनेका संकल्प हो
ताभया सो ऐसा चिंतन करताभया मैं आकाशका हूं और आकाश रूपहूं आकाश मेराहै औ
र एकाग्र होइ करके आकाशकी रक्षाकों करताहूं ऐसा चिंतन करता हुवा आकाशकी रक्षा
कों एक मंदिरकों करता भया तिसमें ऐसी दृढ बुद्धिकों करताभया मैंने आकाशकी रक्षा क
रीहै ४२ इसतें उपरांत कितने काल करके सो तिसका आकाशरूपी घर नष्ट होताभया तब सो
माया पुरुष विलाप करताभया हे मेरे घरके आकाश तूं कैसें नष्ट भयाहै मैंने तेरी रक्षा
करी तूं मेरेकों त्याग करके क्षणमात्रमें कहांगया है ऐसे सर्वों प्रकारके विलाप करता॥

भया ९४४ फेर सो दुर्बुद्धि तिसकी रक्षा के वास्ते कुहा करताभया कुहे नाश भयेसें फेर वि लाप करता भया एक कुंड बनावता भया तिसके विनाशमों विलाप करताभया फेर माटीका कोठ्ठल बनावता भया तिसके विनाशमों भी विलाप करताभया फेर चाण्डाल का कोट बना वता भया तिसके विनाशमों भी विलाप करताभया इस प्रकार करके आकाशकी रक्षाके वा स्ते अनेक उपाय करता भया उपाय के विनाशमों बहुत विलाप करताभया ९४५ हे रामच न्द्रजी सो मायाका पुरुष कौनहै वुह अहंकार है सो आधार विना आकाशकी न्यांई शून्य मों ही रहता है अनात्मा पदार्थोंको आत्मा जान करके तिन्हकी रक्षाके वास्ते नाना प्रकार के देहों का सृष्ट करताहै तिन्हके नाशमों व्याकुल होइ करके शोक कर्त्ताहै ४६ हे रामजी जैसे माया का पुरुष अहंकार अज्ञान रूपी अनात्मपदार्थ की रक्षा करता हुवा तिसकी रक्षाके उपाय रूपी मंदिरादिक स्थानीय देहादिकों के नाशमों क्लेशकों प्राप्तभयाहै तैसें तूंभी क्लेश कों

धारण मन करे ४७ हेरामजी जो आकाशतेभी विशाल रूपहै और शुद्ध है और सूक्ष्मतेभी सू
क्ष्महै और अखंड है और आनंद रूपहै ऐसा आत्मा नष्टकैसें होताहै और ग्रहणकैसें होता है
सत्ता मात्रकोमी कैसें शक्य होताहै ४८ हेरामजी देहके क्षय होने करके केवल हृदयाकाश
मात्र नष्ट होताहै और प्राणी वृथा शोक करतेहैं क्या कहते हैं मैं मरगया हूं मेरा आत्मा न
ष्टभयाहै ४९ हेरामजी जैसें घटादिकों के नाश भये संते आकाश अखंड रहताहै तैसें दे
हादिकों के नाश भये संते आत्मा निर्लेप रहताहै ५० आत्मा मृत नही होताहै जन्म नहीं
लेताहै और कदाचित् किसी प्रकार करकेभी आत्माहानि वृद्धिकों नही प्राप्त होताहै यह
केवल ब्रह्मही जगतके रूप करके भासताहै ५१ सो ब्रह्मसत्यहै केवल सत्ता मात्रहै और शां
तरूप है आद अंत मध्यतें रहित है भाव रूप अभाव रूपतें रहितहै और अद्वैतमात्र रूपहै
ऐसें जान करके सुखी रहो ५२ हेरामजी यह अहंकार संपूर्ण आपदाकी खानहै और असत्य

है और पराधीन है तिसभी नाश होने हाराहै अविवेक की निधी है अरु महाउष्ट है और अ
ज्ञानरूप है इसकों आत्मस्वरूप के बोध करके त्याग करके शेष रही जो आत्मसत्ता तिस में
सावधान होइ करके उत्तम पद को प्राप्त हो ५३ श्रीवसिष्टजीश्रीरामजीप्रतिकहतेहे ॥ हेराम
जी तूं महा कर्ता हो और महा भोक्ता हो और महा त्यागीहो संपूर्ण मनकी शंका का परित्याग
कर अखंडधीर्य को धारण कर ५४ हेरामजी यह तीन व्रत पहिले समयमें शिवजीने अ
पने भृंगी गणकों कहेहैं इन्ह व्रतों करके भृंगीगणभी चिंताज्वरसें रहित होताभया ५५ शु
भ और अशुभ कार्यमें पापपुण्यकी शंका करके जिसकी बुद्धी लिप्त नही होतीहै सो महा
कर्ताहै ५६ जो पुरुष सर्वत्र स्नेह बंधननें रहितहै कार्य कारणमें इच्छा रहित वर्त्ते मानहै
सोभी महा कर्ता कहाहै वुह कैसाहै साक्षीकी न्याई असंगहै ५७ जो पुरुष कटुए रस को
सल्वनेको तीक्षण रसकों शुद्धकों और नही शुद्धकों चाहेको अथवा नही चाहेकों ऐसें

अन्न पानकों समान हृत्ती करके भोजन करताहै सो महाभोक्ता कहाहै ५८ जो पुरुष आपदा
कों और संपदाकों मोहकों और आनंदकों श्रेष्टकों अथवा नहीं श्रेष्टकों सम बुद्धि करके भोगताहै
सो महा भोक्ताहै ५९ जो पुरुष ऐसे निश्चय वालाहै कैसें न मेरा देह ना मेराजन्महै योग्य औ
र अयोग्य कर्मभी मेरेको नहीहैं ऐसे विचार वालेको महा त्यागी कहतेहैं ६०। जिसनें धर्म औ
र अधर्म और मनका चाहिया संकल्प अंतःकरणसें त्यागियाहैसो महा त्यागी कहाहै ६१ हेराम
जीजो पुरुष उत्तम विश्रांतिकों चाहताहै और दुःखरूपी रत्नोंकी खान ऐसें जन्म मरण रूपी स
मुद्रकों तरणे चाहता है तिसकों ऐसी मति तरणेका उपाय है कैसी मतीहै मैं कौन हूं और य
ह जगत क्या है कैसें उदय भयाहै और भोगों करके मेरा क्या प्रयोजन ६२ श्रीवसिष्ठजीकह
तेहैं॥ हेरामजी इक्ष्वाकु राजाने पिता मनुवैवस्वत कों प्रश्न किया हेपिता यह जगत क्याहै तो
मनु कहता भया इहजो कछु जगत दृष्ट होताहै हेराजन् सो सत्य कछु भी नहीहै जैसें

गंधर्व नगर असत्यहै और जैसें मारवाड़की रेतीमों जलकी प्रतीति असत्यहै ९३ हेरा
जन् यहां कुछ सत्य दृष्ट नही होताहै तहां जो कुछ शेष सत्तामात्र जैसा प्रतीत होता
है सो अविनाशी है सो सत्यरूप आत्माहै ९४ हेराजन् जैसें राहू दृष्ट नही होताहै परं
तु चंद्र मंडलमों ग्रहण करके दृष्ट होताहै तैसें असत्यरूप दृश्य करके सत्यरूप अ
दृष्ट आत्मा प्रतीत होताहै ९५ हेराजन् आत्मा केवल गुरु करकेभी प्रतीत नही होवैहै के
वल शास्त्रों करकेभी प्रतीत नही होताहै सो आत्मा केवल अपनी निर्मल बुद्धि करके प्रती
त होताहै ९६ हेराजन् जैसें मार्गमों मुसाफिर रागद्वेषसों मुक्त भई बुद्धि करके देखीदे
हैं तैसेंही यह इंद्रिय देहादिक रागद्वेष सें रहित बुद्धि करके देखनें योग्यहै ९७ हेपुत्रा
इन्हमों आदर नही करणा और सत्ताका निश्चय नही करणा यह केवल पदार्थ भावना मा
त्रते देखेहुवे केवल नाम मात्र रहतेहैं अरु सुखरूप होजाते हैं ९८ हेपुत्र यह देहादिक

केवल नाम मात्रतें पदार्थहैं सत्यनही है इनकी भावनाकों हरतें त्याग करके शीतल अंतः
करण होइ करके केवल आत्म विचारमों स्थित रहो ६९ हेपुत्र जैसें निर्मलभये जलाशयोंमो
सर्वत्र शीतलता और निर्मलताहै तैसेंही आत्मा सर्वत्र पदार्थोंमों सत्तामात्रता करके व्याप्त है
हेपुत्र जैसें माता अपनें कुचोंके नीचे अपने कुछड़मों सुप्तभये बालककों विस्मरण करके मे
रा पुत्र कहां गयाहै पुत्रके वास्ते रोदन करतीहै तैसें यह लोक सत्तामात्र सर्वत्र व्याप्त भये आ
त्माके वास्ते लोक अज्ञानसे भये मोहसें भ्रांत भया दुःख कों प्राप्त होताहै ७०॰हेपुत्र यहमाया
महा आश्चर्य रूपहै सर्व जगतकों मोहित करणे हारीहै जिस माया करके अपने अंगोंमों सर्व
त्र व्याप्तभये आत्माकों नही जानताहै ७१ हेपुत्र यह जगत् चैतन्यताका दर्पण है ऐसी जो भाव
ना करता है सो पुरुष ब्रह्म कवच करके आच्छादित भयाहै ७२ हेपुत्र जगतके सर्व भावोंकी
भावना त्यागने करके कर्म जालके बनकों छेद करके परम सूक्ष्म रूप आत्म भावना कों

धार करके शोक रहित स्थित रहो ७३ हेपुत्र शास्त्रों करके सत्संगों करके पहिले बुद्धिको नि शाल्त करे जौंनसा पुरुष नया योग करणे लगाहै जिसकी यह पहिली भूमिका है ७४ दूस री तत्व विचारणा है तिसरी असंभावना है चौथी पदार्थोंकी विलापनी भावना है पंचमी ५ शुद्ध ज्ञान स्वरूपा है जिसमें आधे सुप्तभये और आधे जाग्रत भये जैसा पुरुष जीवन्मुक्त स्थि त होताहै इसमें किंचित् प्रपंचका भानभी होताहै और शुद्ध चैतन्यका बोध प्रत्यक्ष प्रतीत होताहै ७५ और छठी स्वसंवेदन रूपा भूमिका होतीहै यह केवल यनें आनंदके स्वरूप वा ली होतीहै इसमें जीवन्मुक्तको सुषुप्ति जैसी गाढ आनंदमा स्थिति होतीहै ७६ जिसमें तुरी या वस्था करके उपशम होताहै सो केवल मुक्तिरूप है ऐसी सप्तमी भूमिका होती है इसमें समता और सौम्यता केवल होतीहै ७७ पहिली तीन भूमिका जाग्रत अवस्था जैसीहैं जिन्हमें प्रपंच भावना प्रतीत होतीहै और चौथी भूमिका स्वप्नावस्था जैसीहै जिसमें वासना लय हो

तीहै परंत प्रपंच स्वप्न जेसा प्रतीत होताहै ७८ जिसमें केवल गाढी आनंदकी भावना होती
है सुषुप्तिकी न्यांई पंचमी भूमिका है जिसमें आनंदकी संवेदनाभी नही होतीहै अपनी प
राई प्रतीत नही होतीहै सो छठी भूमिका तुरीयावस्था जेसी होतीहै ७९ और सप्तमी भूमिका
तुरीया तीत केवल चैतन्यमय होतीहै जौंनसी मन वाणी करके चिंतनमें कहनेमें नही
आवेहै ८० हेपुत्र इस सप्तमी भूमिकामें तत्वज्ञ पुरुष निर्लेप होताहै रजोगुण के भाव मंदहो
ताहै और रागादिकों सें रहितहै वासना मूल सहित शांत होतीहैं अपनेकों निर्मल चिदाका
शसमान करके शोक रहित होताहै ८१ हेराजन् जीवकों संहरण कला अभ्यास विनाशांत होती
है और यह ज्ञानकी कला एक बखत होवे तो दिन दिन उदय होती जातीहै हेराजन् जौंन
सी करी जाती जो कर्म संपदाहै जौंनसी पीछे करीहै सो देह रूपी सिंबल रूखतें रुई की
ढेरी सिरीखी ज्ञान रूपी पवन करके उडगई वुह कहां गई है ऐसें लखित नही होती है ८२

हे राजन् यह संसार रूपी अरहट है इसमें चिंतारूपी रज्जू बनीहै तिसमें जीव रूपी घड़िया हैं
सो कबही नीचे जावैंहैं कबही ऊपरको आवैहैं तिसतें तूंभी संसार रूपी अरहटमें चिंता रूपी
रज्जू करके घड़ी सिरीखा मत बांधा जावैं ८३ ऐसी भावना करके क्याहै ब्रह्मा इंद्र विस्नु वरुण य
ह जो कुछ करण चाहते हैं सो सभ कुछमें करताहूं और चैतन्यरूप हूं ऐसी भावनाको धा
रण कर ८४ हेपुत्र जो पुरुष चैतन्यभावताको प्राप्त भयाहै और मृत्यु संसारको लंघ गया है
तिसको जो परमानंद होताहै सो किसके बराबर कहा जाताहै ८५ हे राजन् जो शुद्ध चैतन्यका
स्वरूप है सो सर्वत्र व्याप्तहै और अखंड है इसको जब जाने तबही संसार समुद्र तरा जाता है
और परमेश्वर रूप होताहै ८६ जो पुरुष जैसे तैसे वस्त्र करके अपनेको आछादन करे जो जो
मिल जावे तिस तिसको भोजन करे जहां होवे तहां तहां निद्राको करे सो पुरुष चक्र वर्तीसें
भी अधिक आनंदको भोगताहै ८७ हेपुत्र जो पुरुष संपूर्ण शास्त्रोंके अर्थके विचार करके

शांत भयाहै चंचलतातें रहित भयाहै और अनेक प्रकारके काव्य शास्त्रोंके रसतें निष्टत्त भयाहै और जिसके संपूर्ण संकल्प विकल्प उपद्रव शांत भयेहै सो समदृष्टि और समचित्त होइ कर के अखंड सुखमों मगन होताहै ९८ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥ हे रामजी सो इक्ष्वाकु राजा अपने पिता वैवस्वतमनू का वचन सुन करके आत्म विचार करके परमआनंदकों प्राप्त होता भया॥ हे रामजी जो पुरुष आत्म विचार करके वर्णाश्रम आचार के बंधनसें मुक्त भयाहै सो पुरुष जैसें पिंजरातें सिंह निकल जाताहै तैसें संसार रूपी जालतें मुक्त होता है ९९ हे रामजीसो पुरुष लोकोंके समान जो मैं विहार कर्ता हुवा देहका छेदन करणा और सृजन करणा क रके कुछ नही जानताहै जैसें चंद्रमा आकाशमों है अरु जलके साथ प्रतिबिंब प्रकट होने और गुप्त होने करके उदय अस्त नही होताहै ९१ हे रामजी जिसतें लोक दुःखी नही होताहै लोकतें सो दुःखी नही होताहै अरु रागद्वेष और भय और आनंदों करके संयुक्त

नही होताहै और रहित नही होताहै ९२ हेरामजी ऐसा महात्मा पुरुष किसीके प्रमाण में नही आवताहै जो तुच्छ बुद्धि पुरुष हैं सो बालकोंकेभी प्रमाणमें आइ जाताहै ९३ हेरामजी सो पुरुष भावें मुक्ति पुरी काशीमें शरीरकों त्यागे भावें दुष्टस्थान चंडालके घरमें शरीर त्यागे। जिस समयमें तिसकों ज्ञान प्राप्त भया तिस समयमें मुक्त भयाहै जिसने सो निर्मल चित्त होगया है ९४ हेरामजी जो पुरुष ऐश्वर्य विभूतिकों चाहे तिसने ऐसा पुरुष पूजनीय है और वंदनीयहै और यत्न करके देखने योग्यहै ९५ हेरामजी ऐसा फलयज्ञों करके तीर्थों करके तपों करके दानों करके परम पवित्र नही प्राप्त होताहै जैसा फल तत्वज्ञोंकी भक्ती करके होताहै कैसे हैं तत्वज्ञ क्षीण भयाहै संसार रोग जिन्हका और आत्मवेत्ता है ९६ हेरामजी तूं ग्रहण करण योग्य पदार्थों की भावनाकों नही कर और मैं ग्रहण करताहूं ऐसी भावनाको भी मत कर संपूर्ण भावना कों त्याग करके जो शेषरहे तिसमें एकाग्र चित्त रहो ९७ हेरामजी जो तूं कर्म कर्ताहै जोभोजन

कर्ताहै जो होम करताहै जो दान करताहै तिसको नामै कर्ताहूं नामैं भोक्ताहूं इसप्रकार करके मुक्तमतिहो ९९८ हेरामजी संतजन पीछे भयेको शोच नही करतेहैं आगेहोने हारे को चिंतन नही करते हैं वर्तमान जेसा होवे तैसे ग्रहणकी इच्छा नही करताहै सभको अखंड संसारके प्रवाहमो अनित्य मानतेहैं ९९ हेरामजी हम लोक जो मुनीहैं सो समशील भये हैं और बनमो निवास करतेहैं हमको अहंकार कुछ नही करताहै जौनसा देहाभिमान करणे वा लेको दुःख देणे हाराहै १००० हेरामजी जितनें इंद्रियोंके कर्महैं तिन्हको अहंकार करके युक्त मनही करताहै सो अहंकार और मन मेरे गलित होगयेहैं १००१ हेरामजी जाग्रत और स्वप्न और सुषुप्ति यह तीनो अवस्थाको मै नहीजानता हूं तुरीया माही में स्थितहूं तिसमो यह दृश्यमान जगत नहीहै १००२ हेरामजी मनुराजाने बाण करके वेधा मृग मुनिके साम्हने व नको गया तिसके पीछे बधकी गया तिसनें मुनिको पुछा हेमहाराज तुमने मृग देखाहै

तब सो मुनि वधकीकों कहता भया १ हे व्याध जो नेत्र इंद्रि देखतीहैं सो कहती नही जो
कर्ण इंद्री कहताहै सो देखती नही ऐसा मुनीका वचन वधकीने नही समझा सो वधकी
फिर गया २ हे रामजी जाग्रत अवस्थामें चित्त घोर रूप होताहै और स्वप्नेमें शांतरूप होताहै
और सुषुप्तिमें मूढरूप होताहै तीनोंसे रहित होवे तो मृतरूप होताहै ३ हे रामजी वेदांत
शास्त्रोंका यह सिद्धांतहै सो और संपूर्ण शास्त्रोंमें गुप्तहै सो क्याहै नातो कोई अविद्याहै अ
रु ना कोई मायाहै संपूर्ण क्रमसें रहित शांत परब्रह्महीहै ३ श्रीवसिष्ठजीकहतेभये। ऐ
सा वचन मनुवैवस्वतनें अपने पुत्र इक्ष्वाकुकों कहाहै सो हमने तुमकों कहाहै अबजो तु
म्हारी इच्छा होवे सो कहो ४ वाल्मीकीमुनिजीभरद्वाजप्रतिकहतेहैं॥ हेभरद्वाजजी ऐसा सुन
के श्रीरामचंद्रजी आत्म स्वरूपके आनंदकी समाधीमें स्थित होतेभये ५ श्रीभरद्वाजजी
का प्रश्न॥ हेगुरूजी श्रीरामचंद्रजी जब समाधिमें स्थितभये फेर वसिष्ठजीने व्यवहारमें

कैसें तत्पर करे यह तुम मेरेकों कहो ६ श्रीवाल्मीकीजी कहतेहैं॥ हेभरद्वाज यह जैसें स
सारके भावहैं सो संपूर्ण अविद्यासें भयेहैं क्षणमात्रमों उदय होतेहैं और ज्ञानरूपी समुद्रमें
लय होजाते हैं ७ हेभरद्वाज तूंभी केवल ज्ञानरूपी अमृत समुद्रमें मग्न होता हुआ कैसा
है ज्ञानामृत समुद्र प्रशांत भईहै अमृतकी लहर जिसमें ऐसा निश्चलहै और द्वैतके खारे
समुद्रमें क्यों मगन होताहै ८ हेभरद्वाज यह जगत बालबुद्धि वालेकों ब्रह्मही रूपांतर
कों प्राप्त भया प्रतीत होताहै और तत्व विचारकी बुद्धि वाले एक रूप ब्रह्मकों देखते हुवे
सुखकों पाइ कर स्थितभयेहैं ९ जिन्ह पुरुषोंका चित्त देवताकी ब्राह्मणोंकी भक्ति करके सं
युक्त भयाहै और गुरुकी सेवाकी श्रद्धा करके युक्त भयाहै और उन प्रशास्त्रों कों प्रमाण कर
के मानतेहैं तिन्हके उपर ईश्वरकी कृपातें आत्मज्ञान दृढ होताहै १०० हेभारद्वाज जबल
ग तेरा चित्त शुद्ध नही भया तब लग सगुण ईश्वरकों भज जब चित्तशुद्ध होवेगा तब नि

राकारमें स्वभाव करकेही तेरी स्थिति होवेगी ११ भारद्वाजकावचन॥ हेगुरूजी तुम्हारे प्रसाद तें यह संपूर्ण जाना है वैराग्यसें परे मित्र नही अरु संसारसें परे शत्रु नहीहै १२ विश्वामि त्रजीकावचन· वसिष्ठजीप्रतिकहतेहैं॥ हेवसिष्ठजी हे महा भाग तुम ब्रह्माजीके उत्तम स भसें तुम महात्माहो तुमने अपनी शक्ति देने करके अपना गुरु भाव दिखाया है १३ जो कोई दर्शनतें अरु स्पर्श करणेतें शब्द सुनावनेतें कृपा करके शिष्यके शरीरमें ज्ञानका चमत्कार दिखावे सो उत्तम गुरु कहाहै १४ हेवसिष्ठजी यह रामचंद्रजी आप स्वभाव करके विरक्त है केवल चित्तकी विश्रांतिकों चाहताथा सो तुम्हारे साथ संवाद करणेतें चित्तकी विश्रांतिको प्रा प्तभया है १५ हेवसिष्ठजी गुरुके वाक्यतें बोध जो होनाहै तिसका कारण शिष्यकी निर्मलबु द्धिहै जिसके मन वानी देहके मल परि पक्व नहीभये हैं सो निर्मल बुद्धिकी न्याई बोध कों कैसे प्राप्त होवे १६ हेरामजी अब कथाकों समाप्त करके व्यवहार कार्य करणे वास्ते उठने

इह श्रीरामचंद्र पहिले देव
योग्यहै वसिष्ठजी विश्वामित्रकों प्रश्न करतेभये हेविश्वामित्रजी इहा यही विश्वास करो यः
साधे अथवा मनुष्यथे १७ विश्वामित्रजीकावचन॥हेवसिष्ठजी
ह रामचंद्रजी परमब्रह्मरूपहै पूर्ण स्वरूपहै परमानंद रूपहै सभमों समान सत्तायुक्तहै सा
ज्ञान विस्तुरूप है १८ श्रीवसिष्ठजीकावचन॥हेरामजी हेरामचंद्रजी यह विश्रामका समय
नहीहै लोकों को आनंद कराने वाले संसार व्यवहारमों तत्पररहो १९ ऐसा वचन सुन के
भी श्रीरामचंद्रजी नही उठे तब वसिष्ठजीने हृदयमें प्रवेश करके उठाया तब श्रीरामचंद्र
जी कहते भये २० हेगुरुजी अब मेरे कों विधिसें कार्य नहीहै और निषेधसेभी कार्य नही
है तुम्हारे प्रसादनें मैं पूर्णभया हूं तदभी गुरोंका वचन अवश्य करणा योग्यहै २१ वेदशा
स्त्रमों आगम शास्त्रमों अरु पुराणशास्त्र मों धर्म शास्त्रमोंभी कहाहै जो गुरुजीका वचन है
सो विधिहै जो गुरुनीषधक है सो निषेधहै २२ ऐसा कहि करके श्रीरामचंद्रजी गुरों के

नि॰ चरणों को शिरपर रख करके सभको कहते भये हे सभामों बैठे संपूर्ण लोक मेरा वचन सु
॰सा॰ नो मैं निश्चय करके कहताहूं आत्मज्ञानसें परे ज्ञान नहीहे आत्मवेत्ता गुरुसें परे दूसरा गुरु न
२० हीहे २२ सिद्ध मुनी देवता ऋषि सभ कहतेहैं ॥ हे रामजी हमारे सभके मनमों ऐसाही विचार
था परंतु तेरे प्रसादतें तुम्हारे संवादतें अब दृढ निश्चय भयाहे । हे रामचंद्र हे महाराज तुम
सुखी रहो तुम्हारे कों नमस्कार है २३ ऐसा कह करके सभही वसिष्ठजीकी आज्ञाले करके अप
ने घरकों जाने लगे तब रामचंद्रजीके शिरपर पुष्पोंकी वर्षा होतीभई २४ वाल्मीकीजी कहतेहैं हे भरद्वाज यह श्री
रामचंद्रजीकी आत्मज्ञानकी सिद्धी तुम्हारे प्रति मैंने कहीहे जैसें राजारघूकों सिद्धी भईथी यह कैसीहे वचन रत्नकीर
त मालाहे संपूर्ण कविकुलो करके सेवने योग्यहे और योगी जनोंकोंभी सेवने योग्यहे यह
सद्गुरोंकी कृपा कटाक्षतें प्राप्त होतीहे और मुक्तिके मार्गकों देतीहे २५ जो पुरुष यह वसि
ष्ठ रामजीके संवादकों श्रवण करताहे सो भावें कैसा होवे श्रवणतेंही मुक्त होताहे और पर

ब्रह्मकों प्राप्त होताहै २६ भावें मोह करके मलिन बुद्धि होवे रागद्वेष युक्त होवे महापाप॥
१० कृ युक्त होवे संपूर्ण दोषों करके युक्त होवे सो पुरुष इसके श्रवणतें सर्व दोषोंसें मुक्त होता
है शांतिकों प्राप्त होइ करके ब्रह्मज्ञानकों प्राप्त होताहै जो इसका उत्तम अधिकारी होवे सो
कैसें मुक्त नही होवे २७ इतिश्रीवासिष्ठसारे निर्वाणप्रकरणस्य सर्वोपदेशसमाप्तसार:॥१०॥२८ श्री
वसिष्ठजी फेर श्रीरामचंद्रजी कों सर्वसारउपदेश करतेहैं हे रामजी संसार कल्पनाकों जानने
हारे ज्ञानी पुरुष पदार्थोंके रसकी भावनाकों ही संसार कल्पनाकों कहतेहैं तिस पदार्थ रस
की नही भावनाका संकल्पका त्याग करण कारण कहाहै १ मैंभुजा उठाइ करके कहताहूं सं
कल्पका त्यागही परम कल्याणका मूलहै तिसकों अंतःकरण करके क्यों नही सेवतेहैं २
हे रामजी मोहका महात्म्य महा आश्चर्य रूपहै जिस करके संपूर्ण दुःखोंकों हरणे वाला मन्व
विचार नामा चिंतामणि अपने हृदयमेंभी है तदभी तिसकों लोक त्याग देतेहैं ३ हे रामजी॥

जौनसे झूठे ज्ञानीहैं सो संकल्प त्यागकों नही जानतेहैं और वृथाही कर्मका त्याग करतेहैं
सो पशुहैं और अज्ञानीहै तिन्हकों कर्म त्याग रूपी पिशाचनी भक्षण करतीहै ४ हेरामजी जौनं
सें पुरुष मोक्ष लक्ष्मी रूपी इस्त्रीके वशभये हैं सोजैसे कामी पुरुष सुंदर इस्त्रीके वश होतेहैं तैसें
आधे सुप्तभये आधे जाग्रतभये आनंदरूपी निद्राके वशभये अपनेकों नहीजानतेहैं हम कहां
हैं और कौनहैं ऐसे स्वरूपानंदमों मग्न होतेहैं ५ हेरामजी जिसकों उपशमकी प्राप्तीभईहै तिसकों अपना
घर कुटंब धन सहित बन सिरीखा होताहै सो पुरुष ममता रहित होताहै और जिसकों उपशम
की प्राप्ति नही भईहै तिसकों ममता संकल्प करके निर्जन बनभी कुटंब सहित घरजैसा होता
है ६ हेरामजी जिसनें काम क्रोध लोभ मोह मदमात्सर्य यह छे शत्रु जीतेहैं स्वभाव करके ही
दूर कियेहैं ऐसा उत्तमज्ञानी पुरुषजोहै सो ज्ञान वैराग्यादि उत्तम गुणोंका पात्र होताहै और
षट् शत्रुओंकों नही जीतताहै सो मनुष्योंमों गधाहै तिसकों तत्वज्ञान वैराग्यादि महा गुणन

ही होतेहैं ७ हेरामजी शुद्ध चित्तवालेकों अल्प उपदेशभी विस्तार करके लग जाताहै जैसें तैल में जलकी बूंद विस्तारकों प्राप्त होतीहै और मलिन चित्तवालेकों उपदेश नही लगताहै जैसें तपे हुवे लोहेकों जलकी बूंद नही लगतीहै ८ हेरामजी मैनें भुशुंडकाककों प्रश्न कियाथा हे महाराज्य तुम तत्वज्ञानके विचारतें चिरंजीवि भयेहो परंतु जौनसा तत्वज्ञानतें रहित है और मूर्ख बुद्धिहै ऐसाभी तुमनें कोई चिरंजीवी जाना होवे तो कहो इतना सुनके भुशुंडकाक कहते भये हेमुने एक कोई विद्याधर होताभया वुह कैसाहै तत्वज्ञान सें रहित और संसार सुखोंकों भोग करके वृद्ध भयाहुवा लोकालोकाचल पर्वतके शिखरमों निवास करताभया शुष्क विचार वाला सो विद्याधर बहुत प्रकारके तप करके और यम नियम करके चार कल्प पर्यंत स्थिरआयुषा वाला होताभया ९ सो चौथे कल्पके अंतमो विवेक युक्त होताभया संसारकों असार जानताभया मेरेकों प्रश्न करणेकों आवताभया १० आय करके पूछताभया हेमहाराज जो सबका आधार

है और दुःख क्लेशसें रहितहै क्षय वृद्धीते रहितहै और आद अंत रहित जो पदहै तिसकों मे
रे प्रति कहो १२ एताकाल मैं जड़ता करके सोया जैसा रहाहूं अब मेरेको आत्माकी प्रसन्नतासें
बोध युक्त भयाहूं १३ संसारमें अनेक प्राणी केवल जन्म मरणको भोगते हुवे जीर्ण होगये हैं
अधर्म वास्ते कष्ट करतेहैं नामोक्ष वास्ते कष्ट करतेहैं जैसें मच्छर कमलमें रहतेहैं १४ हे म
हाराज मैंनें कुवेरके चैत्र रथ बगीची कियां भूमिका देखियांहैं वह कैसीहै प्रफुल्लितहैं कुंज
लता जिन्हमें कल्पवृक्षोंकों कल्पना चढ़ीहै मनकी चाही ऐश्वर्य संपदाकों देणे हारीहै १५
मैंने सुमेरु पर्वतके कुंजोमें और विद्याधरोंके नगरोमें और विमानोंकी सुंदरमालामें औ
र मंद सुगंध शीतल पवन चलताहै जहां तिन्हमें चिरकाल विहार कियेहैं और देवताओं की
सेना साथ चलतीहै दिव्य स्त्रियोंकिआं भुजा रूपी लतामें विहार कियेहैं मुक्ता मणिके हा
रों करके युक्त मनकों हरणेहारा रूप और शील जिन्हका ऐसी अंगना सहित लोकपालोंकी

पुरियोंमों विहार कीयेहैं १६ हेमहाराज तिन्हमों मेरेको सुंदर सुख करणेहारा कछु अनुभा-
वमें नही आयाहै संपूर्ण मनका विनाश होने करके दग्ध भया भस्मकी न्याई हुआ मेनें अव
जानाहै १७ जो कछु मैने सुनाहै और स्पर्श कियाहै संगिआ हे स्वर्गादिकमों सो सब रस रहि-
त भयाहै अबमें क्या कछु सेवन करूं तिसको शिताबी कहो १८ जिसके प्राप्त भये फेर प्राप्तहो-
नेकी शेष वांछा नरहे तिसकी प्राप्तिमों में कष्ट करकेभी यत्नकों करनाहूं १९ जिसने सुंदर इ-
स्त्रियां भोग सहित भोगीहैं तिसकों तिन्ह भोगोंने भोगलियाहै भोग वालाभी मेनें ऊपरकी पद-
वीकों चढ़ता नही देखाहै और आकाशमों उठताभी नही देखाहै समहूी नरककों जाते देखे-
हैं २० यह दुष्ट इंद्रियों की सेनाहै शरीरके अंत पर्यंत जीवोंको भ्रमावनीहै जो इसकें जीत-
नेकों उद्यम करते हैं सोही महाजोधा सूरबीर हैं २१ जोनसें जते इ पुरुषहैं सोही महापु-
रुष हैं बाकीके देह रूपी मांसके पिंजराके कागोंके बरोबर हैं मे इन्ह इंद्रियोंनें उजाड़ करके

भ्रमायाहूं जैसें महा बनमों चोरों करके इकेला मुसाफिर डराइ डुडाई भ्रमायाजाताहै २२ हे॰
महाराज जैसें कोई महा आपदामों मग्न होताहै ऐसें मैंभी आपदामों मग्न भयाहूं और साधनों
सें रहित हूं मेरेको शील दयाके उदय करके उद्धारण करो तुम उद्धारण करणे हारे हो जौंनसें ज
गतमों उत्तम संतजन होतेहैं सो त्रैलोक्यकों जीतने हारे होतेहैं तिन्हके समागमकों अरु परम
शोककों हरणेहारे कों कहतेहैं २३ काकभुसुंडीजीकहतेहैं॥ हे विद्याधरोमों श्रेष्ठ तूं उत्तम शील॰
वालाहै दैवयोगतें तेरेकों संसार दुःखका बोध भयाहै अब तेरा कल्याणका समय आयाहै संसा
र रूपी कूहेतें चिरकालसें निकलने कों योग्य भयाहैं २४ यह विश्व मारवाड़की रेतीमों जल की
प्रतीतीकी न्याईं वास्तव नही होनेतें दृश्यमान है तदभी असत्यहै जो कछु यह भासता है
सो संकल्प ब्रह्मही है और कछु नहीहै २५ जो पुरुष गुरोंका वचन सुनकरके मूल सहित सं
कल्प त्यागकों यत्न करके उद्यम करतेहैं सोही संसारकों जीततेहैं २६ हे विद्याधर संकल्पके उ॰

दय मात्रनें जगत रूपी चित्र दृष्टि होताहै संकल्पके लय होनेते लयकों प्राप्त होताहै जैसे वि
घ्न रचनेवालेके संकल्पतें चित्र होताहै २७ जो पुरुष अन्नपानादिकमों अनादरकों प्राप्त भयाहै ति
सका यह पिछला जन्महै दूसरा जन्म तिसकों नही होताहै सो पुरुष कर्मकों त्यागन नही करता है
कर्म तिसकों आप त्यागन करजाते हैं जैसें पुराने पत्र वृक्षतें आपही गिरजाते हैं २८ यह जगत चि
त्तके संकल्पका चमत्कारहै नही संकल्प करणेतें लयकों प्राप्त होताहै और अतिशय करके अपने
हाथके वस्तु जैसा अपनें अधीनहै जब चाहै तबही त्याग कर २९ संसर्तो शास्त्र आत्माकों जानने
मों अंगहै वासना रहित पुरुषके अंगमों लगतेहैं जो इनकों वारं वार जानताहै फेर सम बुद्धि हो
ताहै सो परमपदमों स्थित होताहै ३० हे विद्याधर जब लग पदार्थोंके उदयके प्रति सुषुप्ति जैसी वि
स्मृति नही भई तब लग अपने पुरुषके यत्न करके अभ्यास करताहै ३१ हे विद्याधर अविद्याका
आधा भाग आपसमों शास्त्र विचारणा करके निवृत्त होताहै और आधा भाग आत्म ज्ञान के॰

त्थ निश्चय करके निवृत्त होताहै ३२ तिसतें शास्त्र विचारणे वास्ते जहां तहांते वैराग्य सहितः

ओर बीतराग ओर आत्मवेत्ता ऐसे तत्ववेत्त पुरुषकों ढूंढ करके यत्न करके तिसकों आराधन करे ३३

हे वियाधर तिसतें उपरांत आधा अवियाका भाग सत संग करके निवृत्त होताहै आधेमों आधाशा

स्त्र विचार करके निवृत्त होताहै चौथाभाग अपने निश्चय यत्न करके निवृत्त होताहै ३४ हे वियाध

र संतजनोंकी संगति करके शास्त्रार्थ विचार करके अपने यत्न पूर्वक निश्चय करके अवियारूपी

मल क्षयकों प्राप्त होतीहै तिसतें क्रम करके एक एककों सेवे अथवा एक बार इकठेही सेवन क

रे ३५ हे वियाधर जगतके पसरणेका कोई ओर देश नहीहै कालभी ओर नहीहै धारणेका आधा

रभी नहीहै जैसें अंधेरा ओर प्रकाश आकाशमोंही होतेहैं तैसें जगतका उदय ओर लय एक अंतः

करणोंमोंही हैं ३६ इसमों तेरे प्रति पुरातन इतिहासकों कहतेहैं जोंनसा त्रसरेणुके अंदर पहिले

इंद्रका वृत्तांत भयाहै तिसकों तूं सुन ३७ एक कल्पांतरमों इंद्र त्रैलोक्यका राजा होताभया सोइंद्र

नि॰
सा॰
६

गुरोंके उपदेश करके अपने अभ्यासतें अज्ञानरूपी आवरणतें रहित होताभया ३७ नारायणसें ले
कर महा पराक्रमी देवता तिसके सहाय करणे हारे होतेभये सो कहीं छिपजातेभये तद इंद्र
इकेला रहा महाशस्त्र अस्त्रों करके दैत्योंके साथ युद्ध करताभया सो महा पराक्रमी दैत्योंने जीत
लिया तिन्हतें शिताबी भागजाताभया ३९ तिन्ह दैत्योंकी दृष्टि जब भ्रमगई तब छिद्र पाइ करके इंद्र
सूर्यकी किरणोंमें दृष्ट होता एक त्रसरेणूके किणकेमों सूक्ष्म रूप होइ करके प्रवेश करके छि
पजाताभया ४० इसतें उपरांत युद्धकों विसार करके निर्वाणकों प्राप्तभया इंद्र तिस त्रसरेणूके
अंदर मंदिर कल्पन करके निवास करता भया तिस मंदिरमों बैठा इंद्र बाहिर नगरकों कल्पन
करताभया तिसके बाहिर अनेक देशानकों कल्पन करताभया ४१ हे विद्याधर तहां रहते भये
इंद्र संपूर्ण त्रैलोक्यकों कल्पन करके अपनो इंद्रत्वके अधिकारकों करताभया इस प्रकार कर
के तहां इंद्रके हजारों पुत्र पौत्र होतेभये तहां आजतकरभी तिस इंद्रका अंश राज्यमों स्थितहै ४२

तिस इंद्रके कुलके समहूी तहां इंद्रके अधिकार को करते भये तिसते उपरांत सो इंद्र तिसके
पुत्र पौत्र कुटंबादिक परमपद कों प्राप्तहोते भये ४४ हे विद्याधर जौनसा इंद्र इस सृष्टि का त्रस
रेणुमें माया करके छिपाथा तिसके कुलका कोई इद्रंभी इंद्रके राज्यकों करता भया तिसकों भी
बृहस्पती के वचन करके ज्ञानकी प्राप्ति होती भई ४५ सोभी दैत्योंके साथ युद्ध करताभया संपू
र्ण शत्रुओंको जीत लेताभया सो १०० अश्वमेध यज्ञ करताभया मन करके अज्ञानकों तर जाता
भया सो किसी कार्य के वशतें कमलके नालके तंतुमो चिरकाल निवास करताभया औरभी सैंक
डे इंद्रभाव के वृत्तांतोंको अनुभव करता भया ४६ सो इंद्रभी मायाकों जानने द्वारा यह इच्छा क
रताभया ब्रह्मतत्वकों मै देखों सो ब्रह्मकों देखताभया वुह कैसाहै परब्रह्म सर्वशक्ति युक्तहै सर्व
वस्तुमों व्याप्तहै सर्वकालमों सर्व प्रकार करके सर्वत्र सर्वजनोंने देखिआहै ४७ फेर वुह कैसा
है सर्व दिशामों है हाथ पाओं जिसके सर्वत्रहैं नेत्र और मुख शिर जिसके सर्वत्र श्रवण वालाहै

नि॰
सा॰
८

सभकों व्याप्त होइ करके स्थित भयाहै ४८ ध्यान करके सर्वत्र एक रूपकों देखता भया कैसाहै उ
हार तुही युक्तहै संपूर्ण सृष्टिकों तिसमों हमारी इस सृष्टिकोंभी देखताभया तिसतें उपरांत इहां के
इंद्रका राज्यके अंतमों फेर इंद्र होताभया जगतके राज्यकों करताभया संपूर्ण वृत्तांतोंका अनुभव क
रताभया ४९ इस प्रकारकी माया करके अनेक इंद्रोंके वृत्तांत भयेहैं यह माया अनेक प्रकारकी अनी
तिकों करणेहारीहै सत्य परब्रह्मके विचार करके लीन होजाती है ५० हे विद्याधर जो पदार्थ सत्य न
हीहै सो कदाचित भी सत्य नहीजानना तूं केवल शांतरूप है सभके लय होनेमों शेष रहणे वाला
है अब तूं बोधको प्राप्त भयाहै अब फेर मूल रहित भ्रांतिके मत धारण करे ५१ हे विद्याधर तूं संपूर्ण
कल्पना कलंकते रहितहै और शुद्धरूपहै और आनंदरूपहै और शांतरूप हैं और ईश्वरहै और सुद्धचे
तन्यहै मायाके विलासतें आकाश शून्य स्वरूप है सो स्वरूप करके पर्वत प्रमाण दृश्य रूपहोता
है संपूर्ण जगत परमाणु रूप होताहै आत्म विचार विना जीती नही जातीहै ५२ वसिष्ठजी श्रीराम

वं
सा·
चंद्रजीप्रतिकहतेहैं॥हेरामजी फेर भुशुंडकाक मेरेकों कहता भया हे वसिष्ठजी ऐसे मैंने गा
हते संते सो विद्याधर राजा शांत ज्ञान स्वरूप होता भया समाधीमें स्थित होताभया आत्म स्वरूप
के ध्यानमें एकाग्रहोता भया ५३ सो आत्म स्वरूपको ध्यान मैंने वारंवार कराहै तिस तिसतें जो
जो मैने कहा है तिस तिसतें बोधकी स्फुटताकों पाइ करके फेर दृश्य पदार्थमें मग्न नही होता
भया और परम निर्वाणकों प्राप्त होताभया ५४ वसिष्ठजीकहतेहैं॥ इसतें मैने कहाहै निर्मल
चित्तवाले पुरुषकों किया उपदेश जलमें तैल बूंदकी न्याई विस्तारकों प्राप्त होताहै ५५ यह त्या
गने को योग्यहै यह ग्रहण करने के योग्यहै ऐसी जिसके चित्तमें कल्पनाहै सो पुरुष संसार
से मुक्त नही होताहै सो सर्वज्ञ है तोभी मूढहै ५६ हेरामजी धर्मज्ञानी सदा होने योग्य है
और ज्ञानबंधु नही बने योग्य है मै अज्ञानीकों भला मानता हूं ज्ञानबंधुकों भला नही मा
नताहूं ५७ हेरामजी ज्ञानबंधु कौन होताहै ज्ञानबंधु तिसकों कहतेहैं जो पुरुष शास्त्रों को

लोकोंकों सुनावता है आपभी पढताहै कारीगिर सिरीखा उपजीविका वास्ते शास्त्रके प्रसंगकों क
रताहै शास्त्रकी विधिमें आप वर्तमान नही होताहै सो ज्ञान बंधु कहाहै ५७ जो पुरुष अन्न व
स्त्रमात्र प्राप्त होनेते प्रसन्न भयेहैं शास्त्रोंके फलकों जानतें हैं हमकों शास्त्र आई गयेहें और
मजूरी करणे हारोंकी न्याई अन्न वस्त्र लाभ वास्तेही शास्त्रार्थकों जानने हारे सो ज्ञान बंधु कहे
हैं ५८ जौनसें पुरुष शास्त्रमें कहे प्रवृत्ति मार्गकों सिद्ध करणे हारे धर्ममें प्रवृत्त होतेहैं और नि
वृत्ति करके ज्ञानकों देने हारे शास्त्रार्थमें नहीं प्रवृत्त होतेहैं सो ज्ञानबंधु कहेहैं ६० हे रामजी
आहार वास्ते उत्तम कर्मको करणा प्राण धारणे वास्ते आहारभी करणा तत्वजानने वास्ते प्राण
धारणा भी करणी जन्म मरण दुःख निवृत्त करणे वास्ते तत्वजाननेका अभ्यास करने योग्य है ६१
हे रामजी मायाके प्रवाहमों जैसा बने तैसे कार्यकों जो करताहै और कामना कैसे कल्पते रहि
तहै और रागद्वेषमें शून्यहै अंतःकरण जिसका सो पंडित कहाहै ६२ हे रामजी जीवको केवल

अहंता ममताके कारण मात्र कहते हैं तिसका पसारणा जगतका रूपहै और आत्मामें निष्ठा क्र
शोकों जगत के लयकों कहतेहैं यह उपदेशकी मुख्य भूमिकाहै ६३ हेरामजी वैराग्यकी वा
सना करके संपूर्ण जगतकों त्याग करके इस जगतकी मायाकी प्रकृतितें उठ करके मंकी ब्राह्मण की
न्याई कलंक रहित होइ करके परमपदका कें चलेजाओ ६४ हेरामजी एक मंकि नामा ब्राह्मण
होताभया सो मारवाड़ देशके मार्गमें चलता हुवा महा गरमी करके तपा हुवाभी लोकोंके ग्राम
कों प्रवेश करता हुवा मैंनें देखिया ६५ हेरामजी तुम्हारे दादा राजा अजके यज्ञ करावणे वास्ते में अ
पने आश्रमते आकाश मार्ग करके जाताथा तब में मंकी ब्राह्मणकों धूप करके व्याकुल भ
येकों देख करके दया करके वचन कहता भया ६६ हे मारवाड़ की झाड़ीके मुसाफिर तेरे कों
कुशल होवे यह ग्राम नीच लोकों के वसने वालाहै इसमें तेरा विश्राम नहीं बनेगा और ता
री रेती पड़ने करके और महाउग्र धूप करके तृषा तो अत्यंत बढती जातीहै ६७ परंतु इस

ग्राममें प्रवेश करणा भला नहीं जिस कारणतें महा अंधकार वाली कंदरामें सर्प बनना अच्छा
है पत्थरों में कीड़ा बनना अच्छाहै मारवाड़ देशकी झाड़ीमें लंगड़ा मृग बनना अच्छाहै परन्तु
ग्रामके मूढ़ जनोंकी संगती भली नहीं ६८ मंकी ब्राह्मण कहताहै हे भगवन् तूं कौन है पू
र्ण केसाहै पूर्ण बुद्धिहैं और महात्माहै और महा धैर्य वानहैं जिस कारण ते व्याकुल नहीं है
संपूर्ण लोकके वृत्तांतकों देखताहै जैसें मुसाफिर ग्रामके वृत्तांतकों असंगता करके देखता
है ६९ हे महामुने क्या तुमने अमृतपान कियाहै अथवा तूं महा सिद्ध हैं जिस कारण तें
यह संसार संपूर्ण उत्तम गुणोंतें रहितहै इसमें तूं सर्वार्थ पूर्ण जैसा विराजमान होता है
हे मुने तूं दोषों से शून्यहैं और आनंद करके पूर्णहै और पूर्ण होइ करके भी स्थिर मति है
तूं सभतें असंगहैं तोभी सर्वरूपहै तेरेकों जगत कुछभी प्रतीत नहीं होताहै और जगत
त्व अंतः करणमें प्रतीत होताहै ७० हे मुने तेरी बानी और रूप उपशमकों प्राप्त भया है और

सुंदर है और प्रगट प्रकाशमान है परंतु विरोधी किसीकाभी नहीहै और निवृत्ति कों प्रा
प्त भयाहै तोभी सर्वत्र प्रवृत्त है यह किस कारणते है ७१ हेमुने मैं शांडिल्यके कुलमें प्रक
ट भयाहूं मंकी मेरा नामहै तीर्थ यात्राके प्रसंगते बहुते देशोंमें फिराहूं बहुत तीर्थोंको दे
ख करके अब घरकों जाने वास्ते उद्यत भयाहूं ७२ परंतु मैं विरक्त मन भयाहूं घर के जानेकों
उद्यम नहीभी करताहूं यह संसारमें भूतों के समागमोंको मैंनें देखिया है वह समागम
कैसे हैं बिजुलीके चमत्कारकी न्याई चंचलहै ७३ हेभगवन् तुम मेरेकों कृपा करके अ पने
आपको सत्य करके कहो आप कौनहो सतजनों के मनरूपी सरोवर गंभीर होतेहैं और नि
र्मलभी होतेहैं ७४ महात्मा लोक दर्शनतेंही मित्रता करतेहैं तिन्हके दर्शनतें कमलोंकी
न्याईं संपूर्ण प्राणीओंके मन तत्काल प्रकाशमान होतेहैं और प्रसन्न होतेहैं ७५ मेरा यह
मन संसारके मोहते मुक्त होनेकों समर्थ नही होताहै तिसकों बोध करणेकी कृपा ते

मोहतें छुटावनेको योग्यहो ७६ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥हे महाबुद्धे मैं वसिष्ठमुनी हूं आकाशमें
ही मेरा घरहै किसी राजऋषिके कार्यनिमित्त इस मार्गको आयाहूं तू अब चिंताको मत करें तत्वके
ज्ञा जनोंके मार्गको आयगयाहै निश्चय करके संसार समुद्रके तटमें प्राप्त भया है ७७ हे मंकि वैरा
ग्यादिक युक्त भई ऐसी मति और शांतरूपा आकृति यह तुच्छ बुद्धिओंको नही होतीहै ७८ मं
किकावचन॥हेभगवन मैनें बहुत प्रकारकी दश दिशा भ्रमीहै परंतु संशयको नाश करा
ने हारा उत्तम जन मेरे को कोई नही मिला अब मेरेको संसारमें अनेक जन्मोंके पुण्य क
र्मोका फल प्राप्तभयाहै ७९ हेभगवन् बहुत दोषोंको देनेहारी संसारकी बहुत दशा दे
खतामें बहुत दुःखी भयाहूं यह संसारके सुख फेर२उत्पन्न होतेहैं फेर२नष्टहोतेहैं अवश्य इन्होंते दुःख
होताहै तिसतें यह दुःखरूपी भासतेहैं ८० यह संसारमें सुखही दुःखरूपहै तिसतें मैं
दुःखोंको भले मानताहूं जिसतें दुःखोंनें फेर दुःख नही होतेहैं और सुखोंके अंत में

मैनें दुःखही देखेहैं तिसतें सुख मेरेकों दुःखकों करतेहैं मेरा चित्त सुखदुःखों के तरं
गों करके व्याकुल भयाहै खुशक चिंता करके व्याप्त भयाहै ८१ मैं इंद्रिय सुखोंमों तत्पराभ
याहूं मेरेको विवेकी जनस्पर्श भी नही करते हैं जो विवेक रूपी सूर्य उदय नही होवे तो
वासना रूपी रात्रिका क्षय नही होताहै यह चित्तरूपी हाथी मदोन्मत्त भयाहै जिसने जो
सत्य वस्तु नहीहैं तिसकों सत्य वस्तु जान करके गलेमों बांधाहै जैसें बालक कांचकी मा
लाकों गले बांधताहै ८२ हेसाधो जैसें शारद ऋतुमों चंद्र घटाका अंधकार दूर होताहै औ
र दश दिशा निर्मल होतीहैं तैसें विवेकके उदयमों मोहका अंधकार नष्टहोताहै और
चित्तकी वृत्ति निर्मल होतीहै यहमैं सत्य जानताहूं साधुजनोंकी कही वानी बोधकों प्रा
प्त करतीहै तिसतें तुमने भी मेरेको संसारकी शांतिकों देने हारे बोध कराणेतें मेरेकों
संसार दुःखकी शांति कराणे योग्यहै ८४ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥ हे मंकि पहिले इंद्रियों

मोहतें छुटावनेकों योग्यहो ७६ श्रीवसिष्टजी कहतेहैं ॥ हे महाबुद्धे मैं वसिष्टमुनी हूं आकाशसें
ही मेरा घरहै किसी राजऋषिके कार्य निमित्त इस मार्गकों आयाहूं तूं अब चिंताको मत करें तत्त्वे
त्ता जनोंके मार्गकों आयगयाहै निश्चय करके संसार समुद्रके तटमों प्राप्त भयाहै ७७ हे अंकि वैरा
ग्यादिक युक्त भई ऐसी मति और शांतरूपा आकृति यह तुच्छ बुद्धिओंको नही होतीहै ७८ मं
किवाबचन॥हेभगवन मैनें बहुत प्रकारकी दश दिशा भ्रमीहै परंतु संशयकों नाश करा
ने हारा उत्तम जन मेरे कों कोई नही मिला अब मेरेकों संसारमों अनेक जन्मोंके पुण्य क
र्मोका फल प्राप्तभयाहै ७९ हेभगवन् बहुत दोषोंकों देनेहारी संसारकी बहुत दशा दे
खतामें बहुत दुःखी भयाहूं यह संसारके सुख फेर२ उत्पन्न होतेहैं फेर२ नष्टहोतेहैं अवश्य इन्हके दुःख
होताहै तिसतें यह दुःखरूपी भासतेहैं ८० यह संसारमों सुखही दुःखरूपहै तिसतें मैं
दुःखोंकों भले मानताहूं जिसतें दुःखोंनें फेर दुःख नही होतेहैं और सुखोंके अंत मों

मैनें दुःखही देखेहैं तिसतें सुख मेरेकों दुःखकों करतेहैं मेरा चित्त सुखदुःखों के तरं
गों करके व्याकुल भयाहै खुशाक चिंता करके व्याप्त भयाहै ८१ मैं इंद्रिय सुखोंमों तत्पर भ
याहूं मेरेको विवेकी जनस्पर्श भी नही करते हैं जो विवेक रूपी सूर्य उदय नही होवे तो
वासना रूपी रात्रिका क्षय नही होताहै यह चित्तरूपी हाथी मदोन्मत्त भयाहै जिसने जो
सत्य वस्तु नहीहै तिसकों सत्य वस्तु जान करके गलेमों बांधाहै जैसें बालक कांचकी मा
लाकों गले बांधताहै ८२ हेसाधो जैसें शरद ऋतुमों घन घटाका अंधकार दूर होताहै औ
र दश दिशा निर्मल होतीहैं तैसें विवेकके उदयमों मोहका अंधकार नष्टहोताहै और
चित्तकी वृत्ति निर्मल होतीहै यहमैं सत्य जानताहूं साधुजनोंकी कही वानी बोधकों प्रा
प्त करतीहै तिसतें तुमने भी मेरेको संसारकी शांतिकों देने हारे बोध करायेतें मेरेकों
संसार दुःखकी शांति करणे योग्यहै ८४ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥ हे मंकि पहिले इंद्रियों

करके विषयोंका भोगजो लक्षन करण लखना सो संवेदन कहाहै विषय नष्टभयेते फेर
तिसका संबंध विचारण सो भावन कहाहै विषयकार चित्तकी वृत्ति करणी वासना कही है
फेर मरणादिक मों भी दृढवासना करके दूसरे देहके आरंभमों भोग चाहना सो कल्पना कहीहै
यह चारों अपने नामके अर्थ करके महा अनर्थकों करते हैं विचार करणेतें अर्थ रहित होते हैं
अपने अर्थकों नही करतेहैं ८५ तिसतें हे रामकि विषयोंका संवेद नही भावन जान सो कैसाहै
संसरण दोषोंका आश्रयहै तिसमोंही संसरण आपदा रहतीहै जैसे वसंतऋतु मों लता होतीहै ८६
विवेकी पुरुषकों संसारका भ्रम वासना सहित क्षीण होताहै जैसे वैशाखमासके अंतमों ग्रीष्म
ऋतुमों पृथिवीका रस सुक जाताहै ८७ हे रामकि जिस बोध करके तत्व वस्तुका बोधहोवे तिस
कों बोध कहतेहै तत्ववस्तुका बोध नही होवेतो बोधने क्या कारणहै जिस कारणतें तत्वके बोधविना जो बो
है सो बोधका विरोधीहै ८८ हे रामकि देखने हारा और देखणेकी क्रिया और देखने योग्य जो पदार्थ

ने· सा· ५९

है यह तीनोंमो एक एक प्रति केवल बोध मात्रही प्रतीत होवे तो सारका बोध होता है
तो बोधका अंत होताहै और जैसें आकाश पुष्पका नाम जाननेतें आकाश पुष्पकी प्रती
ति कदाचित भी नहीं होती है तिसतें तत्व जाननेकों ही बोध कहते हैं ८९ हेमंकि जोजि
सके समान जाती वाला होताहै सो तिसके साथ एक रूप होताहै जैसें जल जलके सा
थ दूध दूधके साथ आकाश आकाशके साथ मिल जाताहै तेसें बोध सर्वत्र एक जैसाहै
सो आपसमों एक जैसा होनेतें एक रूप होताहै ९० जो कहो काष्ट पाषाणादिक मों बो
ध नहीहै और बोध रूप आत्मा एक अद्वितीय है काष्ट पाषाणादिक जड़हैं तिन्हमों बोध
रूप सत्तारूप परमब्रह्म नहीहै इस करके एक अद्वितीयता की हानि होतीहै ऐसा नही क
हो जैसें और पदार्थ ज्ञान करके असत्य भासतेहैं तेसेंकाष्ट पाषाणादिक बोध बिना स्वभाव
ते जड़हैं और असत्यहैं ९१ हेमंकि अहं ब्राह्मणः में ब्राह्मण हूं ऐसा फुरणा बंधकों करताहै में

नि॰ सा॰ ५८

देहादिक नही ऐसा करण मुक्तिकों देताहै एताही बंध है और एताही मोक्ष है और स्वाधीन है इसमों क्या असामर्थ है ९२ हेमंकि यह मनुष्य रूपी तृणहै सो वासनारूपी पवनों करके उडाए हैं तिन्हके ऊपर जौनसे दुःख आइ पड़तेहैं सो कहने कों समर्थ नही होतेहैं ९३ हेमंकि यह मनुष्य लोक भ्रांति करके उत्कभये विषय भोगोंके रसमों आसक्तभयेहै जैसें हाथ कर के ताडन किये गर्दके गोले उपरकों चढ़के नीचें पड़तेहैं तैसें इहां भोगोकों भोग करके नर कमों पड़तेहैं फेर काल्पांतर करके और देहांतर पाइ करके और जैसे हेजाते हैं ९४ हेमंकि य ह संपूर्ण जगतके भाव आपसमों असंगहैं जैसें बनमों पत्थर होतेहैं इन्हकों एकत्र करके बं धन करणेकों भावना ही संगलीहै ९५ हेमंकि विचार करणे मात्रतें बंधकी तुच्छ वासना भी नहीहै जैसे कठिन मार्गमों चलने हारेकों अपने हाथमों दीपक का उजाला करणे वालेकों मार्ग सुगम होताहै ९६ हेमंकि जितने यह देह स्त्री धन पुत्रादिकजगत के भाव हैं सो

विचार करके सुकी रेतीकी न्याईं क्षणमें शिथिल होजातेहैं ८७ हेमंकि संपूर्ण भावोंकों मि-
थ्याही चैतन्य स्वरूपता मानीहै जैसें स्वप्नेके पर्वतोंकों मिथ्याही पदार्थता मानीहै ८८ हेमंकि
पदार्थोंकी जो अपेक्षा इच्छाहै सोही बंधहै और उपेक्षा जो है नहीं इच्छा सोही मुक्तहै तिस
उपेक्षामें जो विश्रांत भयाहै तिसने क्या पदार्थ चाहीदाहै सो पूर्णकाम भयाहै ८९ श्रीवसिष्ठ
जी कहतेहैं॥ हे रामजी मंकिनें इस प्रकार श्रवण करते हुवे तिसतें उपरांत अत्यंत बलवानभी
मोहकों निशेष करके त्याग कर दिया जैसें सर्प अपनी त्वचाकों त्यागदेता है ९० हे रामजी जैसा
संसार प्रवाहमें कार्य आजावे तिसकों करना हुवे तिसने संपूर्ण वासनाकों त्याग करके शत
वर्ष पर्यंत आत्म विचारकी समाधीमें स्थिति करीहै ९१ सो मंकि अबतक पाषाण के बरो
बर स्थिरता धारण करके अंतःकरणकों शांत करके महा योगीश्वर भयाहै हम लोक तिस
के ध्यानमें अंतःकरणमें प्रवेश करके बोधन करते हैं तो सावधान होताहै नहीं तो ध्यान

में मग्न रहताहै ९२ इतिमंकिप्रसंगः समाप्तम्॥ हे रामजी जैसें आकाश में वृक्षोंका बन नहीं है
जैसें रेतीमें तेल नही है जैसें चंद्र मंडलमें बिजली नहीहै तैसें चित्तमें देहादिक नहीहै ९३ हे
रामजी जिस युक्ति करके बने तिस युक्ति करके अपने पुरुषार्थके यत्न करके वासना को निर्मूल
कर यही कल्याणका उपायहै ९४ हेरामजी अपने पुरुषार्थ के यत्न करके जैसें जानताहै तैसें अ
हंकारके भावके अंशकों निरवाण कर यही वासना क्षयका मूलहै ९५ हेरामजी अहंभावके त्या
गने रूपी पौरुष यत्नतें परे संसार तरणेकी और गती नहीहै अहंभाव त्याग रूपही वासना क्ष
यका नाम कहाहै ९६ हेरामजी घोर शोक प्राप्त भये संते कठिन संकटकी प्राप्तिमें दुर्गमस्थान
में क्रम करके जैसा स्थान समागम होवे तैसें लोकोंको परचाने वाले अंतःकरणमें दुःख रहि
तभया तूंभी लोकोंकी न्याई दुःखको मान ९७ हेरामजी इस्त्रीयोंके समागमें विषे और संसार द
शामें और उत्सवोंके उदयमें वासना सहित मूढ पुरुषकी न्याई आनंदको सेवन कर ९८

नि॰
प्र॰सा॰
५२१

हे रामजी मृत्युके कार्य युद्धादिकों में शत्रु रूपी प्राणी गणोंकों वनकी अग्नि तृणोंकी न्या
ईं स्पृहासें रहित जैसा होइ करके क्रोध रूपी अग्नि करके वासना सहित मूढ पुरुषकी न्याईं द
म्य करता रहो ९८ हे रामजी द्रव्य प्राप्तिके कार्योंमें क्रम करके भये और खेद करके रहित भया
तूं वासना सहित मूढ पुरुषकी न्याईं जैसें बगुला मछरी वास्तें ध्यान स्थित होताहै तैसें द्रव्य
की प्राप्तिकों विचारणा कर ९९ हे रामजी दया करणे योग्य दीन जनोंमें दया कर महात्मा पुरु
षोंमें धैर्य और आदरकों कर अंतःकरण में आत्म विचारके आनंद सहित हुवा तूं बाहिर के
कार्यों कों वासना सहित मूढ पुरुषकी न्याईं वर्तमान हो १०० हे रामजी अंतःकरणमें नित्य
आत्माकी भावना सहित होने करके स्थित होवें तो तेरे उपर वज्रकी धारा पडे सो भी कुंठि
त होजाती है १०१ हे रामजी तेरे चित्तकी वृत्ति संकल्प त्याग करके लीन भई जैसी और बाहिर
के कार्यमें आसक्त भई है तूं अब और अंतः करणमें अत्यंत सुप्तभये जैसें चित्त करके

से·
·सा·
२२

चिंताज्वरसें रहित स्थितहो २ हे रामजी जो तूं सुषुप्तिमोंहै तो जाग्रतकी न्याईं हो जो जाग्रता
है तो सुषुप्तिकी न्याईं हो और जाग्रत सुषुप्ति दोनोंमों एक वृत्ति होवे तो तूं निर्विकार होवेंगा ३
हेरामजी तूं इसजगतकों द्वैत भी नही जान और एक अद्वैत भी नही जान ऐसे निश्चय
करके परम विश्रांतिकों प्राप्तहो आकाशकी न्याईं निर्मल चित्त हो ४ श्रीरामचंद्रजीकावचन
श्रीमुनिप्रति॥ हे मुनि श्रेष्ट जो जगत द्वैतभी नहीहै और अद्वैतभी नहीहै तो में राम हूं तूं व
सिष्टहैं ऐसी प्रतीत कैसें है सो मेरे प्रति कहो ५ श्रीवाल्मीकीजीश्रीभरद्वाजप्रतिकहतेहैं
हेभरद्वाज श्रीरामचंद्रजी ऐसा वचन कहैं संतें प्रश्नका उत्तर कहने वालेमों श्रेष्ट वसिष्टजी
समके प्रत्यक्ष प्रकट क्षणमात्र मोन करके तूष्णीहोते भये ६ तिस वसिष्टजी के तूष्णी स्थितहो
तसंते अब कैसें उत्तर होवेगा ऐसे संशय समुद्रमों सभाके लोककों मग्न भये संते ७ श्रीरा
मचंद्रजीश्रीवसिष्टजीप्रतिकहतेहैं॥ हे मुनि श्रेष्ट तुम मेरे न्याईं क्यों तूष्णी स्थित भयेहो सो

सा जगतमों कोई प्रश्न नहीहै जिसका उत्तर तुम्हारे मनमों नहीं स्फुरण होताहै ८ श्रीवसिष्ठ
जीकहतेहैं। हे रामजी मैं कुछ कहनेकी अशक्यता करके उक्तिके दाय करके तूष्णीं स्थित नहीं
भयाहूं किंतु इस प्रश्नकी कोटीका तूष्णीं होना उत्तरहै तदभी तुम्हारे संशयकी निवृत्ति वाले कु
छ उत्तर कहता हूं ९ हे रामजी दो प्रकारका प्रश्न करणे हारा होताहै उसमें एक तत्वज्ञ होताहै
एक अज्ञानी होताहै अज्ञानीकों अज्ञानीके समझने योग्य उत्तर देना और ज्ञानीकों ज्ञानीके समझ
ने योग्य उत्तर देना १० हे रामजी इतना कालतें तत्वज्ञानकों नहीजानताथा तिसतें विकल्प सहित
उत्तरोंका अधिकारीथा ११ अबतो तत्वज्ञानी भयाहैं परम पदमों विश्रांत भयाहैं तिसतें सविकल्प
उत्तरोंका पात्र नहीहै १२ हे रामजी पुरुष जैसी वृत्तिवाला होताहै सो तैसे वचनकों कहता है
तिसतें मैं तो वाणीसें परे परमपदमों विश्रांत भयाहूं तो अब तैसाही उत्तर कहने योग्यहै १३
हे रामजी जो पुरुष जीवताही शांत वृत्तिभयाहै व्यवहार करताभी मृतपुरुषकी न्याई जड़

हृत्तिऐसाहै तिसकों परमपदमों प्राप्तभये कोजानतेहैं १४ हेरामजी अहंताही परम अविद्याहै निरवाण पदका विरोध करणो हारीहै तिस करकेही मूढपुरुष जानीदाहै सोही विलीम पुरुषकी चेष्टाहै १५ हेरामजी ऐसा शरदऋतु का आकाश नही शोभताहै और गंभीरनिश्चल भया क्षीर समुद्रभी नही शोभताहै और पूर्णमासी का चंद्रमाभी ऐसा नही शोभताहै जैसा तत्त्वज्ञ पुरुष शोभताहै १६ हेरामजी जैसे चित्रमों लिखी युद्ध करती सेनाका युद्ध क्षोभकों नही करताहै तैसें तत्त्वज्ञानी पुरुष व्यवहारकों करताभी क्षोभकों नही प्राप्तहोता १७जो पुरुष इष्ट प्राप्तिमों और अनिष्ट प्राप्तिमों शांत होइ करके व्यवहार करताहै तोभी मृतपुरुषकी न्याई जिसके अंतःकरण मों व्यवहार का कारण नही होताहै सो निरवाण सुखको अनुभव करताहै १८ हेरामजी तिसतें संपूर्ण कल्पनाके आश्रयकों त्याग करके आकाशकी न्याई अंतःकरणमों व्यवहारकी शून्यताकों सेवन कर व्यवहारका नही करणाही परम कल्याण कहाहै इस का॰

विस्मरण होना परम उत्तम पद है १९ हे रामजी जो पुरुष परम तत्वमें विद्मान भया है
जिसकों समदृष्टी भई है और रागद्वेष सें रहित भयाहै तिसकों शांतना होनी और य
हार दोनें एक सिरीषे हैं २० अथवा इसकों निर्वाणकी प्राप्तितें शांतताही शेष रहती है जौन
सा मुनि निश्चय करके वासना रहित होवेगा सो व्यवहारकों कैसे करेगा २१ हे रामजी जब
ग तत्वज्ञानी पुरुषकों निरवाण पुष्ट नही भया तबलग सो व्यवहारकों करता है और राग
द्वेष भयादिकों का तिसकों उदय होताहै २२ हे रामजी सोही ध्यान जानना अथवा समाधि जा
ननी जो अहंभाव का नही फुरणाहै जौनसे जड़ नहीहैं तिन्हकों जड़ताकी न्याई निरवाण सिद्ध
होताहै वुह कैसा हैं सम चित्तता शांत चितना सहित निर्विकार हैं २३ हे रामादिक तत्ववेत्ता
जी वाक्य संमूहके विस्तार करके प्रकट भये जो द्वैत मार्ग और अद्वैत मार्ग हैं तिनके भेदों
करके भ्रमकों प्रकट करणे हारे मत भेदों करके दुःखकी प्राप्ति वास्ते मूढ पुरुषोंकी न्याई

खेदकों मत प्राप्त होवो तुम तत्ववेत्ता होइ करके भेद दृष्टिकों त्याग न करो २४ तत्ववेत्ता पंडितों की संगति करके बुद्धि रूपी तलवार कों तीक्ष्ण करके अज्ञान रूपी लताकों तिल तिल प्रमाण करके खंडित करो २५ हेरामजी देहधारीजीवोंको दो रोग महा घोरहैं इस लोककी वांछा और परलोक की वांछा जिन्ह रोगों करके यह जीव संपूर्ण पीडित भये महा घोर दुःखों कों भोगतेहैं २६ हेरामजी अज्ञानीजीव इस लोकके दुःख दूर करणे वास्ते भोगरूपी दुष्ट औषधीओं करके यत्नकरतेहैं जब लग जीवतेहैं तब लग इह लोक वास्ते यत्न करतेहैं और परलोकके सुख वास्ते यत्न नही करतेहैं २७ हेरामजी जौनसें उत्तम पुरुषहैं सो परलोककी महा व्याधीकी चिकित्सा वास्ते शम और सत्संग और आत्मबोध कि अमृत रूपी औषधीओं करके यत्न करते हैं २८ हेरामजी जो कोई अवश्य पर लोकमों होने हारी नरक रूपी व्याधि की चिकित्साकों इहां ही नही करता है सो पुरुष यहां औषध नही मिले तहां परलोक मों जाइ करके क्या करेगा जैसे रोगी औषध

मिलनेके स्थानमों चिकित्सा नही करे ओर जहां ओषध नही मिले तहांजाई करके क्या चिकि
त्सा करेगा २९ हे मूढजनों यह लोककी चिकित्सा करके आयुषाकों वृथा मत खोया करो आत्मज्ञान
रूपी ओषधों करके परलोककी चिकित्साकों शताबी करो ३० यह आयुषा पवन करके हूलाय पिप
लके पत्रके अग्रमों लगे जल बिंदुकी न्याई चंचलहे इस कारणतें परलोक की नरकरूपी व्याधी
हरणे वास्ते यत्न करके शताबी चिकित्सा करो ३१ परलोककी महा व्याधीकी यत्न करके चिकि
त्सा किये संते इह लोककी व्याधि आपही शताबी नाशकों प्राप्त होतीहे ३२ हेरामजी यह आत्मा
भोगरूपी कीचड़के समुद्रमों मग्न भयाहे सो अपने पौरुषके चमत्कार करके नही तारा जावेतो
तिसके तरणेका ओर उपाइ कोई नहीहे ३३ हेरामजी जो पुरुष अपने मनकों नही जीतेहे ओर आ
त्म ज्ञानतें रहित हे ओर भोग रूपी कीचड़मों मग्न भयाहे ऐसा मूढ हे सो आपदों का पात्र हो
ताहे जैसें जलोंका पात्र समुद्र हे ३४ हेरामजी जैसें जीवनेका पहिला भाग भोग पदार्थों का

त्यागहै कैसा है तुह त्याग रागद्वेषकी शांतिकों देणे हाराहै ३५ हेरामजी अनेक सुख दुःखोंकी
प्राप्तिमों जोनसा पुरुष आत्म स्वरूप के विचारतें नष्ट नही होताहै सो कदाचितभी नष्ट नही होता
है जो सुख दुःखोंकी प्राप्तिमों नष्ट होताहै सो स्वरूप करके नष्ट होताहै और शास्त्रोंके उपदेश करके
क्या प्रयोजन है ३६ हेरामजी जिसकों भोगोंमों इछाका उदय भयाहै तिसकों सुखदुःखादिक यत्न है
इछा करके फेर चिकित्सा नही बनतीहै पहिले इछा हर करणे वास्ते चित्तकी चिकित्सा करणी ३७ हेरा
मजी जो पुरुष भोग रस रूपी विषयको खाई करके तिसके स्वादमों दिनो दिन प्रीति करताहै सो चिन्ता
रूपी अग्नि प्रज्वलित भई मों अपने स्वरूपकों अलय रूप बनाई करके तिसके वधावोने वास्ते
रताहै ३८ हेरामजी चित्तके समाधान करणेकों इछाका त्याग करणा कहाहै जेसे इछा त्यागनेतें
चित्त शांत होताहै तैसें संकडे उपदेशों करके नही होताहै ३९ हेरामजी इछाका उदय होना जैसा दुः
खहै तैसा नरकमों भी नहीहै इछाकी शांतिमों जैसा सुखहै तैसा ब्रह्मलोकमोंभी नही है ४०

हेरामजी इच्छाके उदय होनेकों चित्त नाम करके कहतेहैं इच्छाकी शांतिकों मोक्ष कहते हैं इतने मोही शास्त्रहैं और तप और नियम और इसमों ही संपूर्ण होतेहैं ४१ हेरामजी जो पुरुष इच्छाके शांत करणेमों यत्न नही करता है सो नरोंमों नीचहै अपने आत्माको आपही दिनो दिन अंध कूपमों गेरताहे ४२ हेरामजी यह लोक अपने तरणे वास्ते शास्त्रोंको और गुरुओंके उपदेशकों क्यों चाहतेहैं वृथाही चाहतेहैं क्यों तिन्होंकों इच्छाके त्यागनेसें बिना आत्म चिंतनकी समाधी नही प्राप्त होतीहै ४३ हेरामजी जिसकी बुद्धि केवल इच्छा मात्र त्यागने मों असाध्य भईहै तिसकों गुरोंका शास्त्रोंका उपदेश व्यर्थहै ४४ हेरामजी इच्छा त्याग बिना एक क्षण भी जावे तिसके वास्ते चोरों करके लूटे पुरुषकी न्याई मेरी चोरी भई है ऐसे करलावने योग्यहै ४५ हेरामजी विवेक रहित आत्माकीजो इच्छाका पूर्ण करणा सोही संसाररूपी हृक्षके पोषण वास्ते अखंड जलों करके सिंचन बनाहै ४६ हेरामजी तत्व विवेकी पुरुष शास्त्रके विधि निषेधों

का पात्र नहीहै जिसकों सर्व पदार्थोंकी इच्छा शांत भई है तिसकों विधि निषेधसों क्या प्रयोजन॥
है ४७ हेरामजी तत्वज्ञका यही लक्षण है जो इच्छाकी शांति होवे सो इच्छा त्याग कैसाहै सर्व
लोकोंको आनंद करताहै और अपने कों आत्माके स्वरूपके अनुभवकों करताहै ४८ हेरामजी
जब दृश्य पदार्थकों रस रहित जाना तद चित्त नही फुरताहै तबही इच्छा त्याग प्रकट होता है
सोही मुक्तिका रूपहै ४९ हेरामजी जो दुःखकों सुखकी भावना होवे तो विषभी अमृत रूप हो
ताहै धीर बुद्धि पुरुष ऐसा निश्चय करके बोधकों प्राप्तभया प्रसिद्ध कहीताहै ५० हेरामजी त
त्ववेत्ता पुरुषकों इच्छा और अनीच्छा दोनों समान भईहैं और शांत भई हैं तदभी अनीच्छाके
उदयकों मैं परम कल्यानके उदय वास्ते मानता हूं ५१ हेरामजी चित्तका विषय भोगोंको चे
तनेके सन्मुख होनाही रूपहै तिसकों चित्त कहते हैं सोही संसारहै अरु सोही इच्छाहै ति
सतें रहित होनाही मुक्तीहै ऐसें जान करके इच्छाकी शांतिकों धारण करो ५२ हेरामजी॥

इच्छा रूपी छुरी करके बेधे हुए हृदयमों शूलजैसी पीडा होतीहै जिसमों मणि और मंत्र औ
र औषध यह कुछ नही कर सकतेहैं ५३ हेरामजी योगीश्वर जो जनहै सो आत्मज्ञानके कार
णोंते जगतकों आकाशकी न्याई शून्य करतेहैं फेर आकाशको ही सत्ताके कारणे करके त्रैलो
क्यकों करतेहैं ५४ हेरामजी जैसें आकाशमों सिद्धोंके संकल्प रचना के अनेक नगर हैं तैसें
चैतन्य रूपी आकाशमों हजारों सृष्टिहैं ५५ हेरामजी तत्वज्ञ पुरुष अहंतासें रहित भया
चैतन्य सत्ताकी एकतामों वर्त्तमान भया तिसकों अणिमादी अष्ट सिद्धिआं सूके हुवे पत्र के
बरोबर तुच्छही भासतीहैं ५६ हेरामजी देवता असुर मनुष्यों करके सहित त्रैलोक्यमों सो
वस्तु मेरेकों दृष्ट नही होताहै जो वस्तु विवेकी पुरुषकों लोभका एक रोम मात्रभी अंश
कों करे ५७ हेरामजी अविचार करके अहमस्मि अहंभाव है विचार करके अहमस्मी ऐसा
अहंभाव नहीहै हेरामजी अहंभावको अभाव भये संते जगत कहाहै और संसार क

होंहे १५८ हे रामजी बुद्धिसें आद लेकरके जगत जिसके फुरणेमें नहीहै सो आकाशकी न्याई
फुरणेतें शांत भयाहै उत्तम पुरुष तिसकों मुक्त भयेकों कहतेहैं ५९ हे रामजी संसरणे अर्थां
तें जिसका मन रहित भयाहै सर्वात्मा रूप होइ करके जो स्थित भयाहै तिसकों सर्व प्रकार
करके सर्वदा कालमें सर्व विश्व शिवरूप चारों तरफ बनाहै ६०. हे रामजी जो पुरुष वासना
रहित भयाहै भोग पदार्थों के रसते रहित भयाहै और सर्वप्रकार की यह लोक परलोक की
इछातें रहित भयाहै तिसकों वेदांत शास्त्र विना और विनोदके कारण निमित्त कौनहै तिसतें
शास्त्रार्थका विचार सज्जनोंका सतसंग युक्त भयाहै और निर्मल अंतर करण वाले पुरुषकों प
दार्थोंके फुरणेका संबंध नहीहै यही तत्वज्ञोंका स्वरूप हम लोकोनें मानाहै ६१ हे रामजी तत्वज्ञ
पुरुषका स्वभाव रूपी सूर्य जैसें जैसें स्थिर होताहै तैसें तैसें भोग वासना का अंधकार शमि
त होताहै सत्यहै असत्यहै ऐसी प्रतीतमें नही होताहै ६२ हे रामजी यह जगत विवेक और

विवेक करके प्रकाशमान और असत्य रूपहै अविवेक करके भासमानहै और विवेक क
रके असत्यहै ९३ हेरामजी विवेक करके पूजित किया यह आत्मा तत्काल महा बरको दे
ताहै जिसके वर प्रदान में विष्णु रुद्र इंद्रादिकों की पूजाके फल सके तृणके तुल्यभी नहीं
होतेहैं ९४ हेरामजी यह आत्माही परम देवता है सो विचार और सत संग और शमादिकगु
णों करके पूजन किया हुवा तत्काल मोक्षरूपी बरकों देताहै तिसतें आपना आत्मा ही परमे
श्वरहै ९५ हेरामजी महात्मा पुरुषोंको भी देवता पूजन और तप और तीर्थ और दान किये
हुवे अविवेकतें भस्ममों होमके न्याईं वृथा होतेहैं ९६ हेरामजी और जो विवेक करके देव पू
जादिक श्रेष्ठ फलकों करते हैं तो विवेककों ही अंतःकरणमों सिद्ध क्यों नहीं करिये ९७ हे
रामजी जिस तिस प्रकार करके विवेक अंतः करणमों दृढता कों प्राप्त करणा जैसें जैसें औ
र अनेक भ्रमों करके नाशको प्राप्त नहीं होवे ९८ हेरामजी विचारवान पुरुष जैसें मिले

ते॰ सा॰ ५४

तैसें स्थित होतेहैं जैसें बने तैसें जातेहैं जैसा बने तैसा कर्म कर्म करते मोक्ष सिद्धिकों प्राप्त होतेहैं ६९ हेरामजी अथवा संतजन जो हैं सो सर्व त्याग करके शांत और उज्वल भयेहैं अंतः करण जिन्हका एक एकांतमों ही स्थित होवे चित्रमों लिखे जैसे आत्म चिंतनकी समाधि मों स्थित होवें ७० हेरामजी जैसें जन्मसें अंधा पुरुष लोकोसें सुन करके नेत्र सहित पुरुष की रूपके अनुभव को वर्णन करताहै आप नही जानताहै और अंतः करणमों संतापकों प्राप्तहो ताहै तैसें अज्ञानी पुरुष निरवाण कों वर्णन करता हुवा आप नही जानता है संताप को प्राप्त होता है ७१ हेरामजी जो पुरुष अज्ञानरूपी ज्वरतें मुक्त भयाहै बोध करके जिसका अंतःकरण शीतल भयाहै यही तिसका प्रगट लक्षण होताहै जो भोग रूपी जल उसकों रुचि नही करताहै ७२ हेरामजी तुम चैतन्य सत्ताके आकाश बनजावो परमानंद रसका पान करो संशयों शंका त्याग करके स्थित होजावो और निर्वाण नाम आनंदन बनमों स्थित होजावो ७३ हेरामजी चित्त

रूपी भूमिकामों समाधी का बीज जो है सो संसारके निरवाण सुख करके पड़ताहै सो चित्त भू
मिका कैसी है विवेक सहितहै अरु जहां विवेकी जनोंका बनहै तहां सो चित्तरूपी निरवाण
बीजके उगाड़ने वास्ते शुद्ध और पुष्ट तरोलकर करणे हारे और मधुर और अपनेकों हित करणे
हारा ऐसा बोधका अभ्यास रूपी अमृत जलों करके सिंचन करणे योग्यहै ७४ सो कौन है अमृत
जल सत्संग रूपी नवा क्षीरहै चंद्रमाके किरणोंकी न्याई शीतलहै अंतःकरणनें संसार की शू
न्यताकों कर देतेहैं और आनंद करके पूर्ण हैं और निर्मल हैं और अमृतकी न्याई शीतलहैं अमृ
तरूपी नहिरते प्रकट भयेहैं ऐसे शास्त्रार्थ रूपी उत्तम जलहैं और संसारकी निरवाण शांति कों
करतेहैं ऐसे ध्यान रूपी रसहै सो यत्न करके सेवने योग्यहै ७५ हे रामजी उसको तपरूपी कम
र कोट देना है और पदार्थ चिंतारूपी कांटे तोड़ने योग्यहैं और तीर्थोंमो विश्राम करणे रूपी
वायु देने योग्यहै ऐसें करणेतें निरवाणका अंकुर उठ खड़ा होताहै ७६ हे रामजी इस की

रक्षा करणे हारा माली गुरु शास्त्रके उपदेश वाला शीतल अंतःकरण वाला मुमुक्षु पुरुष है सो संतोष नाम वालाहै आत्म तुष्टिको देणे हारी मुदिता नामी इस्त्री करके युक्तहै ७७ हेराम जी और संपदारूप जो इस्त्री है सो तरंगो की कणो के न्याई चंचलहै सोही पाप कर्मरूपी घन मंडलतें प्रगट भई भोग तृष्णारूपी बिजुली पड़तीहै तिन्ह करके निरवाण वृक्ष दग्ध होजाताहै ७८ हेरामजी निरवाण वृक्षकों सुकाउने वाले संसारकी आपदा और संपदा विघ्नहै तिन्हकों दूर करणे वाले धीरता और उदासता और जप स्नान दान ओंकारादि मंत्र और शिवजी के ध्यान करणे करके विघ्न हटाओने और निरवाण वृक्षकी रक्षा करणी ७९ हेरामजी इसप्रकार करके रक्षण किये ध्यान बीजतें विवेक रूपी अंकुर होताहै सो अपनी शोभा करके प्रसिद्ध होताहै समृद्धि युक्त होताहै जिस अंकुरते दो पत्र निकसते हैं एक शास्त्र विचार दूसरा सत संग होताहै अंतःकरण की स्थिरता रूपी इसका पेड़ निकसता है संतोष करके विस्तार।

कों प्राप्त होताहै वैराग्य रस करके पूर्ण होताहै शास्त्रार्थ और सतसंग और वैराग्य रस करके
स्थूल होताहै रागद्वेष रूपी वानरोंके क्षोभ करकेभी किंचिन्मात्रभी कंपाइमान नहीं होताहै ८०
हेरामजी प्रकट वचन कहना और सत्य बोलना सत्यरूप भासना और धीरता और निर्विकल्पता
और समता और शांतता और मैत्री और करुणा और कीर्ति और विशालता और आधीनता ऐसी उ
त्तम गुणों वाले पत्र जिन्हकी ऐसीआं लताहैं जिन्हका यश पुष्पहै तिन्ह करके युक्त होताहै जैसें
कल्पवृक्ष कल्पलता युक्त होताहै ८१ हेरामजी ऐसे निर्वाण वृक्षकों मुमुक्षुरूपी मुसाफर छाया
मों आन बैठतेहैं जिन्हकों दैव योगतें पिछले प्रारब्ध कर्म रूपी यात्राकी मजल पूरी होतीहै औ
र पुण्य कर्मों करके भोगों विषें विरक्तता होतीहै जैसें मुसाफर मारवाडके स्थलोंमों विरक्त होता
है ८२ अंतःकरण मों तत्व विचार करके पूर्ण भयाहै व्यवहार मों क्षीण भया जैसाहै संसार की
वृत्तिओंमों सोपआ जैसाहै अंतःकरण मों आनंद करके पूर्ण मन भया और इंद्रियोंकी विषय

वासनामें मौनकों प्राप्तभया ऐसा पुरुष विवेक वृक्षकी छायामें स्थिती करतेकों जानाहै ८३
हेरामजी विषयोंमें परम विरसताकों समाधान कहतेहैं सो जिसनें धारण किया है सो मनुष्य
रूप करके परब्रह्महै तिसकों नमस्कार करतेहैं ८४ हेरामजी विषयोंसें अत्यंत तृष्णा जो त्याग-
नीहै सो वज्रकी न्याईं अभेद्य और संपूर्ण वासनाजालकों चूर्ण करणे द्वारा वज्र नाम करके ध्यान
कह्याहै तिस ध्यान करके और तत्वज्ञान करके भेद गलित भयेसंते तृण समान और ध्यान करके
क्या कार्यहै ८५ हेरामजी तत्वविवेकी पुरुष शास्त्र श्रवण पाठ करणा जप करणेका अंतमें
समाधी मों तत्पर होवे समाधीके अंतमें शास्त्र श्रवण पाठ जपोंकों करे वृथा और हृदयमें आस
क्त नहीहो ८६ हेरामजी बाग बगीचामें पुष्प समूह करके शोभायमान वृक्ष लताके कुंजन में
धूप गरमी रहित आनंद युक्त ऐसा विश्राम नही प्राप्तहोता है जैसा संतजनों के समागममें हो
ताहै ८७ हेरामजी वसंतऋतु और नंदनवन और शरदऋतु का पूर्ण चंद्रमा और स्वर्गक्रियां

अप्सरा इन्द्र सभका आनंद एक तर्फ होय और संतोषरूपी अमृतका आनंद एक तर्फ होवे
तदभी संतोषामृतके आनंद समान नहीं होताहै ८८ हेरामजी द्रव्यकी उपार्जन और रक्षा कर
णेमें महा कृपणता और दीनताको जानताभी है तोभी जो मूढ पुरुष द्रव्यमें इच्छाको धारण
करताहै सो मनुष्योंमें पशुहै तिसको स्पर्श नहीं करणा ८९ हेरामजी हे महाबुद्धे रामजी जो
कोई परमेश्वरकों चिरकालकी भक्ति करके दिनरात्र प्रसन्न करे तिसकों परमेश्वर निर्वाणकों
देताहै ९० हेरामजी जो पुरुष मनके वाहिरके आरंभकों और अंदरके आरंभको तैसा त्यागरूपी
शस्त्र करके छेदन करताहै तिसकों खेती छेदनेतें जैसें खेतीका क्षेत्र प्रकट देखा जाताहै तैसें
इच्छा द्वेष सुखदुःख बुद्धि धृति महाभूत और अहंकार चित्त महतत्त्व इस प्रकारका क्षेत्र तत्त्वज्ञा
न करके प्रकट प्रतीतिद्वारा प्रकाशमान होताहै तिसतें सो पुरुष क्षेत्रज्ञ होताहै ९१ हेमहा
बुद्धे श्रीरामचंद्रजी ईश्वर दूर नहीहै और दुर्लभ नहीहै महा तत्त्वबोधरूपी तिसकारूपहै ऐसा

अपना आत्माही परमेश्वरहै ९३ हेरामजी सो महात्मा प्रसन्न होताहै सोही महादेव है सोही पर
मेश्वरहै प्रसन्न होइ करके विवेकरूपी दूतको प्रेरण करताहै शुभ चरित्रों करके पवित्र जानताहै
सो विवेकरूपी दूत इसको शुद्ध जान करके इसके हृदयरूपी मंदिरमों आत्मारूपी परमेश्वरको प्राप्त
करताहै तद आत्माहृदयमों आनंद करके निवासकरताहै जैसें निर्मल आकाशमों चंद्रमा शोभता ९४
हेरामजी इस तत्ववेत्ता विवेकी पुरुषनें विवेक केवलतें आत्माको हृदयमों स्थित करणा और मो
ह निद्राको त्यागना और वासना समूहकामिल दूर करणा और संसारकी वासनाका घन पिंजरा
बोध मुद्गर करके तोड़ करके अपनें स्वरूपानंद के उदयमों सावधान रहणा अज्ञानी पुरुषकी न्या
ईं जड नही होना ९५ हेरामजी यह जो दशादिशोंमों दृष्ट होतेहैं मनुष्य और नाग और देवता असु
र पर्वत गंधर्वादि नाम करके प्रसिद्धहैं सोकेते स्वप्न जागरण वालेहैं केते संकल्प जागरण मो
हैं केते केवल जागरणमो हैं केते चिरकालतें जागरणमों हैं केते घने जागरणमों हैं केते।

जाग्रत स्वप्नमो हैं केते क्षीण जागरणमो हैं इस प्रकारसे सात प्रकारके जीवहैं ९४ हे रामजी
कोई किसी कल्पमों किसी सृष्टिमों भये कोई किसीजगतमों भये केते पिछले कल्पमों सोये हैं
अब लग जागे नही हैं ९५ जो इस जगतकों स्वप्ना जानतेहैं तिन्हकों यह जगत स्वप्नाहै तिन्ह
जीवोंकों तूं स्वप्नजागरमों जान जीवनकी कथा प्रसंगकी न्याईं जीवते हैं जीवनेका अभिमान
जिन्हकों नहीहै सो जीवनेकों स्वप्ना जानतेहैं ९६ जो पुरुष कहीं कल्पमों सोइ गयेहैं और तिस सृ
ष्टिमों तिन्हकों जो स्वप्ना भयाहै सो यह हमारी सृष्टिका व्यवहार है उन्हके स्वप्नके मनुष्य ह
म हैं ९७ हे रामजी किसी पिछले कल्पमों किसी लोकमों किसी देशमों कोई प्राणी निद्रा रहितहैं
केवल मनके संकल्पमों तत्परहैं फेर तिस संकल्पके अंतमों और संकल्पकों करतेहैं तिन्हके सं
कल्पके पुरुष यह हम लोक स्थितभये हैं ९८ हे रामजी केते ज्ञानके अथवा योगके आदि सृ
ष्टिमों सृष्टि कर्ता ब्रह्माके साथ अवतार को प्राप्तभये हैं और ब्रह्माके दिन रूपी कल्पके आद अंत

मों उत्पति विनाश रहितहैं और सृष्टिके प्रवाह करके जगतमों अरठकी घड़ी सिरीषे आई प्राप्त होतेहैं पहिली सृष्टिके जन्मवालेहैं सो केवल जाग्रत अवस्था वालेहैं ९९ हे रामजी जो जीव जन्म जन्मांतरकों प्राप्त भयेहैं अपने स्वभावके संस्कार करके पिछले जन्म जन्मांतरोंके ज्ञान करके सहि त भयेहैं किसी कार्यके कारण करके संसारमों प्राप्त भयेहैं आत्मज्ञानके प्रकाशकों प्राप्तहैं सो चिरका लके जाग्रतमों हैं १०० हे रामजी कोई प्राणी ज्ञानकों प्राप्तभये हैं परंतु कोई दुष्ट कर्मके वेगतें वृक्षा दिक जड़ भावकों प्राप्तभये हैं तदभी अंतःकरणमों ज्ञान करके घनी जाग्रत जैसी जिन्हकी अवस्थाहै सो घन जाग्रतमों हैं १ हे रामजी जो जीव शास्त्रार्थका विचार करके सत्संग करके बोधकों प्राप्त भयेहैं ऐसे तत्ववेत्ता हैं सो जाग्रतकों स्वप्नकी न्याई देखतेहैं सो जाग्रत स्वप्नमोहैं और ज्ञानकी छठीभूमि कामों हैं २ हे रामजी जोनसें बोधकों भली तरासे पाइ रहेहैं और परमपदमों विश्रामकों प्राप्तभयेहैं जाग्रत्स्वप्न सुषुप्तिसें रहितहैं सो तुरीयावस्थामोंहैं सो जीवनमुक्तहैं ३ हे रामजी इह सात प्रकारका

जीवोंका भेद मैने तुम्हारे प्रति कहाहै कैसाहै समुद्रोंके समान कहने जाननेमों अगाधहै इस
कों जान करके अपने कल्याणमों सावधान रहो ४ हेरामजी जितना स्थावर जंगम जड़ चैतन्य जग
तके पदार्थोंका समूहहै जैसे और जाग्रत अवस्थामों प्रतीत होताहै जैसे स्वप्नमों नगरादिक असा
त्य प्रतीत होतेहैं संपूर्ण केवल स्वप्नमात्रहै तैसे यह केवल चैतन्यही परम आकाश रूपहै ५ हे
रामजी यह प्रसंगमों एक मेरेसें पाषाणाख्यान कथा प्रसंगको श्रवण करो वह कैसाहै कथाके रस
वालाहै पहिलें मैने देखाहै आश्चर्य रूपहै और प्रसंगके योग्यहै ६ हेरामजी मैं किसी कालमों अत्यं
त विरक्त भया त्रिलोकी मों अनेक प्रकारके विक्षेपों करके व्याकुल भया मनमों चिंतन करताहुआ
दूर देशमों विक्षेप रहित स्थानमों आकाशके कोणमों सुंदर कुटिया बनाइ करके दृढ समाधिमों
स्थितभया शतवर्षसें उपरांत समाधीसें जाग्रत भया ७ तिस कालमों प्राणायाम उतार करके जा
ग्रत अवस्थाके ज्ञानके अंशकोंमें प्राप्तभया तब अहंकार नामा प्रसिद्ध पिशाच इच्छा रूपी अंगना

करके सहित देह रूपी घरमें आइ प्राप्तभया ज्ञानके अंशको लयकों प्राप्त करता भया जैसें उग्र प
वन वृक्षकों उखाड देताहै ८ श्रीरामजीकाप्रश्न॥ हेब्रह्मन् तुम सदा निर्वाणके उदय सहितहो ऐ
से तुमकोभी अहंकार नाम पिशाच बाधा करताहै यह मेरेको संदेह भयाहै तिसको शांत करो ९
श्रीवसिष्टजीकावचन॥ हेरामजी अहंभाव बिना ज्ञानीकी क्या अज्ञानी की देह स्थिति आधार
बिना नही बनतीहै १० हेरामजी अज्ञानीने विश्रांत चित्त वाले ज्ञानीके इस विशेषको तूं श्रवणकर
जिसके श्रवण करके तेरा अहंभाव पिशाच शांत होवेगा ११ हेरामजी यह अहंकार पिशाच अस
त्यहै तोभी अज्ञानरूपी बालकने कल्पित कियाहै तिस करके स्थित रहाहै १२ हेरामजी अज्ञान भी
सत्य नहीहै विचार वाले पुरुषकों देखने मात्रतें क्षीण होताहै जैसे दीपवाले सें अंधेरा दूर होता
है १३ हेरामजी अज्ञानरूपी पिशाचनी जैसें जैसें विचार पूर्वक देखीदीहै तैसें तैसें लीन होतीहै १४
हेरामजी यह अज्ञान छवे मन सहित पांच इंद्रियोंके स्वरूप वालाहै और इंद्रियों करके प्रत्यक्ष

सा·
५

स्वरूप करके साकार प्रतीत होताहै तिस साकार का निराकार किस प्रकार करके कारण हो
ताहै कैसाहै निराकार छठे मन सहित पांच इंद्रियोंकी गोचर तांते परेहै १६ हेरामजी सं
कल्प रूपी आकाशमों जो कुछ वृक्षादिक अथवा संपूर्ण आकाशादिक दृष्ट होताहै सो संकल्प
ही तिस रूप करके प्रतीत भयाहै तिस संकल्पके पदार्थमों पदार्थ सत्तानही है १७ हेरामजी
इसी प्रकार करके चैतन्य रूपी आकाशमों जौनसी सृष्टिसे आद जगतका अनुभव होताहै सो इन्ना
रूपी आकाशमों सृष्टिकी अखंडस्थिति संकल्पते ही भासतीहै वास्तव नहीहै १८ हेरामजी ऐसीभा
वना स्थितभये संते सृष्टि कहांहै और अविद्या कहांहै और अज्ञानकी मूर्छना कहांहै १९ हेरामजी
मैने आत्म विचार करके संपूर्ण प्रशांत और चिन्मात्र करके परिपूर्ण और आनंद घन ब्रह्मजाना
है तहां अहंकारादिक कहांहै इसप्रकार करके संपूर्ण निष्फल जानाहै तिसते अहंकार वर्त
मानहै तोभी शरदऋतुके घन घटाकी न्याई निष्फल जानियाहै २० हेरामजी जबमें सर्वो वर्णा

समाधी करनाभया तिस कालमें प्राणायामके वेग करके एक शब्द होताभया तिस शब्दके का-
रणे हारेकों जानने वाले चिदाकाश की धारणामें स्थित होइ करके तिस चिदाकाशकी धारणामें
अनेक सृष्टी आपसमें भिन्न भिन्न लक्षण वालिओंको देषताभया तिन्हमें एक सुंदरीकों आ
पीछंद पढ़तीकों देखताभया १२१ हेमुने यह संसारकी प्रतीति असत्यही प्रतीतहै और चै
तन्यताते रहितही मोह वालेकों प्राप्त होतीहै मैं इसकों अवलंबन करकेजैसें कोई आकाश
में नृत्य करे तैसे भ्रमती भई तुम्हारेकों बुलावती हूं २२ हेरामजी ऐसे कहती तिस इस्त्रीकों अना
दर करके मैं फेर चिदाकाशकी धारणा करताभया तहां चिदाकाशकी सत्तामें मैं प्रलयादिककों
देखताभया २३ तिस चिदाकाशमें रुद्रोंके अनेक सहस्र और ब्रह्माकी अनेक शतकोटी और वि
ष्णुके अनेक लक्षोंकों और कल्पोंकी कोटि पद्मोंकों प्रलयकों प्राप्त भयेकों देखता भया १२४
तिसकों कहीं सूर्ये बिनाही दिन रात्रि ज्ञानतें रहित भूलोकमें कल्युग वर्ष मर्यादा रहित।

जगतके उदय अस्तको देखता भया २५ तिसमों मेरे न्याईं वसिष्ठ नाम वाले ब्रह्माके पुत्र अनेका मुनीश्वर मेरे सेभी उत्तम मैने देखेहैं २६ तहां अनेक ब्रह्मांडोंमों जगत के लक्ष्योंमों अनेक नाम रूपकों धारण करते अनेक प्राणी देखेहैं २७ तहां मैने चंद्रमाके बिंब गरमी सहित देखेहैं और सूर्ये बिंब शीतल देखेहैं और बिष खाने करके जीवते देखेहैं और अमृत पान करके मृत होते देखेहैं और पत्र पुष्पों करके शोभित वृक्षोंके बन आकाशमों देखेहैं और रेतीओं के पीरनेतें तेल घृत निकसते देखेहैं अरु पाषाण शिलामों कमल उदय होते देखेहैं २८ हे रामजी चिदाकाश कैसाहै अंतरसें रहितहै आकाशका भी परमआकाश है अंतसें रहितहै उदयसें रहितहै जिसमों अनेक बिंबोंकी संख्याते रहितहै और अनेक जगत सृष्टिओंते रहितहै २९ हे रामजी तहां एक एक आकाश प्रति अनेक संसारोंके मंडलहैं तिन्ह संसार मंडलोंमों अनेक लोकहैं अरु तिन्हमों अनेक द्वीपहैं तिन्ह द्वीपोंमें अनेक पर्वतहैं अरु तिन्ह पर्वतोंमों अनेक देशहैं तिन्ह देशोंमों अनेक ग्राम

और नगर है ३० हेरामजी तिन्हमों एक एक प्रति अनेक और अनेकोमों और अनेक कल्प औ
र अनेक युगोंके सहस्र देखेहैं ३१ हेरामजी जेते जीवतत्त्व ज्ञानसें रहितहैं और मोक्षको प्राप्त न
ही भयेहैं सो सभही जोजो मृतभये हैं सो तिन्ह सृष्टिओंमों सभही अनेक प्रकारके वर्त्तमान हैं ३२
हेरामजी इस कारणतें सो संपूर्ण संसार आपसमों भिन्न भिन्नहै और अपने अपने प्रवाह रूप
करके अखंड वर्त्तमानहैं ३३ हेरामजी तिन्हके अंदर जो जीवहैं तिन्हमों एक एक प्रति एक एक
मनहै अरु एक एक मन प्रति एक एक जगतहै और एक एक जगत जगत प्रति अनेक अनेक
मनहै ३४ हेरामजी इस प्रकार करके यह जगतका भ्रम आद अंतसें रहितहै सो ब्रह्मवेत्ताजनों
के पक्षमों संपूर्ण ब्रह्मही है इसकी संख्या की मर्य्यादा नही है ३५ हेरामजी इस प्रकार करके मैं
चिदाकाशमों अनेक प्रकार करके संसारके भ्रमको देखता रहाहूं सो विद्याधरी स्त्री मेरे पास
स्थित रहीहै तिसको देख करके मैने कहा तूं कोनहैं इहां क्यों आईहैं अरु कहां तेरा अस्थानहै

सो कहो २२५ हे रामजी तद सो विद्याधरी कहती भई हे मुने लोकालोक पर्बतकी उत्तरा
दिशाके किनारे पहिले शृंगकी शिलामों संसार है तिसमों एक ब्राह्मणहै तिसकी मनसें
कल्पन करीमें इस्त्री हूं सर्व सिद्धियुक्त हूं और सर्व सिद्धिमती मेरा नामहै तिस ब्राह्मण नें
मेरे विषे विरक्ति करीहै तिसकों विरक्तभये कों देख करके में भी विरक्तभई हूं तेरे पास
प्राप्तभई हूं ३६ हे मुने सो मेरा भर्त्ता वेदोंके अर्थकों एकांतमों चिंतन करताहै संपूर्ण विषय
भावनांते रहित भयाहै काल करके जगतके आवने जानेकों नही जानताहै ३७ हे मुने ति
सतें मेरा भर्त्ता तत्ववेत्ताभी है परंतु केवल वेदोंके अर्थ मात्रही विचारताहै आत्म चिंतनतें र
हितहै इसतें परमपदकों प्राप्त नही भयाहै तिसतें मेंभी मेरा भर्त्ताभी हम दोनोंही यत्न करके
परमपदकों चाहतेहैं ३८ हे मुने हे ब्रह्मन् तिसतें में तुम्हारी प्रार्थना करतीहूं तिसकों तुम स
फल करणेकों योग्यहो महात्मा पुरुषों विषें प्रार्थना निष्फल नही होतीहै ३९ हे मानको देणे

ह्मारे में अनेक सिद्धोंकी मंडलीओंमों भ्रमती भई तुम्हारे पास आई हूं तेरे बिना संसार दुःखा-
कों निवारण करणेहारा मेरेकों प्रतीत कोई नही भया ४०· हेमुने संतजन अपने कार्यके निमित्त
विनाही अर्थीजनोंकी वांछाकों सफल करतेहैं तिसतें मेंभी शरणागत भईहूं मेरा अनादर करणेकों
तुम योग्य नहीहो ४१ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥हेरामजी शिलामों संसार कैसे होवे इस आश्चर्य
करके व्याकुल भया में तिस विद्याधरीके साथही इस संसारकों लंघ करके लोकालोकाचल
के शिखरकी शिलाकों प्राप्त होइ करके विद्याधरी मेनें पूछी इहां संसार कहांहै ४२ विद्याधरी
कहतीहै॥हेमुने यह हमारेकों जगत पहिले बनाहै सो मेरेकों प्रकट प्रतीत होताहै जेसें
दर्पणमों प्रतिबिंब होताहै तैसें अंतःकरणमों प्रतीत होताहै ४३ हेमुने यह अंतःकरण
मों संकल्पकी कथा रूपी चिरकालसें पीडा हुयाही उदय भईहै इस करके आत्म सुख नि-
र्मलभीहै और विशालभी है तोभी विस्मृतभयाहै ४४ हेमुने तिसतें यह संसार भ्रमजड़

रूपी अंतःकरणमें संकल्पके अभ्यासतें प्रतीत भयाहै और जौनसा शुद्ध चैतन्यमात्र आकाश
रूपीहै तिसकें चिंतनका जो अभ्यासहै तिसके आनंदका जो रस है तिस करकें पुरुष तद्रूपहो
ताहै तो संकल्प फुरणेकी अवधी हो जातीहै ४५ हे मुने जो शुद्ध चैतन्य सत्ता करके जो आनंदर
स नही होवे तो शास्त्रों करके संन्यास करके कछु नही होताहै आत्मचिंतन बिना जो आनंद रस
होताहै सो नही भये जैसाहै तिसते शुद्ध चित्कला चिंतनके अभ्यासकों करे ४६ हे मुने तूं सभ
का गुरुहै मै तेरी शिष्यहूं और अबलाहूं और बालाहूं मै तेरेको देखती हूं अरु तूं मेरेकों नही
देखताहै तूं सर्वज्ञहै तोभी तूं मेरेको नही देखता है यह अंतःकरण शिला जैसा जड़है इसमों
संकल्पके अभ्यासतें प्रपंच विस्तारकों प्राप्तभयाहै ४७ हे मुने अभ्यासतें अज्ञानी भी तत्ववेत्ताहो
ताहै और जड़भी कार्यकों करताहै जैसें बानभी अभ्यासतें निशानेकों जाइ लगताहै यह संप
र्णी अभ्यासका विलासहै ४८ हे मुने धनभी अभ्यास बिना निष्फल होतेहैं और संपूर्णकला

भी अभ्यास बिना निष्फल होतीहैं भाग्यभी निष्फल होतेहैं तिसते अभ्यास कदाचित् निष्फलन हीहैं ४९ हेमुने जिसने अभ्यास त्याग दियाहै सो इष्ट वस्तुकों कदाचितभी नही प्राप्त होताहै जै सें बंध्या इस्त्री अपने पुत्रकों नही प्राप्त होतीहै ५० हेमुने अभ्यासतें असाध्यभी सिद्ध होतेहैं शत्रु भी मित्र होतेहैं विष अमृत होतेहैं यह अभ्यास नामा सूर्य लोकमों प्रकाशभये संते बनमों स मुद्रमो क्या दूर देशांतरमों स्वर्गादिकमों नहीहैं जो अभ्यास करणेहारे महावीर पुरुषकों सिद्ध नही होवे ऐसा कोई नहीहै अभ्यासतें लोकमों भयभी अभय रूप होताहै अभ्यासतेंही संपूर्ण पर्वतोंकी निर्जन कंदरामों निर्भय निवास होताहै ५१ हेमुने जिसनें प्राचीन संस्कारतें बोधकी धा रणाका अभ्यास करणेतें जगत तेरेकों शिलामों कमलकी न्याई असंभव वाला प्रतीत होवेगा ५२ हेमुने प्राचीन वासनाका अभ्यासतें यह जगत शिलामों कमल जेसा प्रतीत होताहै और बोधके अ भ्यास विना असत्य प्रतीत नही होताहै तिसतें बोधका अभ्यास अवश्य करणे योग्यहै ५३ श्रीवसिष्ट

ने॰ जीकहतेहैं॥हे रामजी तिस विद्याधरीने ऐसी युक्ति युक्त वचन कहे संते तिसतें उपरांत मैं पद्मा
सा॰ सन बांध करके समाधीके अभ्यासमों उद्यत होताभया ५४ हे रामजी केवल चैतन्य मात्रकी एकांत
५३ भावना करके संपूर्ण पदार्थोंकी भावनाको त्यागनेतें जितनाजो नाम मात्र अहंभावथा तिस अहंभा
वके अभ्यासको मैं त्यागन करताभया ५४ हे रामजी तिसतें सत्यरूप एक आत्माकी एकांत दृढ
भावनाके अभ्यासतें समाधी स्थिर होतीभई अहंभावकी भ्रांति अस्त होती भई ५५ इसतें उ
परांतजब मैंने अपने आत्माका निर्मल प्रकाश देखा तब मेरेको आकाश और अहंभाव शिला
मों कमलकी भ्रांति जैसा लयको प्राप्त होताभया केवल परम ब्रह्म स्वरूप प्रतीत होताभया ५६
जैसें स्वप्नेमों अपने घरमों महाशिला दृष्ट होतीहै सो केवल अपने अंतःकरणका चैतन्य ही
तद्रूप भयाहै शिला तहां कोई नहीहै तैसें यह संपूर्ण विश्व शुद्ध चैतन्यही है सो तद्रूप प्रतीत
भयाहै ५७ हे रामजी अपने संकल्पका फुरणाही भ्रांति वाहिक शरीर करके प्रत्यक्ष पहिले

नि॰ सा॰ ५४

कहाहै सोही माया करके सत्यरूप सर्वत्र व्याप्त होताहै तिसकों ही तूं आधि भौतिक शरीररू
प भये कों जान ५८ हे रामजी यह आधि भौतिक देह आत्मविचार करके कुछ नही प्रतीत हो
ताहै जैसें मारवाडके थलमें सूर्यकी किरणों करके समुद्र जो प्रतीत होताहै सो अपने चित्त
की भ्रांतीही तद्रूप प्रतीत होतीहै वास्तव विचारतें मिथ्या प्रतीत भईहै ५९ हे रामजी सम का आ
द ओर सत्य ओर प्रत्यक्ष प्रतीत ऐसे आत्म विचारके सुखकों त्याग करके जो कोई असत्य रूप
ओर भ्रम करके मध्यमें ही प्रतीत भये कल्पनामात्र सुखमें इच्छना मान करके मग्न भयाहै सो
प्रत्यक्ष प्राप्तभये शीतल जलकों त्याग करके रेतीकी चमकमें भ्रांति करके प्रतीत भये जल
करके तृप्तिकों चाहताहै ६० हे रामजी जौंनसा सुख क्षणमें नष्ट होवे ओर क्षण मात्रही अ
नुभव होवेहै सो दुःख रूपही है जौंनसा सुख स्वभाव करकेहै ओर आद अंतमें एक जैसा है
सोही सुख कहाहै ६१ हे रामजी जिसमें प्रत्यक्षही असत्यता प्रतीत होवे तिसमें सत्यता ओर

अखंड आनंदता कहांने होवेगी जो वस्तु असत्य सामग्री करके सिद्ध होवे सो सत्य कहांते हो
वे ६२ हेरामजी यहां सत्यकाही अभाव प्रतीत होवेहै तहां अखंड सुखकी क्या वार्ताहै जहां हा
थी वहिजाते हैं तहां मेढेके वहिनेकी क्या गिनतीहै ६३ हेरामजी यह परमात्मा सर्वत्र प्र
क जैसा निरंतर व्याप्तभयाहै और बोधरूपहै और चैतन्य रूपहै तिसकों जानने विना जो कोई अ
सत्यरूप और तुच्छ सुखवाले पदार्थमों इच्छमान रहेहैं सो मूढपुरुषहैं और तृण समानरूपहैं और
कपटी हैं तिन्हकी संगती नही करणी ६४ हेरामजी ऐसा विचार करणेतें उपरांत चैतन्यमों प्रति-
बिंबितभये जगतमों विद्याधरीके साथही मैं प्रवेश करताभया तब विद्याधरी ब्रह्मलोकमों प्राप्त
होइ करके मेरेकों कहती भई ६५ विद्याधरीकावचन॥ हेमुने यह ब्रह्मा मेरेको विवाह करणे
वास्ते प्रकट करताभया मैं वृद्धभी होइ गई तदभी नही व्याही इसकारणतें मैं विरक्तभई हूं
तिसतें तूं मेरे व्याहके कारण ब्रह्माकों बोधनकर ६६ श्रीवसिष्ठजीकावचन॥ हेरामजी सो विद्या

नि॰
॰सा॰
५८६

धरी ऐसा कहि करके ब्रह्माको कहतीभई हेस्वामिन् वसिष्ठ मुनि तुम्हारे घर आयाहै इसका आद
र सत्कार करो ऐसा कहि करके ब्रह्माकों समाधीते उठाइ करके सावधान करती भई ६७ तब श्रीब्र
ह्माजीकावचन॥हेवसिष्ठजी तेने इसविश्वकों हाथमें आमलके फल जैसा सार रहित देखाहै और तु
म बोधरूपी अमृतके समुद्र हो तुम्हारे को इहां आउने करके सुखहोवे तुमकों कुशलहै ६८
हेवसिष्ठजी तुम बहुत दूर मार्गसे चल करके आयेहो अरु तुम मार्गके खेदकों विश्राम करके दू
रकरो और इहां आसनमें बैठो ७॰ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥ हेरामजी तिसते अनंतर मैं आसन ऊपर बै
ठा ब्रह्माजीनें देवगणों करके मेरी पाद्यादिक पूजा कराई तबमें ब्रह्माजीको प्रश्न किया हेभगवन् तुम
भूत भविष्यत् वर्त्तमान काल ज्ञानके स्वामीहो यह विद्याधरी तुम्हारेको बोध करावणे वास्ते मेरेकों को
प्रेरणा करतीहै अरु कहती है हे वसिष्ठजी तुम अपनी वाणी करके अरु ज्ञान करके ब्रह्माजीको बोध
नकरो ७॰ हेमहाराज तुम सभ भूतोंके ईश्वरहो संपूर्ण ज्ञानके पारको देषणेहारेहो तुमने यह विद्या

धरी विवाह वास्ते प्रकट करी ऐसा यह कहतीहै तो तुमने याही कैसे नहीहै यह विज्ञान
ई कैसें भ्रमती है इसका कारण कहो २७३ श्रीब्रह्माजीकहतेहैं॥ हेमुने जैसा वृत्तांत भयाहै तिस
कों तूं सुन मे सभही कहता हूं जिसतें संतजनोंके आगे सभही सत्य कहने योग्य होताहै २७४
हेमुने आद सभका एक परब्रह्महै सो जन्मसे रहितहै और शांतहै जीर्ण होनेतें रहित है चिं
न्मात्रहै कहनेमों चिंतन करणेमों श्रवण करणे मों देषणेमों नही आवेहै और सत्तामात्र रूपहै
और चैतन्यमात्रहै तिस चिन्मात्रस्वरूप का एक चैतन्यताका अंश मात्र रूपमें जगतमों कथ
न मात्रही हूं ७५ सो मैं भी पहिले आकाशरूपी हूं अपनी स्वरूप सत्तामों सदा रहताहूं मेरे आगें
सृष्टि होतीहै तो मेरेकों स्वयंभू कहतेहैं ७६ वास्तव विचारतें मैं उत्पन्न नही भया ना कछु देष
ताहूं चिदाकाश रूपी मैं चिदाकाशमों ही रहता हूं ७७ जो कछु हमहै तुमहो ऐसा जो आपस
मों कहना है सो जैसें तरंगके आगे और तरंग कहा जाताहै तैसे वृथा कहना मात्रहै वास्तव

महीहै ऐसी मेरी मतिका विचारणाहै ७८ हेमुने ऐसे रूप वाले शुद्ध चैतन्यरूपकों कालके वेग
तें मेंहूं यह मेरीहै ऐसी वासना उदय भईहै परंतु आत्मस्वरूप विचारणेतें नही उदय भई जैसी
है ७९ हेमुने सो अहंभावकी वासनाहै तिसकी भ्रांति जगतकी स्थिति करके सिद्ध भईहै तिसका
स्वरूप यह विद्याधरी है ८० यह विद्याधरी अपनी वासनाके वेगतें मै ब्रह्माकी घर वालीहूं ऐसे॰
भावकों प्राप्त भईहै यह आपही अपने भाव करके वृथा दुःखकों प्राप्तभई है जिस कारणतें यही मे
रे अंतःकरणकी वासनाहै ८१ हेमुने अब मैं चिदाकाशरूप भयाहूं तिसतें अब चिदाकाशरूप की
स्थितिकों ग्रहण करणे चाहताहूं तिसते अब विश्वके लयका काल प्राप्तभयाहै ८२ हेमुनींद्र अबा॰
महाप्रलयका समय प्राप्तभयाहै अब मैनें वासना रूपी इस विद्याधरीकों त्यागने का प्रारंभ कियाहै तिसतें यह मे॰
रे विवासने रमकरके वर्जितभईहै अब इसको मैं नही चाहताहूं ८३ हेमुने अबही कल्पका अंत प्राप्तभयाहै और महा कल्प॰
ब्रह्माका प्रलयकाल सोभी प्राप्तभयाहै अब मेरी वासनाका अंत प्राप्तभयाहै और मेरा देह

आकाशमें लय होवेगा ८२ हे वसिष्ठ तिसतें अब तूंभी अपने आसनमें अपने ब्रह्मांडकों च
लाजा और शांतिकों प्राप्तहो और जेते अहंकार बुद्धितें आदि मन सहित इंद्रियांहैं सो सभही अ
पने अपने अस्थानको जावें हम अब ब्रह्म पदकों जातेहैं ८४ हे रामजी सो ब्रह्मा भगवन् ऐ
सा कहिके ब्रह्मलोक वासी जनों करके सहित पद्मासनकों बांध करके समाधिमें स्थित होता
भया ८५ हे रामजी ओंकारकी तीन मात्रा हैं उदात्त अनुदात्त स्वरित नाम वालीहैं चौथी अर्द्ध मा
त्राहै जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती वालीहै और अर्द्धमात्रा तुरिया अवस्थाहै सृष्टिस्थिति लय रूपहैं आ
नंदरूपहैं ब्रह्मा विष्णु रुद्र जिन्हके देवताहैं चौथीका देवता ईश्वरहै ८६ सो ब्रह्मा तीन मात्रा
सें परे चौथी अर्द्धमात्राके अंतमें ध्यानावस्था करके स्थित होताभया संपूर्ण मनकी वासना म
न सहित लीन होतिआं भईयां जैसें चित्र लिखा होताहै तैसें निश्चल होताभया और अहंभावा
की वेदना शांत होतीभई ८७ हे रामजी सो वासनारूपी विद्याधरी तिसके ध्यानमें शांत होती

भई संपर्ण अंशो करके सहित आकाशकी न्याईं शून्य होइ करके शांत होतीभई ८८ हेरामजी ज
ब संकल्प करके ब्रह्मा रहित होताभया तब मैंभी सर्व व्यापी अनंत चैतन्याकाश रूप होता भया
रूप होइ करके पृथिवीकों देखताभया २८९ तब पृथिवीमों मनुष्यलोक अपने वर्णाश्रम धर्म सें
रहितभये केवल अन्नकी उपजीवका वास्ते खेती व्यापारसेवाकों करने लगे और देश नगर ग्राम
समही संपदासें रहित भये श्रृगाल और चोर भय करके उजाड़ होय गये २९० और इस्त्रीयां अपने
कुलकी मर्य्यादाकों और पतिव्रताधर्मकों त्याग करके केशोंका श्रृंगा करके वेश्याके धर्म मों
वर्त्तमान होतीभई और राजे लोक प्रजापालन रूपी राजधर्मकों त्याग करके केवल द्रव्यके संग्रह
मों प्रवृत्त होतेभये २९१ हेरामजी समका आचार शूलकी न्याईं दुःखकों वधाउने हारा होताभया और
प्रजाके राजोंकी विगाड करके पीडितभई जैसी दुःखरूपी शूल करके व्याकुल होतीभई और इस्त्री
यां शूलकी न्याईं महा कठिन अधर्म मर्यादामों वर्त्तमान होती भई और राजेशूलकी न्याईं महाउग्र

दंड करणा और अभिमान करके संतजनोंके अनादरमें प्रवृत्त होतेभये ९२ हे रामजी इस प्रकारके औरभी जगतके नाश होनेके निमित्त महा उत्पात होतेभये मैंने देखेहैं ९३ हे रामजी तिसते उपरांत संहार भैरव संपूर्ण ब्रह्मांडकों निगल करके महा विशाल आकाशमें कालरात्रिके साथ नृत्य करताभया और डिम डिम करके डमरू बजावता भया ९४ हे रामजी तिसते उपरांत कालरात्री महा भैरवमें लीन होतीभई सो महा भैरव परमात्मामें लीन होताभया ९५ हे रामजी तिसतें उपरांत मैंने सूक्ष्म दृष्टि करके तिस अहंकार रूपी शिलामें अनेक वृक्षोंमें एक एक प्रति अनेक पत्र देखे तिन्ह वासनारूपी पत्रोंमें अनेक संकल्परूपी तृण देखे तिन्ह तृणोंमें अनेक जगत देखेहैं ९६ हे रामजी जो कुछ निर्मल शुद्ध सात्विक बुद्धि करके दृष्टि होताहै तिसकों तीन नेत्रों करके शिव देखनेकोभी समर्थ नही होताहै और इंद्र सहस्त्र नेत्रों करके देखनेको समर्थ नहीहै ९७ हे रामजी इसते उपरांत तिस संसारका प्रलय देख करके अपने चित्तके फुरणें के यत्नतें मैं पिछले संसारमें हट करके चला आया तहां आइ

करके तिस संसारमों आकाश कोणकी कुटियाकों प्राप्त भया ९८ हे रामजी तहां अपने देहकों ध्या
नावस्था करके जड भयेको जब देखने लगा तबही तहां एक शुद्धस्वरूप एकांत बैठे और सिद्ध
कों समाधिमों स्थितभयेकों देखताभया सो सिद्ध मेरे हट करके आवनेकों चिंतन करताभया और
सूत भये अपने शरीरको त्याग करके स्थिति करताहै ९९ तिसते उपरांत जब मैं तहां रहनेके संक
ल्पकों त्याग करके अपने स्थान प्राप्त होने को प्रवृत्तभया तब मेरी कल्पन करी कुटिया नष्ट भ
ई सो सिद्ध भी आश्रय विना सात समुद्रसे परे दिव्य पृथिवी मों पतितभया तब मैने तिसकी स
माधी उतारणे वास्ते अहिन की वर्षा करणे हारे बदलकी न्याई गर्जना करी तब तिसकी समाधी
उतरी फिर मैने तिसकों प्रश्न किया ३०० हे सिद्ध तूं कौन है और कहांसे आयाहै ऐसा वचन सु
नके तिस सिद्धने ध्यान करके संपूर्ण वृत्तांत जान करके मेरे प्रति वचन कहा ३०१ सिद्धजीकाव
चन॥ हे मुने मैने अब तुमको पहिचाना है मै तुमको वंदना करताहूं तुम्हारे को पहिले नही

नि॰ जानने का अपराध मेरेसें भयाहै तिस अपराधकों आप क्षमा करो संतोकी क्षमाही स्वभावहै २०२
प्र॰सा॰ हेमुने मै देवताजन के नगरके बाग बगीचेमों बहुत भ्रमाहूं तिन्हमों भोगवासना मोहित क
५८३ रतीहै जैसे भ्रमर कमल बनमों भ्रमण करताहै तैसें मैभी भोगवासना करके तिन्हमों बहुत
काल भ्रमण करताभया परंतु शांति नहीभई ४ हेमुने संसार समुद्रमों दृश्य पदार्थोंकी वासनारू
पी तरंगों करके मैं बहुत व्याकुलभया कालके वेग करके दुःखीभया जैसे चात्रक वर्षाके विना
व्याकुल होइ करके दुःखी होताहै ५ इह संसारमों शब्दमात्रा स्पर्शमात्रा रसमात्रा रूपमात्रा गंधमा
त्रातें परे और कुछ पदार्थ नहीहै एतन्मात्रमों मै क्यों प्रीतियुक्त विलास करूं ६ इह सभही चित्त
लामात्र आकाशमों है अथवा चित्कला रूपहैं चिन्मात्रा बिना संपूर्ण असत्य रूपहै इसमों मैं
नष्ट बुद्धि पुरुषकी न्याई किस अर्थके वास्ते प्रीतिको करताहूं ७ इसमों जोनसे विषय हैं सोवि
षके बरोबर विपरीत रस वालेहैं और स्त्रियां कामके मोहको देने हारीहैं इसके संपूर्ण

रस अंत कालमों उलटे दुःख रूपी रसको देतेहैं इन्होंमों आसक्त भया कौन पुरुष नही मराहै ८
हेब्रह्मन् यह देह कैसाहै समुद्रमों बुद बुदेकी न्याईं क्षणबी नष्ट होने वालाहै इसके आगे पी
छे मृत्यु रहताहै जैसे दीपकी शिखाके साथ पवन रहताहै ९ इसमों बडे चतुर विषय वासनारूपी
महा शत्रु चोर रहतेहैं सो सभही इसकी आयुषा रूपी सर्वस्वकों हरतेहैं इसवास्ते मै सदा जागरण
कों करताहूं मोह रूपी निद्रा करके सोइ नही रहताहूं १० हेमुने दिन दिन करके इसकी आयुषा
के भागकाल करके चलेजातेहैं तिन्हकों बारं बार चले जानेको कोई पुरुष नही जानताहै ११ यह मे
रेको आज प्राप्तभयाहै यह फेर मेरेको आज मिलेगा ऐसी कल्पनामो लगा भया लोक गत भये कों
प्राप्तभये कालके वेगकों नहीजानताहै १२ भोगोंके समूह भोगेहै सो चले जातेहैं तिन्हकी अनित्य
ताको नही जानताहै इसमों शांति प्राप्त कहींबी नही होतीहै १३ हेब्रह्मन् मैं विदितपुरुष की
न्याईं सुमेरु पर्वतके वगीचेकी पृथिवी पर्यंत भ्रमाहूं और इंद्रादिक दशलोक पालोंकी पुरियोंमों

अच्छी तरांसे फिरा हूं मेरेकों अखंड सुख कही नही मिलाहै १४ हेमुने जहां देखे तहां सर्वत्र
काष्टके वृक्षहैं और प्राणी सर्वत्र मांस रक्तके देखेहैं पृथिवी सर्वत्र मृत्तिकाकी देखीहै और सर्व
त्र दुःख और अनित्यता देखीहै यह कहो किसमों स्थिरताका विश्वास बनेहै १५ हेमुने काल
करके व्याकुल भये लोकेकों धन और मित्र और सुख और बांधव रक्षा करणेकों समर्थ नही हैं १६
हेमुने मेरेकों सुंदर स्त्रियांभी प्रिय नहीहैं और उत्तम संपदाभी प्रीति नही करतीहै और इ
स्त्रीके चतुर कटाक्षकी न्याई चंचल जीवनाभी रुचिकों नही करताहै १७ हेमुने यह शरीर
पुराने पत्तोंके बराबर गिरने हाराहै और तिसका जीवना सूके हुवे पत्तोंके बराबर गिरने
हाराहै और बुद्धि अधीरता करके ग्रहण करीहै और विषय रस सभही रस करके रहित
हैं १८ हेमुने तिसतें आज मेरा मोह मंद भयाहै और देह पुराणे मंदिर जैसा उदासीनताकों
प्राप्तभयाहै अब इहकी अवस्था जौंनसी करणी सोही उत्तम अवस्थाहै और इह देहादिकों

न· सा· ६

की अवस्था करणीहि नीचली अवस्थाहे १९ हेमुने इस संसारमें ऐसा मानना आपदा यह आ
इ भईहे वुह आपदा कैसीहे महा मोहको वधाउने हारीहे और नित्य प्रति ऐसाही मानने योग्य
है और संसारमें आसक्त नही होना २० हेमुने यह विषय रूपी विषके पवनहैं वुह केसेहैं चित्त
रूपी कमल पुष्पतें विवेकरूपी सुगंधीकों हर करके मूर्छाकों कर देतेहैं २२१ हेमुने वित्तरूपी बान
हृदयतें छुट करके विषयरूपी निशानेकों धाइ करके प्राप्त होतेहैं और उत्तम गुणोंकों स्पर्श न
ही करतेहै जैसें कृतघ्न पुरुष उत्तम गुणोंको स्पर्श नही करतेहैं अरु दोषोंकोंभी ग्रहण करते
हैं २२ हेमुने आयुषा उत्पात पवनकी न्याई चली जातीहै जो मित्रहैं सो शत्रुरूप हैं और भाई बं
धु लोक बंधनरूप हैं और धनही मृत्युका रूपहै २३ हेमुने सुख संसारके दुःखरूपहैं संसारकी
संपदा परम आपदाहै और संसारके भोग महा रोगोंके रूपहै और प्रीति जोहै सो अप्रीति कर
णे हारीहै २२४ हेमुने कालके अनेक प्रकारके उलट पलट होतेहे और इष्ट जोहै सो अनिष्ट

होइ करके प्राप्त होतेहैं और प्रेम वाले जनोंके वियोगोंको देख करके मेरा मन जर्जर जैसा
होताहै २२५ हेमुने यह जो भोगहै सो विषयोंके भोगनेतेंहैं जैसे सर्पोंकी फणी होतीहैं किंचि
न्मात्रस्पर्श करणेतेंभी डंश करके मारतेहैं अरु भलीतरा विचार युक्त देखनेंते नष्ट होतेहैं २२६
हेमुने भोगोंकी आशा करके जो पुरुष बांधे गयेहैं तिन्हका पद पदमों अनुमान होताहै जैसें
बनके काम करके मत्त हाथी हथनी कों देखतेही बांधे जातेहैं तिन्हको काम भोगकी तृस्ना क
रके बंधन होताहै २२७ हेमुने संपदा और इस्त्रियां तरंगोंके संग बराबर लाग भंगुरहैं ऐसाको
न चतुर पंडित पुरुषहै जो सर्पकी फणाकी छायामें प्रीति करताहै २२८ हेमुने यह विषय वे
सेहैं देखनेमों अच्छेहैं परंतु देह विनाश समयमें दुःख देतेहैं जैसें अपक्क अन्न भोजन करें
रोगी पीडाकों लोक प्राप्त होतेहैं जैसें भोगोंते नरकको प्राप्त होतेहैं २२९ हेमुने धन कैसेहैं सु
खदुःखके मूलहैं और नाशकों प्राप्त होने हारेहैं ज्ञान रहित मूढ पुरुषों करके सेव्यमानहैं यह

ने॰ सा॰ ६८

मेरेको प्रीति नही करतेहैं ३३० हेमुने ओर यौवनकी संपदा कैसीहै शरदऋतुके बादलकी स॰ मान सताबी जाने हारीहै अंतमों दुःख देने हारीहैं चिरकाल संताप करणे हारीहै ३१ हेमुने यह मनुष्यके जीवनेकी आयुषा हाथ लिये जलकी न्याई क्षणोमें अंश अंश मात्र चलने करके गलतीजातीहै फेर नदीमें बहे जल सिरीखी फिर फिरती नहीहै ३२ हेमुने मन शांत भये संते आत्मस्वरूपमें विश्रांत होनेतें जो सुख होताहै सो पाताल स्वर्ग पृथिवी लोकके भोगोमें नही होताहै ३३ हेमुने बहुत दीर्घ काल करके अहंकार रहित होनेतें अपनी शुद्ध भई बुद्धि करके स्वर्ग ओर मोक्षकी तृष्णाका त्याग मेंने धारण कियाहै ३४ हेमुने यह वृत्तांत मैने तुमको वर्णन करके सुनायाहै जो मेहूं ओर जैसी मेरीस्थितिहै सो मैने कहाहै अब जैसा तुम जानतेहो तैसा करो ३५ हेमुने सिद्ध पुरुष आत्म विचारमों तत्पर होइ करके ओर उत्तम बुद्धि करके निर्णय करके वास्तव वस्तुका विचार जब लग प्रमाण नही करा तब लग त्रिकाल ज्ञानीभी हैं तद भी॰

दृढ निश्चयको नहीं करतेहैं यह ब्रह्मादि देवता जनोंके मन का स्वभावहै ३७ हेरामजी तब मैंने।
कहाहै सिद्ध मुने निश्चय दृढ हृदय मों नहीं होना यह अविचारका अपराधहै केवल तुमकोही न।
हीहै यह अविचारका अपराध स्वभाव मेरेमों भी तुल्यहै जिस कारणतें यह उदिश्या मेरीहै ने।
रे चिरकाल रहण वास्ते नहीं स्थिर करीहै ऐसा अविचार मेरेमोंभी है ३८ हेरामजी इसते उपरां
त मेंभी घोर सो सिद्धभी अपने अपने चाहे देशको चलेजाते भये ३९ हेरामजी यह महारामा
यण मात्र शास्त्रके केवल देखने अंतःकरणमों सभ पदार्थोंमों शीतलता उदय होतीहै जैसें
बर्फमों शीतलता होवे है ४० हेरामजी चित्तकी शीतलता मोक्ष है चित्तकी संतप्तता बंधन
है जिन्हकों इतनाभी अर्थका ज्ञान नहींहै यह लोकोंकी मूढता महा आश्चर्य रूपहै ४१ हेरा
मजी यह लोक अपनी प्रकृती करके विषयोंके वशहैं परस्त्री परधनमों लोभ सहितहै इस
कों संसारके पदार्थोंका उपदेश नहीं करणा यह यथा योग्य अर्थ विचारते सुखी होता है।

और मुक्त होने चाहे तो सत संग शास्त्र विचारतें सदा सुखी होवे ३४२ इतिपाषाणोपा॰
ख्यानं॥वसिष्टजीकहतेहैं॥हेरामजी जो पुरुष इस प्रकार दृढ निश्चय करताहै कामे
चिदाकाश मात्रहूं ऐसी भावनास्थिर होत संते भावें वज्रपात होवे भावें प्रलयकी अग्निलगे॰
तिसका दाह पुष्प वृष्टिके कमल वनकीन्याईं शीतल होताहै ४३ हेरामजी मे चिन्मात्र नही अहमें
अमर नही में नष्ट होताहूं ऐसा जो रोवेहै तिसकों पहिला किया उपदेश सभ भस्मके विखेर
ने तुल्यहै ४४ हेरामजी में चिन्मात्रहूं और अमरहूं में नष्ट नही होताहूं ऐसें भाव वाले पुरुषकों
उपदेश किया अमृतकी वर्षाके तुल्य होताहै ४५ हेरामजी सो वस्तु नहीहै जो सत्य नहीहै सो
वस्तु नहीहै जो संसारमों वृथा नहीहै जैसा जिसकों निर्णय भयाहै तिसकों तेसाही दृढ भाव
होताहै ४६ हेरामजी नष्ट बुद्धि पुरुष जो हैं सो भोग रूपी अग्निमों भले प्रकार दग्ध होतेहैं जै
सें देव योगतें पर्वतमों अग्नि लगनेतें पर्वतके वृक्ष दग्ध होतेहैं ४७ हेरामजी भोगी पुरुष

जोहैं सो खान पानादिक भोगपदार्थोंके कीचड़में पड़ेहैं जैसें विक्षिप्त पुरुष दुर्गंधि मलमूत्र वाले कुंडमें पड़जाते हैं ४८ हे रामजी यह पुरुष केवल अन्नके किणके खानेर दिन रात्र पड़े भ्रमते हैं सो पुरुष पिपीलिका समान तुच्छ वृत्ति वाले हैं ४९ हे रामजी सभही दिशामें अनेक प्रकारके प्राणी हैं परंतु तत्त्वबोध करके युक्त कोई विरले प्राणी हैं जैसें वृक्ष सभही फल पुष्पों करके अनेक पृथिवीमें देखे हैं और कल्पवृक्ष कहीं विरले हैं ५० हे रामजी पराया चित्तरूपी महासमुद्र है सो अनेक तर्क वितर्क रूपी तरंगों करके चंचल है तिसके गहिरापणेको किनारेमें स्थितपर्वतकी न्याईं संतजन समर्थ होते हैं ५१ हे रामजी बुद्धिको नाश करणे हारी महा आपदामें और चित्तके अनेक तर्क कुतर्कोंकी व्याकुलतामें और महा दुस्तर संकटोमें संतजनोंको तारणेकी गति संतजन ही हैं ५२ हे रामजी ऐसा मनमें इच्छा नहीं करणा कैसा है मेरेको विचार करके क्या अर्थ है जो होना है सो मेरेको होवे ऐसी कल्पना धार करके गढेमें कीड़ेकी न्याईं उद्यम

पुरुषार्थसें रहित नही होना ५३ हेरामजी गुणोंके और दोषोंके समझनेके अर्थ बालपनेसें लेक
र यत्न करके जैसें बने तैसेही शास्त्रके प्रसंग करके बुद्धिकों बधावे ५४ हेरामजी दोष क्लेशा
कों त्याग करके सज्जनोंकी संगतिकों करे जिह करके निरवाण पदकी प्राप्ति नही होवे ऐसे दोषों
कों अरु गुणोंकोभी यत्न करके क्रमसें त्यागदेवे ५५ हेरामजी नीच संगति करके उत्तम वस्तु प
दार्थ अधम रूपकों प्राप्तहोताहै और स्थिर पदार्थ चंचलताकों प्राप्त होताहै जैसा प्रसंगमिले तै
साही स्वभाव होताहै और साधुजन असाधुजनके स्वभावकों प्राप्त होताहै ५६ हेरामजी यहभी म
हा आश्चर्यहै जो साधुजन दुष्टजन जैसा होवे देशकालके वशतें पाप पुरुषोंके संगते पुण्या
त्माभी पापपुरुष होताहै जैसें देशकालके प्रभावतें लोकोमें आश्चर्यरूपी उत्पातभी होते हैं ५७
हेरामजी सभही काम त्याग करके सज्जनोंकी संगतिकरे यही दुःखदाई कर्मोंको दूर करणे
का उपायहै इस सत्संग करके इह लोक अरु परलोककों सिद्ध करणेका साधन करणे योग्य

है ५८ हेरामजी सज्जनपुरुषसें कदाचित दूर नही रहै बहुत प्रेम बेनती करके सज्जनपुरुष
की सेवा करे सज्जनपुरुष श्रोर उत्तम वृक्ष एक स्वभाव वाले होतेहैं जैसें उत्तम वृक्षके पुष्पों
की रेणू जिसको लगे तिसको सुगंधि युक्त करतीहै तैसें सज्जनपुरुषकी संगति करके नीच
पुरुषकों भी सज्जनता होतीहै ५९ हेरामजी सत्संग वाला पुरुष समाधी करणे बिनाभी
समाधानकों प्राप्त होताहै महा दुःखी होवे तोभी महा सुखकों प्राप्तहोताहै श्रोर व्यवहार
करे तोभी मौन धारणेके फलकों प्राप्तहोताहै कर्म करे तोभी कर्म बंधनतें रहित होता
है ६०· हेरामजी जो पुरुष ज्ञेय वस्तु परमात्माकों जानतेहैं सो निर्मल चित्त होतेहैं सो
ही संतजनोंके भावकों जानतेहैं जैसें सर्पके चरणोंको सर्पही जानतेहैं ६१ हेरामजी जो उ
त्तम पुरुषहैं सो श्रपने श्रंतः करणके भावकों गुप्त करतेहैं तिन्हकों उत्तमतेंभी उत्तम जा
नना जिसकारणतें चिंतामणि पाषाणकी कीमत बजारके लोकोंसें नही होतीहै तैसे ही

उत्तमजनोंके भावकों जानने हारे कोई विरले उत्तम जनहैं ४२ हे रामजी एकांतमों रह
ना और अभिमान रहित होना और पदार्थ संग्रहतें रहित होना और लोकोंकी स्तुति बिनती तें
रहित होना यह उत्तमजनोंके गुण उत्तमजनोंको जैसा आनंद करैहैं तैसें जगतकी आप संप
दा आनंद नही करतीहे ४३ हेरामजी अहंकार वाले पुरुषोंको यह इच्छा रहेहै क्यालोक मेरे
उत्तम गुणोंकों जाने और लोक मेरी पूजाकों करे ऐसी वासना निरंतर रहतीहे जौंनसे अहंका
र रहितहैं तिन्हकों यह वासना नही होतीहे इसतें आपने भावकों छिपाई रखतेहैं ४४ हे रामजी
जी जिसकों संपूर्ण जगत तृण समान होताहै किंचित् गर्देके किणके समानभी प्रीति नही क
रतीहे तिसकों और जगतके पदार्थ ग्रहण करणेकी इच्छासों कहां होवेगी ४५ हे रामजी तत्ववे
त्ता पुरुष अपने देहमों प्राप्तभये शीत वातादिक दुःखोकों पराये देहकी न्याईं अनादरसें देखता
है ४६ हेरामजी जो पुरुष तत्ववेत्ताहे सो निर्मल सात्विक बुद्धि रूपी ऊंचे शिखर पर चडाहै आ

पसो कैसें रहिताहै और शोच करणे योग्य अज्ञानी पुरुषोंकों संसार समुद्रमों मग्नभयेकों दे-
ख करके दया करके सोच करताहै जैसे पर्वतमों स्थित भया पुरुष पृथिवीमों स्थितजनों कों-
नीचेस्थानमों देखताहै सो उनकों तुच्छ जानताहै तैसें तत्ववेत्ता पुरुष संसारी लोकोंकों देख
ताहै तृण समान तुच्छ जानताहै ५६ हेरामजी तत्ववेत्ता पुरुष शांतिकों प्राप्त होनेते आत्मयो
गतें प्राप्त भई अष्टसिद्धीकों मानता नहीहै ५७ हेरामजी आठ प्रकार की योग सिद्धीहैं सो कोन
है ॥ अणिमा १ महिमा २ गरिमा ३ लघिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८
यह आठ प्रकारका ऐश्वर्य हैं अणुरूप होना १ पर्वत समान विशाल होना २ पर्वत समा
न भारी होना ३ रूई समान हलके होना ४ सर्व देशमों प्राप्त होना ५ अपनी कामना का
स्वरूप और पदार्थकों प्राप्त होना ६ त्रैलोक्य काईश्वर होना ७ सभको अपने वश करणा ८
सो तत्ववेत्ताकों तृण समान होतीहै दूसरे पुरुषमों देख करके भी मनमों आश्चर्य नही-

मानताहै ३४८ हेरामजी इस प्रकारकीयां औरभी सिद्धियांहैं कोई पर्वतकी कंदरामें सिद्धहै।
कोई पवित्र आश्रमोमें सिद्धहैं और कोई गृहस्थाश्रममें सिद्धहैं कोई बहुत श्रमणोतें सिद्धहैं
कोई भिक्षाटन करके सिद्धहैं कोई केवल तपतें सिद्धहैं कोई मोनतें सिद्धहैं कोई ध्यानतें सिद्धहैं
कोई पंडिताईसें सिद्धहैं कोई शास्त्र श्रवणतें सिद्धहैं कोई राज करके सिद्धहैं कोई मूछ्छनिकीन्या
ई सिद्धहैं कोई गुटका करके सिद्धहैं कोई आकाशमें उडनेतें सिद्धहैं कोई कला शास्त्रतें सिद्ध हैं
कोई दीनरूप करके सिद्धहैं कोई आचार त्यागनेतें सिद्धहैं कोई बेद पाठ करके सिद्धहैं कोई वि
क्षिप्त होय करके सिद्धहैं कोई संन्यासधार करके सिद्धहैं परंतु अविद्याकी शांति किसीको नहींहो
तीहै ३४९ हेरामजी तुमकों महा रामायण श्रवण करके अविद्याकी शांति भईहै तदभी निरंतर अ
भ्यास करणे बिना भली तरासें नहीं होतीहै ७० हेरामजी तिसतें असत्य शास्त्रोंके विचारतें नि
वृत्त होना उत्तम शास्त्रके विचारतें शांति प्राप्त होवेगी जैसें रणलीला करणेतें जीत प्राप्तहोतीहै ७१

हे रामजी इस शास्त्रतें विना कल्याणकों देने हारा और उपाय, न भयाहै और ना होवेगा तिस
तें परम उत्तम बोध वास्ते इसी शास्त्रकों विचारण करो ७२ हे रामजी वासनाके त्यागने विना
आत्माकों उद्धार करणेकों कोई और उपाय समर्थ नही है तिसतें यत्न करके वासनाका त्याग
करणा ७३ हे रामजी जो जगत के भाव सत्य विद्यमान होवे तो नाशतें रहित होवे तिसते यह
सभ जगतके भाव ससेकी शृंगकी न्याई असत्यही हैं ७४ हे रामजी संपूर्ण भावोंकी तृस्ना
त्यागनेतें संपूर्ण साधन करणेकी समाप्ति होतीहै तिसते समाधान करके चित्त सिद्धहोताहै
सोही निर्वाणकी प्राप्तिहै ७५ हे रामजी जो पुरुष शांत इछा वालेहैं और बोध करके वासना
रहित भयेहैं तिन्हकों चाह बिनाभी निर्वाण प्राप्तहोताहै ७६ हे रामजी बोधकी यही अवध
है जो तृस्ना रहित होना और तृस्ना निवृत्त नही होवे तो पंडिताई भी मूर्खताई सीहै ७७ हे
रामजी हजारोंमें भी हजारोंते कोई एक पुरुषार्थके उद्यमकों करताहै तिसते वासनाके जाल

बंधनकों छेद करके संसारतें मुक्त होनाहै जैसें पिंजरे को तोड करके सेर निकसताहै ३७८
हे रामजी सोही शास्त्रका श्रवणहै जो ज्ञानकों देवे सोही ज्ञानहै जिसतें सम दृष्टि होवे सोही स
मदृष्टिहै जिसतें सुषुप्ति अवस्थाकी न्याईं जाग्रतमोभी एका ग्रता होवे ३७९ हे रामजी सम दृष्टि
जो पुरुषहैं तिन्हकों महा घोर सुख दुःख विस्तार करके होवे तोभी एक रस आनंदतें उदासी
नता नही होतीहै ३८० हे रामजी राजाशिव्य सम दृष्टि करके कबूतरकी रक्षा वास्ते अपने
मांस प्रसन्न मन करके वाज नामा पंछीकों छेदन करदेता भया ३८१ हे रामजी तैसे राजा जन
क संपदा करके संयुक्त अपनी नगरी दग्धभये संते समदृष्टि करके शोककों नही करता भ
या ३८२ हे रामजी तैसें मातंगनामा समदृष्टि करके परोपकार वास्ते अपना देह त्याग तेतें उ
त्तम विमान पर चढ करके परमपदकों जाताभया ८३ हे रामजी तैसें वालखंडनामा मुनि
समदृष्टि करके गुडके लडूकी न्याई प्राप्तभई अग्निकों खाइ लेताभया ८४ हे रामजी तिसतें

सा.
१९

सम दृष्टि वाला तत्ववेत्ता पुरुष मरणकों और जीवनकों नही चाहताहै जैसा मिले तैसा आच
रण करता हुवा रागद्वेषसें रहित विहार करे ३८५ हेरामजी जब लग आरबलाहै तब लग दे
ह सावधान विचरताहै तिसतें ऐसें विचार करके जैसें बने तैसे एकाग्र वृत्ती करके विचरते रह
णा और किसीसें प्रयोजन क्यों करणाहै ८६ हेरामजी जो कोई अपने वर्णाश्रमके कर्म क्रिया
के क्रममें त्याग करके तूस्नी भावकों धारण करे तो यह देह कर्मसें खाली नही रहताहै ति
सतें स्वतंत्रता करके विपरीत कर्ममें प्रवृत्त होवेगा तब लोक मर्यादा क्षीण होवेगी तिसका
रणतें सत्कर्म करणेमें दोष नही मानता ८७ हेरामजी कर्म त्यागने हारे लोकोंके समाज में
नही रहतेहैं जहां स्वप्नमें भी लोक देखनेमें न आवे ऐसी महामूढ मृग जहां रहतेहैं ऐ
से बनमें ध्यानमें लगे रहतेहैं ८८ हेरामजी केते पुरुष आधाज्ञान पाइ करके और आधे
मार्गकों पाइ करके जैसे आधी सोई आधी जागती बुद्धिवाले ज्ञानके और ध्यानके गर्व करा

के कर्मको त्याग देतेहैं सो पुरुष इह लोक परलोकतें भ्रष्ट होतेहैं ८९ हेरामजी चित्तको वि
तवनेतें रहित करणा केवल आत्म सत्ताके चिंतनमों प्राप्त करके समान ह्रानि करके सुख सें
स्थित होइ करके परब्रह्मरूपी परमआकाश रूपको धारणकर ९० हेरामजी तुम परमार्थको प्रा
प्तभयेहो और रागद्वेषादि दोषोंसें रहित भयेहो और सम बुद्धि भयेहो और आनंद करके उदि
त मन भयेहो ऐसे तुम महात्माजनोंके भी महात्माहो अब शोकसें रहितहो और निशंकहो
और एक आत्मस्वरूप भयेहो और जन्म मरणसें रहित ऐसे परमपवित्रपरम निर्वाणपदमों
स्थित होजावो ९१ हेरामजी अब तुमको ज्ञानके बोध वास्ते और अधिक वचन विस्तार करके
क्या प्रयोजनहै यह हमने तुमको सभ ज्ञान शास्त्रका आद शिरोमणि सार ज्ञान उपदेश कि
याहै इस करके तूं सर्व वेत्ता भयाहैं और पूर्णज्ञान भयाहै ९२ श्रीवाल्मीकीजीकावचन॥ हे
मुनि श्रेष्ट वसिष्ठजीने ऐसा वचन कह करके तूष्णी भये संते श्रीरामजी सर्वप्रकारकी इच्छा

रहित होते संते संपूर्ण सभाके जनभी ध्यानमों एकाग्र होते भये सभही विशाल बुद्धि के
रके ब्रह्मपदमों विश्रांत होते भये जैसें भ्रमर गुंजार शब्द करके कमलपुष्पके बनमों रस
पान करणेमों प्रवृत्त होताहै ३९१ हेभरद्वाज मुनि श्रेष्ठ वसिष्ठजी निर्वाण प्रकरण की
कथा समाप्तिमों समाप्तीका मंगला चरण करते भये तद संपूर्ण सभाके लोक शांत है
तिभये और निर्मल अंतःकरण होतेभये और निर्विकल्प समाधीकी अवस्थाकों प्राप्त
होतेभये ३९२ हेभरद्वाज तिस कालमों संपूर्ण आकाशचारी और स्वर्गवासी सिद्धजनों के
मुखतें जय शब्द और स्तुति शब्द होतेभये और सभामें स्थितभये विश्वामित्रादि मुनियों
के मुखते भी पूर्णभावनातें स्तुति शब्दवालीयां वाणियां प्रकट होतियां भईयां ३९४ हेभरद्वाज तिस
कालमों महाउत्सवके कोलाहल शब्द करके संपूर्ण दिशा पूर्ण होती भई परदेका प्रति
शब्द अत्यंत मधुर होताभया जैसें पवन करके छिद्रद्वार करके पूर्णभये कीचक जातीके

वांसोंते मधुर शब्द होतेहैं ९५ और आकाशमें स्थित भये सिद्धजनोंके जयशब्द होते भये और देवतोंके नगारेके शब्द होतेभये और पुष्पोंकी वर्षाकों देवता करते भये ९६ सिद्धस्तुतिकरतेहैं॥हमनें ब्रह्माके कल्पके प्रारंभतें लेकरके सिद्धोंके समाजोंमें हजारों मोक्षके उपाय सुनेहैं और कहेभीहैं परंतु महारामायण रूपी मोक्षकेउपाय बरोबर कोई नहीहै ९७ यह वासिष्ठमुनिजीके वचनके विलास करके प्रकट भया महा रामायण रूपी मोक्ष के उपाय करके पशु पंछी इस्त्रियां और बालक और सर्पकीटादिक सभही परमानंदकों प्राप्तभयेहैं ९८ श्रीवसिष्ठजीने युक्ति करके और दृष्टांतों करके और न्याय करके जैसा श्रीरामचंद्रजीको बोध करवाया है तैसा साक्षात निकटवर्ती अपनी इस्त्री अरुंधतीकों भी बोध नही करायाहै ९९ इस मोक्षो पाय कथा करके पशुयोनीभी निर्विकार स्थितिकों पाइ करके मुक्त होवेंगे और अधिकारीजो मनुष्यहैं सो कैसे मुक्त नही होवेंगे ४०० इस

ने·
सा·
३

ज्ञानरूपी अमृतकों कर्णरूपी अंजलियों करके पान करनेतें संपूर्ण लोक नई सिद्धीकी संपदाकों प्राप्तभयेहैं ४·१ विश्वामित्रजीकावचन॥ अहो इनि महा आनंदभयाहै वसिष्ठमुनीजीके मुखतें परमपवित्र ज्ञान हमने सुनाहै इसके श्रवणते हमने हजार गंगास्नान के फलकों प्राप्तभयेहैं ४·२ नारदजीकावचन। जो हमनें ब्रह्मलोकमें नही सुनाहै और स्वर्ग में और मनुष्यलोकमें नही सुनाहै सो ज्ञान आज हमने सुनाहै आज हमारे कर्ण पवित्रताकों प्राप्तभयेहैं ४·३ राजादशरथजीकावचन। हेवसिष्ठ में अपने शरीर करके इन्द्रियों करके संयुक्त और यह लोक अरु पर लोकमें सुखदेने हारे पुण्य करके अरु राज्य करके अपने भृत्यलोक सहित संपदाके देने करके तुम्हारी पूजा करताहूं ४·५ श्रीवसिष्ठजीकावचन। हेराजन् हम ब्राह्मणलोक केवल प्रणाम मात्रतें प्रसन्न होतेहैं सो तुमने हमकों प्रणाम करीहै और पूजाकी वांछा नहीहै ४·६ श्रीरामजीकावचन। हेमुने पूजा करणेमें तुमने हमकों निरा

·सा·
८४

तर कियाहै तिसतें मेरेमोंभी प्रणाममात्र सारहै इसतें तुम्हारे चरण कमलोंकों में प्रणाम क
ताहूं ५·७ श्रीरामचंद्रजी ऐसा कहि करके पुष्पोंकी अंजली ले करके वसिष्ठजी के चरण कमलों
पर चढ़ावते भये जैसे हिमाचलके बनमों बर्फ शोभतीहै तैसें वसिष्ठजी के चरण कमलमों
चढ़े हुवे पुष्प शोभते भये ८ सो नीतिको जानने हारे श्रीरामचंद्रजी आनंदके अश्रुजल कर
के पूर्ण नेत्रभये गुरूजीके चरण कमलों को बारंबार प्रणाम करतेभये ९ श्रीवसिष्ठजीका
वचन। हेराजन् हेरामजी तुम रघुकुलके चंद्रमाहो जो में कहताहूं तिसकों करो इतिहा
स कथाकी समाप्तीमों ब्राह्मण अवश्यमेव दक्षिणा भोजन वस्त्र भूषण गोदान और पृथि
वीदानादिकों करके पूजने योग्यहैं १० तिसतें आज सर्व प्रकार करके श्रद्धा भक्ति विधिस
हित ब्राह्मणोंको प्रसन्न करो तब तुमकों मोक्षोपाय वेदांत शास्त्र श्रवण करणेका संपू
फल प्राप्त होवेगा ११ यह मोक्षोपाय कथाकी समाप्तीमों निर्धन पुरुषनेभी अपनी यथा

नि॰ सा॰ ८५

प्राणि ब्राह्मणों की पूजा करणे योग्यहै और राजाने क्यों नहि पूजा करणी ४२२ श्रीवाल्मीकिजी
कावचन। हेभरद्वाज राजा दशरथ मोक्षोपाय कथा श्रवणतें संसारकी मोह निद्राके अंत होइ
नेके हर्षतें सातदिन रात्र महाउत्सवको करताभया जिसमों स्वर्गकी संपदाभी तुच्छ होतीभ
ई ४२३ हेभरद्वाज तूं महाबुद्धीहै मेरे शिष्योंमें श्रेष्टहैं श्रीरामचंद्र सें आदि श्रोता तत्त्व वस्तुको
जान करके शोक मोहादि सें रहित भये परमानंदमों मग्न होते भये ४ हेभरद्वाज इसी ज्ञा
न दृष्टीको धारण करके तूंभी रागद्वेष रहित भया और संशय रहितभया और शांतमति
भया अब जीवनमुक्त दशाको प्राप्तहोजा ४२५ हेभरद्वाजजो महात्मापुरुष मोक्षोपाय कथा
के भावको जानेंगे सो तत्त्ववेत्ताजनोंमों श्रेष्ट होतेहैं फेर संसार बंधनको नही प्राप्तहोतेहैं
और बहुत वचन विस्तार कहने करके क्या अर्थ बनेहै ४२६ जो कोई पुरुष बहुत शास्त्र
श्रवण करणे हारेहैं तिन्हके आगे भली प्रकार करके आगे फेर व्याख्यान करेंगे सो फेर॰

ते॰
सा॰
८६

वाल भावकों नही पावेंगे और वचन कहनेतें क्या अर्थहै ४१७ जो पुरुष इसका अर्थ
जानने बिनाभी इच्छासें और श्रद्धासें रहित भये भी इस कथाकों वाचेंगे और लिखेंगे अरु
लिखावेंगे अरु श्रवण करेंगे और लोकोकों पढावेंगे उत्तम देश पुण्य तीर्थमों संतजनोंके आ
गे देवता के आगे कथा लगावेंगे सो भी पापसें रहित होवेंगे ४१८ जो पुरुष इस कथाके संब
धकों करेंगे सो राज सूय अश्वमेधादि यज्ञके फल करके युक्त होवेंगे और बहुत स्वर्गमों नि
वास करेंगे सो फेर दूसरे तीसरे जन्ममों तत्वज्ञान के अभ्यासतें मोक्षकों प्राप्त होवेंगे ४१९
हे भरद्वाज इस मोक्षोपाय कथा कों ब्रह्माजी पहिले आपही अनुभव सहित विचारण
करके लोकों के उपकार वास्ते रचन करते भये और ब्रह्माजीतें वसिष्टजी प्राप्त होते भ
ये श्रीवसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजी की सभामों प्रकट करके कहते और तहांसें सुन कर
के मैने तुमकों प्रेम भक्तीतें कहीहैं ४२० हे भरद्वाज जिसका इस कथामों मन लगे

नि· सा· ८

तिसके माता पिता संपूर्ण कुल देश पवित्र होता है इस कारणतें इसमों श्रद्धा भक्ति सा
हित मनकों स्थिर करणे योग्य है ४२१ इतिश्रीमहारामायणेमोक्षोपायकथायांवासिष्टसा
रे निर्वाणप्रकरणस्य उत्तरार्द्ध सारोद्धारः समाप्तः ॥ ६ ॥ शुभम्भूयात् सर्वजगताम्· श्रीराम॥
सवैया· ग्रंथ वसिष्टरचो मुनि श्रात मतत्त्व निरूपण ख्यान सुभावै· जो हि पड़े नर विद्य समस्त
अतीत भजै पद नाक विहावै· जंबु सतीसर आदि हूं को नृप श्री रणवीर नरेश शुभावै· सो अनुवा
द न लोकहुं के उपकार क अर्थ न मूढ दिखावै १॥ दोहा· शिवशंकर पंडित कियो जिहि अनु
वाद न सार। लेखक तुलसीदास लिपि कृप वायो जु विचार ॥२॥ नयन वेद नव इंदु मित संवत
विक्रम जान· मुद्रित इह पूरण भयो वासिष्टी व्याख्यान ॥३॥ संवत् १९४२ ज्येष्ट सुदी १० बुधवास
रे शुभमस्तु राजाप्रजायां॥